प्रस्तावना.
१ ला भागनी.

पांचमी आवृत्ति.

एकमेवाद्वितीयम्.

प्रार्थनामाळा भाग १ लो प्रसिद्ध थये आज आसरे पंचीशेक वर्ष थयां; ए अरसामां तेनी चार आवृत्तियो थइ दरेक आवृत्तिनी बब्बे हजार नकलो खपी गइ छे; ते उपरथी गुजराती वाचक वर्गमां ए पुस्तक घणुं प्रिय थइ पडयुं छे ए स्पष्ट जणाय छे. चोथी आवृत्ति खपी गयाथी आ पांचमी आवृत्ति प्रसिद्ध करी छे.

पाछली आवृत्तियो करतां आमां कांइक फेरफार कर्यो छे. दरेक अंकनी गद्य प्रार्थना पछी एकेक दिंडी उमेरी छे; अंक ९ मामां झुलणा छंद हतो ते "ब्रह्मसंगीत" नामे हालमां समाज तरफथी प्रसिद्ध थयेला एक न्हाना पुस्तकमां बीजां प्रभातीयां साथे छाप्यो छे तेथी ते ए अंकमांथी काढी नांखी तेने स्थळे बीजा छंद मूकया छे. संगीतनां पदना राग, ताल, पुस्तकनी अंदरज पदने मथाळे आप्या छे तेथी गायननी अनुक्रमणिका काढी नांखी छे; पदनी चालो पाछळी आवृत्तिमां हती ते आ आवृत्तिमां नथी आपी, कारण के आ पुस्तकनां पद हवे घणां

लोकप्रसिद्ध थइ गयां छे. पुस्तकने अंते छंद, दिंडी, संगीत अने आरतीना आरंभनी लींटीयोनी अक्षरवार अनुक्रमणिका आपी छे, तेथी वांचनारने कोई पण छंद, गीत तुरतज मळी आवशे. सर्व वर्गना लोकोथी आ पुस्तक लेवानुं बनी शके माटे तेनी किंमत १२ आना हती ते घटाडी मात्र ८ आना करी छे.

आशा छे के भगवद्भक्तो आ नवीन आवृत्तिनो योग्य सत्कार करी आत्मोन्नतिनो मार्ग सरळ करशे.

२ जी फेब्रुआरी १८९७.

चोथी आवृत्ति.

सत्यमेवजयते.

प्रार्थनामाळानी बीजी आवृत्तिनी प्रतो २००० छपावी ते खूपी जवाथी त्रीजी आवृत्तिनी २००० प्रतो छपावी ते पण घणी त्वरी खपी गइ. माटे चोथी आवृत्ति छपावी प्रगट करी छे.

आ सृष्टिनो उत्पन्न करनार स्थितिमां राखनार तथा पालन करनार परमपवित्र परमेश्वर छे तेनी श्रद्धापूर्वक उपासना स्तुति प्रार्थना करवी ए मनुष्यनुं कर्तव्य छे.

सत्यं ज्ञानमनन्तं ब्रह्म यो वेद निहितं गुहायां परमे व्योमन् सोऽश्नुते कामान् सह ब्रह्मणा विपश्चिता ।

सत्यस्वरूप ज्ञानस्वरूप अनन्त ब्रह्मने पोताना हृदयाकाशमां

जे आत्मस्थ जाणे छे ते ए सर्वज्ञ महामंगळ प्रभुनी साथे पोतानी सर्व शुभ कामनानो उपभोग करे छे:

स मोदते मोदनीयं हि लब्ध्वा तरति शोकं तरति पाप्मानं गुहाग्रन्थिभ्यो विमुक्तोऽमृतो भवति।

तेज आनंदमय परब्रह्मनो लाभ लइने आनन्दी थाय छे, ते शोकथी पापथी विमुक्त थाय छे; तेनी सर्व हृदयग्रन्थियो छुटी जाय छे अने ते अमृत थाय छे. माटे ईश्वरनी उपासना करवामां प्रमाद के अनादर करवो नहिं.

ईश्वर अवतार लेता नथी तथा अप्रतिम छे एने वास्ते केटलांक प्रमाणवचनो त्रीजी आवृत्तिनी प्रस्तावनामां लखेलां छे.

आ चोथी आवृत्तिमां कोइ फेरफार कर्यो नथी; अक्षरलिपिमां हस्तदोष हतो ते तथा कोइ कोइ शब्दोनी भूल हती ते सुधारवामां आवी छे. आ आवृत्तिनी छाप प्रथमनी छाप करतां झीणी राखवामां आवी छे.

विशेषमां एटलुं छे के प्रार्थनामाळाना बे भाग करवामां आव्या छे; पहेला भागमां अंक १५ सुधी प्रथम प्रमाणे छपाव्या छे; बीजा भागमां अंक १६ थी ते ३० सुधी छपाशे तेनुं जूदुं पुस्तक थशे.

ईश्वरनी शुद्ध साची अने उत्तम विधिनी प्रार्थना करवा उपर मनुष्यनी मनोवृत्ति थाओ अने तेनी इच्छानुसार चालो तेनी प्रीति संपादन करो एवी ईश्वर तेओने प्रेरणा करो.

त्रीजी आवृत्ति.

श्री जगदीश्वरो जयतु.

प्रार्थनामाळानी बीजी आवृत्ति सने १८७५ नी सालमां कहाडी तेनी २००० प्रतो छपावी हती. ए वधी प्रतो खपी ए घणुं संतोषकारक छे; एनो गुजरातमां खप छे एटलुंज नहिं पण देशावरमां एनी खपत घणी छे. मुंबाइ, पुना, नासीक, पंढरपूर पंजाब, सिंध, काठीयावाड तथा कच्छथी एनी मागणी आवे छे; माटे आ त्रीजी आवृत्ति कहाडवामां आवी छे.

बीजी आवृत्तिमां जे गोठवण करेली छे तेज आ आवृत्तिमां कायम राखवामां आवी छे. छंदना नियममा तथा शब्दमां तथा वर्णविचारमां भूल हती ते मात्र सुधारी छे तथा १२ मा अंकना गायनमां एक पद वधार्युं छे. आरंभे धर्मसिद्धांत लख्या छे तेनुं अवलंबन करीने ईश्वरनी अंतराराधना करवी एज उत्तम उपासनानुं विधान छे; मूर्त्ति अथवा सृष्ट वस्तुनी पूजा ए ईश्वरनी खरी भक्ति नथी. ईश्वरनी प्रार्थना करवामां तथा पापथी मुक्त थवामां कोइनी माध्यस्थिनी जरुर नथी इंद्रादिक देवताओ तथा देवियो मनःकल्पित देव छे. सूर्य, अग्नि, जल, वायु, ए ईश्वरनी बनावेली वस्तुओ छे तेमा ईश्वरनिर्मित आश्चर्यकारक शक्ति जोईने प्राचीन ऋषियोए तेओनुं वर्णन करवामां अतिशयोक्ति नामे अलंकार रूपे देवसंज्ञा आपी छे; पण वस्तुतः तेओमां देवत्व

कांइ नथी. वळी उषा (प्रातःकाल) तथा वसु (धन) इत्यादि घणा कल्पनाना देव मानी तेमनी स्तुतिना मंत्रो रचेला छे; पण ऋषियो पाछा एम पण कही गया छे के इंद्र, वरुण, अग्नि ए सर्व सूर्यनां नाम छे. ए उपरथी तथा बीजां ऋषिवचनो उपरथी सिद्ध थाय छे के खरो पूजनीय देव एक ईश्वर छे, बीजी कोइ वस्तु जड अथवा चैतन्यमां देवत्व नथी. ईश्वर विना बीजी कोइ वस्तुमां देवत्व अथवा थोडुं पण ऐश्वर्य मानवाथी ईश्वरनी स्वतंत्रता, महत्त्व, तथा वेदनां महावाक्योने बाध आवे छे. श्वेताश्वतर उपनिषद् अध्याय ६ मंत्र ८–९.

नतस्यकार्यंकरणंचाविद्यते।नतत्समश्चाभ्यधिकश्चदृश्यते।।
परास्यशक्तिर्विविधैवश्रूयते। स्वाभाविकीज्ञानबलक्रियाच

अर्थ—ईश्वरने शरीर नथी, इंद्रियो नथी तथा जगत् रचवाने एने कांइ सामग्री अथवा हथियारनी आवश्यकता नथी; एना समान कोइ नथी तथा एनाथी कोइ अधिक नथी; एनी शक्ति महान् तथा अनेक प्रकारनी छे; एनुं ज्ञान, क्रिया, बळ स्वाभाविक छे.

नतस्यकश्चित्पतिरस्तिलोके।नचेशितानैवचतस्यलिंगम्
सकारणंकरणाधिपाधिपो । नचास्यकश्चिज्जनिता-
नचाधिपः ॥

अर्थ—ईश्वरनो कोइ धणी नथी, कोइ एनो नियंता नथी,

एने शरीरादि चिह्न नथी, ते पोतेज सर्वनुं आदिकारण, जीवोनो अधिपति छे, एने उत्पन्न करनार तथा एनो अधिपति कोइ नथी. इत्यादि घणां प्रमाण वचनो उपरथी तथा ईश्वरदत्त बुद्धिथी विचार करवाथी सत्य समजाय छे के जीवोनो उपास्य देव एक, सत्य, अप्रतिम, अजर, अमर परम मंगल करुणामय तथा परमपवित्र परमात्मा छे, अने एनी पवित्र मनथी उपासना करवाथी जीवनुं कल्याण छे. भक्तिमान् पुरुषो एवाज ईश्वरनुं ध्यानवंदन स्तुतिप्रार्थना करे छे.

गद्यपद्यप्रार्थनामां ईश्वरना हस्तपादादिकनी कल्पना अलंकाररूप छे ए वात बीजी आवृत्तिनी प्रस्तावनामां लखवामां आवी छे; ते उपरांत विशेष समजवानुं ए छे के प्रार्थनानां स्तोत्र तथा संगीतमां देवना देव, देवाधिपति, देवेश, एवा शब्दो आव्या होय अथवा आवे तो ते प्रथमना देव शब्दनो अर्थ ईश्वर परत्वे करवो नहि. देव एटले दिव्य, उत्तम प्राणि एटलोज ए ठेकाणे अर्थ समजवो; पुण्यशाळी प्राणि पुण्याचरणथी परलोकमां उत्तम पदवीने पामे ए वात असंभवित नथी.

बीजुं ध्यानमां राखवुं जोइये के भक्ति करवानुं अंतरनुं तथा बाहारनुं विधान सर्व प्रकारे पवित्र तथा नीतियुक्त होवुं जोइये. ज्यां अनीतिनो देखाव के भास थाय तथा जे ध्यान के क्रियाथी मन विकार पामी असदवृत्तिनो भाव उत्पन्न थाय अथवा थवानो [illegible] होय एवा अर्चनविधिनो त्याग करवो जोइये.

उपासना करनारे उपरनी सर्व सूचनाओ लक्षमां राखवी अने परमकृपालु परमेश्वरने शरणापन्न थइ तेनी उपासना करवी जेथी ईश्वर प्रसन्न थशे अने तेओना आत्माने अक्षय सुख मळशे.

त्रीजी आवृत्ति.

ॐ तत्सत्परमात्मने नमः ।

आ जगत्नो कर्ता अने नियंता परमेश्वर ए अप्रतिम आनंदमय अने अद्वितीय छे; ए बधा गुणोनी साथे ते न्यायी तथा परमकृपालु छे, अने तेनां सरजेला प्राणीओनुं ते पालनपोषण करीने तेओनी प्रार्थना यथायोग्य सांभळे छे, अने पोताना सद्गुणी साचा भक्तोने मोक्ष आपे छे. ए समर्थ प्रभुना गुण, महिमा, मंगलभाव, तथा स्तुति गाइ तेनी शुद्ध भक्ति तथा उपासना करवी ए मनुष्यनो मुख्य धर्म छे. उपासना करवाना घणा विधि छे, परंतु अप्रतिम ईश्वरनी अनन्य भावथी मानसिभक्ति करवी एज उत्कृष्ट भक्ति अने एज तेने प्रिय छे एम सर्व परमार्थदर्शक सर्वोत्तम पंक्तिनां शास्त्रनो सिद्धांत छे. ए सृष्टिनो कर्ता छे, तेनी भक्ति करवी अने तेने प्रसन्न राखवो ए ज्ञान माणस संपादन करी सकेछे माटे मनुष्यदेह उत्तम छे ए ज्ञान ईश्वरदत्त छे, अने केवळ बीजरूप माणस मात्रमां रहेलु छे. जेम जेम विचारशक्ति वधती जाय तेम तेम ए बीज वधी पूर्णताने पहोंचे, एवो ईश्वरी

नियम जणाय छे. प्राचीनकाळमां माणसोनी विचारशक्ति केळवाएली नहिं अने तेमना धर्मसंबंधी काचा विचार हता. ते वेळा तेमनी समज प्रमाणे ईश्वरनां अनेक रूप कल्पी तथा तेने माणस प्रमाणे इंद्रियभोग हशे एम मानी तथा ईश्वरी शक्तिना कल्पित विभागो करी तथा तेओनां जूदां जूदां काम कल्पी तेमनी सेवा-पूजा करता हता अने हवडां पण लोको अज्ञानथी तथा वहेमथी एवी गौण भक्ति करे छे. पृथ्वी उपर राजा जेम अलंकार, वस्त्र, धन, अने भोजनादिथी संतोष पामे छे, अने प्रसन्न थाय छे, तेम तेओ थता हशे एम धारी, अनेक प्रकारे एने शरीरे सुख अने वैभवदान करवा लाग्या, अने करे छे. अनेक देवोने विचित्र रूप आप्यां छे. पराक्रमी अने वीर पुरुषो तथा स्त्रीओने ईश्वरना अवतार किंवा अंश धारी पूजे छे. कोई यज्ञ हवन करी वालि आपे छे. उत्तम भक्तिनी पद्धतिनो विचार एक काळे माणसना मनमां आवी शकतो नथी, कारण के बुद्धि केळवाईने प्रकाशित थाय त्यारेज सत्यनुं ज्ञान प्राप्त थाय छे. बुद्धि केळवाय नहि त्यांसुधी माणसोनी विचारशक्ति मंद रहे अने अंतःकरण अंधकारमां रहे ए स्वाभाविक छे, बीजी विद्याओ, जेमके यंत्रविद्या, ज्योतिर्विद्या, गणितशास्त्र, शारीरविद्या, भूस्तरविद्या इत्यादि विद्याओनो विद्वान् पुरुषो शोध करीने तेमने पूर्णतामां लाव्या छे अने लावे छे, तेज रीते लोको सृष्टिनी रचना तथा नियमो उपर वधारे विचार करवा लाग्या त्यारे अखिल ब्रह्मांडना ईश्वर एक अगोचर अने निरा-

कार छे एवुं ज्ञान थयुं अने सृष्टवस्तुने के कृत्रिम पदार्थोंने ईश्वर मानी भक्ति करवी ए गौण अथवा नीची भक्ति छे, अने तेनुं मानसिक ध्यान तथा वंदन ए पराभक्ति एटले उत्तमभक्ति छे एवो सिद्धांत करीने ते विषे प्रमाण वचनो लख्यां. आ सिद्धांतो उपरथी, सृष्टिनी रचना उपरथी अने पाको विचार करवाथी श्री जगदीश्वरनी उत्तम भक्ति करवी ए मुख्य कर्तव्य धर्म छे ए नकी जणाशे. ए विश्वपालकने भूली न जतां एवुं वारंवार चित्तमां स्मरण राखवाथी, तेनो उपकार मानवाथी अने तेनी स्तुति करवाथी उभय लोकमां कल्याण छे ईश्वरनी स्तुति तथा प्रार्थना जे भाषा आपणे समझता होइए तेमां करवी, कारण के आपणा मननी वात आपणा परमपिता परमेश्वरने निवेदन करती वेळा आपणे शुं बोलिये छिये ते आपणे समझवुं जोइए. ते विना प्रार्थनानी आपणा मन उपर असर तथा ईश्वर साथे तल्लीनता थई शकती नथी. आपणे शुं मागिए छिए ते आपणे जाणवुं जोइए. कृपालु ईश्वरनी सर्व भक्तजनो भेगा थइने भक्ति करे ए हेतुथी प्रार्थनासमाज स्थापित थई छे अने तेना उपयोगने वास्ते प्रार्थनामाळाना बार अंक तथा गायनभाग तथा गद्य प्रार्थना रचवामां आवेली ते पुस्तको घणांखरां खपी जवाथी आ बीजी आवृत्ति काढवामां आवी छे, तेमां घटतो सुधारो तथा वधारो करीने तेना पंदर अंक कीधा छे. प्रार्थना करनाराओने सुगम पडवा प्रत्येक अंकमां गद्य, पद्य, गायन अने छेल्ली आरती ए रीते अनुक्रमथी

गोठवण करवामां आवी छे. कठण शब्दनो कोश आप्यो छे तथा गायननां पदना राग, ताल ने चालनी समज गायननी अनुक्रमणिकामां आपी छे.

प्रार्थनामां ईश्वरना चरण तथा मस्तक हस्त ए मात्र अलंकार रूपे लखेला छे. वस्तुतः ईश्वर एक अप्रतिम अने अद्वितीय छे एज सिद्धांत मान्य छे.

माटे एवा परम कृपावान् मंगलमय सच्चिदानद परमेश्वर उपर श्रद्धा राखीने तेनी भक्ति करी तेने शरण थवुं एज मनुष्यदेह धारण करवानुं फळ छे अने एथी आत्मानु कल्याण छे.

प्रस्तावना.

२ जा भागनी.

१ ली आवृत्ति

ईश्वर प्रार्थनामाळा भाग १ लो प्रगट थयाने आज आशरे १७ वर्ष थई गया ए पुस्तक केटलुं लोकप्रिय थयुं छे के तेटला समयमां तेनी चार आवृत्तियो थइ गइ, अने तेओनी सुमारे सात हजार प्रतो वेचाइ गइ छे ए पुस्तकना रचनार मर्हूम राव बहा-

दुर भोळानाथ साराभाई हता ए वात घणुं करीने सर्वना जाणवामां छे. तेवांज भक्तिरसथी भरपूर भजनो रचीने प्रार्थनामाळा भाग २ जो तैयार करवानो एमनो इरादो हतो. तेमांना १६–२० अंक जुदा पुस्तकाकारमां छपाया हता; परंतु १६–३० अंक रचवानी एमनी इच्छा हती तेमांथी अंक २८ सुधी एमणे रचीने तैयार कर्या तेटलामां ईश्वरेच्छाथी एमनो मोक्ष थयो तेथी छेल्ला बे अंक अधुरा रही गया. आ पुस्तकमां जे अंक २९–३० छे ते एमना रचेला नथी तोपण अंक ३० मानुं गायन छे ते (ध्रुपद शिवाय) एमनुंज रचेलुं छे.

निराकार ईश्वरनी भक्ति करवाना सुलभ मार्गनो प्रचार थवानी इच्छाथी आ पुस्तक प्रगट कर्युं छे तेनो भक्तिमान् स्त्रीपु॰ षो प्रथम पुस्तक जेटलाज प्रेमथी स्वीकार करशे एवी आशा छे.

छट्ठी आवृत्ति.

आ आवृत्तिमां पहेलो अने बीजो भाग एकठा छापवामां आव्या छे अने तेथी वांचनारने वधारे अनुकूळता थशे एम आशा छे. सने १९०९.

सातमी आवृत्ति.

प्रार्थनामाळाना पहेला अने बीजा भाग एकठा करी १००० नकलोनी छट्टी आवृत्ति छापेली ते खपी गई छे. ए गोठवण घर्णा अनुकूल जणाइ छे अने ए आवृत्तिनी घणी मागणी थइ छे. छट्टी आवृत्ति पेठे आ आवृत्तिमां (१ थी १५ अंक पेठे) १६ थी ३० अंक साथे पण एकेक दिंडी आपवामां आवी छे अने ए रीते स्व. रा. व. भोळानाथ साराभाईए रचेली 'दिंडी तथा अभंग' नामना पुस्तकमांनी बधी दिंडीओ आ पुस्तकमां आवी जाय छे. तेमांना बधा अभंग 'अभंगमाळा'मां आवी गया छे. आ आवृत्तिनी १००० नकलो छापवामां आवी छे. सने १९१३.



आठमी आवृत्ति.



प्रार्थनामाळाना पहेला अने बीजा भाग एकठा करीने छपावेला पुस्तकनी बे आवृत्तिओ खपी गई छे. ए पुस्तकनी उपराउपरी घणी मागणी थवाथी आ नवी आवृत्ति छपाववामां आवी छे. कागळ अने छापवानी अतिशय मोंघवारीने लीधे आ पुस्तकनी किंमत वधारवी पडी छे. आ आवृत्तिनी १००० नकलो छापवामां आवी छे. सने १९१९.

शुद्धिपत्रक.

पृष्ठ.	ओळी.	अशुद्ध.	शुद्ध.
३	९	बुद्धि.	शुद्धि.
,,	१९	सत्पंथे.	सत्पथे.
६	१५	जमपति.	जगपति.
१७	१६	धर्म.	धर्मे.
१८	१८	पाळी.	पाळो.
२१	१०	गारी.	मारी.
२८	८	निःसर्ग.	निःसंग.
२९	४	काहिं.	नहिं.
,,	१८	परग.	परप.
५०	९	घेहो.	घेहे.
,,	१७	काय.	कार्ये.
५३	१	करो.	करी.
५८	११	द्रष्टि.	दृष्टि.
६१	११	विरानो.	विरानी.
६२	९	पंढ्रिपे.	पंढ्रिपे.
,,	११	पवी.	पवो.
६३	५	अन्पष्ट.	अन्यत्र.
७७	१[illegible]	[illegible]	[illegible]

पृष्ठ.	लीटी.	अशुद्ध.	शुद्ध.
८५	८	घटे.	घटे.
,,	१५	बुध्या.	बुद्धया.
८९	१	अज्ञानीं.	अज्ञानी.
९१	४	जयवंद्य.	जगवंद्य.
९४	३	परात्परा.	परात्परा.
९५	१२	वितुख.	विमुख.
,,	१७	सन्निध.	सन्निध.
१०६	७	इंद्रियो.	इंद्रियो.
१०८	१७	सरुं छुं.	करुं छुं.
१११	३	कुपा.	कृपा.
,,	१०	सघळे.	सघळे.
११६	१	अज्ञान.	अज्ञान.
११९	२	मार्गे.	मार्ग.
,,	,,	बतावे.	बताव.
१२०	१	समझिये.	समझिये.
१२२	७	कारुणमूर्ति.	कारुण्यमूर्ति.
,,	१४	नाथे.	नाथ.
१२७	१६	नथे.	नाथ.
१३४	१	कुपा.	कृपा.
१३५	१४	अल्य.	अल्प.

पृष्ठ.	लीटी.	अशुद्ध.	शुद्ध.
१४०	१८	अल्पधी.	अल्पधी.
१५५	१३	परमेश्वरा.	परमेश्वर.
१५६	१०	सृष्ट्युत्पाचि.	सृष्ट्युत्पत्ति.
१५७	१२	कोडुंबि.	कौडुंबि.
१७१	१०	ग्रहयुक्ति.	ग्रहयुक्ति.
१७६	१५	कल्याण.	कल्याण.
१८७	१८	भवित.	भक्ति.
१९०	१४	मयहर्ता.	भयहर्ता.
१९१	१४	त्रात्रा.	त्राता.
२०८	१८	हु.	सहु.
२३३	३	नित्यबाधं.	नित्यबोधं.
२३६	२०	मने.	मन.
२४१	२०	युण.	गुण.
२४२	१७	नमिये हर्षे.	नमिये बहु हर्षे.
२५३	४	सन्मार्ने.	सन्मार्गे.
२५५	८	तमारा.	तमारो.
२६३	१	तमे सर्व.	सर्व तमे.
२६४	३	मल्हार.	खमाच.
२९३	११	अर्ध.	अर्थ.
२९८	११	नाय.	नाथ.

અનુક્રમણિકા.

અંક.	પાનું.	અંક.	પાનું.
૧	૧	૧૮	૧૯૬
૨	૧૩	૧૯	૨૦૮
૩	૨૩	૨૦	૨૧૯
૪	૩૬	૨૧	૨૩૨
૫	૪૮	૨૨	૨૪૩
૬	૬૧	૨૩	૨૫૫
૭	૭૩	૨૪	૨૬૭
૮	૮૩	૨૫	૨૮૧
૯	૯૪	૨૬	૨૯૩
૧૦	૧૦૬	૨૭	૩૦૬
૧૧	૧૧૭	૨૮	૩૧૭
૧૨	૧૨૮	૨૯	૩૨૮
૧૩	૧૪૦	૩૦	૩૪૪
૧૪	૧૫૧	૩૧ કઠણ શબ્દનો કોશ.	૩૫૭
૧૫	૧૬૨	૩૨ પદની અક્ષરવાર અનુક્રમણિકા.	૩૮૭
૧૬	૧૭૪		
૧૭	૧૮૫		

अंक १ लो.

ललित.

जय जय प्रभू ब्रह्मचिद्घना, पतितपावना पापमोचना;
प्रणमिये अमे प्रेमभावथी, प्रभु परात्परा प्रेर सन्मति. ॥ १ ॥
सकळ विश्वमां व्यापिने रहो, जिव प्रते करो छो अनुग्रहो;
सबल सत्य छो श्रेष्ठ सर्वथी, प्रभु परात्परा प्रेर सन्मति. ॥ २ ॥
ऋषि मुनी वदे वेदनी श्रुति, तदपि ना जडे तारि तो गति;
अति अगम्य छे सृष्टिनी कृति, प्रभु परात्परा प्रेर सन्मति. ॥ ३ ॥
अवधि बुद्धिनी बांधी छे तमे, नियममां रही चालिये अमे;
मति नहीं जशे पार ते थकी, प्रभु परात्परा प्रेर सन्मति. ॥ ४ ॥
तुज दया थकी दुर्मती टळे, तुज दया थकी सन्मती मळे;
तुज विना कृपानाथ को नथी, प्रभु परात्परा प्रेर सन्मति. ॥ ५ ॥
परम प्रेमथी पोषणो करो, नियम ए दयानाथनो खरो;
विभु वरेण्य छो विश्वना पति, प्रभु परात्परा प्रेर सन्मति. ॥ ६ ॥
क्षण प्रतिक्षणे रक्षणो करो, सकळ दुःख संकष्ट संहरो;
नव कदी करो नाथ दुर्गति, प्रभु परात्परा प्रेर सन्मति. ॥ ७ ॥
सकळ विश्वमां शान्तिकारक, प्रणत प्राणिना प्राणतारक;
नव जुवो तमे दोष दुष्कृति, प्रभु परात्परा प्रेर सन्मति. ॥ ८ ॥

पृष्ठ.	लीटी.	अशुद्ध.	शुद्ध.
३०२	१२	धनोदये.	घनोदये.
३१९	१३	मुनुक्षु.	मुमुक्षु.
,,	१४	आपो.	आपी.
३४२	१५	दयासिंधु.	दयासिंधु.
३४५	११	मइान.	महान.
३४९	१३	अनालम्बन.	अनालम्बन.
३५०	१७	अंधाइकेरुं.	अंधारकेरुं.
३५१	१५	नमुं.	नमुं.
३५४	६	द्रुमजाया.	द्रुमछाया.
३५५	४	पस्म.	परम.



धर्मसिद्धांतो.

१ ईश्वर एक एवास्ति स सृष्ट्युत्पत्तिस्थितिलयकर्त्ता पदार्थेभ्यो भिन्नोस्त्यविभक्तैश्वर्यश्च सर्वज्ञः सर्वव्यापी सर्वशक्तिमान् न्यायकारी करुणामयः परमपवित्रोऽस्ति स चैव पूज्यः ॥

२ भक्तिरेव धर्मः ॥

३ सप्रेमश्रद्धोपासनास्तुतिप्रार्थनासदाचारश्चेति भक्तिः ॥

४ भक्त्येश्वरः प्रसीदत्यात्मन ऐहिकमामुष्मिकं च श्रेयो भवति ॥

अर्थ.

१ ईश्वर एक छे, ते सृष्टिनो उत्पन्न करनार, स्थितिमां राखनार तथा संहार करनार छे; सृष्ट पदार्थोथी ते भिन्न छे; एना विना बीजो कोई पण देव नथी; ते सर्वज्ञ सर्वव्यापी छे, सर्वशक्तिमान् न्यायकारी तथा करुणामय परमपवित्र छे, तेज ईश्वर पूज्य छे.

२ भक्ति एज धर्म छे.

३ सप्रेम श्रद्धा उपासना स्तुति प्रार्थना अने सदाचार ए भक्ति.

४ भक्तिवडे ईश्वर प्रसन्न थाय छे अने आत्मानुं ऐहिक आमुष्मिक कल्याण थाय छे.

करुणनाथ हे हे कृपाघना, दुरित कर्मनी मागीए क्षमा;
विभु विचारशो भक्तनी स्थिति, प्रभु परात्परा मेर सन्मति ॥ ९ ॥
प्रणमिये अमे वारवार रे, विनतिने करो अंगिकार रे;
प्रभुप्रसादथी थाय सद्गति, प्रभु परात्परा मेर सन्मति. ॥ १० ॥

आखा विश्वनो रचनार अने नियंता, प्राणीमात्रनो सृजनार अने पाळनार जे सर्व शक्तिमान परमेश्वर तेनी दया अने तेनी कृपा पामवाने हुं शी रीते योग्य थाउं ? ते महाप्रभुनुं स्वरुप केवुं हशे ? ते महा कृपालु, दयासागर, महा प्रतापी परमात्माने पगे लागी तेनी क्षमा मागवी ए मारो अने माणस मात्रनो धर्म छे. मारा हृदयमां, मारा चित्तमां, आ वेळा कोण वश्युं छे ? परमेश्वरना किया गुणो उपर हुं लक्ष देउं ? तेना दरेक गुणथी हुं मोह पाम्युं छुं. वधा महान् गुणोथी ते भरपूर छे. तेनो महिमा तेनो प्रताप अतुल्य अने अपार छे. मारो आत्मा ए महा प्रभुने शी रीते पामे ? तेना महा तेजनो कांइक अंश मारा हृदयमां, मारा मनमां प्रकासे, तो तेनुं कांइ अल्प ज्ञान मने थाय.

हे जगत्पिता ! हुं तमारो पाड किया शब्दोवडे मानुं ? तमारी कृपाथी हुं आजसुधी जीवी मोटो थयो छुं. तमारी महेरथी मने खावाने अन्न मळ्युं छे, तथा रात्रे ओढवा पाथरवानुं मळ्युं छे. उंघुं छुं त्यारे तमे मारुं रक्षण करो छो, अने दिवसे मने पाळनार पण तमेज छो. मारो सघळो आधार तमे छो. तमारा आश्रय विना आ संसारमां माराथी एक घडी टकाय नही, एक क्षण पण जीवाय

नही. जे जे सुख हुं पाम्यो छुं, अने हवे पछी मने जे सुख मळे, तेनो आपनार तमारा विना बीजुं कोई नथी. मारा वेली तमेज छो. जेम मने पाळनार छो तेम मने रुडे मार्गे चलावनार थाओ. मने सुमति आपो के हुं नीतिशास्त्र प्रमाणे वर्ती सद्‌गुणी थाउं. मारी बुद्धिने भमावनार अने आडे मार्गे लेइ जनार संसारमां घणी लालचो छे, ते सर्वेने पारखवाने ज्ञान आपी, अने तेओने जीतवाने दृढता आपी आपनो सेवक थवाने मने योग्य करो. कियां कर्मो करवाथी पाप लागे, अने कियां कर्मो करवाथी पुण्य थाय, ते समजवानी मने बुद्धि आपो. अने पापथी दूर रही पुण्यनां काम थाय एवी मति आपो. हे कल्याणकारी महा प्रभु ! तमे प्रसन्न थाओ एवी रीते हुं चालुं, ए प्रमाणे हुं वर्तुं, एज मारी मनकामना छे, एज मारो मनोरथ छे. हे दयालु महापिता ! आ मारी दीनवाणी सांभळी मारा दंडवत् प्रणामने अंगीकार करी मारी प्रार्थनाने सफळ करो.

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ।

दिंडि. १

जगद्वंद्य देव विश्वना विधाता, प्रणमुं प्रेमथकी प्रणतजनत्राता;
विना नाथ नथी अन्य मुक्ति दाता, परित्राण करो मारुं पिता माता. १
त्रिविध ताप कृपानाथ सर्व कापो, दयासिंधु दिव्य ज्ञान मने आपो;
असन्मार्ग थकी सत्पंथे चढावो, सदा सन्मति सत्कार्यने वतावो. २

तमे पूर्ण ब्रह्म परम उपकारी, नमी करुं हुं प्रभु प्रार्थना तमारी;
विनति सर्व तमे सांभळो अमारी, विकट विश्वसिंधु थो तमे उतारी. ३
सेतुरूप तमे सृष्टि सकल धारो, महा मंगल गुण छे प्रभु तमारो;
सदा काल तमे सन्निधे पधारो, कृपादृष्टि करी कष्टने निवारो. ४
ज्यहां जोउं त्यहां शक्ति सबलभासे, परमज्योति सकलविश्वमां प्रकासे;
सदा आनंदे स्तवन गीत गाउं, प्रेमकुसुम चरणपंकजे वधावुं. ५

शिखरिणी.

अनाद्यंता देवा, अनुपम अविद्याशक्ति परा,
परेशा विश्वेशा, प्रणमुं परमात्मा प्रभुवरा;
सदा पादाब्जे हुं, अति विनयभावेथी विनवुं,
विभू विश्वाधीशा, अनुग्रह तमारा अनुभवुं. ॥ १ ॥
अती पापी हुं छुं, विषय महिं लाग्युं चित घणुं,
कृपादृष्टी वीना, नव रहि शकुं हुं क्षण अणु;
नियंता त्राता छो, कुशल सुखदाता दुखहरा,
विधाता धाता छो, शरण तुज आव्यो अघहरा. ॥ २ ॥
चडो वारे मारे, अति दिन गणी सेवक मने,
कृपासिंधू वंदू प्रणतजनबंधु प्रभु तने;
रची ब्रह्मांडोने, नियम अति भारे वहु कर्या,
जिवो शुं विस्तारे विध विध प्रकारेज पसर्या. ॥ ३ ॥

ग्रहो वर्गो सर्गो, गणित क्रमथी रे गगनमां,
तमारी सत्ताथी, निशदिन रह्या छे भ्रमणमां;
दया पूरी देखुं, सबळ प्रभु पेखुं सकलथी,
जिवो संरक्षार्थे, प्रगट पय कीधुं प्रथमथी. ॥ ४ ॥

प्रभू स्रष्टा जाणुं, फरि फरि वखाणुं विनयथी,
दया वीना तारी, मन नहि खसे रे विषयथी;
प्रभू आ संसारे सकल शुभ कर्मोज करवा,
सृजाव्या जीवोने, भवविषयमोहोधि तरवा. ॥ ५ ॥

कियां दुष्कर्मो मैं, वयम करि शकुं शुद्ध मनने,
दयासिंधू वंदुं, विमल मति आपो प्रभु मने;
प्रभू घांटी मोटी, निज बळथि ना जाउं उतरी,
कृपादृष्टी पूरी, करि कर ग्रहो रे प्रभु हरि. ॥ ६ ॥

महा सिंधूमांथी, तरणबल शुं हुंज पशुने,
सदा संभाळी ल्यो, शरणगत जाणीज शिशुने;
असत्पंथे चालुं, तदपिज करोछो अनुग्रहो,
क्षमावंता देवा, अवगुण अमारा नव लहो. ॥ ७ ॥

दयावंता दाता, दिन गणि निभावो प्रभु मने,
नमी साष्टांगे हुं, विनयथि विनंती करुं तने;
अनूकंपाथी तो, विकसित करो मारि मतिने,
प्रभू पो'चाडी द्यो, परम सुख आपी सुगतिने. ॥ ८ ॥

करावो सत्कर्मो, सकल शुभ धर्मो प्रभु तमे,
क्षमावो जे कीधां, दुरित बहु कर्मो अहिं अमे;
सुउद्योगो आपो, दुख सकळ कापो करि कृपा,
श्रमो मिथ्या जागे, प्रभु कदि करो जो अवकृपा. ॥ ९ ॥

तमे कष्टो कापो, परमपद आपो प्रभु मने,
तमारो के'वायो, विदित बधि मारी कृति तने;
पिता माता भ्राता, परमपददाता दुखहरा,
दयानाथा धाता, सकल भयत्राता भवधरा. ॥ १० ॥

क्षमा आपी देवा, दिन प्रति दया नित्य करवी,
प्रजा केरी क्रीया, प्रभु कदि मने तो न धरवी;
तर्यो भक्तो तारा, भवजळथी तारा स्मरणथी,
भमावो मा भामां, विमुख नव राखो चरणथी. ॥ ११ ॥

प्रभू पापो कापो, परम करुणा लावि चित्तमां,
निवारो संतापो, त्रिविध दुखतापो जगतमां;
किधाछे में दोषो, कृति कदि न जोशो जमपति,
सदा सन्मार्गेनी, अति विमल आपो प्रभु मति. ॥ १२ ॥

कृपाळू मायाळू, बहु बहु दयालु प्रभु हरे,
प्रमाणो छे शास्त्रे, निगम बहु वाक्योथी उचरे;
दयादृष्टी देवा, दिन जन प्रते नित्य करशो,
करुं तारी सेवा, सकल भय संताप हरशो. ॥ १३ ॥

परा भक्तिथी हुं, प्रणिपत करुं छुं प्रभु सदा,
स्विकारी ल्यो स्वामी, अनुग्रह विसारं नहि कदा;
थयो छुं विश्वेशा, बहुज अपराधी तदपि हुं,
तमारे विश्वासे, सुखथि भवमां हुं वशि रहुं. ॥ १४ ॥

महा देवा दाता, नमि नमि करुं नम्र विनति,
प्रभू बीजो त्राता, तुज विण अमारो अहिं नथी;
निराधाराधारा, निरुपम नियंता चिद्घना,
पुरो अर्थो सारा, करि अति कृपा भक्त जनना. ॥ १५ ॥

नाराच.

महाधिराज स्वामि सर्वना समर्थ छो तमे,
तमारी विश्वमां सहायताथकी वश्या अमे;
अनन्य भक्ति भावथी प्रसारि बेउ हाथने,
नमी नमी नमी हुं नित्य वंदु विश्वनायने. ॥ १ ॥

प्रभु कृपानिधान सर्व शक्तिमान छो बहु,
सदा पदारविंदमां हुं ध्यान राखिने रहुं;
कदी महान भक्त तो न पामशे विपादने. नमी नमी० ॥२॥

सजावनार सृष्टिकार्यथी दिसो तमे अहीं,
अती दया क्षमा कृपा प्रभुस्वभावमां रही;
स्मरुं हुं ते त्रिलोकनाथ एक रे अजातने. नमी नमी० ॥३॥

असंख्य चकचकीत गोल व्योममां दिसे घणा,
ग्रहो उपग्रहो तणा गणीतमां नहीं मणा;
अपार शक्ति धारनार तारनार नाथने. नमी नमी० ॥४॥

अतर्क्य शक्ति छे प्रवेश अल्प जीव शुं करे,
प्रभु कृपायकीज भक्तकार्य सर्व तो सरे;
नमी गयाज नास्तिको मुकी दियो विवादने. नमी नमी० ॥५॥

अनीति दुष्कृती तणी क्रिया थई अती घणी,
अनाथनाथ नित्य सत्य सर्वना तमे धणी;
कृपाकटाक्षथी करो क्षमा महापराधने. नमी नमी० ॥ ६ ॥

समस्तजंतुपोषणक्रिया किधी कृपा थकी,
दयाघना दया तमारि तो जणाय छे नकी;
कदीज पुत्रदोषथी न रोष थाय तातने. नमी नमी० ॥७॥

तमे दयाळु छो कृपाल भक्तपाल रे प्रभु,
विनंती सर्व सांभळी सहाय तो करो विभु;
प्रणाम वारवार हुं करुं छुं प्राणनाथने. नमी नमी० ॥ ८ ॥



मालिनी.

जय जय जगदीशा सृष्टिकर्ता कृपाला,
त्रिभुवनप्रतिपाळा प्राणदाता दयाळा;

तुज पद प्रणमीए जोडिने बेउ हाथ,
विदित विभु अमारी आपने सर्व वात. ॥ १ ॥

नवळि मति अमारी मागणी सर्व कीधी,
करावि उचित केई नाथ लक्षे न लीधी;
घटित विभु हशे जे तेज स्वीकारि लेशो,
प्रणत जन जिवोने पूर्ण आशीष देशो. ॥ २ ॥

गायन.

पद.

भैरव तथा सर्व रागमां गवाय. चोताल.

प्रभु सर्वशक्तिमान, करुणाकृपानिधान,
धरिये तमारुं ध्यान, सन्निध पधारो.
भगवंत तुं समान, नथी कोई बलवान,
संकट सेवक तणां, सघळां निवारो. प्रभु०

अनुग्रह उपकार, करो तमे वारवार,
चित्तथी तमारा प्रभु, कदि न विसारो;
किधा बहु अपराध, क्षमा करो विश्वनाथ,
विभु मात तात तमे, करुणा विस्तारो. प्रभु० १

पद.

काफी त्रिवाल. (चाल, समरुं सदा भरपुर.)

करुं प्रभुने हुं प्रणाम, संपूर्ण प्रेम धरीरे प्रभु, करुं प्रभुने०
अचल अगोचर त्रिभुवनव्यापक प्रभु छो अंतर्याम,
तुज यश महिमा गुण गावाने, वाणी पामे विराम,
मति नहि चाले जरीरे प्रभु; करुं प्रभुने० १
अनुग्रहथी अवगुण न जुवो करुणासागर नाम.
जीव तणा परिपालक जाणुं, राखी चित्तमां हाम,
भवथी जाउं तरीरे प्रभु; करुं प्रभुने० २
अगणित में अपराध किधा छे नव पामुं कहिं ठाम,
अति करुणा प्रभु करि मुज उपर, आपो अविचल धाम,
धीरज धारुं खरीरे प्रभु; करुं प्रभुने० ३
सृष्टि तणी रचना रची पोते पृथक् रह्या निष्काम,
भक्ति थकी भगवंत पमाशे, दास हुं जाणुं आम,
अति सत्ता प्रसरीरे प्रभु; करुं प्रभुने० ४
सर्व काल हु शरण तमारे अन्य नहि विश्राम, .
एहिकामुष्मिक सुख आपी, सफल करो शुभ काम,
करुणा पूर्ण करीरे प्रभु; करुं प्रभुने० ५

पद.

खमायची जिल्हो. त्रिवाल.

(चाल, नारायण नरसिंह नरोतम पुरुषोत्तमको ध्यान धरे.)

ते सविता परब्रह्म प्रभुनुं, नित्य निरंतर ध्यान धरुं.

भर्ग वरेण्यथी व्याप्त विभु, विश्वेश पदे हुं प्रणाम करुं,
प्रेरो प्रभु मति सद्गति आपो, ए वचनो मुखथी उचरुं. ते स. १
सर्वज्ञ सर्वान्तर्गत, सकलेश्वरने हुं सदा समरुं,
सर्व कर्मना साक्षी गणुं हुं, निंद्य कर्मथी नित्य डरुं. ते सविता. २
सृष्ट वस्तुथी भिन्न अगोचर, एक तत्त्व जे अकल खरुं,
ते करुणा सागरने चरणे, शरण रही करद्वय पसरुं. ते सविता. ३
भक्ति परा भगवंत तणी, अति श्रेष्ठ गणी न कदी विसरुं,
विश्वनाथ विश्वास तमारो, धरी नीतिथी नव हुं फरुं. ते स. ४
अति दीन अल्पज्ञ अशक्त, क्षण प्रतिक्षण अपराध करुं,
परम कृपाथी क्षमा करशो तो, भवसिंधुथी सत्य तरुं. ते सविता. ५

पद.

रामायची जिल्हो. दादरो.

(चाल, यदुवर नाथ तणी लहे मने लागी रे.)

मन कर्म वाणी थकी प्रभुने वंदुंरे.
परमात्मा परब्रह्म परात्पर,
प्रणमुं प्रीते प्रणतजनबंधुरे. मनकर्म० १
विश्वोद्धारक, विभु सुखकारक,
प्रभु तुज भक्तिमां सदा हुं आनंदुंरे. मनकर्म० २
शरण तने हुं दीन जन बालक,
तमे पालक समस्त जीवजंतुरे. मनकर्म० ३
पूर्ण करो प्रभु योग्य मनोरथ,
दीनदयाल छो कृपाल दयासिंधुरे. मनकर्म० ४

आरति.

जयदेव जयदेव, जय जगदाधारा, जय जगदाधारा;
अंतर्यामि अपारा (२), सर्वोत्तम सारा. जयदेव० १

स्वयंभू विभु आप, त्रिभुवनमां व्यापो (२);
सुख संतोषो आपो (२), किल्विष सहु कापो. जयदेव० २

मंगळ सुंदर रूप, करुणामय तारुं (२);
प्रेम भावथी मारा (२), चितमां नित्य धारुं. जयदेव० ३

श्रद्धा रूपी अर्घ्य, आपुं हुं चरणे (२);
गंधाक्षत भक्तीनां (२), अर्पी रहुं शरणे. जयदेव० ४

एकाग्रेथी ध्यान, धारुं हुं चित्ते (२);
प्रेमपुष्प वधावुं (२), प्रभुशीर्षे नित्ये. जयदेव० ५

सदाकाळ सन्निध, जाणीने देवा (२);
ज्ञानारातिथी निरखुं (२), ए उत्तम सेवा. जयदेव० ६

विस्तारी विश्वेश, अति अद्भुत माया (२);
साष्टांगे तमने हुं (२), प्रणमुं जगराया. जयदेव० ७

अवगुणना अपराध, अतिशय छे मारा (२);
क्षमा करो करुणार्थी (२), प्रभु जगदुद्धारा. जयदेव० ८



अंक २ जो.

भुजंगी.

अहो विश्वना देव सर्वज्ञ साचा, अमो प्राणियोनी सुणो नम्र वाचा;
तमे विघ्न संकष्ट सर्वे निवारो, दयासागरा सत्य आधार तारो. १
प्रभु पूर्ण विश्वास तारो अमारे, महासंकटे रे चढो नाथ वारे;
अमारी स्थितीओ तमे लक्ष धारो, दयासागरा सत्य आधार तारो. २
खरा भेद तारा न कोईज पाम्या, यथा ज्ञान तर्कों करीने विराम्या;
कृपानाथ तुं एक छुं सत्य सारो, दयासागरा सत्य आधार तारो. ३
तमे सत्य धार्युं हशे तेज थाशे, अमारुं विचार्युं सहू व्यर्थ जाशे;
तमारा गणी सेवकोने उगारो, दयासागरा सत्य आधार तारो. ४
तमारा प्रभू सर्व संकल्प सत्य, तथापी कृपाधीन छे सर्व कृत्य;
अमे जाणिये शुं तमारा विचारो, दयासागरा सत्य आधार तारो. ५
महा कष्टमां धैर्य पूरुं धरावो, तमारुं रुडुं ध्यान नित्ये करावो;
अमारा वधा दोषने रे विदारो, दयासागरा सत्य आधार तारो. ६
महा काळनुं चक्र माथे फरे छे, जिवो देहनो गर्व मिथ्या करे छे;
क्षणध्वंसि आ घाट छे रे अमारो, दयासागरा सत्य आधार तारो. ७
अरे काळ रे इष्ट के रिष्ट थाशे, जिवोने न किंचित्कदापी जणाशे;
तमारा अगम्यो गुणो छे अपारो, दयासागरा सत्य आधार तारो. ८

अमे पापियो पामरो अल्प प्राणी, कृतीओ नथी तुं थकी रे अजाणी;
निवारो तमे क्रूरताना विकारो, दयासागरा सत्य आधार तारो. ९
अहंकार मिथ्या अभीमान मोटां, करीए अमे मूर्खताथीज खोटां;
अरे रंकने रायनो एक आरो, दयासागरा सत्य आधार तारो. १०
दिसे दृश्य वस्तु वधी नाशवंत, तमे सत्य छो विश्वव्यापी अनंत;
महासिंधुमांथी दयानाथ तारो, दयासागरा सत्य आधार तारो.११
अमे आ जगत्मां वधारे प्रवासी, तमारी कृपाथी रहीए निवासी;
करो छो तमे सर्वने उपकारो, दयासागरा सत्य आधार तारो. १२
अरे ईश इच्छा तमारी वळिष्ठ, तमारा थकी को नथी रे वरिष्ठ;
चदे वेद वाणी वळी शास्त्रकारो, दयासागरा सत्य आधार तारो.१३
प्रभू जे करो धैर्यथी सर्व से'वुं, सदा नम्र भावेथी आधीन रे'वुं;
खरो धर्म छे ओ प्रभू ए अमारो, दयासागरा सत्य आधार तारो.१४
जगाधीश दीसे तमारा प्रतापो, कृपादृष्टिथी विश्वमां शांति आपो;
दयाथी सुणो वीनतीना उचारो, दयासागरा सत्य आधार तारो.१५

ॐ तत्सत्परमात्मने नमः ।

पितासि लोकस्य चराचरस्य त्वमस्यपूज्यश्च गुरुर्गरीयान् ।
न त्वत्समोऽस्त्यभ्यधिकः कुतोऽन्यो लोकत्रयेऽप्यप्रतिमप्रभाव ॥

[illegible] चर वस्तुनो पिता तुं छुं, सर्वनो

ज्य परम गुरु तुं छुं. हे अतुल पराक्रमी परमेश्वर ! त्रणे लोकमां
ारा जेवो बीजो कोई नथी, तो ताराथी चढतो क्यांथी ?

हे परम कृपालु परमात्मा ! आ वेळा तारुं चिंतन, तारी
तुति, अने तारी प्रार्थना करुं छुं. तारा गुण गाउं छुं, तुं सर्वज्ञ
ाने सर्वव्यापक छे. मारुं मन आ समये शा काममां लागेलुं छे
ाथी तुं अजाण्यो नथी. आ समये कोई बीजा विषय उपर मारुं
चित्त न लागतां केवळ तारा पवित्र स्मरणमां निमग्न रहे, तारुं
ध्यान धरे, तारा स्वरूपने ओळखवाने प्रयत्न करे, एवी मारी
ंपूर्ण इच्छा छे. बीजा कोई जोडे सरखावी न शकाय एवा अनुपम
हा प्रभु, तने हुं अभिवंदन करुं छुं. तारी स्तुति करवाने हुं अल्प
जीव असमर्थ छुं. मारा विचार अने मारी वाणी तारां वखाण
करवाने, तारा उपकार मानवाने छेक अशक्त छे. तारा माहात्म्यनुं
वर्णन करवाने मारी भाषामां योग्य शब्दो नथी. हे अनादि अने
अनंत परमेश्वर तारां कृत्योनो विचार करतां मारी अल्प बुद्धि
पाछी हठे छे. आकाश भणी दृष्टि करुं छुं तो सानंदाश्चर्य पामुं छुं.
सूर्य, चंद्र, ग्रहो, उपग्रहो, असंख्य तारा, जोई घणुं आश्चर्य पामुं छुं.
तेओ शुं हशे, शा अर्थे रचेला छे, केवां प्राणियो तेमां वसे छे,
त्यांनी लीला तथा शोभा केवी हशे, तेओनां महत्व अने अंतरा-
दिनो विचार करुं छुं, त्यारे मारी तर्कशक्ति निराश थई नीची
पडे छे. नीची दृष्टि करुं छुं तो आ पृथ्वी चमत्कारोथी तथा अति
सुंदर वस्तुओथी भरेली छे; ते जोई मारी बुद्धि चकित थई जाय

छे, अने तुं आ जगत्‌नो कर्त्ता नियंता अने पालन करनार छुं एवो मने स्वाभाविक बोध थाय छे.

हे प्रभु ! हुं केवल अशक्त पामर प्राणी छुं. अज्ञान, अहंकार अने मनोविकार प्रबल थईने मने आडे रस्ते दोरे छे, अपराध करवानुं सूझाडे छे, माटे हे महाप्रकाशमान् परमेश्वर ! अति नम्रताथी तथा शुद्ध अंतःकरणथी तारी प्रार्थना करुं छुं के मारी बुद्धिने शुद्ध कर, मारां पापनुं ज्ञान मने थाय, तेनो पश्चात्ताप थाय, एवी शुद्ध मति मने आपीने फरीथी तेवां काम न करवाने मारुं मन दृढ थाय, निरंतर तारी सेवा करुं, मारा संसारव्यवहारिक धर्म बजावुं अने तारी खरी भक्ति अने उपासना करुं एवो उत्साह तथा दृढता आपी मारा अपराध क्षमा करी मारुं, हे दयालु भगवान् ! रक्षण कर. ॐ शांतिः शांतिः शांतिः

दिंडि २.

सत्य सगुण परम ब्रह्मने उपासुं, सृष्टिनियम निरखी चितमां उलासुं;
प्रेम भक्ति थकी ध्यान हृदय धारुं, महा मंगल प्रभु नाम हुं उचारुं. १
सूर्य चंद्र ग्रहो गगनमां विराजे, महाशक्ति थकी मेघनाद गाजे;
नियम तारा जडवर्ग सर्व पाळे, विना तुं प्रभु नहि पत्र एक हाले. २

सृष्ट वस्तु थकी भिन्न सबल स्वामि, एक देव सत्य सर्वांतर्यामि;
तमे विश्वंभर विश्वना नियंता. तमे सर्व दुरित कर्मना निहंता. ३
दिनानाथ मने अभय दान आपो, दयादृष्टि करी कष्ट सकल कापो;
तमे जाणो मुज अंतर्गत वात, करो रक्षण प्रभु मारुं माततात. ४
सत्य आश्रय प्रभु एक छे तमारो, अन्य त्राता नथि नाथ कोई मारो;
कृपासिंधु विना हाथ कोण सा'य, रहो नाथ मने सर्वदा सहाय. ५

स्रग्धरा.

शान्ताकारा कृपालु, प्रभुविण नहि को, अन्य आधार मारे;
आवुं द्वारे तमारे, अति दिन जन हुं, राखि विश्वास भारे;
आशा धारी तमारी, विनयथी विनवुं, विघ्न संताप कापो;
पापो कापो अमारां, प्रभु करि करुणा, सन्मती नित्य आपो. १
सर्वान्तर्यामि साचा, सुख वहु करता, सर्व संताप हर्ता;
सत्ता सर्वत्र धर्ता, प्रीति अति करिने, प्राणिना प्राणभर्ता;
भक्तीभावे भजुं हुं, भवभयहर रे, नीति सन्मार्ग आपो; पापो० २
सृष्टीशोभाप्रभाथी, प्रगट बहु किधी, पूर्ण शक्ती तमारी;
वस्तु मात्रे विचारी, विभु निज वळथी, धर्म दीधोज भारी;
व्यापो संपूर्णतायी, प्रभु त्रिभुवनमां, छे तमारा प्रतापो; पापो० ३
आकाशे शोभि रे'छे, अगणित गतिथी, गोळ सर्गोज सारा;
राशीचक्रे रवींदू, ग्रह उपग्रहथी, सर्व नक्षत्र तारा;
सानंदाश्चर्य पामुं, प्रभु निज कृतिनी, छे कलाओ अमापो; पापो० ४

अन्योन्याकर्षणोना अतिदृढ जडने, मुख्य तें धर्म आप्या;
भेदो सर्वे ऋतूना, करि निश दिनने, काल प्रत्येक स्थाप्या;
भासे चातुर्य पूरुं, नहि कदि नियमो–ने तमे तो उथापो; पापो० ५
जीवो संरक्षणार्थे, बहु बहु विधिथी, वस्तु सर्वे सृजावी;
सत्ता सर्वत्र व्यापी, प्रभु निज कृतिनो, हेतु दीधो बतावी;
एवा कारुण्यमूर्ती, शुभगुणयुतना, हुं करुं नित्य जापो; पापो० ६
सर्वे स्थाने विराजो, विभु सुखकर हे, विश्वमांगल्यकारी;
श्रद्धासद्भक्तिभावें, प्रणमि प्रभु करुं, शुद्ध अर्चा तमारी;
लज्जा राखो अमारी, मति विमळ करो, हे प्रभु मायत्रापो; पापो० ७
विद्यासद्बोधज्ञाना–मृतफलरसनां, नाथ पानो न कीधां;
कीधां कार्यो न रुडां, दिन वळहिनने, द्रव्य दानो न दीधां;
मानी आज्ञा न तारी, करि अवगणना, ते क्षमा नाथ आपो; पापो०८
विश्वाधीशा महेशा, नहि कदि मनमां लावशो भक्तदोषो;
पूरो वाञ्छा अमारी, जगपति जगमां, आपि संपूर्ण तोषो;
सर्वे तारी दयाथी, भवपति टळशे, दुष्ट संस्कार शापो; पापो० ९
विघ्नापत्ती विदारो, त्रिभुवनपति हे, प्रार्थना लक्ष धारो;
वृत्ती मारी सुधारो, विपति दुख समे. सन्निधे रे पधारो;
पाळी पूरी कृपाथी, प्रभु हरि हरशो, सर्व संसारतापो;
पापो कापो अमारां, प्रभु करि करुणा, सन्मती नित्य आपो. १०



७ उपेंद्रवज्रा.

नमुं नमुं अद्भूत कर्मकर्ता, नमुं नमुं सृष्टि समस्त भर्ता;
नमुं नमुं सर्वशरण्य नाथ, अनादि विश्वेश विभू अजात. १

अचिंत्य अव्यक्त परात्परेश, समस्तसाक्षी अति श्रेष्ठ ईश;
अनाद्यनंता विभु निर्विकार, गुणो तमारा प्रभु छे अपार. २

अतर्क्य आनंदमयस्वरुप, अखंड छो एक तमे अनूप;
अपार सत्ता सघळे दिसे छे, जिवो तमारा बळथी जिवे छे. ३

अनंत अंतर्गत वृत्ति जाणो, श्रुती तथा शास्त्र विषे प्रमाणो;
विचित्र लीला अति शक्ति तारी, कदी न पामे गति तो अमारी. ४

तमे अविद्या थकी पार गाजो, सदा जिवोनी समिप विराजो;
अदृश्य छे रूप प्रभु तमारुं, जुवो तथापी सहु कृत्य मारुं. ५

नहीं तमे छो सुर दैत्य रूपे, नहीं पुरुषे नहि नारीरूपे;
स्वतंत्र सर्वादि विकारहीन, नथी थता नाथ उपाधिलीन. ६

तयां नथी कोई तमारि माया, अतर्क्य वेदश्रुतिमां गवाया;
समान वृत्ती धरिने रहोछो, जिवो प्रते नित्य कृपा करोछो. ७

अपाद छो तोय गती करोछो, करो नथी तोय करे ग्रहोछो;
अचक्षु छो तोय तमे जुओछो, अकर्ण छो तोय तमे सुणोछो. ८

तमे स्वइच्छावळसुक्रियानी, धरो प्रभु शक्ति प्रपूर्णतानी;
स्वयंभु सर्वादि स्वयंप्रकाश, करो तमे पाप सहू विनाश. ९

क्रिया जिवोनी तमने विदीत, नहीं अमारे वदवी विहीत;
समस्तसाक्षी प्रभु तुं परेश, पिता तने शुं कहुं हुं विशेष. १०
कृपानिधे हे करुणेश्वरा हे, दयानिधे हे परमेश्वरा हे;
नमी नमीने करिये प्रणाम, करो अमारा परिपूर्ण काम. ११

भुजंगी.

दयासिंधुदेवा विनंती अमारी, दयाथी दिले नाथ लेशो विचारी;
खरुं हीत कल्याण जीवोतणुं जे, जगाधीश जाणो तमे पूर्ण रीते. १
शिशू लाडिने मागणी सर्व मागे, तथापी पिता जे घटे तेज आपे;
कृपालु तमे सर्वथी श्रेष्ठ सारा, तमे पूरशो योग्य अर्थो अमारा. २

गायन.

पद.

भैरव तथा सर्व रागमां गवाय. चोताल.

तमे सर्वथी महान, आपो रुडुं नीतिज्ञान,
आश्रय आधार सत्य राखिये तमारो;
प्रभू सत्वगुणमय, करिये अति विनय,
अल्पज्ञ जीवोनी स्थिति, मनमां विचारो. तमे०
अमे तो अशक्त प्राणी, वधु शुं वदिये वाणी,

क्षमा विना नाथ नथी निर्वाह अमारो;
पाप कर्म परहरो, विघ्न सर्व दूर करो,
मंद छे अमारी मति, प्रभु ते सुधारो. तमे०

पद.

काफी. त्रिताल.

प्रभु अपराध क्षमा करो मारो.
निंदित कर्मो जे में कीधां, ते प्रभु सर्व विसारो. प्रभु० १
शरण रही प्रभु चरणे वंदु, भवजल पार उतारो. प्रभु० २
दास तणुं रक्षण करवानो, छे प्रभु धर्म तमारो. प्रभु० ३
कृपाधना कृपादृष्टि करीने, मति प्रभु मारी सुधारो. प्रभु० ४
करद्वय जोडी विनति करुंछुं, संकट सर्व निवारो. प्रभु० ५

पद.

खमाच झिंझो, एकताल.

(चाल, मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरा न कोइ.)

दीननो दयाल छोडी, कोने शरण जाउं. दीननो०
माततात मारो प्रभु, चरण प्रते धाउं;
पामिने प्रसाद पूर्ण, कृतकृतार्थ थाउं. दीननो०
नीतिभक्तिरूपी पुण्यतीर्थमां हुं नाहुं;
परम इष्ट ब्रह्मनी, हुं स्तुति गुण गाउं. दीननो०
प्रभु कृपानिधाननी हुं पूर्ण कृपा चाहुं;
संकट समय नाथ, पल्लव हुं साहुं. दीननो० ३

नमी नमी परात्परा हुं, शरण तारे आवुं;
प्रेमपुष्पअंजलि, प्रभुपदे वधावुं. दीननो० ४

आरति.

जयदेव जयदेव, जयमंगलदाता, जयमंगलदाता;
विश्व तणा विभु धाता (२), भक्तजनत्राता. जयदेव० ॥१॥
करुणासिंधु कृपाल कृतियो नव जोशो (२);
अल्पमती जीवोना (२), अतिशय छे दोषो. जयदेव० ॥२॥
सच्चिद्घन आनंद, त्रिभुवनना स्वामी (२);
सर्वज्ञांतर्यामी (२), सचराचरगामी. जयदेव० ॥३॥
संकटसमये नाथ, प्रभु आवो वारे (२);
भय सर्व संहारो (२), शरण अमे तारे. जयदेव० ॥४॥
अंतर्भावथि नाथ, करुं तारी सेवा (२);
दुरित कृतीओ मारी (२), क्षमा करो देवा. जयदेव० ॥५॥
अभिवंदन भगवंत, करुं निशदिन तमने (२);
कृपा करीने आपो (२), प्रभु सन्मति अमने. जयदेव० ॥६॥
सदाचार ए मुख्य, छे भक्ति तारी (२);
सदा तमारे चरणे (२), वृत्तिं रहो मारी. जयदेव० ॥७॥
जगदीश्वर जगतात, तापत्रय हरशो (२);
मनवाञ्छित प्रभु मारां (२), सकल पूर्ण करशो. जयदेव० ॥८॥



अंक ३ जो.

ललित.

जगतनाथरे, नम्र थै अमे, विनयभावथी, वंदिये तने;
श्रवण आ करो, स्वल्प प्रार्थना, प्रभु कृपानिधे, रे दयाघना. १
विषय भोगमां राखिछे रति, नव कदी अमे, भक्ति तो किधी;
शरण आवीने, मागिये क्षमा, प्रभु कृपानिधे, रे दयाघना. २
सबल शक्ति छे, ताहरी प्रभु, कदी कळी शकातीं नथीं विभु;
सकल कर्मना, साक्षि चिद्घना, प्रभु कृपानिधे, रे दयाघना. ३
ग्रहगणो तणा, गोल जे दिसे, भ्रमणशक्ति छे, सर्वने विषे;
प्रभु चमत्कृती-मां नथी मणा, प्रभु कृपानिधे, रे दयाघना. ४
जगतसृष्टिमां, चातुरी अति, नियमपूर्वके, छे बधी कृति;
जिव प्रते किधी, छे बहु दया, प्रभु कृपानिधे, रे दयाघना. ५
मनुपने दिधी, श्रेष्ठ सर्वथी, सत असत्यना, ज्ञाननी मति;
दुर करो प्रभु, दुष्ट वासना, प्रभु कृपानिधे, रे दयाघना. ६
सकल प्राणिना, मात तातरे, विदित छे तने, सर्व वातरे;
तदपि सांभळो, दीन याचना, प्रभु कृपानिधे, रे दयाघना. ७
शमदमादिना, नीम ना लिधा, जनहितार्थेरे, कार्य ना किधां;
निज सुखार्थमां, राखि भावना, प्रभु कृपानिधे, रे दयाघना. ८

अनुग्रहो सदा, सर्वथा करो, विनति दासनी, लक्षमां धरो;
नव जुओ तमे, दोष दीननां, प्रभु कृपानिधे, रे दयाघना. ९
विपति कालमां, धैर्य आपशो, प्रभु कृपा करी, कष्ट कापशो;
तुज दया विना, सर्व छे वृथा, प्रभु कृपानिधे, रे दयाघना. १०
पतितपावना, प्राणना पति, परम प्रेममयी, प्रेर सन्मति;
सगुण ब्रह्मने, नित्य वंदना, प्रभु कृपानिधे, रे दयाघना. ११
जगहितार्थनां, कार्य जो थशे, प्रभु प्रसन्न तो, ते थकी थशे;
नव तने गमे, ढोंग गर्वना, प्रभु कृपानिधे, रे दयाघना. १२
विकट जाल छे, विश्वमां घणी, तुज विना नथी, अन्यरे धणी;
सघळि टाळशो, रे विटंबना, प्रभु कृपानिधे, रे दयाघना. १३
दिनदयाल रे, दास तारशो, परम भक्तनां कार्य सारशो;
दुरित कापशो, सर्व जन्मनां, प्रभु कृपानिधे, रे दयाघना. १४
चपल छे घणा, धर्म चित्तना, विकल वेग छे, इंद्रियो तणा;
वश नहीं थशे, रे दयाविना, प्रभु कृपानिधे, रे दयाघना. १५
जगतमां रही, नीति पाळिये, सुकृतमां सदा, काल काढिये;
अति वरिष्ठ छे, ए उपासना, प्रभु कृपानिधे, रे दयाघना. १६
प्रभु तने परा-भक्ति तो गमे, तुज पदे रती, राखिये अमे;
सकल व्यर्थ छे, बाह्य साधना, प्रभु कृपानिधे, रे दयाघना. १७
नियम ताहरा, नित्य मानिये, प्रभु प्रसाद तो, पूर्ण पामिये;
नरकनी नहीं, थाय यातना, प्रभु कृपानिधे, रे दयाघना. १८

तुज कृपाथकी, बोलिये अमे, तुज कृपाथकी, चालिये अमे;
तुज कृपाथकी थाय कामना, प्रभु कृपानिधे, रे दयाघना. १९

नवळि वाणिये, जे कह्युं अमे, प्रभु स्विकारी ल्यो, सर्व ते तमे;
सतत राखशो, प्रीतिभावना, प्रभु कृपानिधे, रे दयाघना. २०

समिप आवियां, प्राणि पामरो, शरण राखिने, रक्षणो करो;
दुरित दुर्गुणो, छे अती घणा, प्रभु कृपानिधे, रे दयाघना. २१

कर प्रसारिने, वंदिये अमे, करगरी कही-ए खरुं तने;
प्रभु शरण्य छो, सर्व जीवना, प्रभु कृपानिधे, रे दयाघना. २२

दिन प्रते दया-दृष्टि राखशो, दुरित कर्मने, कापि नांखशो;
प्रभु अमारि छे, एज वाञ्छना, प्रभु कृपानिधे, रे दयाघना. २३

हे परमदयालु परमेश्वर ! आ संसारयात्रामां अमारां कर्तव्य कर्म करवामां अमने घणी तरेहनी अडचणो नडे छे. अमारुं मन भ्रमित थइ आडे मार्गे घसडाइ जाय छे. तारी सहायता विना ए दूर थाय तेम नथी, माटे आ अमारी अल्प प्रार्थना श्रवण करी अमारुं मन निर्मल कर.

बहारना बोलो अने देखावथी तुं कदी छेतरातो नथी. अंतःकरणमां जे जे खोटा विचारो थाय छे ते तुं अंतर्यामि जाणे छे. अने खोटां कर्म कर्यां होय तेज प्रमाणे तेमने तुं गणे छे. दीन शब्दोथी तारी प्रार्थना करी क्षमा मागीए छीए, अने नीति तथा

सदाचरणमां रहेवानुं कहीए छीए, परंतु मनमां कोइने दगो देवाना, कोइनो विश्वासघात करवाना, कोइनी हिंसा करवाना, कोइनो माल छीनवी लेवाना, के बीजा कोइ पाप कर्मना विचार चालता होय; तो सघळी प्रार्थना निष्फल जाय, अने तारी वमणी शिक्षाने पात्र थइए ए निश्चय छे. अंतःकरण शुद्ध थया वगर वहारना बोलथी तुं न्यायी प्रभु अमारां पापनी कदी क्षमा करनार नथी. माटे हे करुणासिंधु अमे एकाग्रचित्तथी अने खरा दिलथी तारी प्रार्थना करीए छीए, के अमारुं अंतःकरण प्रकाशमान् कर, अने अमने खरो रस्तो देखाड. एकाग्रचित्तथी अने खरा दिलथी तारी प्रार्थना करीए, अने पाप कर्म मनमां पण न आणीए, तोज अमारी मुक्ति छे. थएला कुकृत्यने वास्ते पश्चात्ताप करी माफी माग्या पछी वारंवार अमे एवांज कृत्य करवामां प्रवृत्त रहीए तो पछी तारी क्षमानी आशा राखीए ए फोगट छे. माटे हे सर्वशक्तिमान परमेश्वर ! वारंवार पाप कर्म करतां अटकवानी अमने प्रेरणा कर, अने पाप कर्मना विचार पण मनमां न आवे एवी मति आप.

ज्यारे अमारुं मन तारा विचारमां तल्लीन थई जाय छे, त्यारे आ सृष्टिना दरेक चमत्कारमां तारी अथाग शक्ति अने डहापण जणाया विना रहेतां नथी. ते वखते तारुं तेजोमय स्वरूप अने तारा उपकार आपोआप देखाई आवे छे. तारा नियमो अने इच्छानी छाप अमारा अंतःकरणमां एवी तो वागे छे, अने तेनी असर एटली तो थाय छे के, तेथी उलटुं चालवानो धिकार आ-

ज्या विना रहेतो नथी; पण अमे आ संसारनी मायानां काम करीए छीए त्यारे, अमारा अशुभ स्वभावने लीधे, अमारा मनोविकारने लीधे, ए असर ओछी थइ जाय छे. लोभ, मोह, काम, प्रबळ थई विवेकबुद्धिने दाबी नांखे छे, अमारां ज्ञानचक्षु फुटी जाय छे; अमे अंध थइ मनोविकार दोरी जाय ते रस्ते चढीए छीए, अने घणी जाळोमां फसाई पडीए छीएं. आवी वखते हे जग-त्राता परमेश्वर! तारी मदद वगर अमे बहु अथडाई पडीए छीए. मनोविकारने नरम पाडी विवेकबुद्धिने प्रबळ करवाने तारा विना अमारे कोईनो आश्रय नथी. माटे हे कृपाळु सर्वशक्तिमान् परमेश्वर! खरा अंतःकरणथी अने एक निष्ठाथी अमे तारी प्रार्थना करीए छीए के तुं अमने खरे रस्ते चढाव; स्वार्थ, लोभ, काम वगेरे अनीतिथी अमारा अंतःकरणने दूर राख; द्वेष, अभिमान, लोभ, वगेरेने लीधे अमने अने अमारा जातिभाइयोने पोतानो खरो धर्म बजाववामां जे हरकतो पडे छे ते तुं दूर कर; निरंतर तारी इच्छा अने तारा नियमो प्रमाणे चालवाने अमने मदद कर; अमारां पाप अने संकट दूर कर, अने तारी इच्छाविरुद्ध होय एवी अमारी सघळी मनकामनाओ अने कृत्योनो समूळगो नाश कर. तथास्तु.

दिंहि ३.

जेनि शक्ति सकल विश्वविषे व्यापि, नियम जेनो नवे को सके उथापी;
महा ऋषिमुनि सहु स्तुति करी विराम्या पार तेनो परिपूर्ण को न पाम्या.

जेनि इच्छा थकी जगततंत्र चाले, दयादृष्टि करी सृष्टि सकळ पाळे;
सदा तेनुं शुभ स्तवन भजन गाउं, परम प्रेम थकी चरण शरण जाऊं. २

जेनी सत्ता थकि सकल कार्य थाय, कला जेनी नहि को थकी कळाय;
जेनि प्रीति प्राणि मात्रपर जणाय, तेनि करुणा थकि पाप सकल जाय. ३

पुण्यराशि परम देव निर्विकार, नित्य निर्मल निःसर्ग निराकार;
दया भावतणो नाथ नथी पार, चरणपंकजे हुं वंदुं वारवार. ४

मने तमविण प्रभु अन्य कोण पाळे, पाप ताप कष्ट अन्य कोण टाळे;
सुणी नाथ तमे दासना विलाप, छेदि नांखो प्रभु षड्रिपु संताप. ५

स्रग्धरा.

विश्वाधारा अपारा, अति विनय थकी, वंदुं पादारविंदे;
प्रेरो सद्धर्म नित्ये, नहि कदि फसुं हुं, वासना दुष्ट छंदे;
संसाराब्धिप्रवाहे, प्रभु कर धरिने, धर्मनौकाथि तारो;
वंदुं हुं विश्वनाथा, विनयथी तमने, कष्ट सर्वे निवारो. १

. . अंत.स्थ वार्ता, वधु प्रभु तमने, शुं करुं हुं विलापो;

विश्वासे हुं रहुं छुं, भवपति तुजने, सर्वदा शान्ति आपो;
आराधुं एक चित्ते, प्रभु तुज हृदये, भक्ति श्रद्धा वधारो; वंदुं. २

कृत्यो कूडां करुंछुं, अविहित अवळे मार्ग हुं संचरुं छुं;
तोए विश्वास राखी, प्रभु शुभ पदनुं, ध्यान चित्ते धरुंछुं;
जांणी मारी दयारे, त्वरित प्रभु करो, नाश सर्वे विकारो; वंदुं. ३

दोषो मारा घणा छे, अगणित दुरितो, रे बहु क्रूर गूणो;
मागुं ते शी क्षमारे, नबळि कृति तणो, एक खूणो न ऊणो;
प्रीतिभावे निभावो, प्रति दिन प्रभुना, मानुंछुं ऊपकारो; वंदुं. ४

तारो तारो प्रभु हे, कर ग्रहि अमने, विश्वासिधूथी तारो;
बीजो एके न आरो, तुजविण विभूरे, विघ्न सर्वे विदारो;
साचो विश्वास तारो, दिनजन तुजने, चित्तथी ना विसारो; वंदुं. ५

भूलुं संसारमाया, थकि भवपति हुं, भ्रान्तिमां पूर्ण झूलुं;
साचा मानी प्रपंचो, अतिशय मदथी, मूर्ख हुं खालि फूलुं;
साष्टांगे पाय लागी, प्रणिपत करुंछुं, वृत्ति मारी सुधारो; वंदुं. ६

शी शी शोभा वखाणुं, विभु तुज कृतिनी, शक्ति छेरे अपार;
मोटा मोटा महन्तो, अति श्रम करिने, थाकि पाम्या न पार;
अज्ञानी प्राणि हुं ते, तुज गुण महिमा-ना करुं शुं विचारो; वंदुं. ७

अंतर्यामी अनादी, त्रिभुवनपतिने, श्रेष्ठ संपूज्य जाणुं;
एकान्ते एकचित्ते, अप्रतिम प्रभुनी, शुद्ध भक्ती वखाणुं;
श्रद्धाथी प्रार्थना जे, करुं प्रभु तमने, लक्षमां सर्व धारो; वंदुं. ८

प्रातर्मध्याह्न संध्या, अति शुभ समये, स्वामिने पाय लागुं;
वाञ्छा पूरो अमारी, करद्वय पसरी, नित्य प्रत्ये हुं मागुं;
मागुं पापक्षमा रे, क्षण प्रतिक्षण हुं, दुःख मारां विदारो;वंदुं. ९

आपो चारे¹ पदार्थो, प्रभु करि करुणा, पुत्र संतान पाळो;
पाळो सर्वे प्रजाने, सहु दिन जननां दुःख दारिद्र्य टाळो;
धारुं आधार तारो, विनति करुं प्रभु, वाणि मारी स्विकारो; वंदुं. १०

वसंततिलका.

जेने न जाणि सकशे मन इंद्रि धर्म,
जेने न पामि सकशे गुण देह कर्म;
एवा परात्पर प्रभु अति शक्तिमान,
पादारविंद नमि नित्य धरुं हुं ध्यान. १

रे पूर्ण ईश्वर प्रभु निजशक्तियोगे,
उत्पन्न विश्व करि ते थकि छे वियोगे,
जीवो तणी गति कृती चितमां धरे छे,
सर्वोनुं रक्षण कृपा थकि ते करे छे. २

जेना बळे आखिल विश्व विराजमान,
जेणे अनेक रचना रचि छे महान;
धर्म, अर्थ, काम अने मोक्ष ए चार.

ते एक ब्रह्म अविकार अनादि देव,
पामी सदा शरण तेनि करुं हुं सेव. ३

जेनो महान महिमा नहि कोइ पाम्या,
तर्कों करी ऋषि मुनी मनथी विराम्या;
ते एक नित्य अज ईश्वर लोकपाल,
बुद्धिप्रकाशक प्रभू नमुं सर्व काल. ४

छो नित्य मुक्त अति शुद्ध विशुद्ध ईश,
सर्वेथि पार परिपूर्ण प्रभु अधीश;
जीवो तणी कृति तमे सघळी निहाळो,
सत्ये रही पृथक सृष्टि समस्त पाळो. ५

आ मृत्युलोक महिं छो प्रभु सत्य त्राता,
स्वर्गापवर्गसुखसन्मतिशान्तिदाता;
भक्तो भने प्रभु करो करुणा कृपाओ,
माङ्गल्य कार्य करवा अति शीघ्र थाओ. ६

विश्वेश भक्त जनना भवपाश कापो,
सामीप्यमुक्तिपदनो प्रभु लाभ आपो;
अंतःस्थ वृत्ति जिवनी तमने विदीत,
पादारविंद प्रणमी धरुं ध्यान नित्य. ७

हे दीनवत्सल दयानिधि दीनबंधु,
कारुण्यमूर्त्ति तमने स्मारि नित्य वंदुं;

वंदी करु स्मरण हुं उपकार तारा,
त्राता तमे भव विषे प्रभु सत्य मारा. ८

कोट्यावधि प्रतिदिने अपराध थाय,
मागुं क्षमा प्रभू रहो अमने सहाय;
आधार आश्रय कृपानिधि सत्य तारो,
संसारसिंधुभयथी प्रभु नाथ तारो. ९

एकाग्र चित्त थकि ध्यान धरुं तमारुं,
कल्याण मंगल करो सघळुं अमारुं;
साष्टांग नाथ तमने करिये प्रणाम,
पूरा करो प्रभू तमे शुभ सर्व काम. १०

मालिनी.

परम प्रभु तमारी, छे कलाओ अपार,
यश गुण महिमाना, कोइ पाम्या न पार;
स्तवन करि अमे आ, प्रार्थनाओ उचारी,
विहित विभू हशे जे, तेज लेशो स्विकारी. १

शरण रहि तमारे, वंदिये वारवार,
प्रभु अति करुणाना, मानिये ऊपकार;

नहि नहि नहि कोई, नाथ बेली अमारो,
कर ग्रहि अमने आ, विश्वसिंधुथि तारो.

गायन.

पद.

भैरव तथा सर्व रागमां गवाय. चोताल.

प्रभु छो अति दयाल, दीनजनप्रतिपाल,
शरणे तमारे अमे, भवसिंधु तारो;
करो सर्व रूडां काज, सेवकनी राखो लाज,
अवगुण अपराध, लक्षमां न धारो. प्रभु० १
भक्तनो समाज आज, मळीने महाधिराज,
विनति करिये प्रभु, ते तमे स्वीकारो;
कृपा करी कर ग्रहो, अवगुण नव लहो,
चित्तना शमावी क्लेश, शान्तिने वधारो. प्रभु० २

पद.

बिहाग. त्रिताल.

(निरधनको धन राम, ए चाल.)

भवपति संकट सर्व हरो.
अपराधो अतिशय में कीधा, अनुग्रह पूर्ण करो. भवपति० १

अनन्य भावथी राखुं तमारो, आश्रय एक खरो. भवपति० २
कर जोडी हुं विनंति करुं छुं, प्रभु ते चित्त धरो. भवपति० ३
करुणादृष्टिथी मुज हृदये, प्रेमल भक्ति भरो. भवपति० ४

पद.

बिहाग. ताल, दीपचंदी.

शरणागतने निभावो, प्रभु सर्व दोष शमावो;
कृतियो न लक्षमां लावो, प्रभु सर्व दोष शमावो.
विनय थकी विनंति अमे करिये, सन्मति नित्य वतावो. प्रभु सर्व० १
जगदीश्वर जगवंद्य दयाला, दुःख संकटथी बचावो. प्रभु सर्व० २
दुष्ट विकारो तणी जालोमां, विभु मत्र अमने फसावो. प्रभु सर्व० ३
सदा सदाचरणमां अमारी, वृत्ति विशेष रखावो. प्रभु सर्व० ४
अवलंबन आधार तमारो, सद्धर्म कर्म करावो. प्रभु सर्व० ५
प्रतिपालन प्रभु नित्य करो छो, ते उपकार स्मरावो. प्रभु सर्व० ६
कृपायना कर ग्रहीने अमारां, किल्विष सर्व हठावो. प्रभु सर्व० ७
भक्ति थकी भगवंत अमारुं, चित्त कदी न डगावो. प्रभु सर्व० ८
क्षमा करी अपराध अमारा, उत्तम मार्गे चढावो. प्रभु सर्व० ९

आरति.

जयदेव जयदेव, जय करुणासिंधु, जय करुणासिंधु;
करजोडी प्रभु तारे (२), चरणे नित्य वंदुं. जयदेव० ॥१॥
तत् सत् ब्रह्म महेश, मुक्तितणा दाता (२);
व्यापि रह्यो सत्तार्थी (२), विभु सविता धाता. जयदेव० ॥२॥
प्रात समय परमेश, प्रभुपदने वंदुं (२);
सत्कर्मो करवानो (२), विधि हुं आरंभु. जयदेव० ॥३॥
सायंकाल महेश, सकल क्रिया मारी (२);
तुज चरणे अर्पीने (२), मागुं कृपा तारी. जयदेव० ॥४॥
सर्वात्मा सर्वेश, सुखशांति आपो (२);
कृपा करी करुणानिधि (२), कष्ट सकल कापो. जयदेव० ॥५॥
कीधा अति उपकार, वळि नित्ये करशो (२);
दोष दयानिधि मारा (२), चितमां नव धरशो. जयदेव० ॥६॥
अवलंबन आधार, सत्य प्रभु तारो (२);
शरणागत सेवकने (२), भव थकि उद्धारो. जयदेव० ॥७॥
अभिवंदन करि नाथ, ध्यान चित्ते धरिये (२);
प्रेमतणी पुष्पांजलि (२), चरणार्पण करिये. जयदेव० ॥८॥



अंक ४ थो.

भुजंगी.

अहो विश्वना देव सर्वज्ञ सत्य, किधुं छे तमे आ बधु सृष्टिकृत्य;
त्रिलोके तमारा प्रकाशे प्रतापो, कृपासागरा सन्मती नित्य आपो. १
अतीशे तमारुं प्रभू छे महत्त्व, सृज्यां छे महाशक्तिथी सर्व तत्त्व;
भुमी व्योम वायु अने तेज आपो, कृपासागरा सन्मती नित्य आपो. २
तमारी स्तुती वेद शास्त्रे वखाणी, विरामी मुनीओ तणी वृत्तिवाणी;
जगाधीश तारा गुणोछे अमापो, कृपासागरा सन्मती नित्य आपो. ३
पराभक्तिथी प्रार्थना वंदनाओ, कृपार्थी स्विकारी तमे हाथ साहो;
करो नाथ मारां क्षमा सर्व पापो, कृपासागरा सन्मती नित्य आपो. ४
अमे मंदबुद्धी अती अल्पप्राणी, कृतीओ नथी तुं थकीरे अजाणी;
विना तुं सुणे को अमारा विलापो, कृपासागरा सन्मती नित्य आपो. ५
कृपानाथ दोषो न जोशो कदापि, अमे पाप कर्मो करीए तथापि;
अमारां बधां दुःख दारिद्र्य कापो, कृपासागरा सन्मती नित्य आपो. ६
महाकष्टमां धैर्य धाता धरावो, सदा सर्वदा कार्य रूडां करावो;
निवारो त्रिवीधी तणा सर्व तापो, कृपासागरा सन्मती नित्य आपो. ७
तमे छो प्रभू अन्नदाता अमारा, तमे छो प्रभू सर्वथी श्रेष्ठ सारा;
तमे छो अमारा प्रभू मायबापो, कृपासागरा सन्मती नित्य आपो. ८
सदा वंदना आपने छे अमारी, तमे प्रेमथी ल्यो विनंती स्विकारी;
सदा दासने सद्गती नीति आपो, कृपासागरा सन्मती नित्य आपो. ९

हे जगदीश्वर! तारूं स्वरूप माराथी कळी शकातुं नथी. तुं महाशक्तिमान्, परमपवित्र, अने दयावान् छुं. आ वेळा हुं तने नमस्कार करी शांत मनथी तारा उपकारनुं स्मरण मनमां राखी तारी प्रार्थना करुं छुं. हुं केवल रंक, अशक्त, पापी प्राणी छुं, संसारी प्रपंच, तथा विकारोना पाशमां गुंथायलो छुं; तारी शुद्ध उपासना माराथी थई शकती नथी. सवार थयुं, सांज पडी, ए रीते घटमाल चाली जाय छे. माराथी तने सारुं लागे एवुं कांइ कार्य थतुं नथी, माटे हे विश्वोद्धारक, विश्वपालक पिता! तारा आगळ केवळ लज्जायमान थई तने साष्टांग दंडवत् वंदन करीने कहुं छुं के, तुं मारा अपराध उपर विचार नहि करतां मारुं नित्य पालन पोषण तथा रक्षण करे छे, ए तारो मारा उपर घणो उपकार तथा प्रीतिभाव छे. मारां पातक जे क्षमा करवा जेवां हशे ते क्षमा करीश, ए तारा दयालु स्वभावनो मने पूरो विश्वास छे. जे पाप में जाणी जोइने कीधां हशे ते तुं क्षमा करवानो नथी एवो मने भय लागे छे. पण हे कृपालु प्रभु! तुं मारा शरीरनी तथा मननी नयळाइ जाणे छे; ए नयळाइने लीधे थयेलो दोष तुं क्षमा करीश, अने ते फरीथी न थाय एवी मने बुद्धि आपीश.

मने खरेखरो विश्वास छे के, तारी खरी भक्ति तथा शुद्ध उपासना उपर मारो लक्ष रहेशे, अने नित्य तारी प्रार्थना हुं करीश तो माराथी कुकर्मथी दूर रहेवाशे; कारण के, तारी भक्ति तथा उपासनामांज ए फल रहेलुं छे. माटे हे दीनदयाल परमेश्वर! तने

महा समर्थ अने सर्व प्राणीनो तारनार समजीने, खरा प्रेमथी तारे चरणे मारुं मस्तक नमावी प्रार्थना करुं छुं, के दुष्ट नठारां कर्मोथी मारुं मन खसेडी तारी भक्ति तथा उपासना करुं, अने सदाचरणथी चालुं, एवी मने तुं सदा चेतवणी आपी मारुं रक्षण कर. मारुं कर्तव्य कर्म करवामां गमे तेवी विपत्ति के दुःख पडे तो ते सहन करवानी मने शक्ति, उत्साह, अने धैर्य आपजे.

हे परम कृपालु ईश्वर ! तुं सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान्, तथा सर्वनो नियंता छुं. तारा प्रकाशथी आ सर्व जगत् प्रकाशमान छे. तारुं रुप हुं मारां चक्षुवडे देखी शकतो नथी; पण आ सृष्टिनी सुंदर रचना, तथा आकाशमां ग्रह, ताराओनी शोभा तथा तेना नियमो जोवाथी मारा मनमां दृढ निश्चय थाय छे के तुं आ जगतनो कर्ता छुं, तारां सरजेलां प्राणीओ उपर करुणा करवी ए तारो स्वाभाविक गुण छे. तें मने विवेकबुद्धि आपी छे ते वडे विचार करुं छुं तो मने एज प्रेरणा थाय छे के तें आ संसारमां मने तारी भक्ति तथा मारा स्वजाति मनुष्यप्राणियो उपर प्रीति राखवाने उत्पन्न कर्यो छे अने ए माटे मारुं मुख्य काम करवामां हुं आलस्य करीश तो हुं तारो खरो सेवक गणाइश नहिं, तथा तारी प्रीतिने पात्र थइश नहि. तारी प्रीति मेळववाने माटे मारे तारी इच्छाने अवश्य आधीन रहेवुं जोइये, ने तेम न रहुं तो मने आ लोकमां तथा परलोकमां दुःख थाय तेमां तारो वांक काढवानो नथी. मारुं कर्म मारे भोगववुंज जोइये. आ विचार मारा मनमां दृढ

थवाने तारी सहायतानी जरुर छे, माटे हे करुणामय प्रभु ! तने वारंवार प्रणाम करीने कहुंछुं के कृपादृष्टि करीने मने एवी सुबुद्धि आप के हुं कोइ उपर वैरभाव राखुं नहि, बीजानी अदेखाइ करुं नहिं, कोइनुं द्रव्य लेइ लउं नहिं, कोइनो घात करुं नहिं, मारा मनुष्य भाईओ उपर समान भाव राखी तेओने सुखी करवामां तन मन अने धनथी श्रम करुं, अने सदाकाल नीतिना नियम पाळुं, आ मारी विनंति हे परमकृपाळु पिता ! तुं स्वीकारजे.

शांतिः शांतिः शांतिः

दिंडि ४.

गाउं आनंदे शुभ तमारुं नाम, तमे सरज्युं आ सकल विश्व धाम;
नहीं पामे प्रभुनी दया विराम, करुं तमने शतवार हुं प्रणाम. १
अकल कलना नव को थकी कळाय, माप प्रभुनुं नव को थकी मपाय;
महाराज तमे विश्वमां विराजो, अतुल शक्ति थकी सृष्टि विषे गाजो. २
बेउ हाथ जोडी पाय तने लागुं, क्षमा पाप कर्मनी हुं सदा मागुं;
दोष कोश दयादृष्टिथी शमावो, कृपावारि तमे अविरत वरसावो. ३
तमे सच्चिद्घन स्वामि छो समर्थ, पुरो सर्व रुडा भक्तना मनोर्थ;
ध्यान मंगल मुज हृदय विषे धारुं, करो नाथ परित्राण सदा मारुं. ४
विनय भाव थकी वंदुं विश्वपाल, प्रणमि अर्पुं परम प्रेम पुष्प माळ;
नम्र विनति मारि सर्व मानि लेशो, जगाधीश शुभाशीष सदा देशो. ५

ललित.

सकल विश्वना, नायरे तमे, शरण आविने वंदिये अमे;
मनुप अल्प ते, शुं करे स्तुति, गहन तारि छे, रे प्रभू गति. १
नियम तें प्रभू, जे किधा हशे, तदनुसार तो, ते क्रिया थशे;
नहिं कदी फरे, एकरे रती, गहन तारि छे, रे प्रभू गति. २
जिव जनो घणा, यत्नने करे, तदपि आदर्युं, तारं ना फरे;
अकल छे प्रभू, तारि तो कृति, गहन तारि छे, रे प्रभू गति. ३
नमि नमि अमे, विश्वनाथने, विनविये सदा, माततातने;
प्रभु कला कळा-ती नकी नथी, गहन तारि छे, रे प्रभू गति ४
क्षणज मात्रमां, शुं थशे अहिं, दिन अमे जिवो, जाणिये नहिं;
अति तमारी छे, रे चमत्कृति गहन तारि छे, रे प्रभू गति. ५
प्रभु मनोरथो, धारिये घणा, नहिं पुरा थशे, रे कृपा विना;
अनुग्रहो करो, राखिने प्रिति, गहन तारि छे, रे प्रभू गति. ६
नियम नाथ छे, सत्य ताहरो, जनम जे थयो, जाय तें खरो;
सवल सत्य छो, सर्वना पति, गहन तारि छे, रे प्रभू गति. ७
अवसरे तमे, आवि सन्निधे, शुभ सहाय तो गे' दयानिधे;
पतितपावना, प्रेर सन्मति, गहन तारि छे, रे प्रभू गति. ८
विकट पंथ छे, विश्वमां घणो, सकल आशरो, छे दया तणो;
प्रभुपदे सदा, राखिये रति, गहन तारि छे, रे प्रभू गति. ९
विपयभोगमां, लिप्त ना थवुं, सतत शुद्ध सन्–मार्गमां जवुं;
दुर करो दया–नाथ दुर्मति, गहन तारि छे, रे प्रभू गति. १०

प्रभु तने गमे, तेज थाय छे, जिवतणा श्रमो, व्यर्थ जाय छे;
दिन प्रते करो, रे दया अति, गहन तारि छे, रे प्रभू गति. ११
दृढजनो कदी, धैर्य ना मुके, जनहितार्थनां, कार्य ना चुके;
तुज कृपा थकी, थाय ना क्षति, गहन तारि छे, रे प्रभू गति. १२
नियम ताहरा, जे विधे हशे, सुख दुखो क्रमे, प्राप्त तो थशे;
विपत्ति संकटे, द्यो तमे धृति, गहन तारि छे, रे प्रभू गति. १३
धन जुवानीनो, व्यर्थ गर्व छे, तुज कृपा विषे, अर्थ सर्व छे;
शरण राखजो, आपि सद्गति, गहन तारि छे, रे प्रभू गति. १४
भणत प्राणियो, पामरो अमे, हृदयमां सदा, चिंतिये तने;
प्रभु सुणो तमे, नम्र वीनति, गहन तारि छे, रे प्रभु गति. १५

वसंततिलका.

हे ब्रह्म ईश जगदीश जगन्निवास,
पादारविंद नमि नाथ तने हुं दास;
नित्ये निरंतर करुं स्तुति प्रार्थनाओ,
हे विश्वनाथ प्रभु नित्य प्रसन्न थाओ. १

तारा अपार महिमा नहि कोई पामे,
वाणी सहीत मनवेग सहू विरामे;
तारा अभेद्य पटमां नहि कल्पनाओ. हे विश्वनाथ० २

तारी कृपा थकि वदे विभु मूक वाणी,
तारी कृपाथि गिरि पंगु चढेज प्राणी;
तारी कृपाथि जगमां सघळी लिलाओ. हे विश्वनाथ० ३
मारां कुकर्म सघळां तमने विदीत,
विस्तार नाथ करवो नहि रे घटीत;
कारुण्यभावथि करी करुणा कृपाओ. हे विश्वनाथ० ४
लज्जा रहीज सघळी प्रभु हाथ तारे,
मारो निभाव करवो नहि नाथ भारे;
तारा प्रसादबलथी भयना अभावो. हे विश्वनाथ० ५
तुं नित्य सत्य अज ईश्वर सृष्टिपाळ,
बुद्धिप्रकाशक तने नमुं सर्व काल;
टाळो कृपा करि वधी दुरवासनाओ. हे विश्वनाथ० ६
जे जे अहीं बहु सुखो प्रभु प्राप्त थाय,
ते सत्य तारि सघळी करुणा जणाय;
सद्भक्तनी पुरि करो प्रभु वाञ्छनाओ. हे विश्वनाथ० ७
संसारमां सकल मंगल क्षेमदाता,
तारा विना नहिं अहीं प्रभु अन्य त्राता;
भक्तो तणी दुर करो दुख आपदाओ. हे विश्वनाथ० ८
सृष्टिस्थितिप्रलयकारक लोकनाथ,
अल्पज्ञ प्राणि जनना ग्रहि नाथ हाथ;
प्रेमे करी प्रभु करो परिपालनाओ. हे विश्वनाथ० ९

विद्या विवेक मति संपति सर्व आपो,
संभाळ मारि करि संकट सर्व कापो;
द्यो धर्मकर्म करवा शुभ सूचनाओ. हे विश्वनाथ० १०
माता पिता प्रभुवरा अति दीन बाळ,
एकाग्र चित्त थकि ध्यान धरुं त्रिकाल;
नित्ये प्रणाम करिने करुं याचनाओ. हे विश्वनाथ० ११
आधीन छुं प्रभु मने भयथी उगारो,
संकष्ट दुःख समये समिपे पधारो;
मागुं विनंति करि पाप तणी क्षमाओ. हे विश्वनाथ० १२
संपूर्ण प्रेम करिने उपकार कीधो,
आ मृत्युलोक महिं मानवि देह दीधो;
राखो सदाचरणमां चितभावनाओ. हे विश्वनाथ० १३
हे भक्तवत्सल दयानिधि दीनदोषो,
क्रोधायमान थइ ईश कदी न जोशो;
हुं दीन दास शरणागतने निभावो. हे विश्वनाथ० १४
तारुं सदा स्मरण ध्यान करुं हुं दास,
द्वारे उभो नव करो मुजने निराश;
पूरी करो प्रभु तमे मनकामनाओ. हे विश्वनाथ० १५
कर्तव्य कर्म जगमां रहि नाथ थाय,
सद्धर्म नीतिनियमो सघळा पळाय;
ए शुद्ध तारि अति उत्तम अर्चनाओ. हे विश्वनाथ० १६

विश्वेश वंद्य विभु आश्रय सत्य तारो,
संसारसागर थकी प्रभु नाथ तारो;
साष्टांग नित्य तमने करुं वंदनाओ. हे विश्वनाथ० १७

शिखरिणी.

पिता माता नित्ये, प्रणमि करिये नम्र विनति,
दयादृष्टी राखी, श्रवण करशो रे जगपति;
अमारी इच्छाओ, विदित किधिछे सर्व तमने,
रुडी केई तेतुं, नथि क्वचित तो ज्ञान अमने. १
अमो जीवोनुं छे, मन प्रभु अती मंद नबळुं,
तमे जाणो स्वामी, जिवतणुं हिताहीत सघळुं;
मनोर्थो माग्या छे, शुभ स्तुति तमारी करि अमे,
हशे जे जे रूडा, सफल करशो ते प्रभु तमे. २

गायन.

पद.

भैरव तथा सर्व रागमां गवाय. चोताळ.

मंगल छे नाम तारुं, मंगल छे धाम तारुं,
मंगल छे काम तारुं, त्रिभुवन नाथ तुं;

तुज पद छे वरद, कृतकर्मफलप्रद,
अव्यक्त अखंड एक, अकळ अबाध तुं. मंगल छे० १
एवो तुं प्रभु महान, सघळे विराजमान;
जाणी ले बधी अमारी, अंतरनी वात तुं,
अवगुण छे अगाध, गणती न थाय नाथ,
तरवुं छे तारे हाथ, प्रभु मात तात तुं. मंगल छे० २

पद.

काफी. त्रिताल.

(चाल, समरुं सदा भरपूर.)

शरण तने भगवान्, प्रणमुं पाय पदींरे प्रभु; शरण०
वृथा गयो भवजन्म अमारो, नव राख्युं निज भान;
दास सदा जाणीने तारो, तारो भवथी निदान,
करि करुणाज वडीरे प्रभु, शरण तने० १
सगुण स्वरूपे गुप्त रह्या छो, अन्य नथी तुं समान;
नव जाण्युं महा ऋषि मुनियोए, तारुं निश्चळ स्थान,
विरम्या नेति वदिरे प्रभु, शरण तने० २
किंचित् नथी हुं योग्य परंतु, मागुं छुं वरदान;
कर्तुमकर्तुम् अन्यथा कर्तुम्, मानीने बळवान्,
आवुं तुज द्वार चढीरे प्रभु, शरण तने० ३
शरणागतनी लज्जा राखो, विश्वाधीश महान;

मनवाञ्छित फल निश्चय आपो, हे प्रभु कृपानिधान,
अवसर आव्यो अईरे प्रभु, शरण तने० ४
परमात्मा परब्रह्म प्रभुनुं, गाउं शुभ गुणगान;
भक्ति परार्थी करुं हुं तमारा, ज्ञानामृतनुं पान,
सफली एज घडीरे प्रभु, शरण तने० ५

पद.

काफी. त्रिताल.

तुज विण अन्य नहि प्रभु त्राता.
विनय थकी हुं विनति करुं छुं, विश्व तणा विभु धाता. तुज० १
सर्व ऋषि मुनि शुकसनकादिक, तुज महिमागुण गाता. तुज० २
दीनदयाला तुज करुणा विण, कोण करे सुख शाता. तुज० ३
आश्रय एक तमारो धारुं, सुख दुःखना प्रभु ज्ञाता. तुज० ४
साष्टांगे हुं वंदुं विभुने, परपदमंगलदाता. तुज० ५

पद.

खमायची जिल्हो, दादरो.

(चाल, बहुचर नाम तणी लेह मने लागीरे.)

अवगुण दोषो दयानिधि नव लहोरे;
धर्मनियम उलंघुं तथापि, प्रेमे करो परम अनुग्रहोरे. अवगुण० १
शरणागत आधीन तमारे, दास जाणी अमारो कर ग्रहोरे. अ० २
भक्त जन प्रभु परम कृपार्थी, नव पामे संकट दुःसहोरे. अ० ३
हे भगवंत दीन जन उपर, दयादृष्टि तमारी नित्य रहोरे. अ० ४

आरति.

जयदेव जयदेव, जय जगदाधीशा जय जगदाधीशा;
प्रकृतिपरा परमेशा (२), प्रणमुं प्रभु ईशा. जयदेव० ॥१॥
साक्षि तमे सर्वत्र, सत्ता थकि व्यापो (२);
कृपाकरी सेवकने (२), मति निर्मल आपो. जयदेव० ॥२॥
नमि नमि नमि नमि नाथ, पाय तने लागु (२);
प्रभु आपो पुरुपार्थो (२), ए शुभ वर मागुं. जयदेव० ॥३॥
मुज अपराध अगाध, चितमां नव धरशो (२);
कृपाघना करुणा करि (२), पाप क्षमा करशो. जयदेव० ॥४॥
प्रभु छो परम कृपाल, कार्य सफल करशो (२);
संरक्षण करि मारां (२), कष्ट सकल हरशो. जयदेव० ॥५॥
परमेश्वर अस्तित्व, सत्य करी मानुं (२);
श्रद्धा भक्ति उपासन (२), शुभ अर्चन जाणुं. जयदेव० ॥६॥
पराभक्ति प्रभु ध्यान, हृदय विषे धारी (२);
अभिवंदनपूर्वक हुं (२), करुं अर्चा तारी. जयदेव० ॥७॥
ए उत्तम उपचार, अर्पुं तुज चरणे (२);
अंतर्यागथि अर्चन (२), करि रहुं प्रभु शरणे. जयदेव० ॥८॥



अंक ५ मो.

ललित.

प्रभु परात्परा, पूर्णकामदा, प्रणमुं हुं तने, प्रेमथी सदा;
विनति जे करुं. चित्तमां धरो, प्रणत प्राणिनां, पापने हरो. १
परम ब्रह्मनुं, ध्यान हुं धरूं, परम भक्तिथी, प्रार्थना करुं;
बहु बलिष्ठ छे, शक्ति ताहरी, नव कळी शके, वृत्ति माहरी. २
अखिल विश्वना, नाथ नित्य छो, सगुण रूपथी, पूर्ण सत्य छो;
अकल छे कला, सृष्टिसर्गनी, नहिं तहीं गती, जीव वर्गनी. ३
दुरित कर्म तो, में कियां बहु, तदपि आपने आश्रये रहुं;
अवगुणो तणा, दोष ना लहो, करुणासागरा, ए अनुग्रहो. ४
भवनिमग्न हुं, भ्रान्तिमां भमुं, विषयमोहना, छंदमां रमुं;
अति दया करी, हाथ झालशो, त्रिविधदुःख संताप टाळशो. ५
दिनदयाळ हे, हे कृपाघना, कर प्रसारिने, याचुं याचना;
प्रभु सहायता, संकटे करो, तुज कृपातणो, आशरो खरो. ६
शरण छुं प्रभु, प्रार्थना करूं, विनय भावथी, वाक्य उच्चरुं;
दुरित कर्मथी, नित्य हुं डरूं, विहित धर्ममां, सत्य संचरूं. ७
विषय वासना-मां हुं ना फसुं, सुजन संगती-मां जई वसुं;
विमल ए मती, मागुं हुं विभु, परम प्रेमथी, प्रेरशो प्रभु. ८

नमि नमी कहुं, नित्य नाथने, प्रभु उगारि ल्यो भक्त साथने;
सकळ जीवना, दुःखहारक, प्रभु विना नहीं, अन्य तारक. ९
उभय हस्त हुं, जोडिने उभो, अभयदान द्यो, रे मने विभो;
प्रभु कृपा करी, कष्ट कापशो, समिपमुक्तिनो लाभ आपशो. १०
विनति सांभळो, विश्वना धणी, विभुस्वभावमां, छे दया घणी;
सदय चित्त जो, राखशो सदा, नंहि कदी प्रभु, पामुं आपदा. ११
विदित आपने, सर्व मर्म रे, प्रभु क्षमा करो, दुष्ट कर्म रे;
सकल कर्मना, साक्षि चिद्घना, पुरि करो प्रभु, भक्तकामना. १२

हे विश्वेश्वर ! विश्वव्यापक ! हुं आ वेळा तने प्रेमपूर्वक प्रणाम करी मारा चित्तमां तारुं ध्यान धरुंछुं; तें मारा उपर दया तथा उपकारो कीधा छे तेनुं स्मरण करुंछुं. तुं सर्वज्ञ छुं. तुं सर्वनो पिता छुं. हुं तारो नम्र, दीन, अने अशक्त बालक अनेक दोषोथी भरेलो छुं. छोकरांना दोष उपर मातपिता लक्ष आपतां नथी अने तेनुं कल्याण तथा सुख चांहे छे; ए न्यायथी तुं तारा सरजावेला जीवोनुं पालन करेछे. हे करुणामय प्रभु ! बे हाथ जोडीने तने हुं नमस्कार करी मागुंछुं के हुं तने कदी भूली जाउं नहि एवी बुद्धि मने आपजे, अने सदा सारे मार्गे चढावजे. तें मने विवेकबुद्धि आपी छे, पण मारुं अशक्तपणुं केटलुं छे ते तुं जाणे छे; तारी कृपा तथा सहायता विना माराथी कांइ पण सत्कार्य थई शकवानुं नथी.

माटे तुं वारंवार सारां काम करवानी मने प्रेरणा करजे. तुं न्यायी छे तेनी साथे दयालु छे, तेथी मारा नाना अपराधोनी क्षमा करीश एवो मने विश्वास छे. तारा विना हुं कोने शरणे जाउं ? तारा विना हुं कोनी पासे माफ मागुं ? तुं मने पाळनार तथा तारनार छुं, माटे हे भक्तवत्सल भगवान् ! मारी दीन वाणी सांभळी हुं आ जगतमां रहुं त्यां सुधी तारा ध्यान, भजन तथा रूडां काममां मन रहे एवो मने रस्तो बतावी मारुं संरक्षण करीने हे विश्वनाथ ! मारो उद्धार करजे.

छेल्लो तने साष्टांग नमस्कार करी कहुंछुं के मने अनीति तथा दुराचारथी सदा दूर राखजे.

दिंडि ५.

परम प्रेम थकी प्रभु पदे हुं वंदुं, पराभक्ति विषे नित्य हुं आनंदुं;
दीन तारक दिननाथ दीनबंधु, सदा दर्शन द्यो देव दयासिंधु. १

दिसे दृश्य वस्तु सर्वे नाशवान, तमे सत्य शुद्ध पूर्ण शक्तिमान;
सदाकाळ तमे शरण मने राखो, नीतियुक्त भक्तिपंथ मने दाखो. २

मात तात तमे भ्रात तमे मारा, तमे सत्य एक सर्व थकी सारा;
प्रभु इच्छा थकि सर्वे काय थाय, कृपा वीण मनुष यत्न व्यर्थ जाय.३

जगत सूत्र सर्व हाथ छे तमारे, नहीं नाथ कदी भक्तने विसारे;
अल्प दोष जीवना नहीं विचारे, पाप ताप दयादृष्टिथी निवारे.४

प्रणमि प्रेमभक्तिथी करुं प्रणाम, तमे पूर्ण करो सर्व योग्य काम;
सत्य धर्मज्ञान नाथ मने आपो, वरद हस्त मूज शीष तमे थापो.५

वसंततिलका.

हे विश्ववंद्य जगदीश्वर दीननाथ,
शक्ती तमारि सघळी सबळी अगाध;
व्यापी रही जगतना जिव तारवाने,
भक्तोनुं ज्ञान बहु मान वधारवाने. १

एवा महान बळवान महेश्वराने,
विज्ञानवान भगवान भवेश्वराने;
पाये पडी नमि नमी स्तुति हुं करुंछुं,
प्रीत्यर्थ पूर्ण परब्रह्म पदे नमुंछुं. २

जीवो सृज्या जगतमां प्रभु हेतथी तें,
भूल्या भमे भव विषे निज कर्मथी ते;
जेमां हुं दोष करि पेट भरी रहुंछुं,
तारो तमे प्रभु मने चरणे नमुंछुं. ३

संभाळ लीधि अति तें करुणा कृपाथी,
पृथ्वी विषे वशि रहुं प्रभुनी दयाथी;
दोषो अनेक वळि दुष्कृतियो करुंछुं,
तारो तमे प्रभु मने चरणे नमुंछुं. ४

विश्वेश संकट सहस्र अनंत काप्यां,
संहारि सर्व भयने सुख नित्य आप्यां;
मिथ्या प्रपंच मद मोह विषे पडुंछुं,
तारो तमे प्रभु मने चरणे नमुंछुं. ५

माया महान मदथी नथि नीज भान,
अज्ञान कापि मति शुद्ध करो निदान;
बीजो न आश्रय धरुं अति दीन हुं छुं,
तारो तमे प्रभु मने चरणे नमुंछुं. ६

तारा अनुग्रह थकी वंदुंछुं हुं वाणी,
तारा अनुग्रह थकी गति पाद पाणि;
तारा अनुग्रह थकी जगमां वसुंछुं,
तारो तमे प्रभु मने चरणे नमुंछुं. ७

जो ना करो प्रभु कृपा क्षणमात्र एक,
कार्यो न थाय मुजथी तृणमात्र छेक;
थाओ सहाय शरणागत थै रहुंछुं,
तारो तमे प्रभु मने चरणे नमुंछुं. ८

हे विश्वपालक विभु अज तुं समर्थ,
तारी दयाथि सरशे सघळाज अर्थ;
प्रेमे करो परम इष्ट तने भजुंछुं;
तारो तमे प्रभु मने चरणे नमुंछुं. ९

आ सघ काळ वळि सर्व थते ज काळे,
धारुं सदा स्मरण तारुं समस्त काळे;
तारो अनुग्रह दया कदि ना भुलुं हुं,
तारो तमे प्रभु मने चरणे नमुंछुं. १०

तारा अनुग्रह वडे वडि देह धारुं,
कर्तव्यधर्म वळि ज्ञान रुडुं अमारुं;
आपो सुनीति तमने विनति करुंछुं,
तारो तमे प्रभु मने चरणे नमुंछुं. ११

सद्धर्मकर्म करतां चित तो चळेछे,
अज्ञानथी विषय भोग विषे मळेछे;
आपो प्रभु सुमति दुर्गतिथी डरुंछूं,
तारो तमे प्रभु मने चरणे नमुंछूं. १२

हे पूज्यपाद परमेश्वर हीतकारी,
धारो चिते धरि दया विनती अमारी;
राखो मने हृदयमां भ्रमणे चढुंछूं,
तारो तमे प्रभु मने चरणे नमुं १३

पापी किधां प्रभु अमे अगण्यां अपार,
क्रोधी थई न किधुं कर्म रुडुं लगार;
सर्वे विदीत तुजने भवमां भमुंछुं,
तारो तमे प्रभु मने चरणे नमुंछुं. १४

जाणो समस्त अपराध अगाध मारो,
आपो क्षमा घटित धर्म खरो तमारो;
साष्टांग पाय नमि नाथ तने कहुंछुं,
तारो तमे प्रभु मने चरणे नमुंछुं. १५

कामादियुक्त मनमां विचरे विकार,
ते शुद्ध स्वच्छ थईने सुधरे विचार;
मागुं हुं भक्ति परब्रह्म तने स्मरुंछुं,
तारो तमे प्रभु मने चरणे नमुंछुं. १६

हे विश्वदेव करुं सेव सदा तमारी,
द्यो धर्मकर्म करवा मति निर्विकारी;
राखो समीप प्रभु प्रार्थन हुं करुंछुं,
तारो तमे प्रभु मने चरणे नमुंछुं. १७

स्वामी समर्थ जिव सर्व उगारवाने,
तो शो प्रयास निज दासज तारवाने;
माटे महेश परमेश पदे पडुं छुं,
तारो तमे प्रभु मने चरणे नमुंछुं. १८

अत्यंत लाभ जगमां जगदीश थाय,
तोए न तृप्ति कदि गर्वयकी भमाय;
धारो दया प्रभु हुं द्वार उभो रहुंछुं,
तारो तमे प्रभु मने चरणे नमुंछुं. १९

जे जे भलुं भव विषे भवनाथ देखुं,
ते ते विषे परम प्रेरक तुंज प्रेखुं;
चिद्रूप व्याप्त परिपूर्ण मने धरुंछुं,
तारो तमे प्रभु मने चरणे नमुंछुं. २०

संसारपंथ चरतां चितमां हुं धारुं,
तारुं स्वरूप सुखरूप अनूप सारुं;
थाओ सहाय प्रभु ए विनति करुंछुं,
तारो तमे प्रभु मने चरणे नमुंछुं. २१

संबंधि होय जगमां वळि मित्र मारा,
तेने मने सुख हजो सुफलोज सारां;
सर्वेनुं मंगल सदा शुभ चिंतवुंछुं,
तारो प्रभु शरण छुं चरणे नमुंछुं २२

भावे थकी भवपतीपदने पुजे जे,
चित्ते चिदात्म धरि ध्यान प्रभू भजे जे;
पूरे मनोर्थ प्रभु सत्य करी कहुंछुं,
तारो मने शरण छुं चरणे नमुंछुं. २३

सौभाग्य तेनुं शिवरूप सदैव धारे,
दुर्भाग्य तेनुं चितथी प्रभुने विसारे;
विश्वेश मंगलपदे प्रणम्येथि जाय,
दोषो अशेष वळि निर्मळ चित्त थाय. २४

आलस्यवृत्ति वळि निर्दयता विकार,
चित्ते रह्या बहुज दुर्गुणना विसार;
माटे कृपाथि मन शुद्ध करो महेश,
पाये पडुं प्रभु तने वदुं शुं विशेष. २५

भुजंगी.

जगन्नाथ हे देव हे स्वामि साचा, नमुं हाथ जोडी वंदुं नम्र वाचा;
दया लावि चित्ते दयादान आपो, प्रभु पाळिने पाप संताप कापो. १
महा मोहना पाशमां हुं पड्योछुं, महाकालने मुख आवी अड्योछुं;
महापापना पुंज ऊठे रे अमापो, प्रभू पाळिने पाप संताप कापो. २
प्रभूपादमां राखिये पूर्ण भाव, करो प्राणदाता अमारो निभाव;
तमारी कृपाथी टळे सर्व पापो, प्रभू पाळिने पाप संताप कापो. ३
तमे कष्ट कोवट्याधीनांज काप्यां, पुरो प्रेम आणी कृपादान आप्यां;
तमारी कृपाथी वधेछे प्रतापो, प्रभु पाळिने पाप संताप कापो. ४

अरे मोटि आशा चित्ते तारि राखुं, वद्द दीन थै दीन वाणी हुं भाखुं;
कदी ना जुवो में किधां सर्व पापो, प्रभू पाळिने पाप संताप कापो.५
तमे विश्वकर्त्ता तमे विश्वभर्त्ता, दयालु प्रभू दुःखिना दुःखहर्त्ता;
तमे शक्त संहारवा सर्व शापो, प्रभू पाळिने पाप संताप कापो. ६
मने रंकने रक्षणो सर्व दाता, महासिंधुमां छो तमे सत्य त्राता;
उगारो सदा सद्‌गती आप आपो, प्रभू पाळीने पाप संताप कापो.७
सदा सर्वदा ओथ आखी तमारी, महा कष्टमां मूकशो ना विसारी;
विना तुं न जाणे अमारा विलापो, प्रभू पाळीने पाप संताप कापो.८
जुवो जो तमे कर्म मारांज सामुं, अति पापि हुं केमरे प्रेम पामुं;
किधा में नथी धर्म सत्कर्म जापो, प्रभू पाळीने पाप संताप कापो.९
प्रभूरे प्रभूरे प्रभूरे प्रभूरे, नमीने नमीने नमीने कहुंरे;
नथी अन्य त्राता क्षमा आप आपो, प्रभू पाळीने पाप संताप कापो.१०
अति प्रेमना भावथी चिंतवुंछुं, अती नम्र थै नम्र वाक्यो वदुंछुं;
नथी आशरो, आशरो एक सत्य, प्रभू हुं नमुं हुं नमुं नित्य नित्य. ११
अती दीन जीवोनि संभाळ लीधी, अति प्रेम आणी कृपादृष्टि कीधी;
मने तारवाने क्षमावंत थाओ, दयादृष्टिथी दीननो हाथ साहो.१२

अनुष्टुप.

कृपाळु छो जगन्नाथ, जीवना प्रतिपाळक;
शरणे राखशो स्वामी, जाणीने दीन वाळक.

इच्छा आशा अमारी जे, हती ते आपने कही;
केइ तेमां हशे योग्य, ते अमे जाणिये नहि. २
मनोर्थो जे हशे सारा, ते तमे नाथ आपशो;
कृपादृष्टि करी नाथ, किल्विषो सर्व कापशो. ३
सत्य आधार छे नाथ, अमारे आपनो खरो;
सुतवात्सल्य भावेथी, कृपासिंधु कृपा करो. ४

गायन.

पद.

भैरव तथा सर्व रागमां गवाय. चोताळ.

जगदीश छो अनुप, करुणामयस्वरूप,
श्रवण करो अमारी, विनति कृपा करी;
सात्विकगुण प्रधान, धारो छो दयानिधान,
भक्तपर छे तमारि, द्रष्टि तो दयाभरी. जगदीश०
भासे जे वधो विराट, प्रभु छे तमारो ठाठ,
सघळो ए सत्य घाट, राखो सत्ताथी धरी;
तमे छो प्रभु वरिष्ठ, सत्ता छे अति वलिष्ट,
अमारां वधा अरिष्ट लेजो सहरी हरि. जगदीश० १

पद.

बिहाग. त्रिताल.

(निरधनको धन राम, ए चाल.)

कृपानिधि पूर्ण मनकाम करो.
अति दुर्गम दुस्तर भवपंथ, भक्तने नथी अधरो. कृपानिधि० १
प्रभुचिंतन शुभपदवंदनथी, मंद मुज मति सुधरो. कृपानिधि० २
सदयहृदय करुणामयमूर्ति, चित्तमां नित्य ठरो. कृपानिधि० ३
दीनवत्सल दीनबंधु दयाल, दुर्मति सर्व हरो. कृपानिधि० ४

पद.

खमायची जिल्हो, त्रिताल पंजाबी.

स्तवन शुभ तारुं करुं रे, प्रभु, अल्पमति अति दीन. स्तवन शुभ०
प्रभु तारी प्रभुताई, त्रिभुवनमां गवाई,
सदा रहुंछुं तने आधीन. स्तवन शुभ तारुं करुंरे.

पद.

सोरठ जिल्हो. त्रिताल.

नाथ तारे चरणे हुं नित्य नमुंरे;
जगन्नाथ जगतात प्रभु, तारे चरणे हुं नित्य नमुंरे. नाथ तारे०
सत्य सबल सर्वांतर्यामी, नित्य निरंतर प्रभु निष्कामी;
करुणामय मंगलमूर्ति सदा, तारुं स्मरण हृदय धरुंरे. नाथ तारे० १

आरति.

जयदेव जयदेव जय मंगलकारी जय मंगलकारी;
अति करुणा विस्तारी (२), प्रभु छो उपकारी. जयदेव० ॥१॥
षड्गुणयुत भगवान्, भक्ति सदा आपो (२);
करुणा करि सेवकनां (२), भय संकट कापो. जयदेव० ॥२॥
शुभ मंगल गुण गाय, भक्त जनो तारा (२);
अविचळ शुभ पद आपो (२), विभु विश्वोद्धारा. जयदेव० ॥३॥
कोटयावधि अपराध, प्रभु निशदिन देखो (२);
दया करी दिनदोषो (२), चितमां नव लेखो. जयदेव० ॥४॥
सकल विश्वमां व्याप्त, प्रभु सत्ता भासे (२);
सुंदर नियमो निरखी (२), चित नित्य उल्लासे. जयदेव० ॥५॥
प्रेम पुष्पनी माल, प्रभुने शुभ चरणे (२);
अर्पण करि दृढ श्रद्धा (२), थकि रहिये शरणे. जयदेव० ॥६॥
दुराचारथी दूर प्रभु राखो अमने (२);
दिव्य पिता प्रभु करिये (२), विनति अमे तमने. जयदेव० ॥७॥
मळि मंडाळि महाराज, अभिवंदन करिये (२);
सदा पराभक्ति थकी (२), स्मरण हृदय धरिये. जयदेव० ॥८॥



अंक ६ ट्ठो.

भुजंगी.

परब्रह्म विश्वेश व्यापी परेश, परात्मा प्रभू सर्व साक्षी महेश;
कळाती नथी शक्ति तारी अगाध, अमे दंडवत् वंदिये विश्वनाथ. १
तमारा थकी सृष्टि विस्तार पामी, तमे पूर्ण रुपे रह्याछो विरामी;
जगत्तंत्र सर्वे तमारेज हाथ, अमे दंडवत् वंदिये विश्वनाथ. २
नियंता तमे नाथ सर्वत्र भासो, सहु स्थानमां पूर्णताथी प्रकाशो;
अखंडीत आनंदरुपी अबाध, अमे दंडवत् वंदिये विश्वनाथ. ३
किधा सृष्टिना वर्ग आश्चर्यकारी, नथी चालती त्यां मति तो अमारी;
अमारुं करो रक्षणो दीन रात, अमे दंडवत् वंदिये विश्वनाथ. ४
खगोळे ग्रहो मंडळो सूर्य चंद्र, विराजो रह्युं छे रुडुं राशियंत्र;
रच्याछे तमे सर्व ए सत्य घाट, अमे दंडवत् वंदिये विश्वनाथ. ५
तमारुं अधिष्ठान छे शुद्ध सत्य, थयुं छे तमारा थकी सृष्टिकृत्य;
तमे छो स्वयंभू अनादी अजात, अमे दंडवत् वंदिये विश्वनाथ. ६
त्रिलोके तमारा प्रकाशे प्रतापो, सदा सर्वदा चित्तने शान्ति आपो;
विभु विश्वव्यापी विदारो विषाद, अमे दंडवत् वंदिये विश्वनाथ.७
तमे शुद्धचैतन्यरुपे विराजो, सदा काल सर्वत्र सचाथि गाजो;
तमे सर्व जाणो प्रभु गुप्त वात, अमे दंडवत् वंदिये विश्वनाथ. ८

अमारे खरो आशरो छे तमारो, कृपानाथ नित्ये करो उपकारो;
प्रभु सर्वना छो तमे मात तात, अमे दंडवत् वंदिये विश्वनाथ. ९
सुणो प्रेमथी सर्वदा प्रार्थनाओ, करो पूर्ण भक्तोतणी कामनाओ;
प्रभुपादपद्मे सदा जोडि हाथ, अमे दंडवत् वंदिये विश्वनाथ. १०
अमारी स्विकारो सदा वंदनाओ, कृपाथी करो सर्व पाप क्षमाओ;
सदा सन्मति प्रेरशो प्राणनाथ, अमे दंडवत् वंदिये विश्वनाथ. ११
करे जे पराभक्तिथी प्रार्थनाओ, पुरी थाय तेनी सहु वाञ्छनाओ;
न पामे प्रभुधामथी ते निपात, अमे दंडवत् वंदिये विश्वनाथ. १२
अमे नम्र थै वंदिये वारवार, विनंति अमारी करो अंगिकार;
अमे मानिये प्रेमथी धन्यवाद, अमे दंडवत् वंदिये विश्वनाथ. १३

"यतो वा इमानि भूतानि जायन्ते येन जातानि जीवन्ति यत् प्रयन्त्यभिसंविशन्ति" तमनाद्यनंतमेकं परमेश्वरं प्रणतोऽस्मि.

जे थकी आ सृष्टि उत्पन्न थइ छे, जेणे करीने जीवे छे, अंते जेनी पासे जाय छे, अने जेने पामे छे, एवा अनादि अनंत एक परमेश्वरने हुं प्रणाम करुं छुं.

हे प्रभु ! तमे आ वेला मारी पासे विराजमान छो, हुं अति नम्रभावथी तमारा समीप आवी प्रार्थना करुं छुं ते कृपा करीने श्रवण करो. तमे निरंजन निराकार सर्वव्यापी सर्वनियंता सर्व कर्मना साक्षी छो. तमे मारुं रक्षण करो, मने पापथी वेगळो राखीने

मारुं मन पवित्र करो, मारा मनने शान्ति आपो. मनोविकार एवा तो प्रबळ छे के मारी नबळाइने लीधे हुं तेने निःशेष काढी शकतो नथी; तेमज आसपासना मोह, लालच, अने विषयो एटला बधा छे के मारा पोताना श्रमथी तेओने हुं दूर करी शकतो नथी. माटे हे जगदीश्वर हुं तमारे शरण छुं, तमारे आधीन छुं, हुं अल्पज्ञ अने अशक्त छुं ते तमे जाणो छो, माटे नीतिमार्गे चढवामां तमे मारा सहायथाओ, असत्यता, क्रूरता, अंतरनां तथा बहारनां पाप कर्मथी दूर राखी मने सन्मार्ग बतावो, अने सन्मति आपो. हे भक्तवत्सल भगवान्! मारी सद्गति करो. हुं तमने पूज्य मानीने तमारी भक्ति करुं, सर्व मनुष्य जाति उपर प्रीति राखुं, मारा वेरीओने पण क्षमा करुं, अने कर्त्तव्य धर्म बजावुं, एवी मने प्रेरणा करो; मारा अंतःकरणमां पवित्रता, दया, दृढता अने श्रद्धानुं स्थापन करो, तमारी साची भक्ति तथा शुद्ध उपासना करुं अने सत्य निर्दोष धर्म पाळुं एवी मने सद्बुद्धि आपो. तथास्तु.

दिंढि ४.

सृष्टि नियम निरखि चित्तमां उलासुं, प्रेम भाव थकी प्रभु तने उपासुं;
मने हृदय थकी कदि नहीं विसारो, करो सर्व काळ नाथ उपकारो.

गीति.

ज्यां नव भासे दिनमणि, निशमणि ग्रहगण हुताश नव भासे;
भासे ब्रह्म सदा त्यां, ते थकि त्रिभुवन प्रदीप्त अति भासे. १

जे थकि उद्भव जगनो, जेणे करिने प्रकाशने पामे;
जेमां जई विरामे जे तणि करुणा दिसे सहू ठामे. २

जय जय जय जगदात्मा जगदीश्वर जन्मरहित प्रभु जे छे;
जाणी जीवदयाओ, अतिशय संभाळ तेनि ते लेछे. ३

ते परब्रह्म परात्मा, पदपंकज हुं प्रणाम करि मागुं;
मागुं पापक्षमा रे, निशदिन प्रभुभक्तिमां हुं अनुरागुं. ४

त्रिभुवनपति हुं तारो, भवसागरथी कृपा करी तारो;
शान्ति सर्दैव वधारो, प्रार्थन स्तव मारुं लक्षमां धारो. ५

अपराधी हुं थयोछुं, तुज विण नथि को शरण्य प्रभु मारे;
आव्यो छुं तुज द्वारे, आश्रय छे तुज कृपातणो भारे. ६

भवपति भवसागरथी, तरवा नथि नाथ शक्ति तो मारी;
अल्पमति अविचारी, नव करि सकुं हुं स्तुति पुरी तारी. ७

गगने ग्रहगणरचना, रचिछे सुंदर अती चमत्कारी,
निश्चल नियमो बांधी, अतिशय सत्ता तमेज विस्तारी. ८

सर्वेश्वर सर्वात्मा, सच्चिद्घन स्वामि सन्मतीदाता;
धाता त्रिभुवनत्राता, सर्वांतर्यामि विश्वपितुमाता. ९

નમું નમું નમું નમું નિત્યે, નિર્મલ મનથી નમું તને દેવા;
દિવ્ય પિતા પ્રભુ તારી, ઇચ્છા અનુસરિ સદા કરું સેવા. ૧૦

અવલંબન છે તારું, નવ તરછોડો મને દયાધીશ;
બાલકશિશુની કૃતિથી, કદિ નવ ચિત્તમાં ચઢાવશો રીસ. ૧૧

પ્રભુઅસ્તિત્વપ્રમાણો, જગરચનામાં અતિ પ્રબળ ભાસે;
સુંદર નિયમો નિરખી, નિશ દિન મનવૃત્તિ મારિ ઉલ્લાસે. ૧૨

પ્રભુતા એજ તમારી, દોષો દેખી ન રોષ ચિત ધારો;
અતિ કરુણા વિસ્તારો, સેવક જનને કદી ન વીસારો. ૧૩

અભર્ક હું પ્રભુ તારો, યદ્વા તદ્વા વદું હું જે વાણી;
માનિ કૃપાનિધિ લેશો, સુતવાત્સલ્યસ્વભાવ ચિત આણી. ૧૪

સપ્રેમાંતઃકરણે, પરમેશ્વરને પદે હું અભિવંદું;
શુભમંગલફળદાતા, તુજ શરણે રહિ સદા હું આનંદું. ૧૫

અપરાધી હું અપરાધી, અતિશય તારો થયોછું અપરાધી;
વળગ્યો બહૂ ઉપાધી, ઉત્તમ ભક્તી તમારિ નવ સાધી. ૧૬

ઉત્તમ ગતી અમારી, નિશ્ચય ઉત્તમ કૃતી થકી થાય;
કોટ્યાવધિ મુજ દોષો, પ્રભુ તુજ કરુણાકટાક્ષ થકિ જાય. ૧૭

પતિતોદ્ધારક પ્રભુ છો, પાવન કરશો તમે મને નાથ;
અર્થ નથિ કિંચિત સમજે, પર મસ્તુંકે પ્રસારિને હાથ. ૧૮

मालिनी.

कर चरण वडे जे, में किधां कर्म खोटां,
श्रवण नयन चित्ते, जे किधां पाप मोटां,
अतिशय करुणार्थी, द्यो क्षमा नाथ हुंने,
जय जय करुणाब्धे, हुं नमुं नित्य तुंने. १

उपेंद्रवज्रा.

शरीर वाणी मनथीज पापो, प्रभु किधां में अगण्यां अमापो;
क्षमा करीने चितमां शमावो, दया करीने दिनने निभावो. १

उपजाति.

तमे प्रभू सर्व पिताज माता, तमे सखा बंधु तमेज धाता,
विद्यामतीसद्गतिशांतिदाता, तमे प्रभु प्राणि समस्त त्राता. १

शार्दूलविक्रीडित.

साष्टांगे नमिने प्रणाम करिये सर्वेश सच्चिद्घना,
अंतर्यामि विदीत सर्व तमने जीवो तणी कामना;
दोषो छे अगणीत शी गति थशे अंते अमारी प्रभु,
राखीए करुणा दया तुज तणी आशा अमे तो वहु. १

माग्या छे प्रभु प्रार्थना स्तुति करी. अर्थो अतीशे अमे,
ते मध्ये परिपूर्ण अर्थ करशो जे योग्य जाणो तमे;
त्राता छो प्रभु आप सर्व जिवना शर्णे सदा राखशो,
लोकोनां उपयोगि कार्य करवा रूडी मति दाखशो. २



गायन.



पद.

भैरव तथा सर्व रागमां गवाय. चोताल.

प्रणमुं सदा परेश, पराभक्तिथी विशेष,
विमल अमारी मति, करशो दया करी;
सच्चिद्घन तमे, अति अल्प जीव अमे,
प्रभुपदमां अमारी, श्रद्धा छे खरेखरी. प्रणमुं० १
तमे छो स्वयंप्रकाश, सघळे तमारो वास,
कृपा थाय तो जवाय, भवसिंधुथी तरी;
अखंड अंतर्याम, पूर्ण करो मनकाम,
करिये अमे प्रणाम, तमने फरी फरी, प्रणमुं० २

पद.

काफी. त्रिताल. (चाल, समरुं सदा भरपूर.)

करुणा करो रे कृपाळ, मागुं हुं पापक्षमा रे प्रभु,
अद्भुत शक्तिथी सरजाव्युं, भूमिमंडल विशाल;

गगन मही ग्रहनक्षत्रोनी, शोभी रहि मणिमाल,
मागुं हुं पापक्षमा रे प्रभु. करुणा करो० १

जीव संरक्षण अर्थे कीधां, अन्नौषधि रसाल;
ए रचनाना पूर्ण भेदनी, नव लगे काँदि भाळ,
मागुं हुं पापक्षमा रे प्रभु, करुणा करो० २

अनुग्रह पूर्ण करी प्रभु ल्यो छो, सेवकजन संभाळ;
प्रेम थकी प्रभुपदपंकज, वंदी वदुं हुं वाल,
मागुं हुं पापक्षमा रे प्रभु. करुणा करो० ३

पतितपावन परमपवित्र. भक्ततणा प्रतिपाल;
शांत सौम्य सात्विक गुणरूपे, दर्शन द्यो हे दयाल,
मागुं हुं पापक्षमा रे प्रभु. करुणा करो० ४

पद.

खमायची जिल्हो, त्रिताल.

(चाल, नारायण नरसिंह नरोत्तम पुरुषोत्तमको ध्यान धरो.)

एक अखंड अनंत अगोचर, ईश अद्वितीय उपासुं रे.
अति अद्भुत जगनी रचनाने, निरखी निरखी उल्लासुं रे,
सत्य शुद्ध सचराचरव्यापक, ब्रह्मपदे हुं विलासुं रे.
एक अखंड० १

विषयवासना तुच्छ गणीने, चिद्घनने अध्यासुं रे;
रटन भजन प्रभुयशगुणकीर्तन, निश दिन हुं अभ्यासुं रे,
एक अखंड० २

में अपराध अगाध कीधा छे, अतिशय मने विमासुं रे;
क्षमा करो करुणासिंधु प्रभु, ए वचने विश्वासुं रे,
एक अखंड० ३

पराभक्तिथी प्रभु सेवुं तो, नरक थकी नव त्रासुं रे;
परात्परा परलोक विषे प्रभु, चरण समीप निवासुं रे.
एक अखंड० ४

पद.

खमायची झिंझोटी. दादरो.

(चाल, बहुचर नाम तणी लेह मने लागीरे.)

प्रभुपदपंकजे सदा हुं पाय लागुंरे.
निर्मल मनथी स्मरण करीने,
पराभक्तिमां हुं वृत्ति अनुरागुंरे. प्रभुपद० १
आ भवमां प्रभु परम कृपानी,
नौकाविना कदी हुं नव तागुंरे. प्रभुपद० २
शरणागत दीन दास तमारो,
अपराध तणी क्षमा हुं मागुंरे. प्रभुपद० ३

आरति.

जयदेव जयदेव जय भगवन् देवा, जय भगवन् देवा;
भक्तिपराधि तमारी (२), करुं निश दिन सेवा. जयदेव० ॥१॥
प्रभुनो पार अपार, ऋषिमुनि नव पाम्या (२);
स्तुति गुण गाइ तमारी (२), मन थाकि विश्राम्या. जयदेव० ॥२॥
सर्व स्थले प्रभुवास, सत्य करी जाणुं (२);
ए अति उत्तम विधिनुं (२), आवाहन मानुं. जयदेव० ॥३॥
प्रेमपात्र परिपूर्ण, भरुं श्रद्धाजलथी (२);
पाद्य अर्घ्य अर्चन विधि (२), करुं निर्मल मनथी. जयदेव० ॥४॥
परमेश्वर प्रणिधान, धरि नित्ये मनमां (२);
गंध पुष्प भक्तिनां (२), अर्पु प्रभुपदमां. जयदेव० ॥५॥
मंगलमय महाराज, मंगल पद आपो (२);
कृपा करी मुज शीर्षे (२), हस्त वरद स्थापो. जयदेव० ॥६॥
परमात्मानुं ध्यान, हृदय विषे धारुं (२);
अति उपकार तमारा (२), कदि नव वीसारुं. जयदेव० ॥७॥
दर्शन द्यो महाराज, दिनवत्सल दाता (२);
विनय थकी विनवुंछुं (२), विश्वपितामाता. जयदेव० ॥८॥



अंक ७ मे

ललित.

परम ब्रह्मरे, प्राणतारक, प्रणत भक्तना, पापहारक;
चरणपंकजे, वंदिने सदा, प्रभु हुं मागुंछुं, पापनी क्षमा. १
प्रभु अतर्क्य छो, तर्क शुं थशे, मति मनुष्यनी, तो भर्मी जशे;
नव करी शके, कोई कल्पना, प्रभु हुं मागुंछुं. पापनी क्षमा. २
विदित छे तने, कृत्य तो बधुं, विनति शुं करुं, नाथने वधु;
तुज पदे धरी, शुद्ध भावना, प्रभु हुं मागुंछुं, पापनी क्षमा. ३
गणतरी नथी, दुष्कृती तणी, तदपि नाथनी, छे दया घणी;
नमि नमी करुं, नित्य वंदना, प्रभु हुं मागुंछुं, पापनी क्षमा. ४
विधिनिषेधना, नीम तें किधा, नहि कदापि में, लक्षमां लिधा,
सुमति सूचवो, सत्य चिद्घना, प्रभु हुं मागुंछुं, पापनी क्षमा. ५
प्रभु कृपा करी, रक्षणो करो, दिनजनस्थिती, लक्षमां धरो;
नथि शरण्य को, नाथ तुं विना, प्रभु हुं मागुंछुं, पापनी क्षमा. ६
परम देव हे, हे दयाघना, अनुग्रहो करोछो तमे सदा;
पुरि करो तमे, भक्तकामना प्रभु हुं मागुंछुं, पापनी क्षमा. ७
अति मलीनता, छे मती विषे, शुभ कृती थकी, शुद्ध तो थशे;
प्रभु करो कृपादृष्टि सर्वदा, प्रभु हुं मागुंछुं, पापनी क्षमा. ८

मुज विराम छे, आपनो घणो, दुर करो दयानाथ दुर्गुणो;
शुभ मनोरथो, धारुं हुं घणा, मभु हुं मागुंछुं, पापनी क्षमा. ९
मभु मणाम साष्टांग हुं करुं, हृदयमां रुडुं, ध्यान हुं धरुं;
भवपती सुणो स्वल्प मार्थना, मभु हुं मागुंछुं, पापनी क्षमा. १०

हे परब्रह्म परमात्मा परमेश्वर ! तमे सत्य छो, पवित्र छो, ज्ञानमय छो, तमारो पार हुं पामर जीव पामी शकतो नथी. आ संसारमां सत्कर्म करवा तमे मने जन्म आप्यो छे, एम तमे आपेली विवेकबुद्धिवडे विचार करवाथी मने बोध थाय छे, पण हे मातपिता ! हुं तमारी इच्छा ममाणे चाल्यो नथी. मारां पाछलां कृत्यनो विचार मारा मनमां करुंछुं, त्यारे मारा चित्तने अति क्लेश, खेद अने दुःख थाय छे; मारी शी गति थशे ए विषे विचार करुं छुं तो हुं केवल भ्रमित तथा भयभीत थाउंछुं; घणी वेला तमने भूली जइने दुष्ट नठारां कर्मो में कर्यां छे; परोपकार, दया, क्षमा, तथा मारा भाइ मनुष्यजनने सुख थाय एवां कांइ पण पुण्यनां काम करवां जोइये तेवां में कर्यां नथी. उलटो तेओनो द्रोह करीने, तेमना उपर समानभाव राखवाने बदले तेओने तुच्छ गण्या छे; तेओनुं द्रव्य लेवामां तथा तेओने दुःखी करवामां अनेक मकारना मपच, कपट तथा छलभेद कर्या छे. मारां कुकर्म आ वेला संभारुं छुं तो मारा शरीरनां रोम उभां थाय छे, मने कंपारो छूटे छे; एटलोज मात्र विश्वास छे के, तमे पतितपावन, परमकृपाळु अने क्षमावंत छो. ए विश्वासथी मारा मनने कांइक शान्ति थइ आशा थाय छे के, हुं मारां पापकर्मनो खरेखरो पश्चात्ताप करीने,

हवेथी पाप नहिं करुं एवी सत्य प्रतिज्ञा करीश तो, तमे मारां पापकर्मनी क्षमा आपशो. माटे हे परात्पर प्रभु ! तमने साष्टांग दंडवत् प्रणाम करीने विनंति करुंछुं के तमे मारां पाछलां पातकोनी क्षमा आपी मारुं मन शुद्ध करो, मने सन्मार्ग बतावो, अने सदाकाल तमारी साची भक्ति तथा उपासना करुं अने तमारा उपकारोनुं स्मरण राखी तमारी इच्छा प्रमाणे चालुं, लोकहितार्थनां काम करुं, अने मारा आत्मानुं कल्याण थाय अने परलोकमां अक्षय सुख भोगवुं एवो हे करुणासिंधु प्रभु ! मने आशीर्वाद देजो.

शांतिः शांतिः शांतिः ॥

दिंडि ७.

पतितपावन परब्रह्म परमदेव, प्रेम भाव राखि करुं तमारि सेव;
सत्य धर्मबीज हृदय विषे थापो, चित्त शान्ति सर्वकाल मने आपो. १
विश्वसिंधु विषे विषय जाल भारे, विना नाथ कोण ते थकी उगारे,
दास जाणि तमे नाथ जुवो सामुं, कृपा थाय तोज मुक्ति धाम पामुं. २
करुं स्मरण सदाकाल हुं तमारुं, परित्राण करो प्राणनाथ मारुं;
क्रिया मारी नहिं लक्ष विषे लेशो, दयासागर सद्बुद्धि मने देशो. ३
चरणपंकजे हुं प्रणमि लागुं पाय, प्रेमदृष्टि थकी कष्ट सकल जाय;
करो नित्य तमे भक्तने सहाय, हरो सर्व तेमना तमे अपाय. ४
किधां घातक अपराध अमे भारे, कृपानाथ विना कोण ते निवारे;
उभय हाथ जोडि मागुं माय बाप; करो नाथ तमे सर्व क्षमा पाप. ५

शिखरिणी.

परात्मा हे ब्रह्मन्, भवजलधिउद्धारक प्रभु,
षडैश्वर्ये व्यापो, सकलदुखसंहारक विभु;
नमी साष्टांगे हुं, प्रणिपत करुंछुं प्रभुवरा,
क्षमा पापो मारां, करि प्रभु करो पूर्ण करुणा. १

विना तारा कोइ, विपतिभयत्राता अहिं नथी,
सदा साभुं जोइ, अचल सुख आपो जगपति;
पिता माता तारा, अनुग्रह दयामां नथि मणा, क्षमा पापो० २

जगद्वंद्या देवा, त्रिभुवनमहीं शक्ति प्रसरी,
तमारा भक्तोने, कदि नव जशो नाथ विसरी;
न जोशोरे दोषो, अवगुण अमारा अति घणा, क्षमा पापो० ३

कला तारी देवा, कदि नव कलाशे जिव थकी,
पराभक्ति सेवा, दिन निश करुं शुद्ध मनथी;
जगत्कर्ता मानुं, निरखि सघळी विश्वरचना, क्षमा पापो० ४

स्वयंभू छो स्वामी, नव कदि रहे गुप्त तमथी,
तने अंतर्यामी, विनति करियेरे विनयथी;
करो सन्मार्गोमां, प्रवृत मनवृत्ती प्रभुवरा, क्षमा पापो० ५

प्रभाते मध्याह्ने, वळि प्रभु दिनांतेज तमने,
सदा हुं एकांते, नमन करुंछुं निश्चल मने;
कृपासिंध तारा. चरणथि न राखो दूर कदा, क्षमा पापो० ६

सहू माणी तारां पृथिविमहिं विस्तारथि रह्यां,
तथापी ते मध्ये, मनुप जनने तें करि दया;
दिधी छे सद्बुद्धी, सतत सतमार्गे विचरवा, क्षमा पापो. ७
निषिद्धाचारोमां, नवळुं मन मारुं नित भमे,
सदा सद्धर्मोमां, अति त्वरित वाळो चित तमे;
कुपुत्रो तो थावे, नहि कुपित थाशे कदि पिता, क्षमा पापो. ८
क्रिया मारी खोटी, नव कदि चिते नाथ धरशो,
चुको कीधी मोटी, गणतरि करीने न गणशो;
निभावी ल्यो देवा, दिन गणि तमे एज मभुता, क्षमा पापो. ९
नथी शक्ती मारी, स्तुति गुण तमारा उचरवा,
अती हुं अज्ञानी, तदपिज करोछो बहु दया;
नथी किंचित् देवा, श्रम पतितउद्धार करवा, क्षमा पापो. १०
जगाधीशा तारो, अति प्रबल आधार अमने,
तपे ना वीसारो, चित थकि कदी भक्तजनने;
कृपादृष्टी राखीं, भवभय निवारीं विभुवरा, क्षमा पापो. ११
विनंती स्वीकारो, निजशरण राखी भवपति,
सदा सद्विद्यानी, अति विमळ आपो प्रभु मति;
प्रभु अंते मुक्ती, समिप पदनी द्यो अविचला, क्षमा पापो. १२
शुभाशीर्वादो द्यो, कुशलसुखक्षेमार्थ अमने,
तथास्तु बोलीए, मति वचन उच्चारि तमने;
पुरो वाञ्छा मारी, सदय चित राखी मभु सदा, क्षमा पापो. १३

मालिनी.

प्रभुपद वहु मोटुं, शुद्ध चैतन्य तत्त्व,
सकल सचल व्याप्युं, नित्य तेनुं महत्त्व;
अजर अमर पोते, छो चिदानंद सर्व,
ऋषिमुनिजन सर्वे, छोडि दीधोज गर्व. १

अति गहन प्रभावे, विश्व विस्तार कीधो,
मनुष सरस जाणी, बुद्धिसंस्कार दीधो;
नमि नमि नमि नित्ये, भक्ति सन्मार्ग मागुं,
विनययुत थईने, नाथ हुं पाय लागुं. २

नहिं नहिं कदि जाणे, जीव तारा विचार,
नहिं नहिं कदि पामे, पार तारो अपार;
अकल सकल तारी, छे कलाओ अगाध,
शुभगुणयुत वंदुं, सर्व लोकाधिनाथ. ३

करद्वय प्रसरीने, भक्तिमार्गे करीने,
अति विनय धरीने, प्रार्थना उच्चरीने;
हरख मन भरीने, हेतथी आदरीने,
नमुं नमुं नित्ये, उपकारो स्मरीने. ४

प्रभुपद प्रणमीने, याचना हुं करुंछुं,
स्मरण शुभ तमारुं, चित्तमां हुं धरुंछुं;

नवाळि सघळि वाणी, ल्यो कृपाथी स्विकारी,
नहिं नहिं मति चाले, ए थकी पार मारी. ५

त्रिभुवन विभु व्यापी, विश्ववंद्या विधाता,
सकलकुशलदाता, सर्वना सत्य त्राता;
अतिशय सुखकारी, भक्ति आपो तमारी,
सतत शुभ गुणोमां, वृत्ति राखो अमारी. ६

प्रभुपरमकृपाथी, मूक वाणी वदे छे,
प्रभुपरमकृपाथी, पंगु गीरे चढे छे;
प्रभुपरमकृपाथी, सर्व कल्याण थाय,
प्रभुपरमकृपाथी, मोक्षमार्गे जवाय. ७

त्रिभुवनपति तुंने, वंदिये वारवार,
निश दिन प्रभु तारा, मानिये ऊपकार;
शरण नथिज बीजुं, सत्य आधार तारो;
कर ग्रहि अमने आ, विश्वसिंधुथि तारो. ८

उपेंद्रवज्रा.

तमे अमारा प्रभु माततात, विदीत छे सर्व अमारि वात;
क्षमा करी किल्बिष सर्व कापो, दयानिधे सन्मति नित्य आपो. १
सुणी तमे प्रेम थकी अमारी, विनंति लेशो चितमां विचारी;
जणाय जे मागणि नाथ सारी, दयाथि लेशो प्रभु ते स्विकारी. २

गायन.

पद.

भैरव तथा सर्व रागमा गवाय. चोताल.

भगवंत ब्रह्म प्रभु, परिपूर्ण व्याप्त विभु,
सबळ तमारि शक्ति, त्रिभुवनमां जणाय;
अविचिंत्य इष्ट एक, किधी तें सृष्टि अनेक,
अकल अत्यद्भूत, तारि न कला कलाय. भगवंत०
प्रभु छो अनाथनाथ. अमे जोडी वेउ हाथ,
विनवीए विश्वनाथ, करुणा करो सदाय;
विश्वंभर विश्वपाल, दीनवत्सल दयाल,
जाणिने तमारां वाल, करो सर्वदा महाय. भगवंत०

पद.

रामायची झिझो. त्रिताल.

(चाल, नारायण नरसिंह नरोत्तम पुरुषोत्तमको ध्यान धरो.)

परमात्मा परिपूर्ण प्रभु परमेश्वरने हुं प्रणाम करुं.
महच्छक्तिथी जग सरजाव्युं, भूमि जल फल पाषाण तरु;
ए अद्भुत कृति गहन गतिने, मंदमति हुं शुं विस्तरुं.
परमात्मा० १
जे बलथी आ विश्व प्रकाशे, जे थकी भासे सत्य खरुं;
ते विश्वंभर व्याप्त विभुनुं, ध्यान निरंतर चित्त धरुं.
परमात्मा० २

प्रेमथकी परब्रह्म तमारी, इच्छाओने अनुसरुं;
दया कृपा उपकार प्रभुना, चित्तथकी न कदी विसरुं.
परमात्मा० ३
साष्टांगे प्रभुचरण नमीने, विनति करी हुं कर पसरुं;
आ संसारविषे विश्वेश्वर, सत्कर्मोमां सदा हुं सरुं.
परमात्मा० ४
शरण रही परमेश तमारा, भक्तिपथे हुं सदा विचरुं;
विनयथकी जगवंद्य तमारुं, मंगल नाम मुखे उच्चरुं.
परमात्मा० ५

पद.

खमायची जिल्हो. त्रिताल.

विनति करुं कर जोडी; त्रिभुवनत्रातारे, विनति करुं कर जोडी.
प्रभुमहिमागुणस्तुति गावाने, मंद अल्प मति मारी थोडी. विनति० १
करग्रहीने करुणानिधि मुजने, कदि नव देशो प्रभु छोडी. विनति० २
पतितपावन गुण शुभ धारो, माटे प्रभु द्वार आवुं दोडी. विनति० ३
षड्विषयोनां अति दृढ बंधन, तत्क्षण नांखो तमे तोडी. विनति० ४

पद.

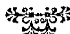
सोरठ. त्रिताल.

जगदीश्वरने हुं वंदुं, प्रभु भव तारोरे जगदीश्वरने हुं वंदुं.
शरणागतनुं रक्षण करशो, हे करुणाना सिंधु. जग० १
सप्रेमांतःकरणथकी हुं, नमुं प्रभु चरणारविंदु. जग० २

अवगुण उपर लक्ष न देशो, दीनवत्सल दीनबंधु. जग० ३
पराभक्तिनी लेह मने लागी, प्रभुपदमां आनंदुं. जग० ४

आरति.

जयदेव जयदेव जय विश्वाधारा, जय विश्वाधारा;
विश्वंभर अविकारी (२), विभु अपरंपारा. जयदेव० ॥१॥
सकल विश्वना नाथ, सत्य तमे भासो (२);
सर्वे स्थलमां प्रभुनो (२), छे निश्चय वासो. जयदेव० ॥२॥
अंतर्ध्यान विधान, अति प्रिय छे तमने (२);
अविहित निंद्य कृतिथी (२), दुर राखो अमने. जयदेव० ॥३॥
सद्विद्या सज्ञान, सत्संगो आपो (२);
अंतर्यामि अमारां (२), दुष्कर्मो कापो. जयदेव० ॥४॥
करिये कोटि प्रणाम, परमेश्वर चरणे (२);
कृपाकरी अमने प्रभु (२), राखो निज शरणे. जयदेव० ॥५॥
प्रभु उपकार अपार, स्मरण सदा करिये (२);
जनहितकारि क्रिया करि (२), भवसागर तरिये. जयदेव० ॥६॥
प्रेमभक्तिथी ध्यान, धरि प्रभु आराधे (२);
भवबाधाओ तेने (२), निश्चय नव बाधे. जयदेव० ॥७॥
भक्ततणी संभाळ, प्रभु निशदिन लेशो (२);
भवथकी पार उतारी (२), मुक्ति समिप देशो. जयदेव० ॥८॥



अंक ८ मो.

भुजंगी.

कृपासागरा सर्व आनंददाता, प्रभू प्राणिनाछो तमे सत्य त्राता;
स्तुती गूण गावा नियंता तमारी, नथी चालती कांइ शक्ती अमारी.१
कृपानाथ कीधा वहु उपकारो, कई वीधिये वाळिये पाड तारो;
सदा सर्वदा क्षेम आरोग्य आपो, अमारां महा संकटो दुःख कापो.२
जगत्तंत्र छे सर्व आधीन तारे, भरुंसो खरो ताहरो छे अमारे;
तमारी दयाथी रुडां कार्य थाय, महाविघ्न ने व्याधियो सर्व जाय.३
तमे मात ने तात छो रे अमारा, अमे बालको पास आव्यां तमारां;
अतीशे किधाछे अमे नाथ दोषो, कृपादृष्टि राखी प्रभु ते न जोशो.४
सदा ऊपकारो किधा ने करो छो, विनंती तमे सर्व लक्षे धरोछो;
तमारा विना को नथी रे समर्थ, तमारी कृपाथी थशे पूर्ण अर्थ. ५
अति निंद्य कर्मो प्रभू नित्य थाय, तमे जो गणो तो गती केम थाय;
तमे सर्व वस्तूथकी सत्य सारा, करो सर्व दोषो क्षमा नाथ मारा.६
पराभक्तिथी वंदिये वारवार, प्रभू प्रार्थनाओ करो अंगिकार;
तमारुं किधुं ते न कोइथि थाय, प्रभु सर्व काळे रहो छो सहाय. ७
नमस्कार स्वीकारि लेशो अमारा, स्मरीए सदा ऊपकारो तमारा;
विनंती अमारी तमे मानि लेशो, कृपादृष्टिथी आशिषो पूर्ण देशो. ८

हे परमपवित्र परमात्मा परमकृपालु परमेश्वर ! हुं आ संसारना मोहपाशमां पडेलो छुं, तेमांथी मुक्त करनार तुं समर्थ छे. मारे साचो आश्रय मात्र तारो छे. तुं मारुं रक्षण करनार भयथी बचावनार छे, ए मने मोटो आधार, आशा तथा विश्राम छे. कुटिलता क्रूरताथी भरेलो अने पापिष्ठ छुं, ते तारा विना कोने शरण जाउं ? तारी दयानी छाया विना हुं क्यां जईने विश्राम पामुं ? हे दयासिंधु प्रभु ! हुं तारो छुं, तारी आगळ मारा मनना बधा उभरा कहाडीने अभिनंदनपूर्वक प्रार्थना करुंछुं के मारां पापकर्मोने घाळी नांखी मारुं मन पवित्र कर. सघळी दुर्वासना, सघळा पापसंकल्पो तथा सघळा दुर्विकारो मारा मनमांथी जडमूळथी काढी नांख. हे कारुण्यमूर्ति प्रभु ! हुं मारा मनमां विचार करुंछुं तो तारी साथे मारे गंभीर, पवित्र, अने दीर्घ संबंध केटलो बधो छे, अने ते संबंध भूली जईने में केटलां बधां दुष्ट अने घोर कर्म कर्यां छे; मारो अधर्म, अनाचार केटलो छे ! जो तारो दयाळु स्वभाव न होत तो हुं कदी पण क्षमाने पात्र थात नहिं. तारी शुभ प्रेरणा पाळवाने बंधायलो छतां घणी वेळा ते उल्लंघी छे; तारा उपकारो भूली जईने हुं कृतघ्नी थयोछुं. तें मने सारे मार्गे जवानी तथा भयथी बचवानी सूचना आप्या छतां तेना उपर में लक्ष आप्यो नथी; तारी मारा उपर प्रीति छतां में तारी उपर प्रीतिभाव राख्यो नथी; मारी प्रीति संसारनां क्षणिक सुखो साथे अमर्यादे वळगी रही छे; आ बधो विचार करुंछुं तो तारा आगळ

हुं एक शब्द पण उच्चार करवाने योग्य नथी. मारां दुरित कर्मथी लज्जा पामी भ्रूजतो भ्रूजतो तारी पासे उभो रह्यो छुं; अपराधी छुं, तुं मारुं रक्षण कर, मारो उद्धार कर. हुं पापकर्मनो खरेखरो पश्चात्ताप करीने क्षमा मागुंछुं, ते कृपा करी मारी आ प्रार्थना स्वीकारीने मने सद्विचार तथा सुमति आप; अपवित्र विचारथी मने वेगळो राख; खोटा संगथी मने छोडाव; धार्मिकपणाना खोटा ढोंग तथा दंभथी मने दूर राख; मिथ्याभिमान तथा गर्व तथा प्रपंचथी मुक्त कर. जे क्रियाथी तारा उपरनी मारी प्रीति घटे एवी क्रियाथी मारुं मन निवृत्त कर. मारामां जे भूल खोड होय ते कहाडी नांखी नीति तथा सदाचारमां मारुं मन प्रवृत्त थाय एवी योजना कर; मारा मनमां खोटी वासना तथा खोटा संकल्प उत्पन्न थाय ते वेळा तारुं स्मरण करीने ते विचारोने मनमांथी कहाडी नांखवानी मने शक्ति आप; आध्यात्मिक सुख मळवानो हुं यत्न करुं तेमां तुं सहाय रहे. हे परात्पर भगवन् !

कायेन वाचा मनसेंद्रियैर्वा बुध्यात्मना वा प्रकृतेःस्वभावात् ।
करोमि यद्यत्सकलं परस्मै परात्परायेति समर्पयामि ॥ १ ॥

काया, वाणी, मन, इंद्रिय, बुद्धिवडे, आत्मा वडे तथा प्रकृतिना स्वभाववडे जे जे कर्म करुंछुं ते हे परमेश्वर ! हुं तने अर्पण करुं छुं.

दयाळु पिता सर्व रीते हुं तारो छुं; तुं मारुं सर्व काळ रक्षण कर.

त्वमेव माताच पिता त्वमेव त्वमेव बंधुश्च सखा त्वमेव ।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव त्वमेव सर्वं मम देव देव ॥ १ ॥

हुं मारो मातपिता छे. तुं मारो बंधु तथा तुं मारो मित्र छे, मारी विद्या तथा द्रव्य तुं छे; हे देव ! तुं मारुं सर्वस्व छे.

अपराधसहस्राणि क्रियन्तेऽहर्निशं मया ।
दासोऽहमिति मां मत्वा क्षम्यतां परमेश्वर ॥ १ ॥

हुं अहर्निश सहस्रावधि अपराध करुंछुं; मने तारो दास जाणीने हे परमेश्वर ! मारा अपराध क्षमा कर. शांतिः शांतिः शांतिः

दिंडि ८.

सकल विश्वविषे छो विराजमान, सर्व प्राणि प्रते छे दया समान;
सदाकाळ करुं भक्तिसुधापान, गाउं निर्मल प्रभु मंगल गुणगान. १
तमे पूज्य देव परम उपकारी, सुणो नाथ नम्र विनति सर्व मारी;
करो पाप कर्मनी कृपाथि क्षान्ति, हृदयताप हरी आपि परम शान्ति.२
भक्तवत्सल भगवंत भक्ति तारी, जाणुं सर्व वस्तुथी हुं श्रेष्ठ सारी;
सदा ध्यान रुडुं हृदयविषे धारुं. कृपानाथ तने कदि नहीं विसारुं. ३
दुःखसमय सदा धैर्य तमे देशो, मने सर्वदा सहाय तमे रे'शोः
परमप्रेमभक्तिभावथी उपासुं, सदाकाळ चरणसमिप हुं निवासुं. ४
कृपासागर शुभ नाम तमे धारो, कदी भक्तने तमे नहीं विसारो;
[illegible] एम मोक्षपदे सहजमां जवाय.५

ललित.

जगतवंद्यरे वंदिये तने, प्रणत प्राणियो पामरो अमे;
प्रणिपतो प्रभू लक्षमां धरो, करुणसागरा रे कृपा करो. १
सकल सिद्धिना छो महोदधि, नव स्तुती थशे रे यथाविधि;
अनुग्रहो दया पूर्ण विस्तरो, करुणसागरा रे कृपा करो. २
अणचिंत्यां तमे कार्य तो करो, विपति संकटो भक्तनां हरो;
प्रभुप्रताप तो छे खरेखरो, करुणसागरा रे कृपा करो. ३
मुक जनो वदे वाणी शुद्धरे, गिरि उल्लंघशे पंगु वृद्ध रे;
प्रभु कृपा तणो सत्य आशरो, करुणसागरा रे कृपा करो. ४
अनुग्रहो किधा ने करो सदा, सघळि टाळशो दुःख आपदा;
अति दया करीने ग्रहो करो, करुणसागरा रे कृपा करो. ५
नव गण्यो अमे धर्मनो विधि, दुरित दुष्कृती रे बहु किधी;
प्रभु बतावशो पंथ पांशरो, करुणसागरा रे कृपा करो. ६
पुत्त कपूत तो थाय यद्यपि, नव पिता करे त्याग तो कदी;
नियम न्याय ए राखशो खरो, करुणसागरा रे कृपा करो. ७
प्रभु समर्थ छो प्राणना पति, प्रणत भक्तने द्यो रुडी मति;
पतितपावना पाप संहरो, करुणसागरा रे कृपा करो. ८
परमब्रह्म रे प्रार्थना सुणो, अवगुणो कदी नाथ ना गणो;
प्रभु शुभाशिषो नित्य उच्चरो, करुणसागरा रे कृपा करो, ९
प्रभु कृपासुधादृष्टियो करो, मुज चित्ते सदा सद्गुणो भरो;
घटित कामना भक्तनी पुरो, करुणसागरा रे कृपा करो. १०

शालिनी.

विश्वाधीशा विश्वबंधा विधाता, सत्यानंता सच्चिदानंद कंदा;
श्रद्धाभक्ती ध्यान योगे हुं वंदुं, तारो मारे आशरो दीनबंधु. १
देवा तारुं छे अधिष्ठान सत्य, सर्ज्युं छे तें सृष्टिनुं सर्व कृत्य;
दीसे लीला सर्व आनंदकारी, विश्वेव्यापी पूर्ण शक्ति तमारी. २
शीशी शोभा सृष्टि केरी वखाणुं, सत्ता तारी सर्व ठामे हुं जाणुं;
जीवो सर्वे देहधारी विकारी, तेओथी शुं थाय स्तुति तमारी. ३
दोषो देखी उपकारो करोछो, प्राणीओने अन्नपानो भरोछो;
एवा स्वामी छो प्रभूरे कृपाल, संभाळोछो भक्तने सर्वकाल. ४
देवा तारी जो कृपादृष्टि थाशे, सत्कर्मोना शुद्ध मार्गे जवाशे;
आपो नित्ये दासने बुद्धि रूडी, कापो मारी वासना सर्व कूडी. ५
जाणो मारी गुप्त वातो सहूरे, लज्जा सर्वे हाथ तारे प्रभूरे;
उगारी ल्यो संकटोथी दयाल, जाणी हुंने दास अल्पज्ञ बाल. ६
आव्यो तारे द्वार हुं दीनदास, काढो देवा ना मने तो निराश;
वारेवारे छे प्रभूने प्रणाम, पूरो भक्तोना तमे सर्व काम. ७
आपो आपो चित्तने शान्ति आपो, कापो कापो प्राणीनां कष्ट कापो;
धारो धारो प्रार्थना लक्ष धारो, तारो तारो विश्वसिंधूथी तारो.८
कामक्रोधादीक बंधो न छूटे, नित्ये खोटा चित्त संकल्प ऊठे;
आ संसारे सत् क्रिया जो न थाय, निश्चे मुक्ती धाममां ना जवाय.९

अज्ञानी छुं सत्य मार्गे चढावो, दोषो मारा नाथ सर्वे शमावो;
मोहाब्धीथी पार हुंने जवानी, आपो देवा सत्य नौका कृपानी.१०

साष्टांगे हुं वंदिने वारवार, मानुं तारा सर्वदा ऊपकार;
कृत्यो मारां नाथ लक्षे न लेशो, सद्विद्या सज्ज्ञाननो बोध देशो.११

नीती नीमोनो सदा भंग थाय, तोए तारी प्रीति पूरी जणाय;
प्रेरो स्वामी सन्मतीओ सदाय, जेथी निश्चे मोक्षमार्गे जवाय. १२

सर्वात्माने शुं कहुंरे वधारे, सर्वे दोरी हाथ छे नाथ तारे;
प्राणीने छे सत्य आधार तारो, तेनां सर्वे संकटोने निवारो. १३

थाशे क्रीया तुं प्रभू जेम धारे, संकल्पो छे सत्य तारा वधारे;
तारुं धार्युं सर्वदा सिद्ध थाय, मिथ्या यत्नो जीवनां सर्व जाय.१४

लज्जा राखो दास हुं छुं तमारो, व्याधी कष्टो सर्व मारां निवारो;
वंदुं नित्ये नाथ बे हाथ जोडी, कामादीना नांखशो पाश तोडी.१५

सत्कर्मोथी चित्तनी शुद्धि थाय, भक्तिद्वारे मोक्षधामे जवाय;
ढोंगो वेशो बाह्यना सर्व टाली, अंतःशुद्धी छे तने नाथ व्हाली.१६

नीती मार्गे चालतां कष्ट थाय, तोए ते सन्मार्गने ना मुकाय;
इच्छा तारी मानि आधीन रे'वुं, माथे आवे कष्ट ते सर्व से'वुं. १७

एवी बुद्धी प्रेरशो प्राणनाथ, वाञ्छा पूरो दासनी मात तात;
अंते देवा तुं विना को नथी रे, त्राता मारो हे दयाना निधीरे. १८

रूडां कार्यो लोकनां जो न थाय, मिथ्या फेरो जन्मनो सर्व जाय;
आ विज्ञप्ती स्वल्प मारी स्विकारो, सत्कर्मोना सूचवो सद्विचारो.१९

आपत्काळे धीरता नाथ आपो, भक्ती सेवामां प्रभू वृत्ति थापो;
द्रव्यादीनो लाभ संपूर्ण थाय, त्यारे पूरी तो परीक्षा जणाय. २०
विश्वस्वामी जो हशोरे सहाय, वृत्ती मारी गर्वथी ना भमाय;
सन्मित्रो आ सृष्टिमां जे अमारा, तेओने द्यो सद्‌गुणो बोध सारा.२१
शत्रुओनी दुर्मतीने सुधारो, सर्वे स्थाने शांतियोने वधारो;
जीवोनुं जे वस्तुथी थाय हीत, अंतर्यामी आपने छे विदीत. २२
सर्वे प्राणीनी स्थिती हाथ तारे, तारो चित्ते सत्य विश्वास धारे;
सृष्टिस्रष्टा सत्य छो ते प्रमाणुं, सर्वे कर्मोना प्रभू साक्षि जाणुं. २३
मानी लेशो प्रार्थना नम्र मारी, आशा राखुं नाथ पूरी तमारी;
आ संसारे चित्तनी शांति पामुं, अंते तारा क्षेम धामे विरामुं. २४

ललित.

प्रभुपदे अमे पाय लागिये, दुरित कृत्यनी माफि मागिये;
पतित पावना प्रेम लावशो, अनिति दुष्कृतीथी बचावशो. १
शुभ गुणो सदा नाथ आपशो, मनमलीनता कापि नांखशो;
सुणि तमे प्रभू नम्र विनति, शरण राखशो रे दयानिधि. २
प्रभु मनोरथो मागिये अमे, घटित जे हशे पूरशो तमे;
नव विसारशो दासने कदा, सुनिति सन्मती दाखशो सदा. ३

गायन.

पद.

भैरव तथा सर्व रागमां गवाय. चोताळ.

जय जयवंद्य जय, जय भगवंत जय,
जय परब्रह्म जय, जगदीश धन्य छो;
अखंड अव्यक्त शुद्ध, चिद्घन नित्य मुक्त,
असंग अचिंत्य सत्य अतर्क्य अनन्य छो. जय जगवंद्य०
प्रणमीए वारवार, मानी वहु उपकार,
कृपार्थी करो उद्धार, वरिष्ट वरेण्य छो;
शक्ति छे अति प्रवल, मति करो निर्मल,
आपो पद अविचल, सकलशरण्य छो, जय जगवंद्य०

पद.

जिल्हो. ताल एको.

(चाल, मेरे गिरधर गोपाल दूसरा न कोइ.)

जय जय जगवंद्य दयासिंधु उपकारी.
मंगलमयमूर्त्ति महामंगलशुभकारी,
मंगलप्रद पूर्ण प्रभू मंगळगुणधारी. जय जय जगवंद्य० १
सृष्टिमां दिसे तमारी सर्व शक्ति भारी,
भक्तनी विनंति विश्वनाथ ल्यो स्वीकारी. जय जय जगवंद्य० २
पापकर्म सर्व कृपानाथ द्यो विसारी,
शरण राखिने दयाल द्यो मति सुधारी. जय जय जगवंद्य० ३

प्रणमि अमे पापक्षमा मागिये तमारी,
आत्म उन्नति करो कृपाघना अमारी. जय जय जगवंद्य० ४

पद.

काफी. ताल, दीपचंदी.

विनति प्रभु सांभळो मारी, दया धारी. विनति०
करजोडि हुं प्रणाम करुंछुं, मागुं क्षमाओ तमारी;
आ भवमां सुख सन्मति आपो, अंते मुको न विसारी,
प्रभू बहु छो उपकारी. विनति० १
दया करी मानुष देह दीधो, प्रेरो मति शुद्ध सारी;
कर्तव्य कर्म करावो विश्वमां, रहो सहाये अमारी,
प्रार्थना चित्तमां धारी. विनति० २
क्षणे क्षणे उपकार करोछो, संकट सर्व विसारी;
प्रत्युपकार केई पेरे वाळुं, अल्प हुं जीव विकारी;
प्रभु तारी साचा भारी विनति० ३
षड्गुणयुतभगवंत तमे छो, भक्ततणा भयहारी;
भक्तियकी निश्चय हुं पामुं, प्रभुपद मंगलकारी,
लज्जा तमे राखो मारी. विनति० ४
चित्त करूं चरणार्पण नित्ये, प्रभु शुभ नाम उचारी;
आ स्वल्प वाक्यथी विनति किधी जे, ते तमे लेशो स्वीकारी,
कृति मारी सर्व विचारी. विनति० ५

आरति.

जयदेव जयदेव जय जय जगत्राता जय जय जगत्राता;
सात्त्विक शुभ गुण धाता (२), दिनवत्सल दाता. जयदेव० ॥१॥
स्थिरचरव्यास महेश, मंगलशुभकारी (२);
भवपति भक्त जनोना (२), भयसंकटहारी. जयदेव० ॥२॥
सृष्टवस्तुवत् नाथ, नथि मतिमा तारी (२);
चिन्मय मंगल अविचल (२), अनुपम अविकारी. जयदेव० ॥३॥
शिर साष्टांग प्रणाम करिये प्रभु तमने (२);
भवथकि पार उतारो (२), करुणा करि अमने. जयदेव० ॥४॥
पतितोद्धारक नाथ, पापक्षमा करशो (२);
अल्प जिवोना दोषो (२), नव लक्षे धरशो. जयदेव० ॥५॥
सर्वोत्तम सर्वेश, सर्वांतर्यामी (२);
सत्य सदाशिव स्वामी (२), निर्मल निष्कामी. जयदेव० ॥६॥
अंतर्ध्योनथि नाथ, आराधन करिये (२);
तुज करुणादृष्टि थकी (२), भवसागर तरिये. जयदेव० ॥७॥
प्रभु द्यो आशीर्वाद, सद्गुण आचरिये (२);
अति उपकार तमारा (२), नित्य अमे स्मरिये. जयदेव० ॥८॥



अंक ९ मो.

ललित.

प्रभु परात्परा प्राणना पति, प्रणमिने करुं नम्र वीनति;
सबळ सत्य छो सन्मतिप्रदा, प्रभु करो कृपादृष्टि सर्वदा. १

अति अशक्त छुं भक्ति शुं करुं, मन मलीनताथी बहु भर्युं;
विभु विचारशो दासदीनता, प्रभु करो कृपादृष्टि सर्वदा. २

विकट घांटि छे विश्वनाथरे, तुज विना ग्रहे, कोण हाथरे;
नव पडे मने दुःख आपदा, प्रभु करो कृपादृष्टि सर्वदा. ३

जिव करे सदा कर्म निंद्यरे, नव जुवो तमे विश्ववंद्यरे;
विभु तमारि छे ए वरिष्ठता, प्रभु करो कृपादृष्टि सर्वदा. ४

दिनजनस्थिती लक्ष धारशो, भव थकी मने नाथ तारशो;
जिव समस्तने भक्तिमुक्तिदा, प्रभु करो कृपादृष्टि सर्वदा. ५

विनति हुं करुं-छुं यथामति, कुशलता करो रे कृपानिधि;
मुज बतावशो सन्मती सदा, प्रभु करो कृपादृष्टि सर्वदा. ६

हृदयमां मने नाथ राखशो, नियम नीतिना नित्य दाखशो;
दुर करी बधी चित्तनी व्यथा, प्रभु करो कृपादृष्टि सर्वदा. ७

चरणपंकजे पाय लागुंछुं, दुरित कर्मनी क्षांति मागुंछुं;
पतितपावना पूर्ण कामदा, प्रभु करो कृपादृष्टि सर्वदा. ८

परम प्रेमथी प्रार्थना करुं, हृदयमां दयासिंधुने स्मरुं;
नव विसारशो दासने कदा, प्रभु करो कृपादृष्टि सर्वदा. ९

प्रभु तने महा पूज्य जाणुंछुं, तुज अनुग्रहो नित्य मानुंछुं;
नमुं नमुं नमुं छुं सहस्रधा, प्रभु करो कृपादृष्टि सर्वदा. १०

हे विश्वेश्वर विश्वव्यापी शान्तरूप, सर्वना प्रकाश करनार, सत्तावान्, स्वतंत्र, सकल सुखना आपनार, सर्वना साक्षी, सत्य, पूर्ण, अजन्म, अमर, परब्रह्म परमेश्वर! हुं तने प्रेमथी प्रणाम करी मागुंछुं के, आ संसारमां मारो वधो काळ तारी सारी भक्ति तथा सेवामां काढुं एवी मने सुमति आप. तारा उपर प्रीति रखाव. ताराथी विमुख थवाय, तारा उपरनी प्रीति उठी जाय एवी कांइ पण वस्तु आ संसारमां मने आपीश नहिं. मने सर्व वाते तारो पोतानो करी राख, के हुं निरंतर तारुंज अवलंबन राखीने रहुं. सुखमां तथा दुःखमां, सारी अथवा दुर्बल अवस्थामां नीरोगी अथवा रोगी होउं ते समयमां, तथा मारां गृहकृत्य तथा लौकिक व्यवहारनां काममां, ए सघळा प्रसंगमां तने सन्निध जाणीने तथा तारे आश्रये रहीने तने प्रिय लागे एवी वर्तणुक करुं, गमे ते ठेकाणे

वसंततिलका.

हे विश्वनाथ विभु सत्य समर्थ देव,
सर्वत्र व्यापि करुं नित्य तमारी सेव;
सर्वे स्थले वशि रह्या प्रभु आत्मराम,
साष्टांग नाथ तमने करुं हुं प्रणाम. १
सर्वेश तारि करुणायकि कार्य थाय,
निःशेष दुष्कृति जिवो तणि सर्व जाय;
देखुं दयानिधि दया सघळेज ठाम, साष्टांग नाथ० २
पादारविंद प्रभुना नमुं जोडि हाथ,
कृत्यो महान करवा मति मागुं नाथ;
राखुं निरंतर चित्ते प्रभु तारि हाम. साष्टांग नाथ० ३
जोता नथी जीवतणा अपराध पापो,
वात्सल्यभावयकि पोषण सर्व आपो;
माटे तमारुं करुणानिधि सत्य नाम. साष्टांग नाथ० ४
आस्तिक्यभावथि नमुं तमने त्रिकाल,
तारो त्रिलोकपति प्रेम थकी कृपाल;
पामुं परात्परपदे प्रभु हुं विराम, साष्टांग नाथ० ५
अज्ञानपाश करुणा करि कापि नांखो,
नित्ये प्रभू तव पदे मनवृत्ति राखो;
भक्तोनुं पालन करो प्रभु सर्वयाम. साष्टांग नाथ० ६

संसारमां सकल मंगल कार्य थाय,
संकष्ट विघ्न भय दुःख समस्त जाय;
अंते मळे समिपमुक्ति तणुंज धाम. साष्टांग नाथ० ७

विश्वेश छो सकळ विश्व तणा विधाता,
त्राता तमे सकलमंगल शान्तिदाता;
सत्ये तमारि करुणाथकि थाय काम, साष्टांग नाथ० ८

मालिनी.

शिर चरण नमावी नित्य पाये हुं लागुं,
प्रभु शरण हुं आवी दीन भावेथी मागुं;
मति शुजनि सुधारो, सिंधु संसार तारो,
सुख सकळ वधारो, विश्वनाथा छुं तारो. १

स्मरण शुभ तमारुं सर्व काळे हुं धारुं,
उभय कर पसारुं प्रेम पूरो वधारुं;
अनुग्रह न विसारुं नित्यप्रत्ये उचारुं;
करग्रहि करजोरे पूर्ण कल्याण मारुं. २

बहु बहु कथनो ते शुं करुं विश्वनाथ,
हृदयगत अमारी जाणि रयो सर्वदात;

होउं, तथा गमे तेवो प्रसंग मारे माथे आवी पडे, परंतु हुं तने न छोडतां तारे निर्माण करेले नीतिने रस्ते चालुं, अने तारा विना कोइनुं अवलंबन करुं नहिं. तुं चिदात्मरूप, सृष्ट वस्तुथी भिन्न तथा सर्वांतर्यामी एक अनादि अनंत ईश्वर छे, एम मने तारी प्रेरणाथी समजायुं छे, माटे जे अधम भक्ति तथा नीची उपासनाथी तारा उपरना पूज्यभावमां अवरोध थाय, जेथी तारो महिमा घटे, तथा तारा उपरनी मारी प्रीती ओछी थाय, जेथी मारा मनोविकार तृप्त करवानी वासना वधे, तथा संसारना तुच्छ विषयो भोगववानी वृत्ति थाय, एवी उतरती जातिनां अर्चन विधानो हुं कदी करुं नहिं, अने सदाकाल तारी सर्वोत्कृष्ट शुद्ध, प्रेमभक्ति उपर लक्ष रहे एवो तुं मने उपदेश तथा प्रेरणा करतो रहेजे. हुं तने भूली न जाउं अने सदा एज स्मरण राखुं के आ संसारमां रहेवानो मारो मुख्य हेतु तारी कृपा तथा तारो प्रेम संपादन करवानो छे. लोकव्यवहारनां काममां पण मारो खरो लक्ष तारा उपर राखीने व्यवहार चलावुं; मारा मनमां एवा स्वार्थ लोभ के लालच उत्पन्न थाय के तेना उपर आसक्त थइने तने भूली जाउं, तो एवी वासनाओनो मारा मन-मांथी समूल नाश करजे. सांसारिक भोग तथा सुख उपर अति आसक्ति न राखतां यथाघटित प्रीति राखीने तारा उपर पूर्ण अने साचो प्रेमभाव तथा दृढ विश्वास रहे, अने तारा सहवास विना बीजी कांइ पण इच्छा न थाय एवी मारी वृत्ति कर. हे दयालु पिता ! हुं तने नम्रतापूर्वक विनंति करुंछुं के आ संसा-

रमां रहुं त्यां सुधी हुं तारी पराभक्तिमां तत्पर रहीने मरण समये तारा उपर लक्ष राखीने, शांत तथा आनंदमय चित्तथी मारो आत्मा तने अर्पण करुं, एवी वृत्ति राखवामां तुं मने सामर्थ्य आप.

शांतिः शांतिः शांतिः ॥

दिंडि ९.

नमन करिने हुं वंदुं विश्वनाथ, नम्र भावथकी जोडुं उभय हाथ;
दीन दास जाणिने मने नभावो, हृदयताप शान्तिवारिथी शमावो. १

वृथा नाथ गयो सर्व मनुपजन्म, नथी कांइ किधुं पुण्य कर्म धर्म;
अंतकाले मुज सुगति केम थाशे, केम अमृत धाममां प्रभू जवाशे. २

दीनबंधु दयासिंधु छो कृपाल, मने उत्तम गति आपशो दयाल;
अहोनिशि हुं प्रभु भजन स्तवन गाउं, परम लाभ पामिने कृतार्थ थाउं. ३

धर्मपालन बल धैर्य मने देशो, सुमति आपि क्षमावंत तमे रे'शो;
विना भक्ति नहीं मुक्ति कदी थाय, सदा सद्भक्तिनो सुचवशो उपाय. ४

तने छोडि अन्य शरण क्यां हुं जाउं, प्रेमभाव सहित प्रभु समीप आवुं;
भक्ति ज्ञानरूपि तीर्थमां हुं नाहुं, थई पावन प्रभु स्तवन भजन गाउं. ५

प्रभु परम दयालु तुं पिता तुंज मात,
शुभ चरण तमारे जोडि उभो हुं हाथ. ३

विनययुत थइने याचना हुं करुं छुं,
चरण शिर धरीने चित्तथी वीनवुं छुं;
प्रभु परम कृपार्थी भक्ति आपो तमारी,
शुभ गुण सनमार्गे वृत्ति राखो अमारी. ४

उपेन्द्रवज्रा.

महाधिराजा सुणि याचनाने, पूरी करोरे प्रभु वांछनाने;
करुं नमस्कार हुं वार वार, प्रभु उतारो भवसिंधु पार. १

प्रसन्न नित्ये प्रभु नाथ रे'जो, दया करीने मति शुद्ध देजो;
विनाप्रभु तुं नथि कोई त्राता, पिता तमे मंगल क्षेम दाता. २

भुजंगी.

महाराज आनंददाता दयाल, दयादृष्टि छे आपनी सर्व काल;
क्षमा नाथ सर्वे करो पापकर्म, सदा आपशो नीतिना शुद्ध धर्म. १

सदा ऊपकारो तमारा जणाय, अमो जीवने नित्य संतोष थाय;
भरुंसो तमारो खरो छे अमारे, तमारा विना भक्तने कोण तारे. २

मनोर्थो अमे मागिये प्रार्थनामां, तमे नाथ जाणो किया योग्य तेमां;
कृपानाथ छो सर्व वाते समर्थ, करो पूर्ण स्वामी रूडा सर्व अर्थ. ३

इन्द्रवज्रा.

महेश्वरा हे परमेश्वरा हे भवेश्वरा हे जगदीश्वरा हे;
दयाकृपाकारक ईश्वरा हे, नमुं नमुं हुं अखिलेश्वरा हे. १

जगत्पितारे सुणजो विलापो, सहाय थै संकट सर्व कापो;
क्षमा करो नाथ समस्त पापो, कृपा कृपानाथ कृपाथि आपो. २

गायन.

पद.

भैरव तथा सर्व रागमां गवाय.

तत् सत् ब्रह्मपद, प्रणमुं हुं नित्य प्रत,
पूर्ण करो अर्थ सत्, करुणा करी कृपाल;
अखिल ब्रह्मांड विषे, प्रभुता तमारी दिसे,
वर्णन न पूर्ण थये, अल्पमति हुं हुं बाळ. तत् सत्०

अपराध छे अगाध, मुक्ति केम थाशे नाथ,
क्षमा मागुं मात तात, दीनजन प्रतिपाळ;
चित्त शान्ति आपो आप, सुणी दासनो विलाप;
उपकार छे अमाप, स्मरुं ते हुं सर्व काल. तत् सत्० १

पद.

काफी. ताल, दीपचंदी.

अपराध क्षमा करो मारो, हुं दास तमारो. अपराध०
अनंत कोटि ब्रह्मांड रचीने, सत्ता थकी विस्तारो;
सर्व स्थले करुणाओ देखुं, मानुं बहु उपकारो,
निराधारना आधारो. अपराध० १

सद्धर्मनीतिए विचरवा, आप्यो मनुष देह सारो;
दयाघना दयादृष्टि करीने, ज्ञान विवेक वधारो;
कदी चित्तथी न विसारो. अपराध० २

हुं अपराध अगाध करुंछुं, संकल्प दुष्ट विचारो;
निग्रहशक्ति कृपा करी आपो, मंद मतिने सुधारो;
प्रबल छे मनना विकारो. अपराध० ३

श्रवण करी विनति प्रभु मारी, आशीर्वचन उच्चारो;
दीनदयाल कृपा करी मारां, किल्बिष सर्व निवारो;
प्रभु विना एक न आरो. अपराध० ४

स्वयंभू जगकर्त्ता तमे छो, जड तुल्य नथी आकारो;
वेदशास्त्र पुराणो प्रमाणे, सत्य कहे सूत्रकारो,
प्रभु सृष्ट वस्तुथी न्यारो. अपराध० ५

अवगुण सामुं कदी नव जुवो, दुःख दारिद्र्य विदारो;
संकट समये सहाय रहीने, सन्निध आवी पधारो;
लज्जा प्रभु मारी वधारो. अपराध० ६

तर्क करी ऋषि मुनियो विराम्या, पाम्या तमारा न पारो;
अल्प जीव हुं स्तुति शुं गाउं, भवसिंधुथी उतारो;
सफल करी जन्म अमारो. अपराध० ७

हे ईश्वर जगदीश्वर स्वामी, शक्ति सबल बहु धारो;
शरण थई चरणे हुं वंदुं, दीन जाणी उद्धारो,
एज छे धर्म तमारो. अपराध० ८

पद.

काफी जिल्लो. ताल दीपचंदी.

नियंता नाथरे तने नमि नमि करिये प्रणाम.
प्रभुता तारी त्रिभुवनमां व्यापी,
विभु तारो अमने सत्य विराम. नियंता नाथरे० १

विश्व तणो उद्भव जे थकी छे,
जेमां सर्व वस्तु पामे परिणाम; नियंता नाथरे० २

जीवप्रतिपालन नित्य करो छो,
प्रभुसच्चिद्घन अंतर्याम. नियंता नाथरे० ३

ए शुभ गुण उत्तम महिमानी,
स्तुति करे, ऋग् यजु अथर्व साम. नियंता नाथरे० ४

दुरित कृति नव लक्षमां लेशो,
धारो तमे करुणासागर नाम. नियंता नाथरे० ५

शरणागत सेवक जन तारा,
तारी खरी चित्तमां राखिये हाम. नियंता नाथरे० ६

श्रवण करी प्रणिपत अमारी,
प्रभु परिपूर्ण करो शुभ काम. नियंता नाथरे० ७

क्षमा करी अपराध अमारा,
आपो प्रभु सन्निध मंगळ धाम. नियंता नाथरे० ८



आरति.

जयदेव जयदेव, जय जय जगराया जय जय जगराया;
अति अद्भूत अकालित छे (२), प्रभु तारी माया. जयदेव० ॥१॥
सकल वस्तुना नाथ छो सत्ये स्रष्टा (२);
जिव तणि सर्व कृतीना (२), छो निश्चय द्रष्टा. जयदेव० ॥२॥
मुज जिवतर छे नाथ, हाथ वधुं तारे (२);
तुजविण कोइ नथी प्रभु (२), अन्य शरण मारे. जयदेव० ॥३॥
कर जोडी परमेश, पाय तने लागुं (२);
तुज सन्निध आवी प्रभु (२), पाप क्षमा मागुं. जयदेव० ॥४॥
दया धर्मनुं मूळ, ए निश्चय मानुं (२);
सदा सुधर्माचरणे (२), रहि सत्ये चालुं. जयदेव० ॥५॥
ए सन्मति महाराज, मुज दिनने आपो (२);
शुभ कीर्तन करि प्रभुनां (२), जपुं मंगल जापो. जयदेव० ॥६॥
दिनजनना प्रतिपाळ, दुःख सकळ हरशो (२);
करुणाकर करुणा करि (२), कर मारो धरशो. जयदेव० ॥७॥
करि प्रभुने हुं प्रणाम, ध्यान धरुं चित्ते (२);
मंगल कार्य करावो (२), मुज हस्ते नित्ये. जयदेव० ॥८॥



अंक १० मो.

भुजंगी.

नमुं हुं परब्रह्म सच्चित्स्वरुप, नमुं हुं सदा साक्षि आनंदरुप;
नमुं हुं प्रभू प्राणदाता दयाळ, नमुं हुं तने सर्वदा सर्व काळ. १
शरीरादिना धर्मने आप जाणो, नियंता तमे सर्वसाक्षी प्रमाणो;
महत्तत्व चिद्रूप छो विश्वकर्त्ता, नमुं हुं नमुं हुं नमुं सृष्टिभर्त्ता. २
सहू इंद्रियोना गुणोने जुवो छो, अधिष्ठानतुं ज्ञान बुद्धिथी थो छो;
तमे एक अध्यक्ष छो विश्वनाथ, अती नम्र भावे नमुं जोडी हाथ. ३
सुषुप्ती समे इंद्रियो लीन थाय, तमे ते प्रसंगे रहो छो सहाय;
सहू ठाम ठामे कृपा देखुं तारी, पूरा गूण गावा नथी शक्ति मारी.४
जगत् सृष्टिमां सर्व सत्ता तमारी, कृती सर्व देखुं हुं आश्चर्यकारी;
अमे पामरो प्राणियो दुर्विकारी, स्तुति शुं करे मंद बुद्धी अमारी.५
रवींदुग्रहोना तमे छोज कर्ता, महत्तत्वने आप पोतेज धर्ता;
अती आदरे मानवी तारि शिक्षा, नहीं मानशे पामशे दंड दीक्षा.६
श्रुती शास्त्रथी कोइ पाम्या न पार, महीमा तमारो प्रभू छे अपार;
मती मंद शुं गूण गाउं तमारा, करो हे कृपाळु क्षमा दोष मारा.७
गुरु छो प्रभू छो तमे स्वामि मारा, स्मरुं हुं सदा ऊपकारो तमारा;
तमे सर्व विद्या सुबुद्धि प्रदाता, तमे छो प्रभू सर्वना सत्य त्राता.८
अति स्वल्प आ प्रार्थना छे अमारी कृपाथी तमे नाथ लेशो स्विकारी;
प्रभु प्रेमथी भक्तिनुं ज्ञान आपो, दया दृष्टिथी दासनुं दुःख कापो.९

हे षडै[1]श्वर्यगुणसंपन्न भगवान्! हुं सानंदांतःकरणथी तारी स्तुति करुंछुं; तारी अपार दयाना गुणानुवाद गाउंछुं. तुं मारुं प्रतिपालन करनार तथा सकल सुखनो आपनार छुं; तुं मने सन्मार्ग बतावनार, भयसंकटथी बचावनार, तथा परलोकमां मारा आत्मानुं कल्याण करनार छुं. तारी सत्ताथी सूर्य प्रकाश पामे छे, तारी सत्ताथी चंद्रमा शीतलताथी प्राणियोना शरीर तथा मनने शान्ति आपे छे; तारा नियम प्रमाणे असंख्य तारा तथा ग्रहगणो आकाशमां प्रकाशी रह्या छे; आ भूमंडल जोतां पृथ्वी अति सुंदर वनस्पति, औषधि, अन्न फूलफलादि सुखकारक वस्तुओथी भरपूर छे, ए सर्व तें अमारा सुखने माटे सरजावेलां छे. तुं महा समर्थ प्रभु आ भूगोल तथा बीजां अनेक ब्रह्मांडो धारण करी रह्योछे; तुं मने अन्न वस्त्र आपी मारुं पालनपोषण करे छे, सुख भोगववाने अनेक प्रकारना पदार्थो आपे छे, प्रत्येक

---

१ भगवान् एवुं परमेश्वरने विशेषण आप्युं छे "भग" एटले गुण-षट् (छ)गुण ईश्वरमां रहेला छे माटे "षडैश्वर्यगुणसंपन्न" एवुं विशेषण भगवाननुं छे. गुणनां नामः—[1]ऐश्वर्यस्य समग्रस्य [2]धर्मस्य [3]यशसः [4]श्रियः। [5]वैराग्यस्याथ [6]मोक्षस्य षण्णां भग इतीरणा ॥ ए छ गुण वडे भगवान् शब्दनी व्याख्या विष्णुसहस्रनामना भाष्यमां श्रीमत् शंकराचार्ये करी छे. अथवा बीजी भग शब्दनी व्याख्या पुराणमां करी छे ते ए छे के, [1]उत्पत्तिं [2]प्रलयंचैव [3]भूतानामा [4]गतिंगतिं. [5]वेत्ति विद्या [6]मविद्यां च स वाच्यो भगवानिति ॥

श्वास लेती वेळा तारा अनुग्रह तथा दयानो मने अनुभव थाय छे; ज्यां ज्यां दृष्टि करुंछुं त्यां त्यां तारी दया देखाय छे; प्रतिक्षणे तारुं सारापणुं तथा दयालुपणुं जोई सानंदाश्चर्य पामुंछुं.

जगत्नी रचना तथा तेनी नियमपूर्वक योजना तारा उपकारनुं स्मरण करावे छे तथा उत्साहपूर्वक तारी स्तुति करावे छे. हे विश्वंभर विश्वनाथ ! तुं सर्व चैतन्योनुं चैतन्य छे; तुं मारुं संरक्षण करे छे; मारुं सर्व उपजीवन तारे हाथ छे. हुं क्षुधातुर थाउंछुं त्यारे तुं मने अन्नपान आपीने विश्रांति आपेछे. विपत्ति तथा दुःख मारे माथे पडे छे त्यारे मारां नेत्रमां आंसु भरेलां जोइ जेम पिता पुत्रस्नेहथी पोतानां बालकोनुं आश्वासन करे छे, ते प्रमाणे तुं मारां नेत्रमां आंसु तारा दयालु हाथथी लोहीने मारा मननुं समाधान करे छे. ज्यारे कोई वेळा निराश थाउंछुं त्यारे तुं मने आशा तथा धैर्य आपे छे. आ संसारना लोक स्वार्थ अथवा द्वेषथी मारो त्याग करे छे, त्यारे तुं मारी पासे आवीने मने सहाय थई मारा चित्तने आनंद आपे छे. मारी वृत्ति पापकर्म करवानी थाय छे, त्यारे तुं मारा मनने चेतावे छे के आ कुकर्म न करवुं. आ तारी केटली बधी दया छे ! एनो हुं विचार करुंछुं तो तारा उपकार कही बतावबानी मारामां कांई पण शक्ति नथी. हुं किया शब्दोथी ए उपकार कही बतावुं ? हुं तने भूली जाउं छुं अने तने खोळतो नथी, तोपण तुं मारी संभाळ लेवानुं भूली जतो नथी. हुं दोष भरेलो छुं, तथापि तुं तारी कृपाछाया

नीचे मने राखे छे, अने जेमां मारुं सारुं तथा कल्याण थाय तेज तुं करे छे. हे दयाल! तारी दयानुं कोण वर्णन करी शके? तारी मारा उपर अपार दया तथा अपरिमेय सुतवात्सल्यता छे. तारा उपकारस्मरणपूर्वक हुं तने साष्टांग प्रणाम करुंछुं.

हे दयासागर जगदीश्वर! आ भूगोळना सर्व देशमां लोकोने तारा शुद्ध, सत्य अने करुणामय स्वरूपनुं ज्ञान प्राप्त थाय; पाखंडी, ढोंगी, खोटा, अने नास्तिक पंथोना मत नाश पामे; अने सत्य धर्मना सूर्यनो उदय थईने सर्व कुटुंब, सर्व देशीजन, तारी शुद्ध उपासना करी तारा मंगलनामोच्चारण पूर्वक तारी प्रार्थना करे; अने तारो प्रताप, तारो महिमा, जगत्मां विस्तार पामे एवुं करो. हे भगवन्! तव जयोस्तु जयोस्तु जयोस्तु.

तारी जय हो जय हो जय हो.

दिंडि १० मी.

अद्वितीय परम ब्रह्म तमे सत्य, तमे कीधुं सकल सृष्टितणुं कृत्य;
रची रचना सहु सृष्टि विषे सारी, दिसे सर्व घटित योजना तमारी.१
जोउं देहतणो यंत्र जो विचारी, सर्व युक्ति दिसे परम उपकारी;
जीव देहतणो धर्म पृथक सत्य, देह नाशवंत जीव सदा नित्य. २
देह साथ जीव जो विनाश थाय, सृजनहारतणो हेतु व्यर्थ जाय;
न्यायकारि देव न्याय करे सत्य, जीव पामे फळ जेवुं करे कृत्य. ३

तीर्थ स्नान थकी पातक नहिं जाय, नहिं श्राद्धथकी पितर तृप्त थाय;
मुक्ति पामवानुं ए नथी विधान, ब्रह्मप्राप्ति नहीं थाय विना ज्ञान.४
ज्ञान सत्य प्रभु ध्यान थकी थाय, परा भक्ति एज मुक्तिनो उपाय;
चित्त शुद्धि विना व्यर्थ बाह्य कर्म, नीतियुक्त पराभक्ति एज धर्म. ५
जगत सत्य जीव कर्म विधिस्थान, जेवुं कृत्य तेवुं पामवुं निदान;
पुण्य प्राणि पुण्य धाममां विरामे, सर्व पापि जीव सत्य पतन पामे.६
देह जीवतणो योग भंग थाय, सगां मित्र कोइ संग नहीं जाय;
सर्व स्नेहि जनो मागशे विदाय, थशे धर्म एक मात्र तो सहाय. ७
नथी मारुं आ विश्व चिर स्थान, थशे भावि काळ जीवने निदान;
मरण वेळा प्रभु तुंज सत्य त्राता, नथी नाथ कोइ अन्य मुक्तिदाता.८
कदी नाथ जुवो मारि क्रिया सामुं, भक्तिहीन दीन मुक्ति केम पामुं;
राखुं पतिज आपनी हुं नाथ भारे, भक्तवत्सल प्रभु भवथकी उतारे.९
करुं भक्ति सदा शुद्ध चित्त भावे, दया पूर्ण वसे नाथने स्वभावे;
महाकष्टसमय नाथ तमे धाओ, प्रेम भाव राखी हाथ तमे साओ. १०

दोहरा.

सत्तायी जे व्याप्त छे, जेथी थाय प्रकाश;
स्पष्ट वस्तुथी पार जे, परब्रह्म अविनाश. १
एवा श्रेष्ठ महेशने, भणशुं वारंवार;
दीन दास जाणी सदा, कृपा करो विस्तार,

उपजाति.

जगत् बधुं जे बळथी प्रकाशे, जेना प्रतापे स्थितिमांज भासे;
कृपा दयाओ जगमां जणाय, जेनी कलाओ न कदी कळाय. ३
एवा परमात्मा रहि साक्षीरूप, जुवे जगत्नी रचना अनूप;
नमुं नमुं ते प्रभु आदि देव, एकाग्र चित्ते करुं नित्य सेव. ४
अग्रे तमे छो वळि मध्यमां छो, प्रभू तमे अंत विषे रहो छो;
तमे किधी छे रचनाज भारे, सृष्टी बधी हाथ प्रभू तमारे. ५

उपेंद्रवज्रा.

ऋषी मुनीओ नहिं कोइ जाणे, स्वरूप जेनुं नहिं को प्रमाणे;
कला जिवोथी न कदी कळाय, प्रभूमहीमा सघळे जणाय. ६
व्रतस्थ जे साधु जनो महान, करे अहोरात्र तमारुं गान;
महा मुनी मंगल मार्ग पामे, महा प्रभूना पदमां विरामे. ७

इंद्रवज्रा.

हे विश्वना देव दयानिधान, आपो मने प्रेमथी दिव्य ज्ञान;
उत्कृष्ट ए अर्चननुं विधान, एकाग्र चित्ते धरुं तारुं ध्यान.

मंदाक्रांता.

विश्वाधीशा, विनयथि नमुं, नित्य पाये तमारे,
राखो स्वामी, शरण नथि को, अन्य आधार मारे;

भक्तिद्वारे, प्रभुपद मळे, एज विश्वास मारे,
सर्वात्मारे, विपति समये, आवजो शीघ्र वारे. १

कृत्यो सामुं, प्रभु नव जुवो, दोष अत्यंत थाय,
देवा तारो, दिन जन गणी, नित्य रे'शो सहाय;
अंतर्यामी, अकलित कला, को थकी ना कळाय,
अल्पज्ञोथी, प्रभु क्यम करी, स्तुति तारी कराय. २

आ संसारे, भ्रमित जिवनी, भक्तिथी मुक्ति थाशे,
सर्वे तेनां, त्रिविधि जनितो, दुःख संताप जाशे;
सत्कर्मोने, अनुसरणथी, सत्य भक्ती गणाशे,
सत्ये तारा, अनुग्रह थकी, विश्वसिंधू तराशे. ३

अज्ञाने में अगणित चुको, जे किधी ते शमावो,
ऐहीकामुष्मिक सुख थवा, शुद्ध क्रीया वतावो;
पूर्णात्मारे, प्रणत जनने, दीन जाणी निभावो,
आ संसारे, जनहिततणां, कार्य रूडां करावो. ४

सत्ता तारी, जड चर विषे, पूर्णताथी प्रमाणु,
स्रष्टा स्वामी, सगुण तमने, सर्वथी श्रेष्ठ मानुं;
अंतःशुद्धी, विण वधि वृथा, बाह्य क्रीया हुं जाणुं,
सर्वोत्कृष्टा, शुभफलप्रदा, प्रेमभक्ती वखाणुं. ५

विद्यादाता, अविहित क्रियाथी सदा दूर राखो,
सद्धर्मोनी, सदय चितथी, सन्मती नित्य दाखो;

दोषो मारा, प्रभु नव लहो, एज विश्वास आखो,
अज्ञानोना अति दृढ तमे, पाशने कापि नांखो. ६

सर्वाध्यक्षा, सकल जगमां, शक्ति तारी अगाध,
साक्षी सर्वान्तरगत तमे, विश्वव्यापी अजात;
प्राणीओनुं कुशल करता, छो तमे मात तात,
साष्टांगे हुं, अति विनयथी, वंदुं विश्वाधिनाथ. ७

प्रातःकाले, प्रभु करुं तने, नित्य हुं वंदनाओ,
सत्क्रीयाओ सफलित थवा, राखुंछुं वाञ्छनाओ;
सायंकाले, प्रणमि करुं हुं, प्रेमथी प्रार्थनाओ,
मागुं नित्ये, शयन समये, पूर्ण तारी कृपाओ. ८

माया तारी, अतिगहन छे, को थकी ना पमाय,
देवा तारा, अनुप पदनुं, माप कोथी न थाय;
शक्ती तारी, त्रिभुवन विषे, पूर्णताथी जणाय,
नित्ये तारी, परम करुणा-थी जिवोथी जिवाय. ९

सप्रेमांतःकरणथि करुं, मानसी अर्चनाओ,
वारे वारे, नमन करिने, याचुंछुं याचनाओ;
श्रद्धा भक्ती, थकि तुज पदे, राखुं हुं भावनाओ,
मागुं नित्ये, मन वचनथी, सर्व पापक्षमाओ. १०

सत्तानी जो, करुं हुं तुलना, तुच्छ हुं प्राणि भासुं,
तारी देवा, अतिशय दया-थी, हुं विश्वे निवासुं;

भक्तिद्वारे, प्रभुपद मळे, एज विश्वास मारे,
सर्वान्मारे, विपति समये, आवजो शीघ्र वारे. १

कृत्यो साधुं, प्रभु नव जुवो, दोष अत्यंत थाय,
देवा तारो, दिन जन गणी, नित्य रे'शो सहाय;
अंतर्यामी, अकलित कला, को थकी ना कळाय,
अल्पज्ञोथी, प्रभु क्यम करी, स्तुति तारी कराय. २

आ संसारे, भ्रमित जिवनी, भक्तिथी मुक्ति थाशे,
सर्वे तेनां, त्रिविधि जनितो, दुःख संताप जाशे;
सत्कर्मोने, अनुसरणथी, सत्य भक्ती गणाशे,
सत्ये तारा, अनुग्रह थकी, विश्वसिंधु तराशे. ३

अज्ञाने में अगणित चुको, जे किधी ते शमावो,
ऐहीकामुष्मिक सुख यथा, शुद्ध क्रीया वतावो;
पूर्णात्मारे, प्रणत जनने, दीन जाणी निभावो,
आ संसारे, जनहिततणां, कार्य रूडां करावो. ४

सत्ता तारी, जड चर विषे, पूर्णताथी प्रमाणु,
स्रष्टा स्वामी, सगुण तमने, सर्वथी श्रेष्ठ मानुं;
अंतःशुद्धी, विण वधि वृथा, बाह्य क्रीया हुं जाणुं,
सर्वोत्कृष्टा, शुभफलप्रदा, प्रेमभक्ती वखाणुं. ५

विद्यादाता, अविहित क्रियाथी सदा दूर राखो,
सद्धर्मोनी, सदय चितथी, सन्मती नित्य दाखो;

પ્રભુનું પ્રભુત્વ જાણી, પ્રેમભક્તિભાવ આણી,
અમે સર્વે અલ્પ પ્રાણી, પ્રણમીએ લાગી પાય. મંગલ સમય૦ ૧

પદ.

સોરઠ. ત્રિતાલ.

પ્રભુતા તમારી છે મોટી, પ્રભુ પરમાત્મારે; પ્રભુતા૦
જગરચના અતિ ગહન કીધી છે, કૃતિ નથી કિંચિત્ ખોટી. પ્રભુતા૦ ૧
જડ ચૈતન્ય વિષે પ્રભુ ભાસે, અદ્ભુત તારી હથોટી. પ્રભુતા૦ ૨
આ સંસારે જન્મ આપીને, જુવો અમારી કસોટી. પ્રભુતા૦ ૩
કૃપાવના કરુણા કરશો તો, નવ લાગે દુઃખ સોટી. પ્રભુતા૦ ૪
તુજ પદપંકજમધ્ય અમારી, વૃત્તિ નિરંતર ચ્હોંટી. પ્રભુતા૦ ૫
કરદ્વય જોડી પ્રભુ તુજ ચરણે, કરિયે પ્રણામો કોટી. પ્રભુતા૦ ૬

પદ.

સોરઠ. ત્રિતાલ.

પરબ્રહ્મ પ્રણામ કરું તમને ત્રિવિધિ પરિતાપ શ્રમાવો સદા. પર૦
સદ્ગુણથી ભરપૂર પ્રભુ સર્વેશ્વર સત્ય સુબુદ્ધિપ્રદા,
અવગુણ દોષ અસંખ્ય કરું કરુણાવિણ નાથ ગતિ ન કદા. પરબ્રહ્મ૦ ૧

પદ.

સોરઠ જિલ્લો. ત્રિતાલ, પંજાબી.

તારોરે દયાલ મને દીન ગણી તારોરે;
શરણ આવીને હું, કરુંછું પોકારોરે. દયાલ૦

सृष्टी केरा, सवळ नियमो, निर्खि चित्ते उलासुं,
अंतर्यागे, यजन करिने, प्रेमभावे उपासुं. ११
वंदुं विश्वाधिपति तमने, विघ्न सर्वे निवारो,
बुद्धीदाता, सतत अमने, सूचवो सद्विचारो;
भक्तीभावे, विनति करुं ते, लक्षमां सर्व धारो.
विश्वोद्धारा, विभु करि कृपा, विश्वसिंधूथी तारो. १२

वंशस्थविल.

नमी नमी नाथ दयानिधी तने, प्रणाम सर्वे करिये सदा अमे;
दया करी दुःख वधां निवारशो, प्रसन्नताथी भवसिंधु तारशो. १
विनंति विश्वेश चित्ते विचारशो, घटीत जाणो प्रभु ते स्विकारशो;
सदा सुनीती सुमती वतावशो, कृपा करी पाप थकी बचावशो. २

गायन.

पद.

भैरव तथा सर्व रागमां गवाय. चोताल.

मंगल समय आज, स्मरीने जगाधिराज,
मळी भक्तनो समाज, स्तुतियो तमारी गाय;
जगतंत्र विश्वनाथ, सघळो तमारे हाथ,
शक्ति आपनी अगाध, सहु वस्तुमां जणाय. मंगल समय०
सत्कार्यमां सदाय, रहेशो तमे सहाय,
हरशो वधा अपाय, करुणाथी कार्य थाय;

અંક ૧૧ મો.

લલિત.

પ્રણમું હું પરબ્રહ્મ દેવને, સુમતિ આપશો સર્વદા મને;
પ્રભુ ધરો ષડૈશ્વર્ય લક્ષણો, ભવપતિ પ્રભૂ પ્રાર્થના સુણો. ૧
પરમ બ્રહ્મનું ગાન ગાઉંછું, અતિ કૃતાર્થ હું નાથ થાઉંછું;
દિન તણાં કરો નિત્ય પોષણો, ભવપતિ પ્રભૂ પ્રાર્થના સુણો. ૨
અનુગ્રહો કરો છો તમે સદા, નવ ચળી શકે પાડ તો કદા;
પ્રભુ કરો સદા ભક્તરક્ષણો, ભવપતિ પ્રભૂ પ્રાર્થના સુણો. ૩
અનિતિદુષ્કૃતી મેં કિધી અતિ, શરણ છું મને ઘો રુડી મતિ;
દુર કરો દયાનાથ દુર્ગુણો, ભવપતિ પ્રભૂ પ્રાર્થના સુણો. ૪
ભ્રમિત છું પ્રભૂ ભ્રાંતિસાગરે, તુજવિના નહીં હાથ કો ધરે,
સબલ સેતુ છે તું દયા તણો, ભવપતિ પ્રભૂ પ્રાર્થના સુણો. ૫
પ્રભુપ્રસાદથી પૂર્ણતા મળે, પ્રભુપ્રસાદથી દીનતા ટળે;
પ્રભુસ્વભાવમાં છે દયા ગુણો, ભવપતિ પ્રભૂ પ્રાર્થના સુણો. ૬
ભય વિપત્તિ સંકષ્ટને સમે, સહનશીલતા આપશો તમે;
દિનજનો તણાં દુઃખને હણો, ભવપતિ પ્રભૂ પ્રાર્થના સુણો. ૭
પ્રભુકૃપાદ્રુમો-ની લતા નિચે, સુખનિવાસ ઘો રે દયાનિધે;
નવ જુવો તમે જીવદૂષણો, ભવપતિ પ્રભૂ પ્રાર્થના સુણો. ૮

दूर त्वरित करो दुर्मति प्रभु, बालक छुं अज्ञानरे,
बालक बालक बालकरे, क्षण क्षण क्षण मातुं प्रभु उपकारोरे; दयालु० १

आरति.

जयदेव जयदेव जयजय जयकारी, जयजय जयकारी;
जगदुत्पादक-पालक (२), शक्ती सबल धारी. जयदेव० ॥१॥
दृढतर छे विश्वास, प्रभुपदमां अमने (२);
आशय भक्त जनोनो (२), सर्व विदित तमने. जयदेव० ॥२॥
मंगलकारि महेश, मंगलगुण आपो (२);
आज्ञांकित सेवकनां (२) संहरशो पापो. जयदेव० ॥३॥
जगतारक जगनाथ, जगदीश्वर दाता (२);
संकटदुख भयहारक (२), सर्वजनत्राता. जयदेव० ॥४॥
सगुणरूप साक्षात्, साष्टांगे नमिये (२);
वाक्कायामनथी प्रभु (२), भक्ति विषे रमिये. जयदेव० ॥५॥
प्राणपति परमेश, प्रणिपतने सुणशो (२);
अनुग्रहथकी अमारा (२), अवगुण नव गणशो. जयदेव० ॥६॥
पूर्ण कृपायकि नाथ, निर्मळ मन करशो (२);
प्रेमल भक्ति तमारी (२), हृदय विषे भरशो. जयदेव० ॥७॥
अति अद्भूत अचिंत्य, छे प्रभुनी शक्ति (२);
आ लोके सुख आपो (२), परलोके मुक्ति. जयदेव० ॥८॥



अंक ११ मो.

ललित.

प्रणमुं हुं परब्रह्म देवने, सुमति आपशो सर्वदा मने;
प्रभु धरो पडैश्वर्य लक्षणो, भवपति प्रभू प्रार्थना सुणो. १
परम ब्रह्मनुं गान गाउंछुं, अति कृतार्थ हुं नाथ थाउंछुं;
दिन तणां करो नित्य पोषणो, भवपति प्रभू प्रार्थना सुणो. २
अनुग्रहो करो छो तमे सदा, नव वळी शके पाड तों कदा;
प्रभु करो सदा भक्तरक्षणो, भवपति प्रभू प्रार्थना सुणो. ३
अनितिदुष्कृती में किधी अति, शरण छुं मने द्यो रुडी मति;
दुर करो दयानाथ दुर्गुणो, भवपति प्रभू प्रार्थना सुणो. ४
भ्रमित छुं प्रभू भ्रांतिसागरे, तुजविना नहीं हाथ को धरे,
सबल सेतु छे हुं दया तणो, भवपति प्रभू प्रार्थना सुणो. ५
प्रभुप्रसादथी पूर्णता मळे, प्रभुप्रसादथी दीनता टळे;
प्रभुस्वभावमां छे दया गुणो, भवपति प्रभू प्रार्थना सुणो. ६
भय विपत्ति सं-कष्टने समे, सहनशीलता आपशो तमे;
दिनजनो तणां दुःखने हणो, भवपति प्रभू प्रार्थना सुणो. ७
प्रभुकृपाद्रुमो-नी लता निचे, सुखनिवास द्यो रे दयानिधे;
नव जुवो तमे जीवदूषणो, भवपति प्रभू प्रार्थना सुणो.

सुहृद बंधुनी सन्मती करो, दुरजनो तणी दुर्मती हरो,
सुचवशो मने सर्व सद्गुणो, भवपति प्रभू प्रार्थना सुणो. ९

शुभ पदाब्ज हुं नित्य देवनां, प्रणमि अर्पुछुं पुष्प प्रेमनां;
सकलशांतिनी आशिषो भणो, भवपति प्रभू प्रार्थना सुणो. १०



हे जगत्कर्ता कृपालु पिता! आ समये अमे अमारा हृदयमां तारुं मंगळ ध्यान करीने तने प्रेम सहित प्रणाम करियेछिये. आ संसारमां अमने जन्म आपवानो तारा केवो रुडो अने गंभीर हेतु छे, अने अमारां कर्त्तव्य कर्म संबंधी उत्तर आपवानुं काम केटलुं भारे छे, तेनो अमे विचार करिये छिये, त्यारे अमे केवल लज्जायमान तथा भयभीत थइये छीए; कारण के अमारे अहीं आवीने जे करवुं जोइये ते कांइ कर्युं नथी. तारा प्रत्ये अमारो शो धर्म छे, तथा अमारे पोते अमारा आत्माना कल्याणने अर्थ शी रीते वर्तवुं जोइये, ते सघळो धर्म अमे जाणिये छिये, ते छतां ते धर्म जेवो जोइये तेवा बजावी शक्या नथी. सारासार विचार करवाने तें अमने विवेकबुद्धि आपी छे, तथापि तेनी प्रेरणा प्रमाणे चालवाने अमे पूर्ण लक्ष आप्यो नथी, ए अमारो केटलो भारे अपराध छे! हे मंगलमय प्रभु! अमारा शरीरनी तथा मननी नबळाई तुं जाणे छे. अमारां कुकृत्य सामुं न जोतां तारा दयालु स्वभावथी अमारा उपर दयादृष्टि करीने

अमारा सघळा अपराध क्षमा कर, अने अमारा आत्मानुं कल्याण थाय एवो मंगल मार्ग अमने बतावे। अमे पतित छिये, तथापि तुं अमारुं रक्षण करे छे, ए तारो अमारा उपर मोटो उपकार छे. हे प्राणदाता प्राणरक्षक अमे तारे शरण छिये. तें अमने जीव आप्यो छे. पितानी पुत्र उपर प्रीति होय छे, ते प्रमाणे तारां दीन रंक बालक उपर प्रेम राख. परिणामे सर्व प्राणियो तारा मंगल धामे आववानां छे. अमारो देह तथा आत्मानो संबंध छूटे त्यारे ऊजळे म्होए तारे पवित्र धामे आवी शकाय एवी वर्तणुके चालिये, तारी आज्ञा पालिये; अने तने विसरी न जइये, एवी सदाकाल अमने प्रेरणा कर. सद्गुणी थवानो अमे श्रम तथा उद्योग करिये तेमां तुं सहाय रहे. तने सदाकाल सन्निध जाणीने अमे सद्धर्मे चालिये एवुं अमने सामर्थ्य आप. आ अमारी मागणी, हे जगदीश्वर! तुं कृपा करीने अंगीकार कर.

हे मंगलमय महाधिराज महासमर्थ सर्वव्यापक सच्चिदानंद परब्रह्म परमेश्वर! अमे तारे पवित्र चरणे प्रेम सहित अभिवंदन करिये छिये. आ जगत् ताराथी उत्पन्न थयुं छे, अने तुं जीवोनुं रक्षण करे छे. अमे तने जोइ शकता नथी, पण तुं अमने जुवे छे. आ जगत्मां तारा सरजेला सर्व पदार्थोमां तारी योजना तथा शरीरपिंजरमां गोठवेली घटित वस्तुओ तथा तेमां मूकेली यांत्रिक युक्ति, तथा आकाशमां ग्रहमंडलनी शोभा तथा तेओना भ्रमण तथा अस्तोदयना सुंदर नियमो निरखवाथी तारी अपार

शक्ति, अपार डहापण, अने अपार करुणा छे एम अमे समजिये छिये. तुं जाणे आ ब्रह्मांड रुपी पडदानी पाछळ रहीने करुणा-भरेली विशाल दृष्टिथी तारी रचेली विश्वरचनाने जुवे छे. हे दयानिधि! अमे निर्मल मनथी तारुं ध्यान धरी तारो महिमा गाइये छिये. तारी साची अने प्रेम सहित भक्ति ए अमो जीवो-नो धर्म छे; परंतु हे दिव्यपिता! अमे अमारा धर्मथी केटला वधा आडे रस्ते चढ्या छिये, तेनो विचार करिये छिये त्यारे अमे केम बचीशुं, अमारी वले शी थशे, एवा विचारथी भयभीत थइये छिये. जाणे अजाणे थयेलां अनेक पापनी क्षमा मागी हवे पछी अपराध नहि करवानुं वचन आपीए छिये. अमने रुडो मार्ग देखाड. तारी दया विना अमने पांशरो पंथ जडवानो नथी माटे भूलां पडेलां तारां रंक बालकोनी दीनवाणी सांभळी अमने पवित्र अने रुडो मार्ग बताव. तथास्तु.

दिहि ११.

दिव्य देव तमे परम ऊपकारी, करो श्रवण प्रभू प्रार्थना अमारी;
पुण्यकार्ये विषे राखुं हुं प्रवृत्ति, तुच्छ विषय थकी पामुं हुं निवृत्ति. १
पराभक्तिथकी मुक्तिए जवाय, सर्व शास्त्र विषे एज छे उपाय;
वृथा मनुष्यजन्म सर्वथा न जाय, सदा जनहितार्थ कार्य जो कराय. २
देवइच्छा अनुसार सदा चालुं, नीतिनियम प्रीतिपूर्वक हुं पाळुं;
शिरे आवे अति दुःखनो प्रसंग, नहीं थाय कदी नीतिनियमभंग. ३

करुं सर्वकाल सज्जनसत्संग, धर्मकार्य अर्थ अर्पु मारुं अंग;
एवि सुमति दयासिंधु मने देशो, सर्व समये संभाळ तमे लेशो. ४
सर्वशक्तिमान देव दयाधारी, नम्र विनति तमे सांभळो अमारी;
विकट विश्वपंथ घाटि महा भारे, दयानाथ विना कोण मने तारे. ५

स्रग्धरा.

शांती रूपे विराजो शुभवरद विभु स्वामि विश्वाधिभूप,
सत्ता सर्वत्र धारी सकल सुख करो सर्वना साक्षि रूप;
भक्तोनुं श्रेय कर्त्ता सकल भयहरा भक्तिमार्गे जणाओ,
एवा कारुण्यमूर्त्ति, प्रभुपद नमिने, नित्य मागुं कृपाओ. १

शार्दूलविक्रीडित.

वंदुं हुं परमेश व्याप्त विभुने वंदुं जगाधीशने,
वंदुं सर्वशरण्य सत्यपदने वंदुं सदा ईशने;
वंदुं देव दयानिधी विभुवरा वंदुं हुं विश्वेशने,
वंदुं हुं परमात्म पूर्ण प्रभुने वंदुं परब्रह्मने.
जेनी सर्व ऋषी मुनी स्तुति करे स्तोत्रे महासुंदरे,
वेदोथी महिमा महान उचरी भक्तीपथे संचरे;
जेनुं ध्यान धरे निरंतर मने योगीजनो जे बधा,
जेनो अंत अनंत पामि न शके ते ब्रह्म वंदुं सदा. २

जे इच्छा थकि भूमि पर्वत जलो तत्वो थयां दीपितां,
जेणे सूर्य शशी ग्रहादि भुवनो कीधां बहु शोभितां;
जे सत्ता थकि राशि चक्र भगणो भासे महामंडले,
ते विश्वेशतणी अचिंत्य गतिने जीवो कदी ना कळे. ३

जेणे विश्व विषे विचित्र कृतिथी वस्तू स्रजावी बधी,
जेनी नित्य प्रते प्रजापर दिसे प्रीती दयाओ घणी;
जे छे सत्य समर्थ कार्य करवा कारुणमूर्ती सदा,
ते विश्वंभर सर्व पूर्ण करशो भक्तोतणी कामना. ४

जेनी शक्ति समस्त विश्व पसरी, जेमां दया छे भरी,
जेमांथी अतिश्रेष्ठ सृष्टि निसरी, जेथी स्थितीमां रही;
जेनो पार अपार को नव कळे सत्ताथि व्यापे सदा,
एवा ब्रह्म समर्थ सत्य प्रभुने नित्ये करुं वंदना. ५

विश्वाधीश वरिष्ठ नित्य तमने हर्षे करीने नमुं,
अंतर्यामि समर्थ नाथे तमथी शुं गुप्त राखी शकुं;
हुं अज्ञान प्रभूमहानमहिमा विस्तारथी शुं कहुं,
वाणीनो हुं विलास मात्र करीने विश्वास तारो धरुं. ६

तारो नाथ अनाथ दीन मुजने दृष्टी दयानी करो,
प्रेमेथी प्रतिपालना करि प्रभू संताप सर्वे हरो;
आपोरे वरदान मान मुजने सामीप्यमुक्ती तणुं,
सर्वज्ञ प्रभु शक्तिमान तमने शुं हुं कहुं रे घणुं. ७

द्रव्यादी सुख प्राप्तिनी प्रभु मती जेवी रहेछे घणी,
तेवी वृत्ति हृदे निरंतर रहो तारीज भक्ती तणी;
नित्ये ध्यान रहे तमारुं अमने एवी मती आपशो,
राखीने शरणे सदा शिव तमे संकष्ट सौ कापशो. ८

पूर्णात्मा परमेश ब्रह्म विभु जे सर्वत्र व्यापी रह्या,
जेना सात्विक पूर्ण शुद्ध गुणने सच्छास्त्रमां वर्णव्या;
एवा स्वामि समर्थ सत्य तमने पाये हुं लागी सदा,
मागुंछुं शुभ धर्म कर्म करवा सद्बुद्धि सद्वासना. ९

ब्रह्मांडाधिपती नमुं विनयथी विद्यापती भूपति,
भक्ति ज्ञान विवेक शांति सुमती आपी करो सद्गति;
पूरो सत्य सदर्थ सर्व जनना विश्वास राखुं सदा,
दीनानाथ दयाथि दूर करशो दारिद्रय दुःखापदा. १०

स्वामी सर्व समर्थ सत्य सवळी संपूर्ण सत्ता धरो,
मिथ्या मानुषियत्न जाय सघळुं ज्यारे कृपा ना करो;
माटे हुं निज दास आश धरिने मागुं तमारी कृपा,
कार्यो श्रेष्ठ विषे सहाय रहिने संतोष आपो सदा. ११

बांधीछे अवधी त्यहां लगि मती जीवो तणी चालशे,
तेथी पार गये घणो भ्रम थशे भ्रांती बहू भासशे;
माटे ते अवधीज मध्य रहिने धर्मध्वजा धारवी,
शिक्षाओ प्रभु तारि मान्य करिने नीती न वीसारवी. १२

जोडीने प्रभु हाथ नाथ तमने, नित्ये करुं प्रार्थना,
प्रीती पूर्ण करो पुरो प्रभु तमे सर्वे रुडी कामना;
कीधां कर्म अमे समस्त नवळां संभाळि लेशो मने,
आव्योछुं शरणे कृपानिधि वधी लज्जा रहीछे तने. १३

सर्वात्मा प्रभु तूं विना नहि बीजो आधार आश्रो धरुं,
प्रेमेथी तमने प्रणाम करिने नित्योपकारो स्मरुं;
लज्जा छे तुज हाथ नाथ चित्तमां दोषो न वीचारशो;
ऐहामुष्मिक आपिने सुख मने संसारथी तारशो. १४

सर्वात्मा सकलेश्वरा सुखकरा सर्वज्ञ सच्चिद्घना,
सर्वांतर्गत सत्य नित्य विभु छो सन्मार्गबुद्धिप्रदा,
सृष्ट्युत्पत्तिस्थिति प्रपालनगुणो धारो तमे सर्वदा,
साष्टांगे नमि नाथ नित्य तमने मागु हुं पापक्षमा. १५

उपेन्द्रवज्रा.

अपार लीला प्रभु छे तमारी, न चालशे त्यां गति तो अमारी;
तमे दयालु अति ऊपकारी, स्थिती अमारी प्रभु ल्यो विचारी. १
विदीत छे सर्व अमारि वात, प्रसन्न रे'शो विभु विश्वनाथ;
मनोर्थ माग्या प्रभु प्रार्थनामा, स्विकारशो अर्थ घटीत तेमां. २
क्षमा करी नाथ समस्त पापो, दयानिधे सन्मति नित्य आपो;
प्रभू अमारा नहि दोष जोशो, कृपा करी आशिष पूर्ण देशो. ३

गायन.

पद.

भैरव तथा सर्व रागमां गवाय. चौताल.

सगुण समर्थ सत्य, प्रभुने स्मरुं हुं नित्य,
आपो धर्मनीतिव्रत, वंदुंछुं हुं वारंवार;
निरंजन निराकार, नित्य शुद्ध निर्विकार,
शक्तिनो न पामुं पार, मानुं प्रभु उपकार. सगुण समर्थ०
भवपति भगवान, तमे पूर्ण बलवान,
विश्वमां विराजमान, विनंति करो स्वीकार;
सुणी प्रार्थना त्वरित, मति द्यो मन पुनीत,
पावन करो पतित, करशो तमे उद्धार. सगुण समर्थ० १

पद.

नट, ब्रह्मताल.

जय जगत्राता जगतमख्याता त्रिभुवनत्राता;
तुज शुभ गुण ऋषिमुनिजन गाता, सन्मतिदाता. जय जगत्राता० १
एक तमे अद्वितीय अजाता, अकल अबाधा;
कर्ता अद्भूत कृतिथी गणाता, विश्वविधाता. जय जगत्राता० २
साक्षि सदा सच्चिद्घन ज्ञाता, शुभ गुण धाता;
नव कदि मन बुद्धियी कळाता, दीनजननाथा. जय जगत्राता० ३

ब्रह्म परात्पर मुक्तिप्रदाता, प्रभुस्वं मनाता;
प्रेम थकी प्रणमुं पितुमाता, प्रभु साक्षात्ता. जय जगत्राता० ४

पद.

काफी. दीपचंदी.

जगदीशने शीश नमावुं, प्रभुमन भावुं; जग०
में अवगुण अपार किधा जे, विगतथी शु हुं गणावुं;
क्षमा प्रभु करुणा करी करशो, वधु कहीने शुं जणावुं,
कियुं अन्य शरण हुं लावुं. जगदीश० १
जेवी स्थितिमां अहिं मने राखो, तेवी स्थितिथी निभावुं;
विधिनिषेधना नियमो मानु, भक्तिनो भाव विभावुं,
तोज प्रभुने मन भावुं. जगदीश० २
दीनदयाल स्वभाव तमारो, ए मन धैर्य धरावुं;
प्रभुशुभचरणे प्रेमभक्तिनां, पुष्प सदैव वधावुं,
दुरित कर्म सर्व हठावुं. जगदीश० ३
शमदमादिकसाधन तीर्थे स्नान करी शुद्ध थाउं,
विश्वपवित्तुं स्मरण करीने, नीतिपंथे नित्य जाउं,
प्रभुकृपामृतफल खाउं. जगदीश० ४
वृत्ति स्वच्छ पवित्र राखीने, सर्व विकारो शमावुं;
ए शुभ शुद्ध मति मने आपो, मंगळ गुण हुं गाउं,
अंते प्रभु धामे आवुं. जगदीश० ५

आरति.

जयदेव जयदेव जय मुक्तिदाता, जय मुक्तिदाता;
सर्वांतर्गत ज्ञाता (२), सृष्टितणा धाता. जयदेव० १
लीला तारि अपार, अति अद्भुत भासे (२);
अतुल पराक्रम तारुं, (२), नव वर्णन थाशे. जयदेव० २
अनुपम छे औदार्य, उत्तम गति आपो (२);
विश्व विषे विश्वेश्वर (२), सद्धर्म स्थापो. जयदेव० ३
सर्वाधार समर्थ, शुभ सन्मतिदाता (२);
अति करुणामय गुणथी (२), प्रभु छो मख्याता. जयदेव० ४
अवगुण दोष अपार, मनमां नव धरशो (२);
सुतवात्सल्य स्वभावे (२), संरक्षण करशो. जयदेव० ५
जगदाधीश दयाल, द्यो चितने शांति (२);
करुणा करि करशो प्रभु (२), पापतणी क्षांति. जयदेव० ६
सदाकाल सर्वेश, सद्धर्मे रहिये (२);
ए निर्मल मति आपो (२), विनति करी कहिये. जयदेव० ७
प्रेमभक्तिथी नाथे, नित्य करिये सेवा (२);
पावन करि सेवकने (२), द्यो सद्गति देवा. जयदेव० ८



अंक १२ मो.

अहो विश्वनियंता नाथरे, नमुं नमुं;
तमने जोडीने वेउ हाथरे, नमुं नमुं. १

सर्व प्राणीतणा मात तातरे, नमुं नमुं;
तमे जाणो अंतरनी वातरे नमुं नमुं. २

परब्रह्म प्रभु परमेश्वरे, नमुं नमुं;
विश्वव्यापी विभु विश्वेश्वरे, नमुं नमुं. ३

सर्व सृष्टितणा आधाररे, नमुं नमुं;
एक नित्य अखंड अपाररे, नमुं नमुं. ४

नमुं आद्य अनंत अविकाररे, नमुं नमुं;
नमु विश्वपतिने वारंवाररे, नमुं नमुं. ५

तारी सत्ता सृष्टिमा जणायरे, नमुं नमुं;
कळा तारी कोथी न कळायरे, नमुं नमुं. ६

महा मुनिनी मति तो भमायरे, नमुं नमुं;
स्तुति तारी ते हुंथी क्यम थायरे, नमुं नमुं. ७

दीनबंधु छो तमे दयावंतरे, नमुं नमुं;
तमे रहो सदा क्षमावंतरे, नमुं नमुं. ८

तमे सच्चिद्घन अविनाशरे, नमुं नमुं;
पुरो भक्तनी सर्व रुडी आशरे, नमुं नमुं. ९
तमे दयासिंधु छो दयालरे, नमुं नमुं;
सदा सेवकनी ल्यो संभाळरे, नमुं नमुं. १०
तमे सात्विकगुणनिधानरे, नमुं नमुं;
करो नित्य कुशल कल्याणरे, नमुं नमुं. ११
आवुं चरणसमीप हुं बालरे, नमुं नमुं;
प्रतिपालन करो कृपालरे, नमुं नमुं. १२
प्रेमभावथी प्रभु पाये लागुंरे, नमुं नमुं;
पापकर्मनी क्षमा नित्य मागुंरे, नमुं नमुं. १३
मागुं कृपा तमारी महाराजरे नमुं नमुं;
राखो दास तणी तमे लाजरे, नमुं नमुं. १४
एक आश्रय धारुं तारो सत्यरे, नमुं नमुं;
नथी केवानी वधु अगत्यरे, नमुं नमुं; १५
दुष्ट दुरित सर्व कर्म कापोरे, नमुं नमुं;
नीति धर्म तमे मने आपोरे, नमुं नमुं. १६
उपकार करोछो अत्यंतरे, नमुं नमुं;
शरणे राखो मने भगवंतरे, नमुं नमुं. १७
सर्व कार्य करवा छो समर्थरे, नमुं नमुं;
कृपाविना न सरे कांइ अर्थरे, नमुं नमुं. १८

तमे सत्य सर्वज्ञ शक्तिमानरे, नमुं नमुं;
मने आपो अभय वरदानरे, नमुं नमुं. १९
जय जय जय जगतातरे, नमुं नमुं;
जय जय अचिंत्य अजातरे, नमुं नमुं. २०
नमुं नमुं हुं नमुं दिननीशरे, नमुं नमुं;
कृति सारुं न जोशो जगदीशरे, नमुं नमुं; २१
मानुं तारो बहु उपकाररे, नमुं नमुं;
करो विनति तमे अंगीकाररे, नमुं नमुं. २२
करो वृत्ति विमळ विश्वनाथरे, नमुं नमुं;
करो क्षमा महा अपराधरे, नमुं नमुं. २३
शिरसाष्टांग करुं हुं प्रणामरे, नमुं नमुं;
कृपासिंधु पुरो शुभ कामरे, नमुं नमुं. २४

हे ज्ञानसिंधु हे दयासागर, हे परम कृपाळु भगवान्! अमे तारे शरणे आव्या छिये. तमने पगे लागी वरदान मागीए छीए के अमने सदाचार पाळवानी मति आपो. तमारी दयाथी अमने ज्ञान थयुंछे के साचाई, प्रमाणिकपणुं, न्याय, दया, क्षमादि सुनीतिना गुणो अमारामां हशे तोज अमे तारी कृपा संपादन करवाने लायक थइशुं. अमारी खातरी थइ छे के कुकर्मो करीशुं नहिं, दुर्गुणो तजीशुं, अने सदाचार पाळी तारी भक्ति दृढ श्रद्धाथी

करीशुं, तोज अमारुं कल्याण थशे; माटे सदाकाळ सद्गुणो अमे पाळिये, कोइ साथे वैरभाव राखिये नहिं, विपत्ति तथा दुःखनी वेळा धीरज राखी तारो आश्रय मागिये, दोलत अधिकारादिना अभिमानथी चढी जइये नहिं, सर्व मनुष्य भाइयो साथे सभ्यता, नम्रता अने सलाह संपथी चालिये, दररोज तारी भक्ति तथा उपासना करीने तारी अमारा उपर दया कृपानो उपकार मानिये, गमे तेवुं संकट पडे पण तने अणगमतां काम करिये नहिं एवी रीते रूडी चाले चालवानुं अमने सामर्थ्य आप. हे करुणासागर! तारी अमारा उपर घणीज दया छे. कदी कोइ वखत अमने दुःख पडे छे, पण तेनो जो अमे पूरो विचार करिये तो ए दुःख पडवामां पण तारी दयानो संकेत होय छे. परम पिता! तुं केवो दयालु छे! तारो अमारा उपर दयाभाव छतां अमे तने भूली जइने अवळे रस्ते चालिये छिये. अमारां सत्कर्म घणांज थोडां छे, माटे तेनुं फळ मागवानो अमारो कांइ दावो नथी, अने फळनी इच्छा राख्या विना सत्कर्मो करवां ए अमारो धर्म छे, तथापि अमे भूलीए छीए. अमारे तो एटलुंज बोलवुं जोइये के अमे अपराधी छिये, अमे अपराधी छिये.

आ संसारमां अमारे सदाकाळ रहेवानुं नथी. अमारा भाविकालनी अमने खबर नथी. मरणवेळा तारा विना अमारो कोइ त्राता नथी. परलोकमां अमने सद्गति आपवानुं तारे पोतानेज हाथ छे. तुं सर्व शक्तिमान् छुं. तारा प्रसादथी मधुर वायु वाय

छे, तारा प्रसादथी समुद्रमां तरंगो उछळे छे, तारा प्रसादथी आ सर्व विश्व प्रकाशी रह्युं छे. तने पूज्य मानी तारी भक्ति करवी ए अमारो धर्म छे. तारे कशानी अपेक्षा नथी. अमारुं आधीनपणुं बतावी तारी प्रार्थना करवी ए गुण अमारा आत्माना कल्याणने अर्थे अमारा आत्मामां स्वाभाविक रीते तें मूकेलो छे; एवुं छतां अमे तारी प्रार्थना न करिये तो अमे ठगारा तथा धर्मभ्रष्ट कहेवाइये, माटे प्रेमपूर्वक तारी भक्ति तथा प्रार्थना करवानुं भूली जइये नहीं एवी अमारा अंतःकरणमां चेतवणी आपतो रहेजे.

हे महाप्रतापी कृपालु परमेश्वर ! अमे साचा अने पवित्र अंतःकरणथी तारुं ध्यान करी, श्रद्धारूपी चंदन अने भक्ति रूपी अक्षत, तारे मंगलचरणे अर्पण करी तने प्रेमपुष्पनी माळा चढावी अमे अमारी प्रार्थना समाप्त करिये छिये. तुं प्रसन्न चित्तथी अमारुं संरक्षण कर.

॥ ॐ शांतिः शांतिः शांतिः ॥

दिंडि ११.

सर्वव्यापी सर्व जीवना शरण्य, विश्वरचना विभु सर्व छे वरेण्य;
सृष्ट वस्तुथकी भिन्न तमे एक, सकल विश्वमां किधो रुडो विवेक. १

तमे ज्ञानवान नित्य निर्विकारी, सृष्ट वस्तु तुल्य मूर्ति नथी तारी;
पूर्ण ब्रह्म परम ज्योति दीप्तिमान, यथा घटित किधुं सृष्टिमां विधान. २

नहीं पुरुष नहीं नारि रूप धारो, नहीं थाय नाथ जन्म तो तमारो;
नहीं तुलना प्रभु कोइ साथ थाय, नहीं प्रतिमा प्रभु तारि तो जणाय. ३

देशकालथी अतीत छो अपार, मनुपकल्पना न चालशे लगार;
अजर अमर तमे एक छो असंग, महत्तत्वनो न थाय कदी भंग. ४

सर्व साक्षि तमे छो स्वयंप्रकाश, शुद्ध मुक्त सत्य चिद्घन अविनाश;
भक्तिभावथकी राखुं हुं विश्वास, तमे पूर्ण करो दिन जन अभिलाष. ५

उपेंद्रवज्रा.

परात्परा ब्रह्मपदे हुं नित्ये, नमी विनंती करुं एक चित्ते;
सुणो तमे प्रार्थन मंत्र जापो, कृपानिधे सन्मती नित्य आपो. १

विना प्रभू तुं नथि कोइ अन्य, विना प्रभू तुं नथि को शरण्य;
विना प्रभू कोण सुणे विलापो, कृपानिधे सन्मति नित्य आपो. २

जगत्क्रिया तुं थकि सर्व चाले, विना प्रभू शक्ति न पत्र हाले;
प्रकाश पाम्या प्रभुना प्रतापो, कृपानिधे सन्मति नित्य आपो. ३

दिसे तमारी सघळी लिलाओ, दिसे तमारी सघळी क्रियाओ;
दिसे तमारी करुणा अमापो, कृपानिधे सन्मति नित्य आपो. ४

कृपाथकी मंगळ कार्य थाय, कृपाथकी सर्व अरिष्ट जाय;
कृपाथकी जाय त्रिविधि तापो, कृपानिधे सन्मति नित्य आपो. ५
करुं तने अर्पण सर्व कर्म, निभावि ल्यो जाणि प्रभु स्वधर्म;
कृपा करी संकट सर्व कापो, कृपानिधे सन्मति नित्य आपो. ६
दयाघना अंकित छुं तमारो, दयाथि दोषो सघळा निवारो;
शिरे अमारे वरहस्त थापो, कृपानिधे सन्मति नित्य आपो. ७
सदा तने वंदन विश्वनाथ, अमे करीए प्रभु जोडि हाथ;
क्षमा करो नाथ समस्त पापो, कृपानिधे सन्मति नित्य आपो. ८

शार्दूलविक्रीडित.

हे विश्वेश्वर हे जगत्त्रयगुरू सर्वज्ञ सच्चिद्घना,
कौटुंबी जन मित्र बंधु सघळा जे आ जगत्मां रह्याः
आ देशे वसता विदेश फरता प्राणी समस्तो तणां,
पापो सर्व क्षमा करो प्रभु तमे संतोष आपो सदा.

मालिनी.

प्रभुपरपद मोटुं मोक्षकल्याणदाता,
ऋषि मुनि जन सर्वे चित्तथी नित्य गाता;
करगरि प्रभु मागुं कष्टने कापि नांखो,
शरिरपतन वेळा पाळिने पास राखो.

अखिलभवपतीनी प्रार्थना पुण्यकारी,
सकलदुरितहारी सर्वदा श्रेयकारी;
भणि भजन करुंछुं चित्तने शान्ति आपो,
चरणशरण राखी संहरो सर्व तापो. २

सैनिका.

विश्वनाथ नित्य शुद्ध मुक्त छो, सर्वव्याप्त पूर्ण ब्रह्म सत्य छो;
प्रेमभक्तिथी नमुं परात्परा, सत्य ज्ञान आपशो प्रभू वरा. १
सर्वकाल ध्यान तारुं हुं धरुं, नित्य धर्मकार्यमां हुं संचरुं;
मागुंछुं सहाय तारि चिद्घना, सिद्ध थाय वाञ्छितार्थ कामना. २
नम्र भावथी विनंति हुं करुं, शीश प्राणनाथने पदे धरुं;
विश्वपाळ छो समर्थ रे तमे, अल्प दीन सर्व जीव तो अमे. ३
अर्पुं सर्व कर्म मात तातने, तारशो तमे मने अनाथने;
धैर्य सर्वदा दयाळ आपशो, दासना समस्त दोष कापशो. ४
अल्प बुद्धि जीवनी विचारशो, सर्व विघ्न कष्टने निवारशो;
द्यो तमे मती रुडी दयाघना, पापकर्मनी करो प्रभु क्षमा. ५
निंद्य कर्म नित्य नाथ थाय छे, न्यूनता दयानि ना जणाय छे;
ए तमारुं छे प्रभु प्रभुत्वरे, शुं स्तुती करुं हुं ते महत्त्वरे. ६
सृष्टिकार्य हाथ सर्व नाथने, जाणि ल्यो तमे अमारि वातने;
हाथ जोडिने करुं हुं वंदना, मानि ल्यो तमे अमारि अर्चना. ७

शान्ति सर्व विश्वमां सदा करो, भक्तनी विपत्ति आपदा हरो;
दीन दास जाणिने जगत्पति, आपशो कृपाधि नाथ सद्‌गति. ८

शालिनी.

स्वामी सर्वात्मा प्रभु प्राणनाथ, सर्वे जीवोना तमे माततात;
अंतर्यामी आप जाणो अमारां, जे जे कीधां कृत्य सारां नठारां.१

माफी आपो दुष्कृतीनी दयाळ, दृष्टी राखो प्रेमनी सर्व काल;
अर्थो माग्या प्रार्थनामां अमे जे, स्वीकारी ल्यो जे प्रभूने गमे ते.२

प्रीतीभावे वंदिये जोडि हाथ, शांती आपो विश्वमां विश्वनाथ;
भक्ती आपो शुद्ध साची तमारी, सत्कार्योमां वृत्ति राखो अमारी.३

गायन.

पद.

भैरव तथा सर्व रागमा गवाय. चोताळ.

नमुं नित्य विश्वपति, आपो मने शुद्धमति,
अगम्य तमारी कृति, कदि ना कळाय नाथ;
शरण तमारुं धरुं, वधु विनति शुं करुं,
विदित छे विश्वनाथ, तमने समस्त वात. नमुं नित्य०
विश्वमां करुं निवास, राखीने तमारी आश,
करशो नहिं निराश, विभु माततातभ्रात;

पूज्य जाणी आपुं मान, तमने कृपानिधान,
करो मने नीतिमान, प्रणमुंछुं प्राणनाथ. नमुं नित्य० १

पद.

जिल्हो. एको. (चाल, मेरे गिरधर गोपाल दूसरा न कोइ.)

विश्वनाथ तुं विना न को सहायकारी,
निर्मल निःसंग सत्य नित्य निर्विकारी;
सच्चिद्घन साक्षी सर्व संकटभयहारी, विश्वनाथ तुं विना० १
निंद्य कृत्यथी दयाल ल्यो तमे उगारी;
भवपति भवसिंधुथकी द्यो मने उतारी. विश्वनाथ तुं विना० २
सत्य देव एक एम श्रुति वदे पोकारी;
सत्य धर्म आपि मने राखो सदाचारी. विश्वनाथ तुं विना० ३
श्रवण करो सर्व तमे प्रार्थना अमारी,
सर्वदा रहो प्रसन्न परम उपकारी. विश्वनाथ तुं विना० ४

पद.

खमाच मिश्र काफी जिल्हो, त्रिताल.

प्राणपति सुणो विनति अमारी;
विनति अमारी विज्ञप्ति अमारी. प्राणपति०
मंदमतिथी प्रभु स्तुति शी थाय;
अकल गति छे गहन तमारी. प्राणपति० १

विदित तने अंतरनो आशय,
अतिशय शुं वदिये विस्तारी. प्राणपति० २
विपरीत कृतियो विभु नव जोशो,
करुणासागर छो उपकारी. प्राणपति० ३
मंगल कार्य करावो जगत्मां,
जगदीश्वर द्यो भवथी उतारी. प्राणपति० ४

पद.

कहारवो. त्रिताल.

कृतिसाशुं प्रभु कदि नव जुवोरे;
कृपाघना कृपासिंधु तमे, कृतिसाशुं०
विषयमहोदधिमां हुं मग्न,
दयानिधि दयाकरी कर ग्रहोरे,
कृपाघना कृपासिंधु तमे, कृतिसाशुं० १
साष्टांगे तुज चरणे वंदी,
स्मरण करुं सदा प्रभु अनुग्रहोरे,
कृपाघना कृपासिंधु तमे, कृतिसाशुं० २
परमात्मा प्रभु प्रणत जनोनां,
मनवाञ्छित तमे परिपूर्ण करोरे,
कृपाघना कृपासिंधु तमे, कृतिसाशुं० ३

आरति.

जयदेव जयदेव जयसविता, धाता, जयसविता धाता;
सर्वोत्तम पददाता (२), प्रणतजनत्राता. जयदेव० १
शांताकार शरण्य, शिव शुभ गुण धारो (२);
भवमोहाब्धियकी प्रभु (२), कर ग्रहिने तारो. जयदेव० २
रविशशिवह्निप्रकाश, ज्यां कदि नय जाशे (२);
त्यां प्रभु स्वयंप्रकाशे (२), सच्चिद्घन भासे. जयदेव० ३
ते परब्रह्म परेश, पदपंकज प्रणमुं (२);
प्रेमाक्षत अर्पण करि (२), तत्पदमां विरमुं. जयदेव० ४
अतिशय छे अपराध, अति लज्जा पामुं (२);
केवळ कृपास्वभावे (२), प्रभु जोशो सामुं. जयदेव० ५
भवतारक भगवंत, भक्ति करुं तारी (२);
ब्रह्मध्यानपरायण (२), वृत्ति रहो मारी. जयदेव० ६
संध्या समये नित्य, स्मरुं करुणासिंधु (२);
प्रेमथकी प्रणमी प्रभु (२), मंगलपद वंदुं. जयदेव० ७
जगदाधार दयाल, शुभ दर्शन देशो (२);
ध्यानार्चनवंदनविधि (२), विभु मानी लेशो. जयदेव० ८



अंक १३ मो.

ललित.

नमुं नमुं महाराजने नमुं, परम भक्तिना रंगमां रमुं;
नव विजो प्रभू जाणुं हुं विधि, शरण राखशो रे दयानिधि. १
हृदयमां रुडुं ध्यान हुं धरुं, प्रभु उपासना प्रेमथी करुं;
सकल शांतिना छो महोदधि, शरण राखशो रे दयानिधि. २
परमतत्त्व हे मंगलप्रदा, विनयपूर्वके वंदुं हुं सदा;
प्रभु दयाकरी द्यो रुडी मति, शरण राखशो रे दयानिधि. ३
जगतमां सहू वस्तुओ विषे, घटित योजना नाथनी दिसे;
स्तुति नहीं थशे अल्प जीवथी, शरण राखशो रे दयानिधि. ४
प्रभु कृपादयानुं निधान छो, सकल प्राणिनुं शांतिस्थान छो;
तुजपदे सदा राखुं हुं रति, शरण राखशो रे दयानिधि. ५
प्रणमिने परब्रह्मने भजुं, दुरित वासना सर्व हुं तजुं;
प्रभु बचावशो पाप कर्मथी, शरण राखशो रे दयानिधि. ६
असत मार्गथी वृत्ति वाळशो, दिन गणी दयानाथ पाळशो;
शुभ क्रिया कदी में नथी किधी, शरण राखशो रे दयानिधि. ७
तुजविना मने कोण तारशे, त्रिविधदुःखने कोण टाळशे;
पतित प्राणी हुं मंद अल्पथी, शरण राखशो रे दयानिधि. ८

सकल कार्यमां तुं सहायता, अति अवश्य छे रे जगत्पिता;
सकल सुक्रिया थाय तुं थकी, शरण राखशो रे दयानिधि. ९

परम प्रेमनी पुष्प अंजलि, प्रभुपदे समर्पुं वळी वळी;
भवपती करो आत्मउन्नति, शरण राखशो रे दयानिधि. १०

ॐ परमात्मने नमः ।

हे जगत्कर्त्ता ! हे सर्व माणसना महा पिता ! अमे तमारे शरणे आवी अमारा अपराधनी क्षमा मागीए छीये. अमे पामर प्राणी छीए. अमारी बुद्धि थोडी अने अमारुं ज्ञान छेक अल्प छे. तमारी हजुरमां आववाने अमे केवळ अयोग्य छीए. कमअकलथी अने दुष्ट बुद्धिथी अमे जाणे अजाणे अगणित पाप कर्यां छे, तेने माटे पश्चात्ताप करीने तमारी पासे माफ मागीए छीए. क्षणे क्षणे अमारी मति फरे नहिं, आ पश्चात्तापनी असर अमारा मन उपरथी घसाइ ना जाय, एवा उपाय कृपा करी अमने सूझाडो. अमारा अज्ञाननो नाश थाय एवा तमारा तेजनो प्रकाश अमारा अंतःकरणमां करो. प्रभाते सूर्यनां किरणोथी जेम रात्रिनुं अंधारुं नाश पामे छे तेम तमारा ज्ञानरूपी किरणोथी अमारा मनना अंधारानो नाश करो, अने मुक्ति पामवानां साधन बतावो. तमारी प्रेरणा अने तमारी सहायता विना आ सर्वोत्तम कार्यने माटे अमारां

सघळां प्रयत्न निष्फल जाय छे; माटे हे दयानिधि ! करुणा करो. अमे दीनजनो तमारा भाविक भक्त उपर महेरबानीनी नजरे जुवो. अमे भूलां पडेलां प्राणीओने खरे रस्ते चढावो. जेवो उपकार आज सुधी कर्यो छे तेवोज हवे पछी करशो. निर्लज्ज थइ घणी वार अमे तमारा उपकारने विसारी दीधो छे. दुःखमां तमने संभारीए छीए ने सुखने समये उन्मत्त थइ तमने भूली जइए छीए. ए अमारी केवी मूर्खाइ छे. एवां पाप न करीए एवी अमारी इच्छा छे ते सफळ करो. अमारी मूर्खाइनो पार नथी. हे प्रभु ! अमारा अपराध अने अमारा अज्ञाननो पार नथी. वहेमरूपी दैत्य अमारा आत्माने अधम गतिए पहोंचाडे छे; अहंकार अने वहेम अमने ऊंधी मति सूझाडे छे. कांइ सुख थयुं, के द्रव्य मळ्युं के यश मळ्यो, तो अमारी चतुराइथी, अमारा डहापणथी, अमारा नसीबथी, फलाणानी उपासनाथी के कृपाथी ते प्राप्त थयां एम मानी पापना ऊंडा खाडामां पडीए छीए. आ जगत्‌नो कर्त्ता, हर्ता, मालीक अने नियंता तमारा विना बीजो कोइ नथी; अने तमारा करेला नियमो उपरांत कांइ थतुं नथी, ए भूली जइ प्रेमभक्तिमां चूकीए छीए, ने बीजा कोइ उपर विश्वास राखीए छीए. एवा वहेम अने अंधाराना कूवामांथी अमने काढो ! ओ प्रभु ! अमने काढो अने तारो. वहेमरूपी नदीना वहेता पूरमां अमे, अमारा स्नेहीओ अने अमारा देशीओ, तणाया जइए छीए; दया करो; प्रभु ! दया करो; दया करीने उगारो. अमने वहेमनी जाळमांथी छोडवो अने

तमारा एकलाना आस्तिक भक्त करो. अमने खरी श्रद्धा आपो; अमने ढोंगना खाडामांथी काढो ने पुण्यने मार्गे चढावो. हे विश्वाधिपति महाराज! अमारां एवां धन्य भाग्य क्यांथी के अमारी सघळी दुर्वासना, अमारा सघळा वहेम, अमारुं सर्व अज्ञान, नाश पामे अने अमे सद्गुणी थइ तमारे एकलानेज शरणे आवी रहीए; मात्र तमारा एकलानीज पराभक्ति अने मानसिक सेवा पूजाथी पवित्र थई तमारी कृपा पामवाने योग्य थइए अने मोक्ष पामीए! हे दीननाथ, दयासागर, कल्याणकारी प्रभु! भाविक भक्तने तारनार भगवान्! अमारी आ दीन याचना सांभळो, अमारी आ अरज स्वीकारो. अमने परमार्थ बुद्धि आपो, अमारी मति निर्मळ करो; अमे तमारी पराभक्ति अने अमारा देह आत्मानो वियोग थये आत्मानी मुक्ति मागीए छीए ते आपो. तथास्तु.



दिंढि १३.

सदा महिमा शुभ गाउं हुं तमारो, कृपाभावना हुं मानुं ऊपकारो;
अल्प मंद मारि बुद्धिने सुधारो, स्वजनबंधुप्रीति हृदयमां वधारो. १

सर्व नाशवंत ऐहिक सुखभोग, थाय निश्चय ए सर्वनो वियोग;
तमे एक मात्र मंगलमय सत्य, मनोवृत्ति रहो प्रभुपदे प्रवृत्त. २

महाशक्तियकी शितळ वायु वाय, सदा ध्वनि तरंग सिंधु विषे थाय;
मधुर नादेथी पक्षि गान गाय, गहनशक्ति सकल सृष्टिमां जणाय. ३
सकल वस्तुविषे प्रभुमताप भासे, पुरुं वर्णन नहिं जीवथी कराशे;
महाराज सर्व सृष्टिना नियंता, नमुं नित्य निराकार अनाद्यंता. ४
न्यायसिंधु सत्रे सत्य नियम धारी, कदी भंग नियमनो नहीं विचारी;
पतितपावन प्रभु प्रणमुं प्राणनाथ, करी पूर्ण कृपा नाथ ग्रहो हाथ. ५

वंशस्थविल.

नमी नमी नित्य जगादिनाथने, नमी नमी सत्य प्रभु अजातने;
नमी पराभक्तिथी ध्यान हुं धरुं, पदारविंदे अभिवंदना करुं. १
अतर्क्य शक्ति प्रभु को न पामशे, विचारना वेग बधा विरामशे;
तमे मने नाथ प्रसन्न रे'शो, सुनीतिनो बोध सदैव देशो. २
पळे पळे हुं बहु पातको करुं, तथापि तारी प्रभु आश हुं धरुं;
स्थिती तमे दासनि चित्त धारशो, कृपा करि नाथ भवाब्धि तारशो. ३
विना प्रभु को नथि अन्य तारक, विना प्रभु को नथि पापहारक;
तमे हरो सर्व विपत्ति आपदा, तमे करो रक्षण मारुं सर्वदा. ४
पदे पदे हुं तमने प्रमाणुंछुं, दया तमारी सघळे हुं जाणुंछुं;
उपासुं हुं प्राणपति प्रभु सदा, न पामुं हुं दुःख दयानिधी कदा. ५
असंख्य पापो प्रभु नित्य थाय छे, तथापि तारी करुणा जणाय छे;
अनन्य भावे करुं भक्ति ताहरी, मती करो निर्मळ नाथ माहरी. ६

तमारि सत्ता थकि तो हलाय,छे, तमारि सत्ता थकि तो चलाय छे;
कृपाकरीने वरदान द्यो तमे, सहाय रे'शो प्रभु कष्टने समे. ७

प्रभू तमारो अपराधि हुं थयो, अनीतिना पंथमते बहु गयो;
कृपानिधे पाप समस्त कापशो, सदा मने सन्मति नाथ आपशो. ८

समर्पुं तुंने निज सर्व कर्मरे तमेज जाणो मुज चित्तमर्म रे;
दयाघना दास गणी दया करो, कदी उपेक्षा प्रभु नाथ ना करो. ९

कृतज्ञतापूर्वक प्रार्थना करुं, प्रभूपदे मस्तक नित्य हुं धरुं;
दयाथि राखो शरणे मने प्रभु, विना दया हुं क्षण एक ना निभुं. १०

अहोनिशे नीतिविधान मागुं हुं, सदा तने सन्निध नाथ जाणुं हुं;
नमी नमी हुं प्रभु पाय लागुंछुं. क्षमा महादोषतणी हुं मागुंछुं. ११

तमेज मारा प्रभु माततात छो, तमेज मारा सहु मित्रभ्रात छो;
विनंति सर्वे चित्तमां तमे धरो, कृपा करी पाप समस्त सहरो. १२

रथोद्धता.

वंदुं नित्य परमात्म ब्रह्मने, वंदुं सत्य विभु विश्ववंधने;
वंदुं प्रेमयकि हुं कृपाघना, जाउं कोण शरणे प्रभू विना. १

दीनवत्सल तमे दयानिधि, स्तूतिना हुं नथ जाणुंरे विधि;
वारवार नमिने हुं चिद्घना, प्रेमथी करुं तमारि प्रार्थना. २

एक देव तमने उपासुंछुं; नित्य नाथ शरणे निवासुंछुं;
अल्प मंद प्रभु मारि छे मति, मात्र तारि करुणाथकी गति. ३

ब्रह्म पूर्ण प्रभु रे अनन्य छो, सर्व भक्तजनना शरण्य छो;
सृष्टिसूत्र प्रभु धारिने रहो, सर्वनी स्थिति तमे चिते लहो. ४

शक्ति छे सबल नाथ तारिरे, सर्जिछे सकल वस्तु सारिरे;
दीनवत्सल करी तमे दया, मागुं नित्य प्रभु पापनी क्षमा. ५

विश्ववंद्य विनती चिते धरो, भक्तनां विपति संकटो हरो;
मानुं नित्य प्रभुना अनुग्रहो, दास जाणि कर भक्तनो ग्रहो. ६

विश्वनाथ विभु विश्व संचरो, कृत्य सार्मुं कदि लक्ष ना करो;
माततात तमने नमुं सदा, पामुं हुं न त्रिविधीनि आपदा. ७

वंदना करुं हुं प्रेमभक्तिथी, प्रेरशो प्रभु कृपाथि सन्मति;
प्राणनाथ प्रतिपालना करो, रूडी आश प्रभु प्रेमथी पुरो. ८

गीति.

जय जय जय जगदीश्वर, ईश्वर अनुपम अतर्क्य अद्वितीय;
अविचल अनंत गुणमय, सच्चिद्घन शुद्ध छो अपरिमेय. १

सत्य तमे जगकर्ता, संशय नथि कांइ चित्तमां अमने;
शक्ति सबल मानीने, वंदन करिये क्षणे क्षणे तमने. २

आस्तिक भक्तजनो जे, प्रभुनुं अस्तित्व सत्य चित धारे;
नास्तिक ऊर्मि उपजतां, तत्क्षण तेने निवारि धिक्कारे. ३
अंतर निर्मल नथि तो, बाह्याचारो वधी वृथा जाय;
सत्य पराभक्ती छे, ते थकि प्रभुनुं प्रसन्न चित्त थाय. ४
भक्ति विना नथि मुक्ती, सत्य सकल एक शास्त्र सिद्धांत;
एथकि प्रभुपद मळशे, टळशे भवविषयमोहनुं ध्वांत. ५
गीति स्तवे करुंछुं, प्रभुप्रार्थन हुं यथामती तारुं;
नम्र वचन उच्चारुं, मनथकि तमने कदी न वीसारुं. ६
अभिवंदन प्रभु चरणे, निशदिन करुं हुं सदा तने नाथ;
ऐहिक आमुष्मिक सुख, आपो अति चित प्रसन्न थइ तात. ७

उपजाति.

सच्चिद्घनानंदप्रभू समर्थ, करो सदा मंगल कार्य सत्य;
भक्तो मळी मंगल गीत गाय, रहो सदा नाथ तमे सहाय. १
दयाघना देव तमे अमारी, लेशो विनंती चितमां विचारी;
जणाय तेमांथकि योग्य सारी, कृपा करीने प्रभु ल्यो स्विकारी. २
प्रभू तमारी तुलना न थाय, सदा तमारी करुणा जणाय;
तमे महामंगल मार्ग दाखो, सत्संगतीमां दिनरात्र राखो. ३

मालिनी.

अवगुण अपराधो छे अमारा अगाय,
नयम करि परलोके सद्गती थाय नाथ;
श्रवण करि अमारा स्वामि सर्वे विलापो,
अतिशय करुणाथी पापनी माफि आपो. १

गायन.

पद.

भैरव तथा सर्वे रागमा गवाय. चोताल.

न्य धन्य धन्य, धन्य आजनो सुदिन,
मळी सर्वे भक्तजन, करिये अमे प्रणाम;
सद्गुण नियम धारी, स्तुति करिये तमारी,
अर्चा एज छे अमारी, तमने अंतर्याम. धन्य धन्य०

निर्मल आपो मति, विश्वंभर विश्वपति,
तमविना नाथ नथी, अमने बिजो विराम;
भरुंसो छे नाथ मारे, भगवंतनो अमारे,
करशो कृपाळ तमे, परिपूर्ण रूडुं काम. धन्य धन्य० २

पद.

काफी जिल्हो, दीपचंदी.

विधाता धन्य छे तारी रचना जगतनी अनंत. विधाता०
अतर्क्य अगोचर रूप तमारुं, व्यापी रह्या सत्ताथकी भगवंत. वि०१
वेद स्तुति तारी करिने विराम्या, पाम्या नहि तारो पुरो प्रभु अंत वि.२
संरक्षण सर्वकाळ करो छो, प्रभु दीनवत्सल छो दयावंत. वि०३
कर्मतणुं भोक्तृत्व निश्चय छे, शुभाशुभ क्रिया थशे फलवंत. वि०४
परमात्मा समदृष्टि जुवो छो, सरखा तमे गणो दरिद्री श्रीमंत. वि०५
अवलंबन आधार तमारो, राखी अमे रहिये सदा निश्चिंत. वि० ६
विधिनिषेधनी आज्ञा मानी, अमे अनुसरिये तारो भक्तिपंथ. वि० ७
अभिवंदन नम्र थई अमे करिये, कृपा करी रहो तमे क्षमावंत. वि० ८

पद.

काफी. त्रिताळ.

अति अद्‌भूत कला प्रभु तारी.
महामुनिजन तुज पार न पाम्या, मति चाले नव मारी. अति० १
जगरचनामां प्रभु चमत्कृतीथी, शक्ति विपुल विस्तारी. अति० २
जीवतणा अपराध न जुवो, प्रभु छो अति उपकारी. अति० ३
शुद्ध सत्त्व गुण श्रेष्ठ तमारो, जीव छे सर्व विकारी. अति० ४
दया करी प्रभु दीन जनोने, द्यो भवसिंधु उतारी. अति० ५

आरति.

जयदेव जयदेव जय शान्तिदाता जय शान्तिदाता;
दिव्य पिता प्रभु त्राता (२), त्रिभुवन विख्याता. जयदेव० ॥१॥
एक अखंड अनंत, अजरामर साचा (२);
स्तुति गावा प्रभु तारी (२), नव चाले वाचा. जयदेव० ॥२॥
सृष्टिनियम साक्षात्, निरखी आनंदुं (२);
जगकर्त्ता जाणी प्रभु (२), प्रेमथकी वंदुं. जयदेव० ॥३॥
प्रभु सर्वज्ञ समर्थ, शुभ सन्मति आपो (२);
कृपाघना करुणा करि (२), क्षमा करो पापो. जयदेव० ॥४॥
कृपाविना किंचित्, कार्य नहिं सरशे (२);
सद्गुणि भक्त तमारा (२), भवसागर तरशे. जयदेव० ॥५॥
जगतारक जगवंद्य, जगदीश्वर देवा (२);
मानि दयानिधि लेशो (२), दिन जननी सेवा. जयदेव० ॥६॥
करुणादृष्टि दयाल, दिनजन पर करशो (२);
यदित विनंति अमारी (२), चित्त विषे धरशो. जयदेव० ॥७॥
मानि बहू उपकार, प्रणमुं प्रभुचरणे (२);
कृपा करी सेवकने (२), राखो निज शरणे. जयदेव० ॥८॥



अंक १४ मो.

भुजंगी.

नमीए सदा सच्चिदानंद रूप, नमीए सदा सर्वविश्वाधिभूप;
नमीए सदा दीनबंधु दयाळ नमीए सदा सृष्टिकर्ता कृपाल. १
तमे छो अमारा प्रभू अन्नदाता, तमे छो अमारा सदा सत्यत्राता;
पराभक्तिभावे अमे विश्वपाळ, नमीए सदा सृष्टिकर्ता कृपाल. २
कृपाथी करो सर्व रूडुं अमारुं, कृपाथी करो सर्व सृष्टीनुं सारुं;
कृपाथी करो रक्षणो सर्व काल, नमीए सदा सृष्टिकर्ता कृपाल. ३
तमे प्राणिना सांभळीने विलापो, करोछो कृपाथी क्षमा सर्व पापो;
अमे दीनता नम्रताथी त्रिकाल, नमीए सदा सृष्टिकर्ता कृपाल. ४
प्रभु प्रार्थना लक्षमां सर्व धारो, अमारां बधां संकटोने निवारो;
अमे पामरो प्राणियो अज्ञ बाल, नमीए सदा सृष्टिकर्ता कृपाल. ५
किधां पापकर्मो अमे उग्र भारे, तमारा विना कोण तेने निवारे;
करो नाथ दृष्टी दयानी विशाल, नमीए सदा सृष्टिकर्ता कृपाल. ६
कृपाथी तमे सांभळो विश्वनाथ, विनंती करीओ अमे जोडि हाथ;
विंटाई वळी विश्वनी मोहजाल, नमीए सदा सृष्टिकर्ता कृपाल. ७
करीए अमे अर्चनाओ तमारी. कृपाथी पुरो वाञ्छनाओ अमारी;
अमे अर्पिये प्रेमनी पुष्पमाल, नमीए सदा सृष्टिकर्ता कृपाल. ८

ॐ तत्सत् परमात्मने नमः ।

हे जगत्ना स्वामी, महा प्रभु, प्राणनाथ! अमारा खरा प्रेमथी करेला आ नमस्कार स्वीकारशो. अमारी तारा उपर दृढ श्रद्धा छे. अमे खरी श्रद्धाथी मानीए छीए के पृथ्वी, वायु, अग्नि, प्राणी, पर्वत, सागर, वृक्ष, तत्त्वादिक सघळी वस्तुओनो, चंद्र, सूर्य, नक्षत्रोनो सजनार तुं एकलो छे. ए सर्वने माटे तें नियमो रच्या छे. तारी तुल्य बीजुं कोइ नथी; पूजवा योग्य तारा विना बीजुं कोइ छेज नहिं. आखा विश्वमां, असंख्य ब्रह्मांडोमां सर्वनो रक्षक, सर्वनो पाळनार, सर्वनो आधार तुंज छे. तारो महिमा अपार छे. तारी दयानो भंडार अखुट छे. तारा उपकार अनुप छे. तारी पवित्रता अने सारापणुं केम वर्णी शकाय! जे डहापणमां, कौशल्यमां, अने चतुराइमां परिपूर्ण छे, जेनामां कशी अपूर्णता नथी, कोइ खोड नथी, जे सर्वशक्तिमान् अने अति दयालु तथापि न्यायी छे, जे सघळी जगाए छे, वधुं जुवे छे ने सांभळे छे, जे कांइ विसरतो नथी, कोइ बीजाने विद्यमान राख्या वगर तथा कोइ रूप धारण कर्या विना मात्र पोतानी इच्छाथी जे धारे ते करी शके छे, एवा अति प्रतापी क्षमावंत भगवान्ने दंडवत् प्रणाम करी वंदन करीए छीए. तने योग्य जणाय तो अमारी प्रार्थना सांभळ, अमारा अपराध क्षमा कर. अमे सुमति अने सुज्ञान मागीए छीए. इंद्रियोने अने मनोविकारने सुनीतिनी योग्य मर्यादामां राखवानी प्रेरणा कर अने शक्ति आप. तारी

सहायता विना रूडां कर्म करवाने करेला अमारा सघळा प्रयत्न व्यर्थ जाय छे. अमारी धारणा अने अमारा संकल्पो खोटा छे. तारुं धार्युं मात्र सत्य छे. अमे मिथ्याभिमानी दुष्ट माणस आ लोकमां यश प्राप्त करवाने, मोटा कहेवडाववाने, अने भुंडां काम करवाने, केवा तत्पर थइये छिये, केवो उमंग राखिये छिये! लाभ मेळववाने अने स्वार्थ साधवाने केवा तत्पर रहीए छीए! अने रुडां पुण्यनां कर्म करवामां केवा मंद छीए, केवा धीमा छीए! इंद्रियादिकनां क्षणिक सुख भोगववाने केटला आतुर छीए! मरणनो भय भूली जई केवा प्रपंच करीए छीए! अमारा अमर आत्माना मोक्षना, तेना नित्यना सुखनी चिंता केटली थोडी राखीए छीए! आ संसारनी क्षणभंगुर मालमिलकत उपर अमर्याद आसक्ति राखी मायानी एटले अज्ञाननी मोहजालमां लपटाईने बंधाई रह्या छीए. तारी वास्तविक भक्तिनां खरां साधन छोडी आडे मार्गे, पापने रस्ते जइये छीए. अमने आंखो छे तोपण अंध छीए. अमे अज्ञानी छीए, अमे मूर्ख छीए. अमे पापना अंधारा कूवामां पड्या छिये, दया करी अमने एमांथी काढ. सत्यज्ञानरूपी अजवाळुं आप. तारी सत्य भक्ति, तारी अनन्य भक्ति, तारी पराभक्तिरूपी दीवो अमारा अंतःकरणमां प्रदीप्त कर. आ जगत्‌मां सत्य मार्गे चालीए, तारा उपर प्रेम राखीए, तारा आश्रय, डहापण अने सामर्थ्य उपर श्रद्धा राखीए, तारो भय राखीए, अने सुनीतिथी वर्तिये, तोज अमारा मननो मेल जाय. बीजा कोई बहारना उपचारथी जवानो नथी. जलथी के बीजा कशाथी ते धोवावानो

नथी. सरोवर नदी के समुद्रना स्नानथी मन चोखुं थतुं नथी. ए मेल जाय तोज अमारां मन पवित्र थाय. अपवित्र मनथी करेली सेवा, मलिन अंतःकरण छतां करेली भक्ति तुं न स्वीकारे, माटे अमारां मन पवित्र करवानी अमारी महेनत सफल कर ! हे महा प्रभु ! अमारा उपर प्रसन्न था. अमारां मन निर्मल करी भक्ति-रसथी भर के आ संसारमां रही पाप ना करीए अने पुण्यशाली थइ मुक्ति पामीए. तथास्तु.

दिंडि १४.

ब्रह्म सत्य जीव तेनुं सृष्ट तत्त्व, नहीं जीव ब्रह्मने कदि एकत्व;
सत्य शास्त्र विषे एकज सिद्धांत, किधो ज्ञानी जने निर्णय अभ्रांत.१
भ्रमित ब्रह्मवादि सत्य मार्ग छोडे, न्यायनीतियुक्त धर्म सर्व तोडे;
परमशुद्धभक्तिनियमभंग थाय, असजज्ञानथकी प्रभु नहीं पमाय. २
शुद्ध नास्तिक जन शून्यवाद माने, नथी ईश न्यायकारि एम जाणे;
असद्दृत्ति एवि थाय नहीं ईश, एज मार्गु तारि मंगल आशीष. ३
तमे सत्य न्यायकारि छो अमारा, वर्णु केइ विधे यशगुणो तमारा;
कीर्ति प्रभुनी सहु शास्त्रमां वखाणी, पादपंकजे हुंप्रणमुं पतित प्राणी.४
नहीं देव बीजो कोइ हुं आराधुं, सत्यभक्तिवडे नाथने हुं साधुं;
मने दर्शन द्यो देव हे अनंत, रहो सर्व काल नाथ कृपावंत. ५

अनुष्टुप्.

नमुं परात्पर ब्रह्म, परमात्मा महेश्वर;
नमुं हुं जगदाधार, नमुं हुं जगदीश्वर. १
नमुं विश्वेश विश्वात्मा, नमुं हुं प्राणरक्षक;
नमुं हुं करुणाकांत, नमुं कल्याणकारक. २
नमुं सर्वजगद्व्यापी, नमुं प्राणपति प्रभु;
नमुं चैतन्यरूपात्मा, सच्चिदानंद ईश्वर. ३
अनंत नित्य निर्लेप सृष्टिकर्ता सदाशिव;
मुक्तिदाता नमुं नित्ये, नमुं हुं भक्तवत्सल. ४
जगन्नाथ जगत्राता, जगदुत्पत्तिकारक;
स्वयंभू सर्व लोकेश, नमुं सर्वत्र व्यापक. ५
नमुं सर्वाद्य अव्यक्त, सर्वांतर्यामि उत्तम;
न्यायकर्ता जगद्धाता, नियंता परमेश्वरा. ६
विश्वंभर विभू वंदुं, वंदुं हुं विश्वपालक;
जगद्वंद्य जगाधीश, प्राणदाता प्रजापति. ७
उपकारी कृपासिंधु, नीति सज्ज्ञानवर्धक;
नमुं ज्येष्ठ नमुं श्रेष्ठ, शरण्य शान्तिदायक. ८
भयत्राता भवाधीश, भक्ताभीष्टफलप्रद;
अद्वितीय अनाद्यंत, जयदाता जगत्पति. ९
नमुं नमुं प्रसन्नात्मा, प्रेरक द्योतनात्मक;
सर्वाधार सदा वंदुं सर्वतत्त्वप्रकाशक. १०

नमुं सर्वेश सर्वात्मा, सर्वसिद्धिप्रदायक;
स्वतंत्र सर्वविद् वंदुं, वंदुं सत्त्वगुणान्वित. ११
शुद्ध मुक्त सदाशान्त, नमुं दुष्कर्मनाशक;
शक्तिमान् ज्ञानवान् वंदुं, वंदुं विश्वार्त्तिहारक. १२
नमुं हुं सविता धाता, भक्तिदाता भवेश्वर;
सर्वसाक्षी सदा वंदुं, वंदुं सद्बुद्धिदायक. १३
नमुं देव महादेव, महामांगल्य कारक;
महत्तत्त्व नमुं नित्ये, सर्वलोक प्रकाशक. १४
नमुं नमुं जगत्स्वामी, सर्वाधीश नमुं नमुं;
सृष्ट्युत्पत्तिस्थितिकर्ता, नमुं हुं करुणाकर. १५
अज एक अनाद्यंत, अविचिंत्य अगोचर;
नमुं साष्टांग हुं नित्ये, सत्य सर्वज्ञ तारक. १६
शत मंगल नामेथी, स्तुति कीधी यथामति;
स्वीकारी सर्व ते लेशो, आपशो नित्य सन्मति. १७
तमारे शरणे राखी, भक्तसंरक्षणो करो;
सदा वात्सल्य भावेथी, दुःख दारिद्र्यने हरो. १८
कोट्यावधि महादोषो, कीधा ने करुंछुं सदा;
तमारो दास जाणीने, करुणाथी करो क्षमा. १९
अनन्य भक्तिभावेथी, करुं हुं अभिवंदना;
प्रसन्न थइने पूरो, मनवाञ्छित कामना. २०

इन्द्रवंशा.

स्वेच्छायकी सृष्टि तमे प्रभू किधी, स्वेच्छा थकी ते उपसंहरो बधी;
अद्भूत छे देव तमारि तो कृति, चाले नही त्यां जिव अल्पनी गति.१
कोत्यावधी दोप किधा दयानिधि, जाणुं नहीं हुं उपशांतिनो विधि;
नित्ये मने सन्मति नाथ आपशो, संसारसिंधू थकि पार पाडशो.२
स्रष्टा तमे सृष्ट पदार्थ सर्वना, साक्षी तमे छो प्रभु सर्व कर्मना;
सर्वेश सर्वांतरयामिने सदा, साष्टांग वंदी प्रभु मागुंछुं क्षमा. ३
आधार वीजो नथि नाथ तुं विना, नित्ये करुंछुं प्रभु पादसेवना;
भक्तोतणी सर्व विपत्तियो हरो. कल्याण मांगल्य तमे सदा करो.४
पादारविंदे नमि पाय लागुंछुं, सत्कार्यमां नाथ सहाय मागुंछुं;
दृष्टी दयानी प्रभु नित्य राखशो, निःशेप दोषो सहु कापि नांखशो.५
कोटुंवि मित्रो स्वजनो जनो वधा, पामे नहीं किंचित दुःख आपदा;
आरोग्यता आपि करो सहायता, राखो जगत्मां प्रभु सर्व शांतता.६
नीति प्रमाणे अनुवर्तनो थशे, त्यारे कृपा पूर्ण तमारि तो थशे;
माटे विनंती करुं वारवाररे, स्वीकारवाने करशो न वाररे. ७
दुर्वासनाथी प्रभू दूर राखशो, सन्मार्ग सद्धर्म मने बतावशो;
संकट मारां प्रभु सर्व कापशो, सामीप्यमुक्ती पदलाभ आपशो. ८

वसंततिलका.

विश्वेश वंद्य विभु छे तमने विदीत,
इच्छा अमारि सघळी घटिताघटीत;

भक्तोतणी विनति सर्व चिते विचारी,
लेशो हशे घटित जे प्रभु ते स्विकारी. १

पुत्रो पिता समिप आवि समस्त मागे,
तेमां थकी घटित अर्थज तात आपे;
ए न्याय राखि परिपूर्ण करो सदर्थ,
सर्वे सुकार्य करवा प्रभु छो समर्थ. २

सर्वे कुकर्म करुणा करिने शमावो,
सद्धर्मकृत्य करवा सुमती वतावो;
भक्तो मळी स्तवन नित्य तमारु गाय,
प्रेमेकरी प्रभु रहो अमने सहाय. ३



गायन.



पद.

भैरव तथा सर्व रागमां गवाय. चोताल.

वंदुं परब्रह्मचरण, करुंछुं शुभ नामस्मरण,
भजुछुं भवदुःखहरण, मंगल दिन थाउं आज;
संगीत गीत गाउ, चिद्घनप्रत नित्य धाउं,
प्रणमी कृतार्थ थाउं, जय जय जगदधिराज. वंदुं०

अतिशय मुज दुष्टकृति, क्षयम करी प्रभु पामुं गति,
थर थर थर कंप प्रभु, करुणा करी राखो लाज,

अविचल प्रभु भक्ति आपी त्रिविधिजनित कष्ट कापी,
मुज शिर वरहस्त थापी, करशो हितकारी काज. वंदुं० १

पद.

यमनकल्याण. दीपचदी (कटाव).

जय जय हे जगदीश्वर ईश्वर अविचलशुभपददाता,
तत्त्व महत् थकि व्याप्त विभु त्रिगुणात्मक विश्वविधाता;
दुर्मति टाळि मति शुभ द्यो दयादृष्टि करि दीननाथा. जय जय हे०
प्रभु परमकृपाल, जनप्रतिपाल, दीनजनबंधु, दीनदयाल,
चरण तमारे, नमुं हुं त्रिकाल, करुणादृष्टि करो विशाल;
शरणागत सेवक सर्वे तुज मंगलयशगुणगाता. जय जय हे० १
प्रभु कृपानिधान, बहु बलवान्, नव कोइ भासे ब्रह्मसमान,
पूज्य मानिने, करुं शुभ ध्यान, कृपायना मुज द्यो वरदान;
विश्वनाथ विश्वंभर विभु छो विश्वविषे विख्याता. जय जय हे० २
सर्वांतर्यामी, प्रभु निष्कामी, विश्वस्वामी, अविचलधामी,
सत्य सदा सचराचरगामी, भक्ति विषे मुज वृत्ति विरामी;
दयानिधि दीनवत्सल देवा सदा करो सुखशाता. जय जय हे० ३
परब्रह्म महेशा, प्रभु परमेशा, प्रकृतिपरेशा, विभु विश्वेशा,
प्रणमुं तमने, प्रभु दिननिशा दूर करो मुज दुरित अशेषा;
दिव्यपिता परमेश्वर तमने निरखुं सदा साक्षाता. जय जय हे० ४
जय अपरंपार, छो अविकार, भक्तजनोना प्रभु आधार,

अविचल पद, आपो दातार, सदा तमारा स्मरुं उपकार;
आद्य निरंजन निर्मळ अविचल त्रिभुवनना प्रभु त्राता. जय जय हे० ५
जनमंगलकारी, बहु उपकारी, भक्त जनोना भवभयहारी,
यथामति आ. विनति उचारी, कृपा करीने ल्यो स्वीकारी;
पूर्ण करो प्रभु आश अमारी, आद्य अनंत अजाता. जय जय हे० ६
सुखशान्तिप्रदाता, प्रभु प्रख्याता, प्रेमभावथी नमुं जगत्राता,
आद्य अनंत अखंड अजाता, सर्व कर्मना प्रभु छो ज्ञाता;
परमात्मा परलोक विषे प्रभु समीप मुक्तिफलदाता. जय जय हे० ७
हुं शरण तमारे, आव्यो द्वारे, चढशो वारे, संकट भारे,
तुज विण प्रभु ते, कोण निवारे, सर्व अर्थ सेवकना सारे;
सदा तने साष्टांग विधिथी नमुं नमुं नमुं पितु माता. जय जय हे० ८

पद.

खमाच जिल्हो. दादरो.

(चाल, बहुचर नाम तणी लेह मने लागीरे.)

सच्चिद्घनना स्वरूपमां विरामुंरे; सच्चिद्०
अंतरवृत्ति विमल थया विना,
बाह्याचरण सर्व छे नकामुंरे. सच्चिद्० १
कृपाधना करुणादृष्टिथी,
जुवो नित्ये सेवकजन सामुंरे. सच्चिद्० २
नीतिसद्धर्माचरणथकी हुं,
सदा तारो प्रसाद पूर्ण पामुंरे. सच्चिद्० ३

आरति.

जयदेव जयदेव जय जयदुद्धारा जय जगदुद्धारा,
अविनाशी अविकारा (२), विभु अपरंपारा. जयदेव० ॥१॥
नमी दंडवत् नाथ, नित्य तमने भजिये (२);
मंगलकारी तमारुं (२), नाम मुखे जपिये. जयदेव० ॥२॥
सच्चिद्घन सर्वेश, संरक्षण करशो (२);
प्रेमलभक्ति तमारी (२), मुज हृदये भरशो. जयदेव० ॥३॥
त्राता त्रिभुवन नाथ, सद्गुणना दाता (२);
दया करो दिनजनपर (२), दिव्य पितामाता. जयदेव० ॥४॥
स्रष्टा सत्य समर्थ, मंगल मति देशो (२);
स्तुतिवंदनप्रार्थनविधि (२), विभु मानी लेशो. जयदेव० ॥५॥
अकळ कळा न कळाय, करुणामय तारी (२);
दया करी मुज दीनने (२), मति आपो सारी. जयदेव० ॥६॥
प्रेमथकी परमेश, माफ करो पापो (२);
विश्वविषे विश्वेश्वर (२), सुखशान्ति आपो. जयदेव० ॥७॥
विनति अमे महाराज, करिये नित्य तमने (२);
घटित मनोर्थ हशे जे (२), प्रभु आपो अमने. जयदेव० ॥८॥



अंक १५ मो.

ललित.

परम इष्टने पादपंकजे प्रतिदिने पराभक्तिपूर्वके;
परम प्रेमनी पुष्पअंजलि, सतत आर्पिये भक्तमंडळी. १
प्रभु अमूर्तनी मूर्तिभावना, भ्रमित जीवनी क्लिष्ट कल्पना;
अखिल विश्वनो आदि एक जे, नव कदी थशे व्यक्त मात्र ते. २
सकल वस्तुथी भिन्न सत्य छो, सबल शक्तिथी व्याप्त नित्य छो;
विदित जीवनां कृत्य आपने, प्रभु क्षमा करो सर्व पापने. ३
प्रभु परात्परा पूर्ण छो तमे, परमभक्तिथी पूजिये अमे;
अशुभ कर्मथी दूर राखशो, सुनितिनो सदा मार्ग दाखशो. ४
सकल सृष्टिना नाथ नायक, सकल विश्वमां शांतिदायक;
नमि नमी अमे पाय लागिये, रुडि मती महाराज मागिये. ५
दुरित कृत्य तो थाय छे अति, अवकृपा तथापी थती नथी;
अनुग्रहो अमे नित्य मानिये, प्रभुकृपाथकी शांति पामिये. ६
जय जगेश्वरा क्षेमकारक, जय भवेश्वरा भक्ततारक;
प्रभु सुणो तमे नम्र प्रार्थना, पुरि करो रुडी सर्व कामना. ७
शुभ उपासना आज आ समे, करि प्रभूपदे वंदिये अमे;
विनति सांभळीने तमे वधी, शरण राखशो रे दयानिधि. ८

ॐ तत्सत् परमात्मने नमः।

श्री जगदीश्वर महाप्रभु परमपवित्र भगवान्ने साष्टांग नमस्कार करुंछुं. सर्व ब्रह्मांडना नाथ विश्वाधिपति महाराज ! तमारे शरणे आव्यो छुं. मारा अपराध क्षमा करो, मारां पाप बाळी नांखो अने मने मुक्ति आपो. आ जगत्मां जीवुं त्यां सुधी तारी भक्ति शुद्ध भावथी करुं, तारी प्रीति अर्थे अने मारो धर्म जाणी परमार्थ करुं. सदाचरणवडे पुण्यशाळी थाउं, अने तारा प्रेमने पात्र थइ सद्गति पामुं, ए मारी मनकामना छे; एज मारे मागवुं छे. बीजुं शुं इच्छुं ? बीजुं शुं मागुं ? तारी कृपाथी बीजो कोइ पदार्थ मोटो नथी. तुं मुज दीन उपर प्रसन्न था, एज मारे मागवानुं छे, मारे बीजुं कांइ जोइतुं नथी. आ संसारनां सुखदुःख कर्मादि कारणोने संयोगे उत्पन्न थाय छे. ते बधां कारण मारा समजवामां आवतां नथी. हुं तो केवळ तारा उपर भरोंसो राखी रह्यो छुं. जे साधनोनी बक्षीस तें करी छे तेनो रूडो उपयोग यथाशक्ति करीने सदा तारो पाड मानुं, अनित्य सुखो भोगवतां छतां ते उपर आसक्त ना थाउं. कल्याणकारी ! तारा अनुग्रहरूपी नित्यनुं सुख संपादन करवाने आतुर रहुं, ए नित्यनुं सुख मेळववाने सदा उद्यममां रहुं, निरंतर मंडयो रहुं, आ संसारना क्षणिक सुखने लोभे अने क्षणिक दुःखना भयथी आडी वाटे न जाउं, सुख समये तारा सुनीतिना नियमोने आधीन रहुं, अने दुःखनी वेळा खरा विश्वासथी चाली, श्रद्धापूर्वक तारी अनन्य

भक्ति छोडुं नहि अने तने दोष न देतां धीरजथी जे थाय ते सहन करुं, एवी मति आप. मारी आ अरजमां कांइ अयोग्य होय तो मारी भूल माफ करीश. अमे तारां अज्ञान बालक छीए. धनादिनी अने इन्द्रियना भोगनी तृष्णा सुनीतिनी यदित मर्यादामां राखवानुं सामर्थ्य नम्रतापूर्वक मागीए छीए ते करुणा करी आप. सदुद्योगथी अने सत्य मार्गे जे मळे तेमा राजी रहीए एवो संतोष आप. सकट समये सावध रही सद्धर्मनां कर्मो चूकीए नहिं, खोटे रस्ते चढीए नहिं एवी बुद्धि देनार सर्वशक्तिमान् महापिता विना वीजुं कोई नथी. हे मायाळु पिता! परब्रह्म परमात्मा! भक्तोना अंतःकरणमां ज्ञाननो प्रकाश करनार! मारा मननो अंधकार नाश करी मारी सकल दुर्वासना दूर कर; मने वहेमना दरीआमां डूबवा न देइश. मने पाखंडना खाडामांथी काढ. मने संसारसागरथी तार. तारा ज्ञानरूपी अमृतनुं मने पान कराव के मारो आत्मा तने पामे.

॥ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

दिंढि १५.

जगतलीला अति सुंदर सुखकारी, नहीं चालि शके गति मती अमारी;
करुं प्रभुपदे हुं दंडवत्प्रणाम, पुरो सर्व रुडा नाथ मनस्काम. १
पुण्य प्राणि सदा सत्य पथे चाले, नीतिनियम अति प्रीतियकी पाळे;
पाप राशि बाळि नांखिने अशेष, अमृत धाम सत्य आपशो महेश. २

मोहपाशवद्ध अल्प हुं अज्ञान, करो मुक्त मने हे कृपानिधान;
विना नाथ अन्य शरण कोनुं लावुं, दया थाय तोज पापमुक्त थाउं.३

चडो वारे प्रभु कष्ट महा भारे, ग्रही हाथ कोण अन्य ते निवारे;
विषयमोहबंध नाथ कापि नांखो. आत्मउन्नतिनो पुण्य मार्ग दाखो. ४

तोटक.

परब्रह्म परात्पर विश्वपति, नमिने तमने करुंछुं विनति;
प्रभु व्यष्टिसमष्टिविषे विचरो, करुणानिधि कष्ट समस्त हरो. १

प्रभुता प्रभु तारि दिसे सघळे, तुज पार पुरो अमने न मळे;
प्रगट्यो परिपूर्ण प्रताप खरो, करुणानिधि कष्ट समस्त हरो. २

भुमिमंडल सुंदर शोभि रह्युं, तुज शक्तिथकी भरपूर भर्युं;
प्रभुनाथ तमे भवताप हरो, करुणानिधि कष्ट समस्त हरो. ३

गगने ग्रहराज विराजि रहे, प्रभुनी प्रभुतानुं प्रमाण कहे;
सचराचर सृष्टि विषे पसरो, करुणानिधि कष्ट समस्त हरो. ४

ग्रहगोल विचित्र गतीथि फरे, परब्रह्म तणो प्रतिबोध करे;
प्रभु निर्मित नीमथकी न फरो, करुणानिधि कष्ट समस्त हरो. ५

प्रभुना पदपंकजने प्रणमुं, शुभ ध्यान धरी मनमां विरमुं;
परहस्त तमे मुज शीप धरो, करुणानिधि कष्ट समस्त हरो. ६

शुभ मंगल नाम मुखेथि जपुं, निजकर्म बधां तमने अरपुं;
मुज चित्तविषे प्रभु भक्ति ठरो, करुणानिधि कष्ट समस्त हरो. ७

अविनाश पदे अभिलाष धरुं, भवसागर नाथ कृपाथि तरुं;
मुज चित्त थकी कदि ना विसरो, करुणानिधि कष्ट समस्त हरो. ८

मुज अंतरभावथकी विनवुं, विभुनाथ तने वदवुं शुं नवुं;
शरणागत जाणि ग्रहोज करो, करुणानिधि कष्ट समस्त हरो. ९

करुणाथकि दुःख विपत्ति टळे, करुणाथकि नाथ प्रसाद मळे;
करुणाथकि कार्य समस्त सरो, करुणानिधि कष्ट समस्त हरो. १०

जिवना अवगुण तमे न गणो, मुज आश्रय आप कृपाज तणो;
प्रभुरे करुणामृतदृष्टि करो, करुणानिधि कष्ट समस्त हरो. ११

अवलंबन सत्य प्रभूपदनुं, शुभ कार्य करो सघळा जननुं;
मुज चित्तविषे प्रभु शांति भरो, करुणानिधि कष्ट समस्त हरो. १२

प्रभु अंतरयामि अनादि तमे, तमने सुनिती शुभ मार्ग गमे;
निजभक्ततणी रुचि आश पुरो, करुणानिधि कष्ट समस्त हरो. १३

अपराध अगाध हुं नित्य करुं, प्रभु तारी कृपाथकि मात्र तरुं;
मुज मंद मती सघळी सुधरो, करुणानिधि कष्ट समस्त हरो. १४

अभिवंदन विश्वपती चरणे, करिने रहुंछुं प्रभुने शरणे;
शुभ आशिष नाथ सदा उचरो, करुणानिधि कष्ट समस्त हरो. १५

—

भुजंगी.

परात्मा प्रभु चिद्घना चित्स्वरुप, सदानंद आनंददाता अनूप;
अनिर्वाच्य शक्ती तमारी अपार, जगद्वंद्यने वंदिये वारवार. १
निर्यंतृत्व कर्तृत्व सत्ता तमारी, दयासिंधु दीसो वहू ऊपकारी;
सहू शास्त्रनो एज सिद्धांतसार, जगद्वंद्यने वंदिये वारवार. २
षडैश्वर्यसंपन्न स्वामी समर्थ, पुरो सेवकोना तमे सर्व अर्थ;
कृपावीण क्रीया न थाशे लगार, जगद्वंद्यने वंदिये वारवार. ३
रची कोटि ब्रह्मांडना सर्ग पोते, महाशक्तिथी व्याप्त छो पूर्ण ज्योते;
तमे प्राणदाता प्रभू निर्विकार, जगद्वंद्यने वंदिये वारवार. ४
तमारा प्रभु विश्वमां नीम साचा, अमो जीवना सर्व संकल्प काचा;
थशे जे किधुं छे तमे नीरधार, जगद्वंद्यने वंदिये वारवार. ५
अमे अल्प प्राणी बधा देहधारी, तमे ना जुवो दुष्कृतीओ अमारी;
शमावो अमारा सहू दुर्विकार, जगद्वंद्यने वंदिये वारवार. ६
तमे क्षेमकल्याण आरोग्यदाता, तमे सर्वना छो प्रभु सत्य त्राता;
अमे दीनताथी उभा आवि द्वार, जगद्वंद्यने वंदिये वारवार. ७
प्रभूपादमां जोडिने बेउ हाथ, क्षमा पापनी मागिये विश्वनाथ;
उतारो विभू विश्वसिंधूथि पार, जगद्वंद्यने वंदिये वारवार. ८
सदाचार नीती अमे आचरीए, तमारा सदा ऊपकारो स्मरीए;
करो तेज भक्ती तमे अंगिकार, जगद्वंद्यने वंदिये वारवार. ९

अमारी तमे वंदना मानी लेशो, कृपाधीश नित्ये शुभाशीष देशो;
करो सर्वदा भक्तने उपकार, जगद्वंद्यने वंदिये वारवार. १०

कुटुंबी जनो सर्व मित्रो अमारा, रहे ते शरीरे सुखी सर्व सारा;
सदा सूचवो तेमने सद्विचार, जगद्वंद्यने वंदिये वारवार. ११

अमे रंक प्राणी अती दीन बाल, नमीए तने दीनबंधु दयाल;
अमारी करो आ विनंती स्विकार, जगद्वंद्यने वंदिये वारवार. १२

गीति.

परमात्मा परमेशा, प्रणिपतपूर्वक प्रणाम करुं नित्ये;
आपो दान अभय मुज, दुस्तरभवसिंधुथी हुं तरुं सत्ये. १

करुणाकर कर धरशो, हरशो मुज सकल दुःख संताप;
प्रेमल दृष्टियकी प्रभु, करशो मुज रंकनां क्षमा पाप. २

नित्य निरंतर देखो, सेवक जननी बधी कृती तात;
नविन नथी के'वानुं, जाणो मुज सकल हृदयगत वात्त. ३

शरण सुखप्रद तारुं, ग्रहण किधुं छे अमे जगाधीश,
विमुख विभू नव करशो, वंदन करिये तने हृदे ईश. ४

अति उपकार तमारा, क्षणप्रतिक्षणमां दिसे दयासिंधु;
दिनवत्सल दिनबंधु, तुज शुभ चरणे सदा हुं अभिवंदुं. ५

भोगववां कृत कर्मो, ए प्रभुनिर्मीत नियम छे नित्य;
लाभ समिप मुक्तीनो, मळशे सद्धर्म कृत्यथी सत्य. ६

नाम कृपासिंधू ते, सार्थक करशो दयानिधि देवा;
थर थर थर कंपुंछुं, किंचित तारी नथी किधी सेवा. ७

साष्टांगे, नमुं तमने, कृति सामुं प्रभु कदापि नव जोशो;
राखो लाज अमारी, शरणागतना क्षमा करो दोषो. ८

भावथकी प्रभु तमने, भजशे तेनां त्रिवीधि दुख टळशे;
ईश्वरप्रसाद मळशे, संचितसकलशुभधर्मकृत फळशे. ९

जय जय जय करुणाब्धे, जयजयकारो करो तमे देवा;
प्रेमथकी परमेश्वर, सेवकजननी स्विकारशो सेवा. १०

नम्र विनंति अमारी, करुणा करिने तमे हृदे धरशो;
तेमां घटित हशे जे, ते ते इच्छा तमे पुरी करशो. ११

प्रेमाक्षत अर्पण करि, प्रार्थन करिये सदा अमे तमने.
सद्गति प्राप्त थवाने, सन्मति देशो दयानिधि अमने. १२

शरणे रही तमारे, ध्यान तमारुं हृदय विषे धरिये;
स्तवन भजन कीर्त्तन करि, शिर साष्टांगे प्रणाम प्रभु करिये. १३

गायन.

पद.

काफी. चोताल.

शुभ गुण गाय गाय मंगल पद धाय धायरे,
शुभ गुण गाय०
सुंदर नरनारी मळी मंडळ, लागे प्रभुने पाय पायरे,
शुभ गुण गाय०
करुणामय दृष्टियी तमारी, दुरित कृति सर्व जाय जायरे,
धन्यधन्यधन्यधन्य, धन्य सच्चिद्घन मंगल कृत्य नित्य थाय थायरे,
शुभ गुण गाय० १

पद.

विलावल. त्रिताल (अष्टपदी).

नमुं जगदीश्वर प्रभु परमेश्वर, परपदमंगलदाता;
जगदुद्धारक जनसुखकारक, दुःखपरिहारक धाता. नमुं० १
पड्गुणयुत भगवंत तमे छो, विश्वतणा विभु धाता;
ऋषि मुनियो तुज शुभ महिमाना, मंगल यश गुण गाता. नमुं० २
एक तमे अद्वितीय स्वरुपे, विश्व विषे विचरो छो;
सदा निरंतर भक्त जनोनी, प्रभु संभाळ करोछो. नमुं० ३
धन्य कृति छे जगरचनानी, कदि नव जाय वखाणी;
यथाघटित नियमो बांध्याछे, करुणा चित्तमां आणी. नमुं० ४

शक्ति सबल सर्वेश्वर तारी, विश्व विषे रहि व्यापी;
मानविजनने घटित नियमथी, मतिमर्यादा आपी. नमुं० ५
सृष्ट वस्तुथी स्रष्टा भासो, परमात्मा भगवान्;
त्रिगुण शक्ति तें धारी तथापि, सात्विक गुण प्रधान. नमुं० ६
मिथ्या भासित नथी थयुं आ, सृष्टितणुं मंडाण;
अति चातुरिथी सर्व वस्तुमां, नियम कीधो निर्माण. नमुं० ७
देहाकृतिमां अति अद्भुत जे यांत्रिक युक्ति जणाय;
ते थकि प्रभु कर्ता छो तेनां, मुख्य प्रमाण गणाय. नमुं० ८
ग्रहगण गगने गणितानियमथी, अति शोभाथी प्रकाशे;
उपग्रह ग्रहयुक्ति अस्तोदय, निरखी चित्त उल्लासे. नमुं० ९
आस्तिकजन सानंदाश्चर्ये, प्रभुमहिमाने माने;
वारवार विचार करीने, ब्रह्मपदे विश्रामे. नमुं० १०
अभिवंदन दीनवत्सल तमने, करिये वारंवार;
श्रवण करो करुणानिधि सर्वे, दीन जनना उचार. नमुं० ११
भवसागरथी तरवा तारी, करुणारूपी नौका;
प्रेमथकी सन्मार्ग बतावो, तो तरिये निःशंका. नमुं० १२
विकट विभू भवपंथ घणो छे, जीवथी कदि न तराय;
दयासिंधु करुणा करशो तो, नहिं ते दुस्तर थाय. नमुं० १३
कृति अमारी प्रभु नव जोशो, दोष किधा छे भारे;
मातपिता शिशुना अवगुणने, चित्तमां कदि नव धारे. नमुं० १४

आ संसारे शुभ कर्मोनी मति आपो जगदीश;
सदाचरणथी भक्ति तमारी, करिये प्रभु दिननिश. नमुं० १५
जगदीश्वर जगवंद्य तमारी, अकल कला न कळाय;
सत्संकल्पो छे प्रभु तारा, मिथ्या कदि नव थाय. नमुं० १६
भक्तिविना नीति निष्फल छे, कदि करवो न वियोग;
विनानीति भक्ति करवाथी, थाय न शुद्ध प्रयोग. नमुं० १७
सत्य वचन सद्धर्माचरणो, सद्विद्या सत्संग;
विचार्पण प्रभुचरणे करवुं, ए भक्तिनुं अंग. नमुं० १८
अवलंबन आधार तमारो, छे साचो भगवंत;
भय संकट संताप निवारो, करुणा करि अत्यंत. नमुं० १९
विनयथकी साष्टांगे तमने, वंदन करिये नाथ;
कृपाघना करुणादृष्टिथी, क्षमा करो अपराध. नमुं० २०
शरण तमारुं ग्रहण कीधुं छे, प्रभु करशो न निराश;
अविचल पद परमात्मा आपो, जाणी तमारो दास. नमुं० २१
जय जगदीश्वर जय परमेश्वर, जय परब्रह्म परेश;
प्रसन्न थइ प्रेरो सद्बुद्धि, विनवीए विश्वेश. नमुं० २२
प्रेमथकी आज्ञाओ तारी, सेवकजन जे पाळे;
परमात्मा पोतानो तेने, जाणी सदा संभाळे. नमुं० २३
मनवाणीकायाथी तमने, करिये कोटि प्रणाम;
ऐहिक सुख आपो प्रभु अमने, परलोके निज धाम. नमुं० २४

आरति.

जयदेव जयदेव जय सृष्टिकर्ता जय सृष्टिकर्ता,
संकट भयदुखहर्ता (२), विश्वतणा भर्ता. जयदेव० ॥१॥
जय जगवंद्य दयाल, जय करुणामूर्ति (२);
मंगल महिमा गावा (२), वाणि नथी पुरती. जयदेव० ॥२॥
जय चैतन्यस्वरूप, गुणगणना गणतां (२);
ऋषि मुनि सर्व विराम्या (२), लक्ष्य स्थले जातां. जयदेव० ॥३॥
नथि धरता अवतार, नाथ प्रभुनी प्रतिमा (२);
विश्वेश्वर व्यापक प्रभु (२), चिद्घन परमात्मा. जयदेव० ॥४॥
अंतर्यामि अजात, अनुपम अविकारी (२);
मानसि मंगल अर्चा (२), प्रभुने प्रियकारी. जयदेव० ॥५॥
मळिने भक्तसमाज, आराधन करिये (२);
मुक्ति पदे मळवा प्रभु (२), आश सदा धरिये. जयदेव० ॥६॥
दिनजन दोष दयाल, नव लक्षे लेशो (२);
दुर्मति टाळि दयानिधि (२), प्रभु सन्मति देशो. जयदेव० ॥७॥
करिये सर्व प्रणाम, प्रेमथकी तमने (२);
पूर्ण कृपाथकि करशो (२), प्रभु पावन अमने. जयदेव० ॥८॥



अंक १६ मो.

भुजंगी.

पिता मात तुं मुक्ति दाता महेश, दया दृष्टि तारी दीसे छे विशेष;
खरो एक आधार तारो अमारे, दयानाथ तारा विना कोण तारे. १
कृपाकांत तें मानवी जन्म दीधो, अमे लाभ तेनो न कांईज लीधो;
गयो काळ सर्वे अमारो दृथारे, दयानाथ तारा विना कोण तारे. २
अमो जीवनां छे अती निंद्य कर्म, विसारी दिधो छे अमे सत्य धर्म;
तथापि दया तुं दिले नाथ धारे, दयानाथ तारा विना कोण तारे. ३
तमारा प्रते नाथ संबंध भारे, अमे मोहथी ते मुक्यो छे विसारे;
भरुंसो कृपानाथ तारो अमारे, दयानाथ तारा विना कोण तारे. ४
नथी मूझतुं शी बले नाथ थाशे, प्रभु हाथ तारा विना कोण सा'शे;
पिता पुत्रना दोषने ना विचारे, दयानाथ तारा विना कोण तारे. ५
हवे जे रह्यो शेष आयुष्य काल, सदा का'डिये सत्क्रियामां कृपाळ;
अमे मागिये आविने द्वार तारे, दयानाथ तारा विना कोण तारे. ६
अजाणी नथी तुं थकी कांइ वात, सदा सन्मती आपशो माततात;
वधू शुं कहीए अमे वारवारे, दयानाथ तारा विना कोण तारे. ७
महा कष्ट वेला नथी कोइ त्राता, प्रभू तुं प्रभू तुं प्रभू शान्तिदाता;
सदा दासनी तुं चडे नाथ वारे, दयानाथ तारा विना कोण तारे. ८

या भाव छे नाथ तारे स्वभावे, कृपादृष्टिथी दासने तुं निभावे;
अमारां बधां पाप कर्मो निवारे, दयानाथ तारा विना कोण तारे. ९
स्तुति प्रार्थनाओ सुणीने अमारी, यथायोग्य जे होय ते त्यो स्विकारी;
मळी भक्त सर्वे विनंती उचारे, दयानाथ तारा विना कोण तारे. १०

ॐ तत्सत् परमात्मने नमः ।

हे सर्वज्ञ सर्वसाक्षी सर्वशक्तिमान् मंगलमय परमेश्वर ! तुं एक अनादि नित्य निराकार परमदेव छे; तुं आ सकल ब्रह्मांडनो उत्पन्न करनार, चलावनार, नियंता छे; तुं सर्व प्राणिओनो जीवन आधार सुख तथा शान्तिनुं स्थान छे. तुंज अमारो सेव्य, तुंज अमारो उपास्यदेव, तुंज अमारो पिता, शासिता अने त्राता छे; अमे तारां अज्ञान बाळको अति लीनता, दीनता अने नम्रताथी तारी पासे आव्यां छिये; तारी मानसिक पूजाथकी आनंद, शान्ति तथा सुख पामवाने, तारी अचिंत्य शक्ति, अगम्य लीला, अगाध ज्ञान, अपार वैभव तथा अनंत गुणनो विचार करीने तारा उपर पूज्य बुद्धि राखी अमारुं अंतःकरण प्रेमभक्तिथी परिपूर्ण करवाने अमारा असंख्य अपराधोनी क्षमा मागवाने अने तारो प्रेम संपादन करवाने अमने शक्तिमान् कर. तुं सत्यरुप ज्ञानस्वरुप अनंत आनंदमय अमृतमय ब्रह्म प्रकाशी रह्यो छे, तुं शान्त मंगलमय, अने अद्वितीय छे.

हे प्रभु तुं खरो साक्षात् सत्य, जाग्रत जीवंत देव छे. तुं त्रिभुवनुं जीवन, तारा विना एक क्षण पण अमाराथी रही शकातुं नथी.

हे जगदीश्वर जगत्कारण जगदाधार अमे तने नमस्कार करिये छिये. तारी उपासना तथा तारी भक्ति करवाथी अमने अतिशय आनंद प्राप्त थाय छे, अने आवा सुयोगनो लाभ तारी कृपाथी अमने मळे छे, तेने वास्ते तारो मोटो उपकार मानिये छिये. आवुं शुभ काम नित्य थाय अने तारो मंगल हस्त अमारा शिर उपर सदा रहे, ए अमारी इच्छा छे. तारुं खरुं रुप जाणवाने तथा तारा उपर प्रीति राखवाने अमने शक्तिमान् कर. अमारुं मन तारा मंगळ भाव तथा मंगल गुणना ज्ञानथी प्रफुल्लित रहे, तारी प्रीतिरूप किरणोनो आनंदमय प्रकाश अमारा मन उपर सदा पडे, गमे तेवो प्रापंचिक मोह प्राप्त थाय तोपण तारी पासेथी अमारुं मन कदी खसे नहिं. अधोगतिये लेई जनारी जे तारी विस्मृति ते अमने कदी थाय नहिं, ए अमारी प्रार्थना छे. तारा पदमां अमारुं खरुं कल्याण छे, माटे अति प्रेमभावथी तारुं वंदन, तारुं भजन करवाने अमने सहाय रहे.

हे प्रभो! कायिक, वाचिक, मानसिक पापथी अमने दूर राख. तुं सर्व साक्षी सर्वज्ञ छे; ताराथी अमे कांइ छानुं राखी शकनार नथी; तुं सर्व समर्थ परम न्यायी छे, एम जाणीने पाप मार्गे जतां अमारा मनमां भीति रहे, अमने पापनो अनुताप वारंवार थाय, अने फरीथी पाप न थाय एवो अमारा मननो निग्रह राखवाने अने प्राप्तनो आप

हे परमदेव परम कृपालु प्रभो! सत्य ज्ञान अमने प्राप्त थाय अने तारा उपर अमारो प्रेम, विश्वास अने भक्ति दिवसे दिवसे वृद्धि पामे ए अमारी प्रार्थना छे ते कृपा करी स्वीकारजे.

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

दिंढि १६.

नाथ द्वार आविप्रेमथि पुकारुं, करो रक्षण प्रभु सर्व काल मारुं;
प्रभु सन्निधान सर्व समे धारुं, नीति मार्गने हुं कदि नहि विसारुं.१
सदाकाल कालचक्र तो फरेछे. शीघ्र वोध मृत्यु समयनो करेछे;
विभव संपति धन द्रव्य छे अनित्य, सर्व मूकि अहींथी जवुंज सत्य.२
विश्वसिंधु विषे देहरूपि नाव, सदा भ्रमण करे कर्मनो प्रभाव;
विषयरूपि विकट खडक दिसे भारे, सत्य धर्मरूपि कर्णधार तारे.३
हवे अवसर प्रभु छे घणो समीप, करो दीप्तिमान नाथ ज्ञानदीप;
समय जे तमारि भक्ति विषे जाय, घडी तेज सफळ जन्ममां गणाय. ४
कृपानाथ होय जो कृपा तमारी, सत्य मोक्ष गती थाय नाथ मारी;
नथी योग्य प्राणि हुं तथापि तारो, दयासागर शुभनाम तमे धारो.५

मत्तमयूर.

विश्वाधीशा विश्वनियंता विभु त्राता,
सत्यानंता शुद्ध सदा सन्मतिदाता;
अंतर्यामी एक तमे अद्वय साचा,
अल्प प्राणीनी नव पोंचे मनवाचा. १

जीवो नित्ये नाथ करे छे अति दोषो,
ते दोषोना सामुं कदापी नव जोशो;
सद्विद्या सद्धर्मदपाथी प्रभु दाखो,
भक्तो मत्ये प्रेम तमारो नित राखो. २

आकाशे अद्भूत दिसे छे ग्रह वर्गो,
नक्षत्रोना शोभि रह्या सुंदर सर्गो;
सर्वे सृष्टीना प्रभु छो निश्चय कर्ता,
सेतू रुपे सत्य तमे छो जगधर्ता. ३

प्रीतीभावेथी तमने हु प्रभु वंदुं,
दृष्टी राखो देव दयानी दिनबंधु;
दोषो मारा नाथ कृपाथी नव मापो,
सद्भक्तीनी छाप हृदेमां प्रभु छापो. ४

स्वामी सर्वाध्यक्ष सदा सद्गति दाता,
त्राता धाता सत्य अमारा पितुमाता;
धारो धारो नाथ कृपाना गुण धारो,
तारो तारो आ भवसिंधू थकि तारो. ५

संकल्पो छे सर्व तमारा प्रभु सत्य,
जाणो सर्वे जीव तणां अंतरकृत्य;
साष्टांगे हुं पाय तमारे प्रभु लागुं,
दुष्कर्मोनी क्षांति दयासिंधु हुं मागुं. ६

आ संसारे मानविने उत्तम स्थाप्यो,
जन्मारो तें व्यर्थ गुमावा नथि आप्यो;
विश्वस्वामी जो नव जोशो मुज सामुं,
पापी प्राणी प्रेम तमारो नहि पामुं. ७

अंते मारा जीवतणी शी गति थाशे,
तारा वीना कोण अमारो कर सा'शे;
आशा मोटी सद्गति थावा चित्त धारुं,
सत्ये थाशे तारि कृपाथी प्रभु सारुं. ८

भिक्षा मागुं नाथ दयानी तुज द्वारे,
विघ्नापत्तीना समये तुं चड वारे;
वारे वारे नाथ कहुं छुं नमि तुंने,
मोहाब्धीथी पार उतारे प्रभु मूने. ९

आ सृष्टीनो हेतु दिसे छे अति भारे,
सर्वे कृत्यो थाय तमारे अनुसारे;
आशीर्वादो पूर्ण कृपाथी प्रभु देशो,
सर्वे वेळा स्वामि तमे सन्निध रे'शो. १०

सर्व स्थाने वास तमारो प्रभु भासे,
आत्मप्राप्ती थाय तमारे सहवासे;
सन्मार्गोमां वृत्ति अमारी प्रभु वाळो,
विश्वाधारा विघ्नविपत्ती भय टाळो. ११

अंतर्भावे वंदि विनंती करुं देवा,
स्वीकारी ल्यो स्वामि कृपार्थी मुज सेवा;
श्रद्धा साची भक्ति विषे सत्वर आपो,
काया वाचा मानसि पापो प्रभु कापो. १२

कामदा.

हे महा प्रभू प्राणतारक, सृष्टिमां सदा शान्तिकारक;
आविने अमे आप सन्निधे, मागिये कृपा हे कृपानिधे. १
विश्वनाथ छो शुद्ध चिन्मय, सर्व प्राणिना मंगलाश्रय;
धर्म नीतिनो मार्ग दाखशो, प्रेमनी सदा दृष्टि राखशो. २
मात तात हे मुक्ति आपशो, भक्तनां बधां कष्ट कापशो;
प्रार्थना तमे लक्ष धारशो, विश्वसिंधुथी सत्य तारशो. ३
शान्तिवारिनां वर्षणो करो, चित्तनी व्यथा सर्वथा हरो;
प्रेरशो तमे शुद्ध सन्मति, आपशो कृपासिंधु सद्गति. ४
पूज्य देव छो सेव्य सर्वना, राखिये अमे प्रेमभावना;
शान्ति आपशो चित्तनी तमे, एज याचना याचिये अमे. ५
मंद छे मती योग्यता नथी, अंतमां थशे नाथ शी गती;
दीनवत्सला हाथ झालशो, विघ्न संकटो शीघ्र टाळशो. ६
धर्मकार्यमां द्यो सहायता, मागिये अमे हे जगत्पिता;
नम्र प्रार्थना दासनी सुणो, सर्वदा करो नाथ रक्षणो. ७
गंध भक्तिनो पुष्प प्रेमनां, अर्पिये अमे हे कृपायना;
दुर्गुणो दयासिंधु संहरो, योग्य वान्छना प्रेमथी पुरो. ८

विश्वपाळना पापमोचना, आपशो तमे धर्मसाधना,
प्रेमथी करो नित्य पालना, मंगलाशिषो द्यो दयाघना. ९

मालिनी.

प्रभुपद प्रणमीए जोडिने बेउ हाथ,
शरण प्रभु तमारुं आपशो विश्वनाथ;
विनयथकि अमे आ प्रार्थनाओ किधी जे,
श्रवण करि स्विकारो योग्य लागे प्रभू ते.

उपेंद्रवज्रा.

सदा तमारे शरणे रहीए, अमारि इच्छा तमने कहीए;
घटे प्रभू तेम तमे करो छो. कृपा करी आश रुडी पुरो छो. १

गायन.

पद.

भैरव तथा सर्व रागमां गवाय. चोताल.

आनंद रूप सत्य, चिद्‌घन पूर्ण नित्य,
परम पवित्र पाद, पंकज मति धाइए;
जेनी शक्ति अतुल गहन, व्यापी रही विश्वभुवन,
तेने नमी निशदिन, मंगल गुण गाइए. आनंद०
जेनो छे महा प्रताप, हरे जे त्रिविधि ताप,
जेनी छे कृपा अमाप, पाप क्षमा मागिये;

एवो जे प्रभु कृपाल, भक्त जन प्रतिपाल,
तेने प्रणमी त्रिकाल, परम लाभ पामिये. आनंद०

पद.

काफी. त्रिताल. चाल, प्रभु अपराध क्षमा कर मारो०

अनुग्रह आप तणो प्रभु मानुं० ॥
सदाकाल संभाळ करो छो, केइ विधिये हुं वखाणुं. अनु० १
पूर्ण कृपाथी प्रभु नव जुवो, दुरित किधूं जे छानुं. अनु० २
विस्तारे वधु हुं वंदुं शुं, तमथकी शुं अजाण्युं. अनु० ३
दीनदयाळ स्वभाव तमारो, वेद शास्त्रे प्रमाण्युं. अनु० ४
शरणागतनी लज्जा राखो, धारुं तमारुं वानुं. अनु० ५

पद.

खमाच जिल्लो. पंजाबी. चाल, स्तवन शुभ वारुं०

दुरित कृति में बहु कीधीरे, हे देवा, केम करी हुं छूटुं, दुरित० ॥
प्रभु परम कृपाल, प्रेमे करो प्रतिपाल,
जाणी मने अज्ञ बाळ मतिहीन. दुरित० १

पद.

काफी दीपचंदी.

तत्सत्‌ब्रह्मपद प्रणमिए दंडवत्.
तमे श्रवण करो, करुणा करी प्रभु आ स्तवनने
त्वरित ॥ तत्सत्०

शान्ति करो सर्व विश्वमां स्वामि,
सत्ता तमारी प्रभु छे सबलरे,
सच्चिद्घन सर्व मनुष्य जनोने,
आपो तमे धर्म नीति सुव्रत. तत्सत्० १

करुणामय मंगल मद प्रभुनुं,
ध्यान धरुं निज हृदयकमलरे,
प्रेम थकी परमात्मपदाब्जे,
अर्पिये पराभक्तिरुपी अक्षत. तत्सत्० २

सर्वज्ञ सर्वव्यापी समर्थ,
जाणो तमे जीव कृतियो सकलरे,
सुखवात्सल्य स्वभावथी स्वामी,
नाश करो सर्व दुरित दुष्कृत. तत्सत्० ३

विश्वनियंता विभु न्यायसिंधु,
कला तमारी सहू छे अकलरे,
दयाघना दयामय दृष्टिथी,
वृत्ति करो धर्ममार्गे प्रवृत्त. तत्सत्० ४

चंदनपूर्वक प्रार्थन करिये,
इच्छा तमारी सकल छे सफलरे,
दिव्य पिता प्रभु परम कृपाथी,
प्रेरो तमे शुभ सुमति सतत. तत्सत्० ५

आरति.

जयदेव जयदेव जय अंतर्यामी, जय अंतर्यामी;
जय सच्चिद्घन स्वामि (२), निर्मल निष्कामी. जयदेव० ॥१॥
परम पूज्य परमेश, मंगल गुण धारो (२);
आश्रय सत्य तमारो (२), दीनजन उद्धारो. जयदेव० ॥२॥
सत्य सनातन एक, अविचल पद दाता (२);
पतितोद्धारक त्राता (२), परम पितामाता. जयदेव० ॥३॥
सृष्ट वस्तुथी भिन्न, छे प्रभुनुं सत्त्व (२);
सर्व स्थळे व्याप्युं छे (२), सत्य महत्तत्त्व. जयदेव० ॥४॥
परमात्मानुं ध्यान, हृदय विषे धरिये (२);
प्रेम तणा कुसुमाक्षत (२), प्रभु अर्पण करिये. जयदेव० ॥५॥
परमेश्वर परब्रह्म, उत्तम गति आपो (२);
कृपा करी प्रभु कापो (२), त्रिविध जनित तापो. जयदेव० ॥६॥
दर्शन द्यो महाराज, आव्या तम द्वारे (२);
विमुख विभू नव करशो (२), छे आशा भारे. जयदेव० ॥७॥
सत्य धर्म विस्तार, विश्व विषे करशो (२);
कृपा करी शुभ अर्थो (२), सर्व तमे पुरशो. जयदेव० ॥८॥



अंक १७ मो.

अभंग.

प्रभु छो महान, सर्व शक्तिमान; करुणा निधान, भगवान. १
सत्य सनातन, सर्वना पालन; करशो पावन, कृपाघन. २
जीवनुं जीवन, तमे सर्व धन; करोछो रक्षण, क्षण क्षण. ३
तमे विश्वधाता, तमे विश्वपाता; तमे सत्यत्राता, शान्तिदाता. ४
जाणो जीव कृति, प्रेरो शुद्धमति; सुणो विश्वपति, आ विज्ञप्ति. ५
नमि चिदानंद, चरणारविंद; गाय गीत छंद, भक्तवृंद. ६
दया छे अमाप, हरो चित्त ताप; करो क्षमा पाप, माय बाप. ७
आवि तव द्वार, भक्त परिवार; करे नमस्कार, वारंवार. ८

ॐ तत्सत् परमात्मने नमः ।

हे सत्यस्वरूप जगत्कारण जगदाधार मंगलकारी प्रभु! तने अमे नमस्कार करिये छिये.

हे विभो! तुं नित्य शुद्ध मुक्त, तारुं आदि नथी अंत नथी. तारा मंगल गुणोनी सीमा नथी. आ सृष्टिमां जेटलां प्राणी छे ते सर्वे तने अवलंबीने रह्यां छे. तुं तेओने पाळे छे, तेओनुं पोषण करे छे, तथा तेओनां मनवाञ्छित पूरां पाडेछे; सर्वनी चिंता तने छे, तारी दया कदि विराम पामती नथी.

हे पतितपावन परमदेव ! तारी अपार शक्ति, तथा करुणा तथा उपकारनां प्रमाणो आ स्थूल जगत् तथा प्राणि मात्रोनी अद्भुत घटना तथा तेओना उपयोगने माटे यथाघटित योजना उपरथी प्रत्यक्ष जोवामां आवे छे. तें अमने मानसिक शक्ति तथा विवेक बुद्धि आपीने आ जगत् साथे सर्वोत्कृष्ट संबंध करी मूक्यो छे तेथी तारा मंगल भाव तथा उपकारनुं ज्ञान अमने थायछे. तारुं विस्मरण एज अमने अधोगतिये लेइ जनारुं महा पातक छे; माटे अमे तने भूली न जइये, तारो विश्वास राखीने तने गमतां काम करिये एवी अमने प्रेरणा करतो रहे.

हे दयासागर सर्वव्यापी न्यायकारी प्रभु ! तारा समान मोटुं कोइ नथी. तुंज आ जगतने धारण करी रह्यो छे, तारी दया तथा उपकारनी सीमा नथी. अमारुं सर्व जीवन तारे हाथ छे. अमारुं ऐहिक पारमार्थिक कल्याण थाय एवो शुभ मार्ग अमने सर्वकाल सूचव. संपत्ति किंवा विपत्ति वेळा तुं अमारी साथे छे. धन वैभव मळे ते समये तने भूली न जइये, अने विपत्तिमां अमे धैर्य राखीने सर्व सहन करिये, एवुं सामर्थ्य अमने आपीने तुं अमने सहाय रहे, तारी शिक्षा पाळी तने प्रिय कार्य करवानी अमारी मनोवृत्तिने जाग्रत राख.

कृपालु प्रभु ! तने शिरसावंदन करि मागिये छिये के निरंतर तारी कृपाधारा वरसावी अमारा मनने शान्ति आपी अमने तारा पवित्र तथा मंगल पंथे चडावीने अमारुं परित्राण कर.

॥ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

दिंहि १७.

नित्य शुद्ध मुक्त ब्रह्म निर्विकार, सर्व सृष्टि तणो एक सृजनहार;
नथी मूर्ति नथी परिमित आकार, नथी धरता कदि मानवि अवतार.१
नथी हाथ तदपि ग्रहण ते करेछे, नथी पाद तदपि विश्व संचरेछे;
नथी श्रोत्र तदपि सर्व ते सुणेछे, नथी नेत्र तदपि सर्व ते जुवेछे. २
नथी अवयव नहिं इंद्रिय नहिं रुप, सत्य चिद्घन प्रभु अप्रतिम अनूप;
सर्व साक्षि सगुण ब्रह्म दयावंत, नहीं पामि शके कोइ पूर्ण अंत. ३
सृष्टिउद्भवलयशक्ति तमे धारो, करो सर्व प्राणि उपर ऊपकारो;
मारुं हृदय तिमिर सर्व थाय नाश, करो ज्ञान दीपने तमे प्रकाश. ४
जननि तुल्य तमे सर्व प्रजा पाळो, प्रेमनेत्रथकी सर्वदा निहाळो;
परीपूर्ण करो नाथ रुडी आश, कापि नाखो षड्विषयमोहपाश. ५

तोटक.

जगदीश्वर देव दयाल तमे, करिये कर जोडि प्रणाम अमे;
स्मरिये उपकार सदा प्रभुना, परमेश तमे करशो करुणा. १
जन मंगळ कार्य सदा सुचवो, कृति सारुं कदापि तमे न जुवो;
विनवी विनती करिये तमने, करुणा करि सन्मति द्यो अमने. २
अविनाश रुडी अभिलाष पुरो, परिताप तमे प्रभु सर्व हरो;
दिननाथ दयामय दृष्टि करो, हृदये प्रभु प्रेमल भवित भरो. ३
गणना अपराधनि नाथ नथी, प्रभु केम थशे मुज मोक्ष गति;
कदि दोष तमे दिलमां न लहो, सुवत्सलतार्थकि हाथ ग्रहो. ४

प्रभुनी करुणाथकि कार्य थशे, प्रभुनी करुणाथकि कष्ट जशे;
भय दुःख विपत्ति वधी टळशे, प्रभुप्रेमप्रसाद सदा मळशे. ५
चिर काळ अहीं जिव वास नथी, परलोक विषे सहुनीज गति;
फळ संचित कृत्यनुं प्राप्त थशे, सहु दैवि जिवो प्रभुने मळशे. ६
अति प्रेमथकी प्रभुने भजिये, विषयी विषयो विषवत् तजिये;
सघळी नवळी कृतिथी लजिये, शुभ साधन मोक्षतणुं सजिये. ७
जन मंडळ मंगल नाम जपे, कुसुमाक्षत प्रेमतणा अरपे;
अति प्रेमथकी हृदये हरखे, तव मंगल आननने निरखे. ८
विनती विभु सर्व चिते धरशो, करुणानिधि पूर्ण कृपा करशो;
त्रिविधी परिताप वधा हरशो, सघळा शुभ अर्थ तमे पुरशो. ९
जिव तारक को नथि नाथ विना, उपकार जणाय घणा प्रभुना;
भय संकट सर्व तमे हरशो, चित शान्ति कृपाजळथी करशो. १०
प्रभु सत्य सनातन विश्वपति, गुणनी गणना नथि नाथ थती;
स्तुति शुं करशे जिव अल्प मति, करुणा करि द्यो अमने सुमति. ११
शुभ ध्यान अमे हृदये धरिये, उपकार अपार सदा स्मरिये;
प्रभुनां प्रिय कार्य अमे करिये, भवसिंधुथकी सहजे तरिये. १२

नाराच.

अनाद्यनंत देव विश्वना पिता तमे प्रभु,
समर्थ सत्य स्वामि सर्व साक्षि छो सदा विभु;
विनंति सर्व विश्वनाथ चित्तमां विचारशो,
दयानिधान देव सर्व दोषने निवारशो. १

समस्त प्राणिनुं करो कृपाथि नाथ पालन,
तमारि सत्य भक्तिथीज जीव थाय पावन;
असंख्य पाप थाय नाथ लक्षमां न धारशो. दयानिधान. २
सदा तमारुं गान सर्व भक्त गाय प्रेमथी,
विना तमे त्रिलोकमां सहायकार को नथी;
दयावलोकनेथि विघ्न दुःखने विदारशो, दया० ३
अमारि सर्व गुप्त वात आपने विदीत छे,
तमे क्षमा करो कृपाथि सत्य ए प्रतीत छे;
अमारि नम्र प्रार्थना कृपा करी स्विकारशो, दया० ४
अशक्त प्राणिथी थशे तमारि शुं पुरी स्तुति,
विराम वाणि पामशे न जाणशे प्रभू गति;
अमारि अल्प मंद बुद्धिने तमे सुधारशो, दया० ५
अमे तमारुं सन्निधान सर्व काल धारिये,
नहिं अनुग्रहो प्रभूतणा अमे विसारिये;
सहायता करी तमे सुकार्यने सुधारशो, दया० ६
जपे तमारुं पुण्यकारी नाम भक्त मंडळी,
करे प्रणाम अर्पि सर्व प्रेम पुष्पअंजली;
अखंड भक्तिभाव भक्तने हृदे वधारशो, दया० ७
करो प्रकाश सत्य ज्ञान भानुनो सहू स्थळे,
कृपा विना कदापि दुःख देशनुं नहीं टळे;
प्रजा तमारि छे पिता कदी नहीं विसारशो, दया० ८

मळी अमे समस्त भक्तवृंद पाय लागिये;
महाधिराज आपनो महा प्रसाद मागिये;
पवित्र सत्य धर्म सर्व देशमां प्रचारशो, दया० ९

पळे पळे करो कृपाथकी अमारुं रक्षण,
अमे सदैव पाळिये तमारुं रूडुं शिक्षण;
समस्त पाप तापथी कृपा करी उगारशो, दया०१०

गती शुभाशुभ क्रियानुसार जीव पामशे,
सदैव दैवि जीव दिव्य धाममां विरामशे;
रुडी मती वतावि विश्वसिंधुथी उतारशो; दया०११

उपासना करी नमे समाज सर्व आ समे,
पुरा करो मनोर्थ सर्व योग्य तेमना तमे;
सदा शुभाशिषो तमे दया करी उचारशो. दया०१२

मालिनी.

भवपति भयहर्ता पूर्ण आनंदकर्ता,
अखिल भुवनधर्ता प्राणिना प्राणभर्ता;
दुरितकृतिनिहंता सर्वना छो नियंता,
जय जय जगवंधा सत्य आनंदकंदा. १

उपेंद्रवज्रा.

अखंड आनंद दयानिधान, धरी हृदे नाथ तमारुं ध्यान;
करे नमस्कार मळी समाज, तमे पुरो मंगल सर्व काज.   १
असत्क्रियाथी मनवृत्ति वाळो, कृपा करीने निज दास पाळो;
तमे विना को नथि अन्य त्राता, तमे खरा छो सुखशान्तिदाता. २
विनंति आ नम्र चित्ते विचारी, शुभाभिलाषा पुरशो अमारी;
कृपाघना पाप समस्त कापो, सदा तमे शाश्वत शान्ति आपो. ३

गायन.

पद.

कल्याण, चोताल, चाल, विद्या आदिमना०

वंदुं विघ्नहरा, विभु वरिष्ठ सकल इष्ट;
सत्य सुख दाता.   वंदुं०
ब्रह्म गीत गाउं नित्य, पामुं मुक्ति सन्निहित;
एज अमारी प्रणिपत, तुं प्रभु त्राता.   वंदुं० १
सत्य व्रत धारुं चित्त, राखुं तव पद प्रीत,
मने तारी छे प्रतीत, तुं विश्वधाता;
जयजय भगवन्, जय सत्य चिद्घन,
रहे तुं सदा प्रसन्न, पूर्ण शान्ति दाता.   वंदुं० २

पद.

छायानाट. त्रिताल. चाल, हरि अब गुयला०

हरि शुभ गुण गाउं, गाउं हुं आनंदथी;
राखुं प्रभु तारी साथे स्नेह हरि०
प्रेममय प्रभु तारो स्नेह नव छोडुं;
अर्पुं मारो तारा कार्य अर्थे देह. हरि० १

पद.

सोरठ जिल्लो. पंजाबी. चाल, तारो रे दयाळ मने०

पावन करीने प्रभु मति शुभ आपोरे;
हाथ जोडि प्रभु करुं छुं विलापोरे. पावन०
आ संसार विशे तुजविण कोइ,
तारक नथी भगवानरे,
तारक तारक तारकरे,
तत्क्षण मारुं त्रिविध दुःख कापोरे. पावन० १

पद.

बिहाग. त्रिताल.

विमल रजत भासे, पूर्ण करी नीलाकाशे;
चंद्रमा आरति करे, सहस्र किरणे ते सत्य सनातनने.
अगण्य तारकावळी, चतुर्दिश रहे उज्ज्वळी;
मंगल कनकदीप गगने गगने. विमळ० १

पुष्पनो सुरभि श्वास, उठेछे धूपनो वास;
कानन कुसुमभार, अर्पे छे चरणे; विमल० २
पर्वतकंदरे जई, शुभ शंख वजावी;
पवन पूजे तेने, चामरव्यजने. विमल० ३
अमृतना अधिकारी, अमे सहु नरनारी;
अमे आरति करिये, प्रकृतिनी साथे. विमल० ४
ज्ञाननो प्रदीप ज्वाळी, प्रेमनो सुवास ढाळी;
शतकंठे करुं गान सुमधुरताने, ते सत्य सनातनने. विमल० ५

पद.

खमाच जिल्हो. एक ताल. चाल, दीननो दयाळ छोडी०

प्रेमथी प्रभुपदे प्रणाम सर्व करिये,
दर्शन द्यो देव दयासिंधु ध्यान धरिये;
मंगल दिन मानि आज ऊपकार स्मरिये,
कृपाघना कृपा तमारि नहिं कदि विसरिये. प्रेमथी० १
प्रभु तमारि प्रेरणा प्रमाणे अनुसरिये;
सृष्टिनियम निरखि सदा शान्ति रसे ठरिये. प्रेमथी० २
हृदयमां अमें तमारि प्रेमभक्ति भरिये;
द्यो सदा सुबुद्धि नाथ दुष्कृतिथी डरिये. प्रेमथी० ३
सत्य धर्म मार्गथी नव कदापि फरिये;
प्रभु प्रसादथीज अमे विश्व सिंधु तरिये. प्रेमथी० ४

पद.

काफी, जिलो. त्रिताल.

आव्यो तारे द्वारे देवा, आत्मसुख कारणे.
अतिशय अवगुण छे प्रभु मारा,
कीधी में नथी कांइ तारि सेवा, आत्मसुख कारणे० १
आतुर छुं अंतरथी हुं मारा,
तारा प्रभु दर्शननो लाभ लेवा, आत्मसुख कारणे० २

पद.

खमाच मिश्र काफी जिलो. त्रिताल.

चाल, प्राणपति सुणो विनति अमारी.

दयाघना निज दास निभावो,
दास निभावो निज दास निभावो.
तुज विण नथि अन्याश्रय मारे,
भक्त तणा भवताप शमावो. दयाघना० १
क्षमा करी सघळा अपराध,
विहित विधिनुं विधान बतावो. दयाघना० २
ज्यांलगि जगमां रहुं जगदीश्वर,
जनसुखकारक कार्य करावो. दयाघना० ३
कृपा करी करुणानिधि मारी,
वृत्ति सदा तम प्रत्ये रखावो. दयाघना० ४

आरति.

जयदेव जयदेव जय परमानंदा, जय परमानंदा;
सच्चिद्घन सुख कंदा (२), जय जय जगवंद्या. जयदेव० ॥१॥
जय जय देव समर्थ, सत्य तमे त्राता (२);
जय जय विश्व विधाता (२), जय जय जय दाता. जयदेव० ॥२॥
संध्यावंदन नाथ, करि तमने भजिये (२);
सघळी निंद्य कृतिने (२), निश्चय करि तजिये. जयदेव० ॥३॥
सर्व समय सर्वेश, तव सन्निध रहिये (२);
सुख दुःख सर्व अमारां (२), प्रभु तमने कहिये. जयदेव० ॥४॥
असत् क्रियाथी नाथ, मनवृत्ति वाळो (२);
सेवकजन जाणी प्रभु (२), स्नेह थकी पाळो. जयदेव० ॥५॥
पाप ताप परमेश (२), सर्व तमे हरशो (२);
मंगल कार्य अमारां (२), सकल सफल करशो. जयदेव० ॥६॥
आराधन करि नाथ, ध्यान हृदय धरिये (२);
शुभ शिक्षाओ प्रभुनी (२), कदि नव वीसरिये. जयदेव० ॥७॥
जनमंडल महाराज, मंगल पद वंदे (२);
मंगल दर्शन करि प्रभु (२), दिननिश आनंदे. जयदेव० ॥८॥



अंक १८ मो.

उपललित.

परम देव हे पतित पावना, प्रभु सुणो तमे स्तवन प्रार्थना;
सकल जीवना शरण छो तमे, समिप आविने विनवियें अमे. १
मन अमारुं जो प्रभुपदे हशे, शुभ मनोरथो सहु पुरा थशे;
प्रभु बतावशो सुपथ सर्वदा, नहिं विचारशो कृति तमे कदा. २
प्रभु विना नथी दुखविदारक, प्रभु विना नथी भयनिवारक;
प्रभु विना नथी विपतिहारक, प्रभु विना नथी कुशळकारक. ३
चरण पंकजे प्रणमिये अमे, सकल सत्क्रिया सुचवशो तमे;
परम भक्तिमां मन विरामिये, प्रभु कृपा थकी सुगति पामिये. ४
प्रभु कृपा करी शरण राखशो, विधिनिषेधना नियम दाखशो;
नव विचारशो दुरित दुष्कृति, प्रभु उतारशो भवमहोदधि. ५
कलुप किल्विपो सकल संहरो, करुणसागरा प्रभु कृपा करो;
तव कृपा थकी सुख थशे सदा, कदि नहीं पडे विपति आपदा. ६
पतितपावना प्रणिपतो सुणो, मनमलीनता सहु तमे हणो;
प्रणत प्राणिने अभय आपशो, दुरित वासना सघळि कापशो. ७
परम प्रेमनां कुसुम आ समे, प्रणमि अर्पिये प्रभुपदे अमे;
विनवि मागिये सकळ मंडल, प्रभु करो सदा कुशल मंगल. ८

ॐ तत्सत् परमात्मने नमः ।

हे जगदीश्वर जगन्नियंता जगदादि कारण, हे विश्वाधीश विश्वपालक विश्वंभर भगवान् ! हे दयासिंधो कृपानिधान, परम पवित्र सच्चिदानंद प्रभु, आ जगत्मां जे जे ठेकाणे दृष्टि करिये छिये तथा विचार करिये छिये त्यां तमारी अनंत शक्ति अप्रमेय प्रभाव तथा अत्यंत कृपानां चिह्नो नजरे पडे छे. प्रातःकाले उठीने सूर्य साम्हुं जोइए तो आ जगत्ना उपकारने माटे ए मोटो तेजराशि जेनी सत्ताथी उत्पन्न थयो छे तेनी अगाध शक्ति तथा अपार करुणानो बोध थया विना रहेतो नथी. आ पृथ्वीगोल तथा आकाशमां रहेला सूर्यादि गोल को'नी सत्ताथी निराधार रह्या छे. को'नी सत्ताथी नियमित गतिये चाले छे, एनो विचार करतां करतां एज सिद्ध थाय छे के ए सर्वना योजक तमेज छो. आ सर्व जगत् आश्चर्य भरेलुं छे. बीजमांथी केवुं सुंदर अने महान् वृक्ष थाय छे; प्राणीओनां शरीरनी अंदर केवी अद्भुत रचना होय छे; तेमनामां हलन चलननी चेतनाशक्ति केवा प्रकारथी प्राप्त थइ छे; वळी तेमां मनुष्य प्राणीना मननी रचना केवी अचिंत्य प्रकारथी थइ छे; स्मरणशक्ति, वाचाशक्ति, ज्ञानशक्ति, विचारशक्ति ए सर्व आ पंचमहाभूत जे जड छे तेमां केवी रीते मूकवामां आवी छे; आ वातनो विचार जेम जेम वधारे करिये छिये तेम तेम तमारी अति गहन शक्ति तथा योजना वधारे वधारे प्रकाशमान थाय छे. आ सर्व रचना प्रकृतिथी थाय छे एवुं माननार भूल करे छे; केमके

ज्ञान रहित प्रकृति कांइ योजना करी शके नहिं; माटे ए प्रकृतिमां जे सत्ता छे ते, हे प्रभु, तमारी स्थापेली छे, अने ते सत्ता योजनापूर्वक मुकेली छे, माटे तमने प्रकृतिथी पर एवा पुरुषोत्तम एवा नामथी महा विद्वानोए वर्णवेला छे.

हे प्रभो तमे कर्त्तुम् अकर्त्तुम् अन्यथाकर्त्तुम् समर्थ छो एम तमारा भक्तजनो मानेछे ए सत्य छे. अनंत प्रकारनी वनस्पतियोनां प्रथम बीज कोणे कर्यां, अने शी रीते थयां, तेमज मनुष्यादि अनेक जातिनां प्राणीओनुं पहेलुं नरमादा जोडुं कोणे कर्युं अने शाथी थयुं तेनो थोडो विचार करिये तो तमारा चमत्कारिक सामर्थ्यनो पुरावो मळी आवे छे. माटे हे दयासागर अंतर्यामि प्रभु, अमारा मनमां तमारा अस्तित्व, कर्तुत्व तथा नियंतृत्व विषेनो संशय क्षणभर पण आववा न देशो. अमे अमारां ज्ञानचक्षुथी निरंतर तमारा सर्वव्यापक तथा सर्वज्ञपणानुं दिव्य मंगल स्वरूप जोता रहिये एवी अमारी मनोवृत्ति राखजो. महाराज ! अमारा मनमां काम क्रोधादि मनोविकारनुं प्रबल थाय ते समये अमारा मनमां एवी भावना रहे, के तमे अमारी पासे हाजर छो, अमारां कायिक वाचिक अने मानसिक कर्मो जुवो छो. आ जगत्मां भय तथा शोकनां कारणो हजारो आवी पडे छे, अने पडशे. ते वेला हे भक्तवत्सल भगवान् एवुं ज्ञान उत्पन्न करशो के जेथी ए शोक तथा भय अमने बाध करी न शके. तमारा करुणास्वरूपनो ज्ञान-दीप अमारा अंतःकरणमां निरंतर प्रज्वलित तथा प्रकाशित रा-

खजो के जेथी आ अस्थिर जगत्ना मिथ्या पदार्थो उपरना राग द्वेषथी जे अंधकार अमारा मनमां प्रवेश करेछे तेनो नाश थइ जाय. हे महाराज ! जे वेला तमारा करुणामय तथा मंगळ नामनुं खरी रीते स्मरण करिये छिये ते वेला आ संसारनी सर्व चिंता दूर थइ जायछे. आ तमारी उपासनानुं महात्म्य छे; माटे हे भक्तवत्सल पतितपावन करुणासागर प्रभु अमने प्रतिदिन तमारी स्तुति प्रार्थना तथा उपकारस्मरणनी मनोवृत्ति आपो; अने आ जगत्मां ज्यां सुधी अमारा देह तथा आत्मानो वियोग न थाय त्यां सुधी लोकनुं हित थाय अने तमे प्रसन्न थाओ एवां काम करवानो अमने उत्साह, बल तथा धृति आपो.

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः



दिंढि १८.

सदाचरणविना भक्ति वृथा थाय, विना भक्ति सदाचरण ना पळाय;
पृथक एक एकथी नहीं कराय, उभय योगविना व्यर्थ क्रिया जाय. १

नीति भक्तितणो जो रहे सुयोग, प्रभू मान्य करे ते विधि प्रयोग;
पूर्ण अंगविना भंग भक्ति थाय, न्यून साधनाथि मुक्ति ना पमाय. २

परम भक्त धर्म मार्गथी न चूके, तजे प्राण तदपि सत्य नहीं मूके;
करे सर्व काल नीतियुक्त कर्म, धरे सत्य स्वजनबंधु प्रीति धर्म. ३

परम भक्ति थकी ब्रह्मगीत गाय, प्रीतिऊर्मि पूर्ण हृदयमां भराय;
भक्तियुक्त चित्तआर्द्रता जणाय, प्रेमअश्रुवहन नेत्रथकी थाय. ४

धन्य एज जीव पूर्ण श्रेय पामे, पापमुक्त थइ जाय परम धामे;
मागुं एवि साधुवृत्ति विश्वनाथ, करुं वास सदा भक्तवृंद साथ. ५

भजुं जगदीश्वर सर्व शक्तिमान, तजुं तुच्छ विषय मोह वृथामान;
कदी पामुं नहि संकट भय त्रास, करूं सर्व काल ईश्वरसहवास. ६

शार्दूलविक्रीडित.

सत्यानंत अखंड ईश्वर तमे साक्षी तमे सर्वना.
सर्वांतर्गत स्वामि अन्य नथि को त्राता तमारा विना;
प्रेमेथी प्रतिपालना करि तमे राखो दयाभावना,
साष्टांगे तमने प्रणाम करिये सर्वेश सच्चिद्घना. १

सृष्टीनी रमणीय सर्व रचना कीधी तमे हेतथी,
जीवोना जिवनार्थ आ जगतमां सर्ज्यां फलान्नौषधि;
अत्यद्भुत कला चमत्कृति विषे चाले नहीं कल्पना, साष्टांग० २

कीधा दोष असंख्य ते प्रभु कदी चित्ते नहीं धारशो,
भक्तोने करुणावलोकन करी संसारथी तारशो;
सत्कर्मो करवा सदा सुचवशो सद्वृत्ति सद्वासना, सा० ३

अंतर्यामिथि नाथ नित्य करिये अर्चा तमारी अमे,
स्वीकारो करुणानिधान सघळी आराधनाओ तमे;
पूर्णात्मा परिपूर्ण सर्व करशो रूडी मनोवाञ्छना. सा० ४

आकाशे रविचंद्रमंडल दिसे नक्षत्र हारावली,
कीधा नाथ कृपानिधे प्रभु तमे भेदो ऋतूना वळी;
तेथी थाय प्रमाण सत्य प्रभु छो स्रष्टा तमे सृष्टिना, सा० ५

चाले छे नियमानुसार सघळुं सृष्टी विषे धोरण,
धारो छो परिपूर्ण ईश्वर तमे कल्याणकारी गुण,
दीसे मंगल हेतु सर्व कृतिमां कारुण्य भावो घणा, सा० ६

एकांते परमेश नित्य तमने प्रेमेथि आराधिये,
आत्मानी परमोन्नति स्थिति थवा सद्धर्मने साधिये;
आपो मंगल वृत्ति भाव अमने स्वामी जगत्पावना, सा० ७

सर्वे भक्त समीप आवि तमने पाये अमे लागिये,
पश्चात्ताप करी विशुद्ध मनथी पाप क्षमा मागिये;
अर्पीने प्रभुपादपंकज अमे पुष्पाक्षतो प्रेमनां, सा० ८

सायं प्रात उपासना करि अमे सद्धर्मथी चालिये,
सर्वे मंगल नीम नित्य प्रभुना प्रीती थकी पाळिये;
आपो स्वामि सदा कृपाथि अमने सत्संग सत्साधना, सा० ९

जीवोनी करणी कृपानिधि कदी लक्षे नहीं लावशो,
विघ्नापत्ति समे सहाय रहिने वा'रे तमे आवशो;
संसारे पुरुषार्थ सर्व करवा प्रेरो सदा प्रेरणा सा० १०

विश्वाधीश अमारुं नित्य करशो प्रेमे थकी पालन,
दिव्य ज्ञान दयानिधान अमने आपी करो पावन;
काया वाणि मनेथि नाथ करिने मांगल्य आराधना, सा० ११

आविर्भावथी नाथ नित्य अमने देशो तमे दर्शन,
सर्वे काल कृपानिधान करशो शान्तिसुधावर्षण;
आशीर्वाद अखंड आपि अमने स्वीकारशो प्रार्थना, सा० १२

भुजंगी.

महा मंगलानंद दाता दयाल, दयाथी करो रक्षणो सर्व काल;
विनंती तमे सर्व चित्ते विचारो, कृपासिंधु संताप सर्वे निवारो. १

नथी कोइ वेली नथी कोइ त्राता, तमे मात्र छो सत्य शान्तिप्रदाता;
ग्रही हाथ स्वामी कृपाथी अमारो, कृपासिंधु संताप सर्वे निवारो. २

तमारुं अमे सत्य अस्तित्व जाणी, अमे वंदिये प्रेमथी जोडि पाणि;
सदा कष्ट वेला समीपे पधारो, कृपासिंधु संताप सर्वे निवारो. ३

तमे पूज्य छो प्राणदाता अमारा, तमारा गुणो सर्व छे श्रेष्ठ सारा;
करो छो सदा जीवने ऊपकारो, कृपासिंधु संताप सर्वे निवारो. ४

तमे मोक्षसोपान सद्बुद्धि दाता, तमे विश्वधाता तमे विश्वत्राता;
करो नाश अज्ञानना अंधकारो, कृपासिंधु संताप सर्वे निवारो. ५

तमारां महा पुण्यकारी चरित्र, करो नाथ आत्मा अमारो पवित्र;
हरो सर्वथा दुर्गुणो दुर्विकारो, कृपासिंधु संताप सर्वे निवारो. ६
तमे विश्वमां व्याप्त सर्वत्र सत्य, तमारा थकी शुं रहे गुप्त कृत्य;
दयादृष्टिथी दुःख सर्वे विदारो, कृपासिंधु संताप सर्वे निवारो. ७
महा पुण्यसेतू महा कीर्तिकेतु, दिसे छे तमारा रुडा सर्व हेतु;
अमारे भरुंसो खरो छे तमारो, कृपासिंधु संताप सर्वे निवारो. ८
अमे गाइए गान रुडुं तमारुं, करोछो परित्राण नित्ये अमारुं;
क्षमाना गुणो नाथ संपूर्ण धारो, कृपासिंधु संताप सर्वे निवारो. ९
गती सर्व कर्मानुसारेज थाशे, प्रभु सन्निधे पुण्य प्राणीज जाशे,
अमारी मनोवृत्तियोने सुधारो, कृपासिंधु संताप सर्वे निवारो. १०
प्रपंचो तणा पाशने नाथ तोडो, तमे दासने दीन जाणी न छोडो;
कदापी दया भावने ना विसारो, कृपासिंधु संताप सर्वे निवारो. ११
असन्मार्गथी सत्य पंथे चढावो, सदा श्रेयकारी क्रियाओ करावो;
खरो धर्म देशे प्रदेशे प्रचारो, कृपासिंधु संताप सर्वे निवारो. १२
अमे मंगलाराधना पुण्यकारी, करी मागिये शुद्ध भक्ती तमारी;
तमे नम्र सेवा अमारी स्विकारो, कृपासिंधु संताप सर्वे निवारो. १३
पितामात चित्ते सदा शान्ति आपो, कृपा भावथी क्लेश निःशेष कापो;
अमारे हृदे बंधुप्रीती वधारो, कृपासिंधु संताप सर्वे निवारो. १४
समीपे सहू आविने भक्तवृंद, करे अर्चना सच्चिदानंदकंद;
अमे अर्पिये प्रेमपुष्पोपहारो, कृपासिंधु संताप सर्वे निवारो. १५

उपजाति.

विश्वाधिराजा विभु छो समर्थ, पुरा करो योग्य तमे मनोर्थ;
त्राता अमारो नथि कोइ अन्य, तमे अमारा प्रभु छो शरण्य. १
प्रताप छे नाथ घणो तमारो, संसारथी पार तमे उतारो;
प्रेमे थकी नाथ सदा निहाळो, दया करीने दिन दास पाळो. २
सुनीतिनो मार्ग तमे बतावो, सद्धर्म कर्तव्य सदा करावो;
कृपाघना छो परमोपकारी, आत्मोन्नती नित्य करो अमारी. ३
समीप स्वामी सहु भक्त आवे, प्रेमाक्षतो नाथ पदे वधावे;
कृपा करी पातक सर्व कापो, माता पिता मंगलवृत्ति आपो. ४
इच्छे दयासिंधु दया तमारी, राखो सदा लाज तमे अमारी;
जाणो तमे जीवकृती कृपाल, प्रसन्न रे'शो प्रभु सर्व काल. ५

गायन.

पद.

राग कानडो. ताल चौताल.

परब्रह्म पाद पूजी,-प्रेमथी गाइये शुभ प्रभु गुण, परब्रह्म०
संकट सकल जाय, जाय त्रिविधि दुःख परिताप,
शान्त शान्त चित्त थाय, थाय मन काम पूर्ण.

सर्व सृष्टिना तमे स्थान, तमे छो महा प्रतापवान,
आपि शुद्ध सत्य ज्ञान, रहो तमे सदा प्रसन्न.
निरखिये प्रभु प्रेम मुख, पामिये अमे परम सुख,
मानिये महा भाग्य महा पुण्य, परब्रह्म० १

पद.

राग कानडो. ताल, त्रिताल.

चरण कमल चित लाग्युं, प्रभु तारे०
प्रेम थकी प्रभु भक्तिमां तारी, वृत्ति मारी अनुराग्युं. प्रभु तारे० १
सच्चिद्घन तव सन्निध आवी, शाश्वत् सुख नित्य मागुं.प्रभु तारे० २
अर्पण करी तने प्रेमकुसुमाक्षत, नमी दंडवत् पाय लागुं.प्रभु तारे० ३

पद.

राग खमाच जिल्हो. ताल त्रिताल.

संकट कोण निवारे नाथ विना, संकट कोण निवारेरे०
धर्म कर्म अमे नथी कीधुं, आव्या शरण तमारेरे,
दीनानाथ विना प्रभु अमने, दुखथी कोण उगारेरे. संकट० १
दया क्षमाना गुण प्रभु धारे, ए विश्वास अमारेरे,
मंगलमय प्रभु परम कृपाथी, पाप सकल संहारेरे. संकट० २
दुष्ट वासना दूर करीने, ज्ञान विवेक वधारेरे,
विश्वपिता विश्वेश्वर अमने, भवथी पार उतारेरे. संकट० ३

पद.

राग कहारवो. ताल त्रिताल. चाल, कृति सामुं प्रभु०

अपराध अमारा प्रभु महा घणारे,
कृपासिंधु तमे क्षमा करो. अपराध०
दोष जोई नहीं रोष करो छो,
दयानिधि दयामां नथि कांइ मणारे. कृपासिंधु० १
अभिलाषा राखिये तमारी,
अन्य आश्रय नथी प्रभु तुज विनारे. कृपासिंधु० २
अनुग्रह स्मरि अभिवंदन करिये,
तुज चरण मले सच्चिदूयनारे. कृपासिंधु० ३

पद.

राग खमाच जिल्हो, ताल एकताल. चाल, दीननो दयाल०

धन्य धन्य धन्य आज दिन आनंदकारी,
सच्चिद्घन सत्य सबल सर्व ऊपकारी;
वान्छना तमे किधी प्रभू पूरी अमारी. धन्य धन्य० १
प्रेमथी तमारं ध्यान हृदय विषे धारी;
भक्तनो समाज आज स्तुति करे तमारी. धन्य धन्य० २

आरति.

जय देव जय देव जय त्रिभुवन त्राता जय त्रिभुवन त्राता,
सर्वेश्वर सुख दाता (२), सृष्टि सकल धाता. जयदेव० १

हृदय पात्र परिपूर्ण, भक्ति जले भरिये (२);
प्रेमार्घ्या अर्पण करि (२), प्रभु तमने स्मरिये. जयदेव० २

प्रभु आवी तव द्वार, करिये नित्य विनति (२);
अविचल शुद्ध तमारी (२), प्रभु आपो भक्ति. जयदेव० ३

परमात्मा परमेश, प्रतिपालन करशो (२);
संकट भय संतापो (२), सर्व तमे हरशो. जयदेव० ४

विश्वंभर विश्वेश, शुभ पथ दर्शावो (२);
करुणा करि करुणामृत (२), अविरत वरसावो. जयदेव० ५

प्रभुनां प्रियतम कार्य, सर्व अमे करिये (२);
अनुचित अविहित कृतिथी (२), प्रभु निश्चय डरिये. जयदेव० ६

प्रणमे छे महाराज, जनमंडल तमने (२);
कृपा करी प्रभु आपो (२), मंगल पद अमने. जयदेव० ७

सदा काळ संभाळ, सत्य तमे लेशो (२);
क्षमा करी अपराधो (२), प्रसन्न वदन रे'शो. जयदेव० ८



अंक १९ मो.

दिंडी.

विश्वनाथ तमे एक देव साचा, कीर्ति गावा नव चाली शके वाचा;
महाराज महा मंगल गुण धारी, सुणो प्रेम थकी प्रार्थना अमारी. १
दयासिंधु सदा सन्निधे पधारो, कृपण बुद्धि कृपा करि तमे सुधारो;
विघ्न भय विपत्ति सर्वथा निवारो, कृपानाथ ग्रही हाथ मने तारो. २
करो पातक प्रभु सर्व तमे नाश, पुरो भक्ततणी सकल रुडी आश;
शुद्ध ज्ञान दान द्यो दयानिधान, सर्वकाल रहे प्रभु समीप ध्यान. ३
अती अल्प मंद बुद्धि छे अमारी, करी शकिये शुं स्तुति अमे तमारी;
सुणो सर्व तमे भक्तना विलापो, पुण्यमार्गे सुचवि शान्ति सदा आपो.४
भक्तवृंद सदानंद थकी नाथ, शरण आवि नमे जोडी बेड हाथ;
कृपाकान्त कृपादृष्टिथी निहाळो, पुत्र भाव राखी सर्व प्रजा पाळो. ५
पाप ताप परम प्रेमथी शमावो, सुमति आपि सदा सत्क्रिया करावो;
नथी नाथ अन्य कोइ शान्तिदाता, मात तात तमे सत्य मात्र त्राता. ६
भक्तमंडल प्रभुचरण शरण आवे, प्रेमपुष्प परम ब्रह्मने वधावे;
प्रणमि सर्व स्तवन भजन गीत गाय, परम लाभ पामिने कृतार्थ थाय.७
नहीं पाप तमे मापशो अमारां, दिव्य दर्शन प्रभु आपशो तमारां;
धन्य भाग्य आज धन्य महाराज, करे वंदन सहु भक्तनो समाज. ८

ॐ तत्सत् परमात्मने नमः ।

हे करुणामय भगवान्, तुं सत्यस्वरूप ज्ञानस्वरूप मंगलमय अमारो परम इष्ट देव छे, तुं अमूर्त अप्रतिम तारो महिमा अपार तारी शक्ति अगाध छे. तने प्रेमपूर्वक प्रणाम करिये छिये.

भुजंगी.

अनाद्यंत सच्चिद्घनानंदकंद, नमी प्रेमथी नित्य पादारविंद;
अमे मागिये जोडिने बेउ हाथ, सदा पामिये नाथ तारो प्रसाद.

हे परात्पर परमेश्वर तुं सर्वव्यापी सर्वज्ञ तारुं ज्ञान अनंत छे, अमे सर्व तारे आश्रये रहेला छिये, तुं अमारुं पोषण करे छे, तुं अमारुं संरक्षण करे छे, तुं अमारी योग्य वान्छना पूरी पाडे छे, अमारी सर्व चिंता तने छे.

हे प्रभो तारा अस्तित्व, नियंतृत्व अने मंगल भावनां अगणित प्रमाणो आ सृष्टिनी रचना उपरथी प्रत्यक्ष जणाय छे. कोइ पण वस्तु तें निरुपयोगी सरजी नथी; माता पिताना हृदयमां स्नेह तथा प्राणियोना जीवन तथा पोषण अर्थे यथाघटित गोठवणो करी छे. तें अमने मानसिक शक्ति तथा विवेक बुद्धि आपीने आ जगत् प्रवाहमां मूकेला छे तेमां रहीने अमे विचार करिये छिये तो तारो अपरिमित प्रेम, कृपा उपकार तथा मंगल भाव जणाइ

आवे छे; तारी सघळी रचनानो घणो उंडो विचार करिये छिये ते वखते अमारुं मन विराम पामीने तुं महा समर्थ महा मंगल सत्य न्यायी तथा करुणामय छे एवो स्वाभाविक रीते अमने उद्बोध मळीने अमारुं मन अतिशय आनंद पामे छे.

हे जगदीश्वर आ सृष्टिमां सर्व प्राणियो करतां अमे मनुष्य प्राणि उपर तारो अत्यंत उपकार तथा दया छे, यद्यपि अमे क्षुद्र प्राणि छिये, तथापि तुं इंद्रियातीत परम पवित्र प्रभुना ज्ञाननो उत्तम अधिकार तें अमने आप्यो छे, सत् असत् ज्ञाननी प्रेरणा तें मनुष्यनेज आपी छे. आ कृपादान आपी तें केवो उपकार अमारा उपर कर्यो छे, ए उपकार अमे भूली न जइये, आ अनित्य क्षणभंगुर संसार अमारुं चिरकालनुं स्थान छे एम न जाणिये, क्षुद्र विषयभोगमां निमग्न न थतां अमने स्थायी धन तथा शाश्वत सुख मळे, अमारा आत्मानुं कल्याण थाय तेवां पुण्य कार्य करवा उपर लक्ष आपीने तारा उपर खरो विश्वास तथा प्रेम राखिये, लोक हितार्थेनां साधन करिये, एवी सुमति आप. सत्य तथा धर्मना उपार्जनमां जेटलो काल जशे तेटलोज आत्माना कल्याणने अर्थे निर्गमन थयो गणाशे; माटे ए वात उपर अमारो लक्ष रहे एवी तुं वारंवार प्रेरणा कर. तारी कृपा तथा सहायता विना अमे केवल निर्बल छिये. अमे तारी समीप आवीने तने प्रेमसहित प्रणाम करिये छिये. अमे तारी आराधना तारी पूजा करी मागिये छिये के, हे दयामय पिता ! अमारुं मन पवित्र कर. तारी कृपाने पात्र,

थइये, अने तारुं शरण, तारो सहवास छोडिये नहिं, तारा उपर अखंड विश्वास तथा प्रेम रहे एवो अमने बोध आपीने तारो मंगळ मार्ग बताव, अमारा अंतःकरणनो अंधकार नाश करीने अमारा ज्ञानज्योतिनो प्रकाश कर. कृपानिधे! अमे तारां दीन बालको तारा आज्ञाधीन सेवकोनी नम्र प्रार्थना स्वीकारी अमारुं परित्राण कर.

॥ अन्यथा शरणं नास्ति त्वमेव शरणं मम ॥
॥ तस्मात्कारुण्यभावेन रक्ष रक्ष महेश्वर ॥

हे महेश्वर (तारा विना) अमारे बीजुं कोइ शरण नथी, तुंज अमारुं शरण छे, माटे करुणाभावथी अमारुं संरक्षण कर.

॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

दिंडी १९.

विश्वनाथ तमे सृष्टिना नियंता, करो पूर्ण दयादृष्टि दयावंता;
सदा दर्शन प्रभु आपशो तमारां, दुरित कर्म कापि नांखशो अमारां.
तमे तारक सुखकारक सर्वेश, सकल पापतापहारक परमेश;
प्रेमसिंधु प्रेमदृष्टि थकी पाळो, विघ्नविपत्ति दुःख संकट भय टाळो.
हृदय शान्ति तमे आपशो कृपाल, तमे सत्य प्रणत भक्त प्रतीपाल;
परम हर्षथकी ब्रह्मगीत गाउं. प्रेमअक्षत पदपंकजे वधावुं.
सकल निंद्य कर्मनो करुं हुं त्याग, पराभक्ति विषे राखुं सदा राग;

करूं दिनप्रतिदिन जनहितार्थे काज, एज सुमति मागुंछुं महाधिराज.४
करूं अंतरथकि यजन हुं तमारुं, करो अंगिकार अर्चन प्रभु मारुं;
पापपुंज करो दहन दीननाथ, शुभाशीष आपि नाथ ग्रहो हाथ. ५

शिखरिणी.

जगन्नाथ स्वामी सकल हृदगामी प्रभु तमे,
सदा छो निष्कामी विनति करियें आ शुभ समे;
दयादृष्टी दीसे प्रणतजन प्रत्ये प्रभु अति,
कृपासिंधु प्रेरो सतत अमने शुद्ध सुमति. १
नथी पाम्या कोई अनुप महिमा पूर्ण प्रभुनो,
स्तुती गातां गातां मन थकी विराम्या मुनिजनो;
अमे अल्प प्राणी गुण स्तवन गावा नथि गति, कृपासिंधु० २
स्वइच्छाथी कीधी विविध विधिये विश्वरचना,
दिसेछे सृष्टीमां घटित नियमे सर्व घटना;
तमे अंतर्यामी सघळि प्रभु जाणो जिवकृति, कृपासिंधु० ३
सदा प्राणी प्रत्ये अपरिमित छे प्रीति प्रभुनी,
करो स्वामी सत्ये जननी सम संभाळ जीवनी;
तमे संरक्षार्थे पृथिवि प्रभु कीधी फळवती, कृपासिंधु० ४
रवींदूना बिंबो ग्रह उपग्रहो सर्व गगने,
विराजे नक्षत्रो गणित नियमेथी अनुक्रमे;
असंख्या गणतरी कदापी नथि थती, कृपासिंधु० ५

महा सिंधू शोभे गिरिवर सरो पृथ्वि भुवने,
फलोपुष्पो वेली प्रफुल्लित रहे सुंदर वने;
करे नित्ये अर्चा अनुक्रम थकी सर्व प्रकृति, कृपासिंधु० ६
तमारो छे सत्ये त्रिभुवन विषे पूर्ण महिमा,
तमे विश्वव्यापी नव कदि दिसे नाथ प्रतिमा;
वदे छे वेदांते उपनिषदमां निश्चय श्रुति, कृपासिंधु० ७
सदानंदे देवा तव शरण आवी सहु नमे,
करे अर्चा सेवा परम प्रभुनी प्रेमकुसुमे;
नहीं पामे कोई प्रभु तव कृपाथी कदि क्षति, कृपासिंधु० ८
कृपा वीना किंचिन्नहि जिव तणुं कार्य सरशे,
प्रजा सर्वे तारी प्रभु तव दयाथीज तरशे;
सदा संकष्टोमां परम शिव देशो चित्तधृति, कृपासिंधु० ९
पिता माता वंदी विनयथि अमे ध्यान धरिये,
दया भावो देवा नहि कदि दिलेथी विसरिये;
तमे आपो सत्ये सकल जिवने नाथ सुगति, कृपासिंधु० १०
प्रपंचोना पाशे नहिं कदि अमे नाथ फशिये.
पराभक्ती तारी करि विभु अमे विश्व वशिये;
नहीं पामे तारा प्रभु परम भक्तो अवगति, कृपासिंधु० ११
सुपंथो दर्शावी त्रिविधि भय संताप हरशो,
कृपाथी सर्वेनुं कुशळ शुभ कल्याण करशो;
तमारी सेवामां अतिशय रहो नाथ सुरति, कृपासिंधु० १२

करो स्वामी सर्वे मणत जननां पाप दहन,
हरो हृत्तापोने श्रवण करि आ नम्र वचन;
अमारी इच्छाओ सफल करशो हे जगपति, कृपासिंधु० १३
तमारा भक्तोने सकल शुभ सन्मार्ग दरसो,
सदा तेने शीर्षे अविरत कृपावारि वरसो;
पुरी वाञ्छा रूडी अमृत फल आपो भवपति, कृपासिंधु० १४

उपेंद्रवज्रा.

अखंड आनंद चिदात्मरूप, तमे रचीछे रचना अनूप;
सदा करो छो करुणा अमापो, कृपा करी किल्विष सर्व कापो. १
दयानिधी नाम खरुं तमारुं, करो परित्राण सदा अमारुं;
शमावि देशो प्रभु सर्व तापो, कृपा करी किल्विष सर्व कापो. २
ग्रही प्रभु हाथ तमे अमारो, अनीति दुष्टेचि वधी निवारो;
सदा तमे सन्मति नाथ आपो, कृपा करी किल्विष सर्व कापो. ३
कृपाथकी मुक्ति पदे जवाय, कृपाथकी विघ्न विनाश थाय;
कृपाथकी जाय समस्त पापो, कृपा करी किल्विष सर्व कापो. ४
महा प्रभू मंगल छे चरित्र, करो अमारा मनने पवित्र;
तमे अमारा प्रभु माय बापो, कृपा करी किल्विष सर्व कापो. ५
तमे करो सत्य परिक्ष न्याय, मलीनताथी प्रभु ना पमाय;
थशे खरा जो हृदयानुतापो, कृपा करी किल्विष सर्व कापो. ६

असत्पथेथी सुपथे चडावो, दया करी दोष बधा शमावो;
हृदे विराजो प्रभुप्रेमछापो, कृपा करी किल्बिष सर्व कापो. ७
प्रभुप्रसादे परमार्थ थाशे, प्रभुप्रसादे भवथी तराशे;
नहीं तमे ए नियमो उथापो, कृपा करी किल्बिष सर्व कापो. ८
पिता अमे शुं कहिये वधारे, कृपा करीने हृदये अमारे;
अखंड सद्भक्ति सुनीति थापो, कृपा करी किल्बिष सर्व कापो. ९
अमे सहू बालक अल्प प्राणी, स्विकारशो अल्प अमारि वाणी;
दयाघना दोष कदी न मापो, कृपा करी किल्बिष सर्व कापो. १०
मळी महानंदथि भक्तवृन्द, करे नमस्कार पदारविंद;
जपे महामंगल सूक्त जापो, कृपा करी किल्बिष सर्व कापो. ११
सदा तमे सन्निध नाथ रे'शो, शुभाशिषो देव दयाथि देशो;
सुणी तमे आ विनती विलापो, कृपा करी किल्बिष सर्व कापो. १२

मालिनी.

अति गहन तमारी शक्ति विश्वे प्रचारी,
प्रणत जन जिवोना छो तमे पापहारी;
विनति सहु अमारी नाथ चित्ते विचारी,
घटित प्रभु जणाशे तेज लेशो स्विकारी. १

गायन.

पद.

राग नाट. ताल चौताल.

आनंद पूर्ण घन तमे रचना रचीछे गहन, रहो प्रकृतिथी परवर. आनंद.
विश्वपाल प्रभु कृपाल अमे आविये तवशरण, तमे पापतापपरिहर. आ.
विराजो तमे अमारे हृदय, आपो प्रभु अमने अभय, संकट सर्व संहरहर,
विश्वजीवन जपि तव मंगल नाम करिये शत वार प्रणाम,
तमे ग्रहो करुणाकर, कर. आनंद. ॥१॥

पद.

राग जयजयंति. ताल त्रिताल.

सत्य सर्व शक्तिमान्, परम प्रतापवान्,
जे छे सर्वथी महान्, मंगल गुण धारे छे. सत्य०

स्वयंभु स्वयंप्रकाश, सच्चिद्घन अविनाश,
पुरी शुभ अभिलाष, शान्तिने वधारे छे. सत्य० १

सगुण समर्थ ब्रह्म, जाणे सर्व जीव कर्म,
आपी सत्य पुण्य धर्म, अधर्म निवारे छे. सत्य० २

प्रभु छे महा कृपाल, करे नित्य प्रतिपाल,
ा कृपा विशाल, विश्वमां विस्तारे छे. सत्य० ३

विश्वमां विराजमान, नथी कोइ ते समान,
शुद्ध सत्य ज्ञानवान, वेदमां पुकारे छे. सत्य० ४
एवा ब्रह्म निर्विकार, तने भक्तपरिवार,
नमी सर्व वारवार, जय जय उच्चारे छे. सत्य० ५

पद.

राग मुल्तानी. ताल त्रिताल. चाल, तुम विन कोन हमारो.

शरण खरूं छे तमारुं, प्रभु मारे;
नमी नमी नमी हुं प्रणाम करुं छुं. प्रभु मारे०
अनुग्रह नाथ अपार कीधा छे, हृदय थकी ना विसारुं. प्रभु मारे. १
निष्कृति पाप तणी क्यम थाशे, निंद्य कृति जो विचारुं. प्रभु मारे. २
प्रतिपालन प्रभु धर्म तमारो, नित्य करो सर्व सारुं. प्रभु मारे. ३
भजन करी भगवंत अंतरमां, मंगल ध्यान हुं धारुं. प्रभु मारे. ४

पद.

राग जयजयंति.

मंगल छे प्रभु महिमा तमारो अंतर ताप निवारो. मंगल०
अगणित अवगुण दोप अमारा, मातपिता तमे न विचारो,
कृपानिधि तमे भक्त जनोपर करो छो सदा उपकारो. मंगल० १

आरति.

जयदेव जयदेव जय अंतर्यामि जय अंतर्यामि,
जय निर्मल निष्कामि (२), जय विश्वस्वामि. जयदेव० ॥१॥
परम देव परमेश, नित्य नमिये तमने (२);
करुणा करि प्रभु देशो (२), सुख शाश्वत् अमने. जयदेव० ॥२॥
मळी भक्तनो वृंद, पाय तने लागे (२);
अनुतापित चित्ते अति (२), पाप क्षमा मागे. जयदेव० ॥३॥
मातपिता महाराज, मंगल मति आपो (२);
प्रेमल भक्ति तमारी (२), हृदय विषे थापो जयदेव० ॥४॥
सत्य धर्म परिचार, सृष्टि विषे करशो (२);
हृदय तिमिर सघळां प्रभु (२), निःशेष हरशो. जयदेव० ॥५॥
सदाचरण ए सत्य, प्रभु तारी भक्ति (२),
अविहित कर्मन्यकी कदि (२), नहिं थाशे मुक्ति. जयदेव० ॥६॥
शान्ति शान्ति सर्वेश, शान्ति सकल राखो (२);
संकट विघ्न अमारां (२), प्रभु कापी नांखो. जयदेव० ॥७॥
आराधनं महाराज, मानि तमे लेशो (२);
आविर्भावथी अमने (२), शुभ दर्शन देशो.



अंक २० मो.

तोटक.

परमेश्वर पूर्ण कृपाल तमे, नमिये मळि भक्त समस्त अमे;
विनती विभु सर्व चित्ते धरशो, परिताप कृपाथि बधा हरशो. १

अति अद्भुत सुंदर सृष्टि दिसे, स्तुति पूर्ण तमारी कदी न थशे;
करुणा उपकार करो सघळे, नहिं जीव थकी कदि पाड वळे. २

जगदीश तमे जगधारक छो, सहु प्राणि तणा भयहारक छो;
जनमंडलने सुखकारक छो, प्रभु तारक तारक तारक छो. ३

प्रभु हे प्रभु हे प्रभु हे प्रभु हे, अपराध क्षमा करशो प्रभु हे;
प्रणमी प्रणमी तमने कहिये, परमार्थनुं साधन द्यो अमने. ४

प्रभु दोष कदापि न लक्ष धरो, करुणामय दृष्टि कृपाथि करो;
नथि कोइ विना प्रभु बेलि खरो, मनना सहु मंगल अर्थ पुरो. ५

भवसागर दुस्तर नाथ घणो, अमने शुभ आश्रय आप तणो;
तरिये प्रभुनी करुणा बळथी, जिवतारक कोइ विना तुं नथी. ६

सहु किल्बिष क्लेश तमे हरशो, प्रभु भक्ति सदा हृदये भरशो;
तव मंगल हस्त शिरे धरशो, अभिषेक कृपाजळथी करशो. ७

जयदेव दयानिधि विश्वपति, करुणा करि द्यो अमने सुमति;
उपकार अमे प्रभुना स्मरिये, जन मंगल कार्य सदा करिये. ८

प्रभु मंगल मंगल भाव धरो, भय दुःख विपत्ति समस्त हरो;
करुणामय दृष्टि कृपाधि करो, मनना प्रभु सर्व मनोर्थ पुरो. ९
कुसुमांजलि प्रेमनि आ समये, करि अर्पण नाथपदे विनये;
कहिये तमने अति शुद्ध मने, शुभ पंथ सदा सुचवो अमने. १०
शुभकारि तमे प्रभु आशिष द्यो, स्तुति प्रार्थन मानि कृपार्थकि ल्यो;
निज दासतणो प्रभु हाथ ग्रहो, परमेश सदैव प्रसन्न रहो. ११

ॐ तत्सत् परमात्मने नमः ।

हे अनेककोटिब्रह्मांडाधिपति परम पवित्र कृपालु परमेश्वर! अमे तमारे शरणे आवीने सप्रेमांतःकरणे अभिवंदन करिये छिये.

आ जगत् सूत्र तमे स्वसत्ताथी धारी रह्या छो. अमारुं जीवन सर्व तमारे हाथ छे, सर्व प्राणि उपर तमारी सम दृष्टि छे. माटे अमे सर्व मनुष्य प्राणि उपर समान भाव तथा बंधुत्व राखी कोइ साथे वैर, द्वेष तथा इर्ष्या भाव नहिं राखिये तोज अमे तमारी कृपा तथा प्रीतिने पात्र थइशुं. अमने कृपा करी एवी सद्बुद्धि आपो के भूतदया, क्षमा, तथा सत्य वचन ए मुख्य धर्म छे तेनो कदापि त्याग न करिये, मनोविकारना दबाणमां दबी न जवां अमारा आत्मानी उन्नतिनां साधनोमां प्रवृत्त रहिये; आवी अमारी सद्वृत्ति थवी, हे प्रभो! तमारे हाथ छे. अमारो यत्न अने तमारो प्रसाद हशे तोज अमारी दुर्वासनानो नाश थइने अमारी मनोवृत्ति

पवित्र थशे, माटे प्रतिक्षणे तमारो प्रसाद तमारो आशीर्वाद अने तमारी सहायता मागिये छिये.

हे भक्तवत्सल भगवान्! अमे केवल अशक्त पामर प्राणी छिये. सर्वकाल तमारुं सन्निधान अमारा मनमां रहेशे तोज पापकर्मथी दूर रहेवाशे. अमारा मनमां पापविकार तथा सद्वृत्तिनुं जे युद्ध चालु रहेछे तेमां सद्वृत्तिनो सदा जय करशो, ए अमारी प्रार्थना छे. तमे सर्वज्ञ सर्वसाक्षी न्यायकारी दयामय छो तमाराथी अमे कांइ पण गुप्त राखी शकता नथी. अमारुं अशक्तपणुं तमे जाणो छो, तमारी सहायतानी अमारे क्षणे क्षणे आवश्यकता छे. अमे पाप तापथी परितापित छिये. तमारी प्रेमामृत जलधाराथी अमारुं मन पवित्र करो. अमारा चित्तने शान्ति आपो. पापनो पश्चात्ताप थइने फरीथी ते पापकर्म करवानी अमने भीति रहे, सदाचरण उपर अमारी उत्तरोत्तर दृढता वधे, तमे सन्निध छो एम निश्चय जाणीने संसारनां सर्व काम करीये, एवी शुभ बुद्धि प्रेरी अमारा अपराध क्षमा करी तमारे शरणे राखी तमारो प्रेम अमारा उपर रहे एवी वर्तणुके चालवानुं अमने सामर्थ्य आपो.

हे प्रभो! आ जगत्मां अमारां कर्तव्य शां छे तथा अमारो परिणाम शो थशे पतुं अमने निरंतर स्मरण रखावो; अमारुं जीवित नाशवंत छे तथा क्षणभंगुर छे. काल महावेगथी चाल्यो जाय छे; आ संसारनुं सर्व सुख अशाश्वत् छे; ए वात अमारा मनमां रहे; आज सुधी अमे अमारो काळ निरर्थक तथा आळ:

स्यमां काडयो; अमारा जन्मनुं कांइज सार्थक्य कर्युं नथी, माटे हवे अवशेष रहेलो काळ तमारी सेवामां, तमारां प्रिय कार्य करवामां निर्गमन करिये एवी हे करुणामय महाराज सद्बुद्धि आपशो. तमारी प्राप्ति करवी एज अमारा जन्मनुं सार्थक्य छे, ए मुख्य वात अमारा ध्यानमां रहेवा देशो. सर्वकाल तमारी इच्छाने अनुसरीने चालवा तथा सद्धर्म पाळवानी अमे तमारी सहायता मागीये छिये. सदाकाल अमारुं संरक्षण करो, हे कृपानिधे! तमारी कृपाधारा अमारा उपर वरसावी जगत्मां रहिये त्यां सुधी अमने पुण्याचरणे चलावी अंते परलोकमां तमारा सुखधामे लेइ जाओ ए अमारी प्रार्थना छे.

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

दिंडि २०.

महाराज महामंगल जयकारी, करुं हाथ जोडी प्रार्थना तमारी;
हृदय ध्यान धरी जपुं तमारुं नाम, करु प्रेमथी हुं प्रभुपदे प्रणाम. १
विश्वदेव तमे छो प्रतापवान, नथी नाथ कोइ अन्य तम समान,
सत्य एक आपनो मने विराम, करुं प्रेमथी हुं प्रभुपदे प्रणाम. २
तमे सर्व थकी सत्य छो वरिष्ठ, नथी अन्य कोइ नाथथी वलिष्ठ;
तमे पुर्ण करो सर्व रुडां काम, करु प्रेमथी हुं प्रभुपदे प्रणाम. ३
ऋचासूक्त थकी वेद करे गान, यजुर्मंत्र भणे यजननुं विधान;
गाय सप्तस्वरे स्तवन गान साम, करुं प्रेमथी हुं प्रभुपदे प्रणाम. ४

भक्तवत्सल भवतारक भगवंत, तमे नित्य रहो नाथ क्षमावंत;
मागुं मंगलमद सन्निध शुभ धाम, करुं प्रेमथी हुं प्रभुपदे प्रणाम. ५

भुजंगी.

जगन्नाथ शान्ति प्रदाता दयाल, तमारां अमे नाथ अज्ञान बाल;
सदा सन्निधे आविने विश्वनाथ, अमे वंदिये जोडिने बेउ हाथ. १
नियंता तमे नाथ छो सत्य एक, रची छे तमे सृष्टि शोभा अनेक;
स्वयंभू विभू सर्व लोकाधिनाथ, करो छो सदा रक्षणो मात तात. २
दिसे सत्य सत्ता तमारी अगाध, तमे निर्विकारी तमे छो अबाध;
अमारी स्थिती छे तमारेज हाथ, सदा सन्मति प्रेरशो प्राणनाथ. ३
जगत् सेतुने सत्य धारी रहो छो, रुडी सर्वनी वाञ्छनाओ पुरो छो;
करे वंदना भावथी भक्तसाथ, नमस्कार स्वीकारशो विश्वनाथ. ४
तमारा विना को नथी अन्य त्राता, नथी चित्तने कोइ शान्तिप्रदाता;
विनंती तमे सांभळी विश्वपाल, कृपावारि वर्सावशो सर्व काल. ५
कृपाथी सहू दुःख संताप जाय, कृपाथी सदा चित्तने शान्ति थाय;
रहो सर्व काळे अमारे सहाय, अमे मागिये दंडवत् लागि पाय. ६
दयाभावथी दुःख सर्वे निवारो, जिवोना तमे दोष लक्षे न धारो;
खरो आशरो छे अमारे तमारो, कृपानाथ संताप सर्वे निवारो. ७
महा मंगलाराधना अर्चनाओ, करी मागिये नाथ पापक्षमाओ;
तमे सांभळीने अमारा विलापो, कृपादृष्टिथी चित्तने शान्ति आपो. ८
लडावो तमे प्रेमथी नित्य लाड, अमे वाळिये नाथ शुं पूर्ण पाड;
हृदेथालमां भक्ति पुष्पोपहार, भरी अर्पिये नाथने वारवार. ९

अमारां वधां दुष्ट कर्मो शमावो, कृपाथी तमे पुण्य पंथे चडावो;
विनंती करेछे नमी भक्तवृंद, शुभाशीष द्यो सच्चिदानंद कंद. १०

हरिगीत.

परमेश परमात्मा तमारे शरण सर्वे आविये,
आनंदथी आ शुभ समय प्रभु स्तवन मंगल गाइये;
सर्वे अमारां संकटो सत्ये तमे संहारशो,
करुणा करी निज भक्तने संसारथी उद्धारशो. १

कर्ता तमे धर्ता तमे भर्त्ता तमे सहु सृष्टिना,
पूरो तमे प्राणी जनोनी घटित सर्वे कामना;
अस्तित्व प्रभुनुं मानिने करिये सदा उत्तम कृति,
पुण्याचरणथी थाय सत्ये प्राणिनी आत्मोन्नति. २

आ लोकमां परलोकमां त्राता अमारा छो खरा,
व्याकुल चित्ते आविये तव संनिधे विश्वभरा;
मननी मलिनता टाळिने सुख शान्ति अमने आपशो;
हृदये अमारे प्रभु तमारी सत्य भक्ति स्थापशो. ३

सृष्टा अखिल ब्रह्मांडना वळि सत्य त्राता छो तमे,
सत्ता तमारी गहन ते शुं जाणिये जीवो अमे;
दीसे सकळ वस्तू विषे अद्भुत तमारी योजना,
वाणी अमारी थाकशे चाली शके नहिं कल्पना. ४

पाम्या नथी कोइ महा मुनिजन गहन ते प्रभुनी गति,
अज्ञान पामर प्राणि ते शुं करि शके प्रभुनी स्तुति;
मर्याद बांधि बुद्धिनी तेमां रहीने चालिये,
मंगल तमारा नियम छे ते प्रेमथी प्रभु पाळिये. ५

प्रभु एक ईश्वर सत्य छो स्रष्टा तमे आ सृष्टिना,
धारी रह्या ब्रह्मांडने सत्ता थकी सच्चिद्‌घना;
साष्टांग तमने वंदिने प्रभु पाय सर्वे लागिये,
आपो अखंडित भक्ति ए वरदान नित्ये मागिये. ६

प्रभुभक्ति ए शुभ धर्म छे सिद्धांत श्रुति शास्त्रो विषे,
ए धर्म जे जन पाळशे प्रभुसन्निधे निश्चय जशे;
उपकार दीसे छे प्रभूनां सृष्टिरचनामां घणा,
जीवो तणा जिवनार्थ प्रभुए कांइ राखी नथि मणा. ७

अवतार आप्यो मानवी अमने तमे अति स्नेहथी;
ए लाभ लेवानुं बिजुं प्रभु भक्ति विण साधन नथी;
माटे महा मंगल नियम सर्वे हृदयमां धारिये,
प्रिय होय प्रभुने जे खरुं ते कार्य नव वीसारिये. ८

अंतर्यजनथी अर्चना करि नाथने आराधिये,
परलोकमां प्रभुप्राप्ति अर्थे साधनो शुभ साधिये;
विश्वास प्रभुनो राखिने करिये सदा सत्संगति,
करुणाघना करुणा करीने आपशो प्रभु सन्मति. ९

जगदीश द्यो आशीष शुभ प्रभु नियम कदि नव तोडिये,
लोकोपकारी कार्य करवा धैर्य कदि नव छोडिये;
ए धर्मबल आपी अमारुं नाथ करशो पालन,
सत्ये तमारी भक्तिथी थइये अमे प्रभु पावन. १०

साधुजनो सत्संग करीने भक्ति तीर्थे ना'यछे,
पादारविंदे प्रणमि प्रभुनां गीत मंगल गायछे;
एवा महात्मा पुरुषनो सत्संग कदि नव मूकिये,
सच्छास्त्रनां शिक्षावचन प्रभु पाळवा नव चूकिये. ११

एवी महा मंगल मति प्रभु आपि अमने पाळशो,
संसारना संताप संकष्टो कृपा करि टाळशो;
आधार अवलंबन अमारे आप विण वीजुं नथी,
मातापितानी पास आवी लाडिये अति प्रेमथी. १२

पुरुषार्थ अमने आपिने करशो अमारुं रक्षण,
उत्साहथी प्रभु पाळिये मंगल तमारां शिक्षण;
संकष्ट सर्वे दुःसहो सहिने अमे तन मन धन,
देशी जनोना दुःख परिहारार्थ करिये अर्पण. १३

अविनाश ए अभिलाप छे पुरशो कृपाना भावथी,
आवी समीपे वंदिये सर्वे अमे आनंदथी;
विश्वास छे विश्वेशनो शरणे तमारे राखशो,
किल्विष अम[illegible]. १४

एकान्तिकी कौटुंबिकी सामाजिकी शुभ प्रार्थना,
आस्तिकजनो चूके नहीं ए शुद्ध ब्रह्मोपासना;
जे पुण्यशाली प्राणि ते शुभ पंथने अनुसरि रहे,
पामी प्रभूनो प्रेम अंते सत्य शाश्वत सुख लहे. १५

विश्राम छे प्रभुनो अमारे पाप सर्व कापशो,
दुष्कर्मथी प्रभु दूर रे'वा धैर्य अमने आपशो;
सद्धर्मनो प्रभु मार्ग मंगल प्रेमथी दर्शावशो,
प्रेमाभिषेको भक्तजन ऊपर सदा वरसावशो. १६

संध्या समय वंदन करी प्रभु ध्यान मंगल धारिये,
स्तुति प्रार्थना संगीत गाई आरति उचारिये,
जयदेव जय जय जय महा मंगल महाराजा तमे,
तव सन्निधे आवी बधा आराधना करिये अमे. १७

करशो कुशळ कल्याण सर्वेनुं तमे सच्चिद्घना,
स्वीकारिने आ प्रार्थना पूरो तमे शुभ वाञ्छना;
उपकार सर्वे मानिने करिये अमे अभिवंदन,
करुणावलोकन करि कृपानिधि द्यो तमे प्रभु दर्शन. १८

शार्दूलविक्रीडित.

ब्रह्मोपासन आ समे करि अमे पाये सहू लागिये,
सत्कर्मो करवा सहाय'प्रभुनुं नित्ये अमे'मागिये;

स्वीकारो स्तुति प्रार्थना प्रभु तमे सर्वेश सच्चिद्घन,
योगक्षेम कृपाथि आपि करशो सर्वेनुं संरक्षण. १

मालिनी.

समिप प्रभु तमारे आविने जोडि हाथ,
विनयथि विभु सर्वे वंदिये विश्वनाथ;
विदित प्रभु अमारी आपने सर्व वात,
शरण शुभ तमारुं आपशो माततात. १

उपेंद्रवज्रा.

महा प्रतापी प्रभु विश्वपाळ, कृपा करो नाथ समस्त काळ;
अमे तमारां सहु अज्ञ बाळ, करो परित्राण सदा कृपाळ. १

गायन.

पद.

भैरव तथा सर्व रागमां गवाय. ताळ चोताळ.

परम पवित्र सबल, व्यापी रह्या विश्व सकल,
आपो कृतकर्मफळ, मंगल गुण धारो नाथ;

सत्य चिद्घन आनंद, तमारे पदारविंद,
प्रणमे छे भक्तवृंद, जोडि सर्व उभय हाथ. - परम०
तमे पूर्ण शक्तिमान्, आपो शुद्ध दिव्य ज्ञान,
करशो सदा कल्याण, करुणामय मात तात;
धन्य धन्य भाग्य आज, प्रणमी जगदधिराज,
बोले भक्तजनसमाज, जय जय जय विश्वनाथ. परम० ?

पद.

राग काफी जिल्हो. ताल, दीपचंदी. चाल, नाथ केसे गजको बंध छुडायो.

नाथ तारे चरण शरण सर्व जाय, शुभ महिमा गुण गाय,
तुं विश्वकर्ता तुं विश्वभर्त्ता, पूर्ण कृपाओ जणाय;
प्रेम थकी तारी भक्ति करे तेना अर्थ सफल सर्व थाय. नाथ० १
अद्भुत शक्ति दिसे प्रभु तारी, अकल कला न कळाय;
नाथ प्रभु तारी करुणा थकी सर्व विश्वमां मंगल थाय. नाथ० २
आदि नथी जेनो अंत नथी जेनुं, माप कदी न मपाय;
एक अखंड अमूर्त प्रभु सर्व वेद शास्त्रमां गवाय. नाथ० ३
संकट समय सदा चडी वारे, प्रभु रहे सर्व सहाय;
बालक दीन अज्ञान जाणि तुं हाथ अमारो सहाय. नाथ० ४
मंगळ भाव प्रभु तारो दीसे, दर्शन दे जगराय;
मातपिता अमे प्रणमि प्रेमथी लागिये प्रभु तने पाय. नाथ० ५

अष्टपदि.

राग, आशागोडी. ताळ, जेतमाल. चाल, श्रितकमला इत्यादि.

सत्‌चिद्‌घन सुखकारक, दुःखहारक हे;
अनुपम देव दयाल, जय जगवंद्य हरे. १

अविचळ शुभपददायक, सृष्टिनायक हे;
प्रणतजनप्रतिपाल, जय जगवंद्य हरे. २

अशरण शरण शिव अद्वय, करुणामय हे;
मंगलकारी महेश, जय जगवंद्य हरे. ३

अतिअद्‌भुतबलधारक, जगतारक हे;
व्यापी रह्या विश्वेश, जय जगवंद्य हरे. ४

दुर्गुणदुर्मतिनाशक, स्वप्रकाशक हे;
षड्‌गुणयुत भगवंत, जय जगवंद्य हरे. ५

भवपति भवदुःखभंजन, भक्तरंजन हे;
आद्य अव्यक्त अनंत, जय जगवंद्य हरे. ६

जयजयजय जगदीश्वर, परमेश्वर हे;
निर्मल नित्य निःसंग, जय जगवंद्य हरे. ७

परमप्रभुपदपंकजे, प्रेमभक्तिथि हे;
नमिये सदा साष्टांग, जय जगवंद्य हरे. ८

आरति.

जयदेव जयदेव जय त्रिभुवन धाता, जय त्रिभुवन धाता;
जय सच्चिद्घन दाता (२), संकट भय त्राता. जयदेव० ॥१॥
आवि शरण महाराज, अभिवंदन करिये (२);
प्रभुनी पूर्ण कृपाना (२), उपकारो स्मरिये. जयदेव० ॥२॥
परमदेव परमेश, पाप सकल कापो (२);
करुणा करि अमने प्रभु (२), चितशान्ति आपो. जयदेव० ॥३॥
जगत सूत्रने नाथ, धारि तमे रो'छो (२);
पुण्यात्मा प्राणीने (२), प्रभु सद्गति द्योछो. जयदेव० ॥४॥
नियम तमारा सत्य, कदि ते नहि फरशे (२);
प्रभु भक्ति करशे जे (२), ते सत्ये तरशे. जयदेव० ॥५॥
प्रभु आपी विश्वास, आश पुरी करशो (२);
करुणामय दृष्टीथी (२), दुरित सकल हरशो. जयदेव० ॥६॥
शरणागतनी लाज, नाथ तमे राखो (२);
अंतर ताप अमारा (२), सहु कापी नांखो. जयदेव० ॥७॥
शुभ समये महाराज, प्रणमे सहु तमने (२);
निर्मळ भक्ति तमारी (२), प्रभु आपो अमने. जयदेव० ॥८॥



अंक २८ मा.

ललित.

परम पूज्य हे भक्तवत्सला, पतितपावना पापमोचना;
सुणि अमारुं आ नम्र प्रार्थन, प्रभु दयाथि द्यो दिव्य दर्शन. १
प्रणमिने सहू भक्तमंडल, सतत उच्चरे स्तोत्र मंगल;
प्रभुपदे करे सर्व वंदन, प्रभु दयाथि द्यो दिव्य दर्शन. २
दुरित कर्मने लक्ष ना धरो, सकल पातको भक्तनां हरो;
विनति सांभळी विघ्नभंजन, प्रभु दयाथि द्यो दिव्य दर्शन. ३
विषय लोभथी नेत्र अंध छे, तुज पदे जवा शक्ति मंद छे;
कर ग्रही करो ज्ञानअंजन, प्रभु दयाथि द्यो दिव्य दर्शन. ४
भजन गाइये भक्ति भावथी, तम विना बिजो बेलि को नथी;
शरण राखशो सत्य चिद्घन, प्रभु दयाथि द्यो दिव्य दर्शन. ५
अति समर्थ छो शीघ्रता करो, प्रणत भक्तने हृदय संचरो;
प्रभु ग्रहो तमे मंगलार्चन, प्रभु दयाथि द्यो दिव्य दर्शन ६
कुसुम प्रेमनां अर्पि आ समे, प्रणमिये महाराजने अमे;
प्रभु करो कृपावारिवर्षण, प्रभु दयाथि द्यो दिव्य दर्शन. ७
मुखथि बोलिये जय जय ध्वनि, प्रभु करो सदा दृष्टि प्रेमनी;
निरखिये अमे मंगलानन, प्रभु दयाथि द्यो दिव्य दर्शन. ८

ॐ तत्सत् परमात्मने नमः ।

नित्यं शुद्धं निराभासं निराकारं निरंजनम् ।
नित्यबोधं चिदानंदं तं सर्वेशं नमाम्यहम् ॥

जे नित्य शुद्ध निराभास तथा निराकार निरंजन छे, नित्यज्ञानरूप छे, जे चिदानंद सर्वेनो ईश्वर छे, तेने हुं नमस्कार करुंछुं.

हे परमात्मन्! तुं सत्य छे, नित्य छे, तुं शांतस्वरूप छे, अनन्यभावे तारे शरणे आव्याथी चित्तनी शांति थाय छे, अने आ लोक तथा परलोकमां सुख प्राप्त थायछे, एवो अमारो पूर्ण विश्वास छे. परंतु अमारुं चित्त अहोरात्र अनेक प्रकारना विषयोमां आसक्त रहे छे, माटे अमारा चित्तने तारी सत्ताना योगथी तारा प्रत्ये खेंचीने तारां ध्यान भजन स्तवन अने प्रार्थना केइ रीतिये करवां ते अमने शिखव. तारी कृपा विना अमाराथी बने तेम नथी, माटे हे जगदात्मन् तुं अमारी विषयासक्तिनो नाश करीने तारी पासे आववानो मंगलमार्ग अमने बताव. हे सत्यस्वरूप! अमने आशा छे के अमारुं मन पवित्र थशे, अमारी वर्तणुक सारी हशे, तारा उपर दृढ विश्वास तथा श्रद्धा हशे तो तुं अमारा हृदयमां चिरस्थायी रहीश. हे परमात्मन्! अमे तारे शरणे आव्या छीये; तारी पासे अहिंनुं धन, मान अधिकार तथा यश मागवाने आव्या नथी, अमने लोको केवुं आदरमान आपशे ए मागवाने तारी पासे आव्या नथी; परंतु एटलावास्ते तारा शरणापन्न थया छिये के तुं अमारी दुर्बळताने दूर करीश, पाप कलंकथी निस्तार करीश. हे पतितपावन! तारा अमृतमय सहवासमां अमे निरंतर रहिये, एज

अमारी इच्छा छे, एज अमारी आशा छे; ए आशा परिपूर्ण कर; जेथी अमे शुद्ध निष्कपट हृदयथी तारा शुभपथनुं अवलंबन करीने रही शकिये, तारा प्रसादथी संसारी लालचो तथा ईषणाओनुं *अतिक्रमण करि शकिये, तारी इच्छाने आधीन रहीने सर्व काम* करिये, एज अमारी प्रार्थना छे.

परमपवित्र परमेश्वर! तुं महा समर्थ छे, तारी उपमा कोइने पण आपी शकाती नथी. आ चर्मचक्षुथी जोइ शकाय एवी तारी मूर्ति नथी. तारो आकार नथी तारी सीमा नथी. तुं चैतन्यरूप सर्व ठेकाणे व्यापी रह्यो छुं, सर्वकाल तुं अमारी पासे छे. तुं अमने देखातो नथी पण तुं अमने सर्वकाल जुए छे, तने हस्तपादादिक अवयव नथी तोपण तुं सर्व कार्य करी शके छे. तारा सर्व भक्तोना योग्य मनोरथ पूर्ण करे छे. अमे तारी अंतःकरणपूर्वक मानसिक पूजा अर्चा करिये, अने तारा बतावेला नीतिमार्गे चालिये, एज तारी खरी आराधना तथा अमारो खरो धर्म छे. हे भगवन्! तारे शरणे आवीने अमे तने साष्टांग प्रणाम करिये छिये.

हे परमात्मन् तारुं कीर्तन तारी स्तुति अमे शुं करी शकिये? वाचा तारुं वर्णन करतां बंध पडे छे, मन तारुं चिंतन करतां निवृत्त थायछे. तुं ज्यारे कृपा करीने अमारा हृदयमां पधारेछे, त्यारेज अमने बल प्राप्त थायछे. अमारी शी शक्ति के तारा मंगल भावनुं वर्णन करी शकिये? तारी प्रसन्नता, तारो आविर्भाव एज अमारुं सर्वस्व छे. हे मंगल दयामय पिता! आ समाजमंदिरमां तारुं पवित्र दर्शन लेवाने एकठा थया छिये, अमे ज्यारे सर्व कपट वि-

पय वासनानो त्याग करीने अमारो प्रेम तमने अर्पण करिये छिये त्यारे आ समाजस्थल पण 'दिव्यस्थान समान जणाय छे. शुद्ध अंतःकरणथी प्रियतम परब्रह्मनी उपासना करवाथी सर्व पाप तथा मलिनता नाश पामेछे. हे विश्वपिता! अमारा आत्माने तारा समीप आववाने उन्नत कर. अमारो क्षुद्र यत्न कांइ पण सिद्ध थतो नथी. हे सिद्धिदाता तारा प्रसादनो विस्तार कर. तुंज अमारो पूज्य उपास्य देव छे, सदाकाल तारुं दर्शन एज अमारी सकल कामनानी समाप्ति छे. तारी पासे अमारी एज प्रार्थना छे के अमारा हृदयमां तुं प्रकाशित रहे. तारो आनंदस्रोत अमारा हृदयमां निरंतर वहेतो रहे. हे कृपालु पिता! तारा अमृतानंदथी अमारो आत्मा अभिषिक्त कर. अमारी दृष्टि सदा तारी प्रेमदृष्टि उपर रहो, अमारी इच्छा मात्र तारी महान् इच्छानी साथे संयुक्त रहो. अमे जो तारा नियमनुं उल्लंघन करिये तो अमारो योग्य दंड करीने अमने सुशिक्षा बताव. परंतु अमारो परित्याग करीश नहिं. तारा विना अमारी गति नथी.

॥ ॐ एकमेवाद्वितीयम्. ॥

दिंडि २१.

ज्यहां पोंचे नही रवि शशि प्रकाश, वह्नि विद्युत शुं करी शके उजास;
तमे स्वप्रकाश छो समर्थ सत्य, नहीं जाणि शके कोइ विश्व कृत्य. १
ज्यहां पोंचि शके अल्प बुद्धि मारी, परम गहन नाथ शक्ति छे तमारी;
रहुं जेम तमे नाथ मने राखो, सदा सत्य धर्म मार्ग मने दाखो. २

मतीहीन दीन दास छुं तमारो, नथी विश्व विषे बेलि कोइ मारो;
नवळि करणि मारि नाथ नहींजोशो,करो करुणानिधिसर्व क्षमा दोषो.३
सदाकाल तमे सन्निध प्रभु रे'शो, दिव्य ज्ञान दयासिंधु मने देशो;
प्रणमि प्रतिदिन प्रभु मागुं वारवार, करो सत्य धर्मनो तमे प्रचार. ४

द्रुतविलंबित.

परम मंगळ देव दयाघना, प्रणमिने करिये प्रभु वंदना;
विनति सर्व तमे मनमां धरो, हृदयना परिताप बधा हरो. १
नहिं कदी तुलना प्रभुनी थशे, कदि तमारी कळा न कळी जशे;
गणि अमे तमने निज सन्निधे, शुभ कृति करिये करुणानिधे. २
अवगुणो जिवना-प्रभु ना गणो, पळ पळे करशो मुज रक्षणो;
दुरित कर्म कृपा करि कापशो, परम शांति सदा प्रभु आपशो. ३
कृति नहीं नवळी तमने गमे, सुचवशो शुभ बुद्धि सदा तमे;
प्रभु तने प्रिय कर्म न जो थशे, नहिं कदी जिव मुक्तिपदे जशे. ४
विभु तमे भय दुःख निवारशो, विकट आ भवसिंधु उतारशो;
जिव तणी करणी प्रभु ना जुवो, मति रुडी अमने सहु सूचवो. ५
मलिनता मननी सहु कापशो, हृदयशान्ति कृपानिधि आपशो;
सतत मंगळ मार्ग बतावशो, भयथकी प्रभु नित्य बचावशो. ६
प्रतिदिने स्मरिये प्रभु चिद्‌घना, प्रणमिने करिये अभिवंदना;
कदि कृपानिधि दोष न मापशो, त्रिविध ताप बधा प्रभु कापशो. ७
शुभ क्रिया करिये सघळी अमे, अशुभ कर्म विषे मने ना रमे;
नमि नमी तमने प्रभु आ समे, विनविये करजोडि सहू अमे. ८

हृदयमां तमने प्रभु धारिये, नहिं कदी उपकार विसारिये;
सुचवशो शुभ पंथ सुकर्मनो, जय करो प्रभु मंगल धर्मनो. ९
सुमति द्यो अमने प्रभु पावना, पुरि करो सघळी शुभ वाञ्छना;
वधु शुं ते कहिये प्रभु नाथने, नव जुवो जिवना अपराधने. १०
नियम तो प्रभुना कदि ना चळे, फल सदा कृतिनां जिवने मळे;
सुगतिये सहु दैवि जिवो जशे, पतितनी कदि मुक्ति नहीं थशे. ११
प्रभु जुवो सहुने समभावथी, विषमता तमने कदि तो नथी;
कलुष किल्बिष नाथ निवारशो, भवथकि करुणा करि तारशो. १२
शरण राखि कृपाथि निभावशो, अवसरे प्रभु सन्निध आवशो;
प्रणमि पाय अमे सहु लागिये, प्रभु क्षमा अपराधनि मागिये. १३
जिव तणा अति दोष जणाय छे, प्रभु तथापि दया बहु थाय छे;
प्रभु तमे परिताप बधा हरो, जगतमां सुख शान्ति सदा करो. १४
पतित पावन सत्य सनातन, जननि तुल्य करो परिपालन;
प्रभु करो करुणामृत वर्षण, सतत द्यो अमने शुभ दर्शन. १५

भुजंगी.

तमे सत्य छो नित्य छो मुक्तिदाता, तमारा विना को नथी प्राणदाता;
प्रकासे त्रिसर्गे तमारा प्रताप, शमावो अमारां तमे सर्व पाप. १
तमारी क्रिया सर्व आनंदकारी, महर्षि जुवे चित्तमां ते विचारी;
हरोछो तमे सर्व संसारताप, शमावो अमारां तमे सर्व पाप. २
नथी जन्मधारी तमे निर्विकारी, तमे पापहारी सदा श्रेयकारी;
कृपादृष्टि दीसे तमारी अमाप, शमावो अमारां तमे सर्व पाप. ३

नथी देवता देवयोनि स्वरूप, तमे सर्वव्यापी तमे छो अरूप;
तमे भक्तना सांभळो छो विलाप, शमावो अमारां तमे सर्व पाप ४
समीपे सदा आविने सर्व भक्त, नमेछे परब्रह्मने प्रेमयुक्त;
जपेछे महा मंगल स्तोत्र जाप, शमावो अमारां तमे सर्व पाप. ५
पिता तुल्य संभाळ ल्योछो अमारी, दिसे सर्वकाळे कृपाओ तमारी;
नथी आपता क्रोधथी नाथ शाप, शमावो अमारां तमे सर्व पाप. ६
तमारां कृपास्रोत नित्ये वहेछे, खरा पुण्य प्राणी जनो ते ग्रहेछे;
विसारो नहीं दासने नाथ आप, शमावो अमारा तमे सर्व पाप.७
अमे द्वार आवी उभा जोडि हाथ, नमस्कार स्वीकारशो विश्वनाथ;
निभावो कृपा भावथी मायबाप, शमावो अमारां तमे सर्व पाप. ८

गीति.

विश्वेशा विभु तमने नमि नमि करिये प्रणाम आ समये;
सर्व विनंति अमारी, भवपति सुणशो तमे सदय हृदये. १
उचित तमे जाणो जे, ते प्रभु लेशो दयाथि स्वीकारी;
प्रभु मंगलगुणधारी, जयजयकारी कृपालु उपकारी. २

गायन.

पद.

भैरव तथा सर्व रागमां गवाय ताळ, चोताळ.

सुरम्य सायं समय, थाय सूर्य अस्तमय;
थाय नक्षत्र उदय, व्योममां विराजमान;

शोभेछे चंद्रमंडल, थाय जल स्थल शीतळ;
दिसेछे कृति सकल, सबल आश्चर्यवान्; सुरम्य०
एवा छे प्रभु वरिष्ट, टाळे जीवनुं अरिष्ट,
आपे पुण्य फल इष्ट, सकल ऐश्वर्यवान्;
मळी भक्त मित्र जन, गाओ मंगल भजन,
जाओ ते शुभ शरण, आपो प्रेमअर्घ्यदान. सुरम्य० १

पद.

राग, काफी. ताल, दीपचंदी. चाल, आशीर्वाद करो.

करुणा नजर करोरे, करुणासिंधु.
करुणा नजर करो, पाप कर्म परहरो, स्तवन श्रवण करोरे,
करुणासिंधु, करुणा नजर० १
अखिल ब्रह्मांड नाथ, अंतरनी जाणो वात, तमे माततात भ्रातरे;
करुणासिंधु, करुणा नजर० २
नथी को शरण मारे, भरुसो तमारो भारे, तम विना कोण तारेरे;
करुणासिंधु, करुणा नजर० ३
प्रभु तमने पाय लागुं, क्षमा पापनी हुं मागुं, कृपा विना नव तागुंरे;
करुणासिंधु, करुणा नजर० ४
अवगुण नव लहो, मानुं प्रभु अनुग्रहो, कृपा करी कर ग्रहोरे;
करुणासिंधु, करुणा नजर० ५
अति मंद मूढमति, जाणुं शुं तमारि गति, प्रभु प्रेरो शुभ मतिरे;
करुणासिंधु, करुणा नजर० ६

आव्यो छुं तमारे द्वारे, वंदुं छुं हुं वारवारे, हृदये पधारो मारेरे;
करुणासिंधु, करुणा नजर० ७
तमारे शरण आवुं, मंगल स्तवन गाउं. प्रभु हुं पावन थाउंरे;
करुणासिंधु, करुणा नजर० ८
सेवा मारी मानि लेशो, मंगल दर्शन देशो, सदैव प्रसन्न रे'शोरे;
करुणासिंधु, करुणा नजर० ९
मानुं प्रभु उपकारो, अर्पुं प्रेम उपहारो, बोलुं जय जयोच्चारोरे;
करुणासिंधु, करुणा नजर० १०

पद.

राग, सोरठ. ताल, एकताल.

दयासिंधु दीनबंधु दास तारो, सत्य आश्रय आधार छे तमारो,
अशरणशरण तमे, भय दुःख हरण तमे, कुशल करण तमे, शुभ
गुण प्रभु धारो धारो, दास तारो दयासिंधु०
नथी तम समान अन्य कोइ त्राता, तप्त तृषित दुखित हृदय शान्ति
दाता, सकल सृष्टिना छो सत्य तमे पाता;
नहीं उपमा, नहीं उपमा, न थाय, नव कलाय, नव मपाय, गुण
गणाय, विश्वराय, हरि अपाय, रहि सहाय, कर सहाय, अमारो
अमारो, दास तारो. दयासिंधु० १
भक्ति भावथी हुं चरणशरण आवुं, महा मंगल गुण यश तमारा
गाउं, प्रेमकुसुममाल प्रभुपदे वधावुं;

तमे सत्य, तमे सत्य, अंतर्याम, महोदाम, मनविराम, राखि हाम, जपुं नाम, करुं प्रणाम, पुरो काम, हृदयधाम, पधारो पधारो, दास तारो. दयासिंधु० २

जेह प्राणि परमब्रह्म गान गाशे, सकल पाप ताप थकी मुक्त थाशे, अंते तेज सत्य प्रभु समीप जाशे;

सर्व शास्त्रे, सर्व शास्त्रे, ए सिद्धांत, छे अभ्रांत, कृपाक्रान्त तमे शान्त, सदादांत, महाक्षांत, द्यो विश्रांति, हृदय ध्वांत, निवारो निवारो, दास तारो. दयासिंधु० ३

महाराज तमे पूर्ण शक्ति धारो, मलिन वृत्ति मारि प्रभु तमे सुधारो, दीन दासने कदी नहीं विसारो;

सदानंदे, सदानंदे, आवुं द्वार, कृपागार, जगाधार, सकलसार, निराकार, निर्विकार, वारंवार, नमस्कार, स्वीकारो स्वीकारो, दास तारो. दयासिंधु० ४

पद.

राग, काफी. ताल, दीपचंदी. चाल, आनंदे शरण लिध.

आनंदे शरण हुं जाउं, प्रभु हे तारक श्री जगदीश्वर जाणी.
विसरीने क्षणभर विषय वासना प्रभुमां हुं तल्लीन थाउं. प्रभु हे. १
आत्मानदी संयमपूर्णजले, विमल मनेथी हुं नाहुं प्रभु हे. २
मात तात तव प्रेमल क्रोडे, हर्ष उमंगथी धाउं. प्रभु हे. ३
वरदायक विभु चरण नमीने, शुभ गुण मंदिर हुं गाउं. प्रभु हे. ४

आरति.

जयदेव जयदेव जयमंगलधामा, जय मंगलधामा;
शरणागत वत्सल विभु (२), जय हृदयारामा. जयदेव० ॥१॥
शुभ अवसर सर्वेश, नमि प्रभुने चरणे (२);
आराधन सहु करिये (२),शुद्धांतःकरणे. जयदेव० ॥२॥
मात तात महाराज, मन वाञ्छित आपो (२);
कृपाघना करुणा करि (२), पाप सकल कापो. जयदेव० ॥३॥
सत्यरूप साक्षात्, सर्वेश्वर देवा (२);
सन्निध प्रभुने आवी (२), करिये शुभ सेवा. जयदेव० ॥४॥
क्षमा करो अपराध, प्रभु जे जे कीधा (२);
शिक्षा नियम तमारा (२), नव लक्षे लीधा. जयदेव० ॥५॥
विश्वनाथ विश्वास, सत्य अमे धरिये (२);
संध्या समय मळी सहु(२), आराधन करिये. जयदेव० ॥६॥
निज आत्मामां नाथ, तुज करुणाकान्ति (२);
निरखि थाय अमने प्रभु (२), परमावधि शान्ति. जयदेव० ॥७॥
मंगल आरति गाइ, नमिये हर्षे (२);
करुणा करी वरदायक (२), कर धरजो शीर्षे. जयदेव० ॥८॥



अंक २२ मो.

दिंडि.

महा मंगल आ समय महाराज, करे वंदन मळि भक्तनो समाज;
वदे मुख थकि जय जय जयवाद, प्रणमि मागे प्रभु प्रेमनो प्रसाद. १
सर्व सेवक जन शरण छे तमारे, नाथ आवो हृदये तमे अमारे;
एज इच्छा परब्रह्म छे अमारी, कृपाकान्ति वसे निज हृदय तमारी. २
विषय वासना न दे कदापि त्रास, सदाकाळ रहे प्रभु समीप वास;
धन्य भाग्य एज जाणिये अमारुं, अंतरार्चन करिये अमे तमारुं. ३
रहे सर्वकाळ प्रभु तमारुं लक्ष, थाय दर्शन शुभ आपनुं प्रत्यक्ष;
कृपासिंधु सुणो प्रार्थना अमारी, अमे करिये अति प्रेमथी तमारी. ४
सत्य ज्ञानरुप करुणामय शान्त, ग्रहो प्रेम कुसुममाळ कृपाकान्त;
परम मंगळ परब्रह्म छो समर्थ, प्रेमवत्सल परिपूर्ण करो अर्थ. ५

श्रीजगदीश्वरायनमः ।

ॐविश्वतश्चक्षुरुतविश्वतोमुखो,
विश्वतोबाहुरुतविश्वतस्पात् ।

पूर्ण परमात्मानी दृष्टि सर्व ठेकाणे छे, आ संसारनी ज्योतिनो ज्योति एनां चक्षु सर्वत्र छे, एनुं मुख सर्वत्र छे, एना बाहु तथा पाद सर्वत्र छे. एवा सर्वव्यापी परमेश्वरने शरणापन्न थई तेनी साथे योग करी तेनी प्रार्थना करिये.

हे परमात्मन्! तमे सर्वमंगल सकल शान्तिनुं स्थान छो, तमे अमारा आत्मानी उन्नति करो, तमारा विना अमारी गति नथी. तमारी पासे एज प्रार्थना छे के, तमे अमने तमारा ज्ञाननो मोटो अधिकार आप्यो छे, ते उपकारनुं अमने स्मरण रहे, तमे जे अमने उत्कृष्ट साधन आप्यां छे, तेनो खोटो उपयोग न करिये, ए साधन द्वाराये तमारा सत्य धर्मनो तमारा महिमानो विस्तार करी शकिये, तमे अमने शक्ति आपी छे ते तमाराज काममां लगावी शकिये. आ जड जगत् तमे सरजाव्युं छे, परन्तु तमे ते जड जगत् नथी. आ जगत् पण तमे छो एम माननारा भूल करे छे. तमे तेथी भिन्न शुद्ध चैतन्यमय स्वयंप्रकाश, सत्यरुप ज्ञानरुप करुणानिधान सर्वशक्तिमान् न्यायकारी परम पवित्र छो. तमारी काष्ट पाषाण, धातु के मृत्तिकानी मूर्त्ति बनावी, अज्ञानी, मूढ लोको तेने पूजे छे. अग्नि द्वाराये तमने हुत द्रव्य पोंचे छे, आ तेमनी खोटी श्रद्धा छे. अज्ञानथी सारा पदार्थो अग्निमां भस्म करी नांखे छे. पूर्वकालमां लोको आ विधि अज्ञानथी करता हता, पण जेम जेम बुद्धि सस्कार पामी शुद्ध थती गई, तथा विद्या वधती गई, तेम तेम तमारा सत्यरूपनो प्रकाश आ आर्य देशना महात्मा महर्षियोना मनमां पड्यो, अने तमे अमूर्त निर्विकार सर्वव्यापी मंगलकारी समर्थ छो एवो तेमने बोध थवाथी तमारुं अतर्यजन उत्तम फळदायक छे एम सिद्धान्त करी गया. आ अमारा आर्यदेशवासी पूर्वकालना ऋषिगणोने तमे प्रेरणा करी, पण दुर्भाग्यथी तमारी आज्ञानुं उल्लंघन करी लोको तमारी अधम भक्ति करे छे. अमे

सर्व प्रकारनी तमारी अधम सेवा अर्चाथी दूर रहिये. अमारा कुटुंबमां एवी उपासना थती होय तो ते अटकाववानो तथा उत्तम भक्ति करवानो बोध करिये. तमे सत्यस्वरुप परम मंगल पवित्र छो. तमारी उत्तम उपासना न करतां, तमने अपमान थाय एवी भक्ति जाणी जोइने करवी ए महा घोरतर पाप छे. ए पाप अमाराथी तथा अमारा स्नेही संबंधीओना हाथथी न थाय एवो यत्न करवानां तमे अमने सुबुद्धि तथा सामर्थ्य आपशो. आ संसारमां तमे जन्म आप्यो छे, ते तमारुं खरुं स्वरूप भूली जई तमारी खोटी भक्ति तथा खोटो आडंबर करवा आप्यो नथी; परन्तु तमारी प्रेमयुक्त पराभक्ति करवाने तमे आ उत्तम देह आप्यो छे; माटे तेनुं सार्थक्य करी तमने प्रिय करवामां अमारुं मन लागु रहे एवी अमने शुभ प्रेरणा करता रहेशो.

आ स्थले अमे सर्व तमारी उपासना तथा स्तुति प्रार्थना करवा भेगा थया छिये. अमारुं सुभाग्य छे के आ लाभ तमारी कृपाथी अमने मळे छे. तमारा उपर लक्ष राखी अमे सर्व एक वाक्ये, एक नादे, एक स्वरे तमारुं भजन करी तमारां संगीत गाइये छिये. "सत्यंज्ञानमनन्तंब्रह्म" तमने अमारा हृदयमां साक्षात् जोइये छिये. तमे अमारा पिता अमे तमारां संतान, तमे अमारा गुरु अमे तमारा शिष्य; एम अमारा मनने निश्चय थाय छे. अमे प्रार्थना करिये छिये के, हे विश्वजनने ! माता प्रमाणे अमारुं संरक्षण करो. अमारुं सत्य धन द्रव्य तमे छो. आ सृष्टि

तमे अमारा सुखने अर्थे उत्पन्न करी छे, ए तमारो अमारा उपर परम उपकार छे, ते अमे भूली न जइये. आ संसारमां सर्व साथे स्नेह राखी चालिये. परस्परने दुःख देवुं, तेओनो नाश करवो, ए सर्वथा अयोग्य छे, एवुं काम करिये तो अमे मोटा अपराधी तथा दंडने पात्र थइये; माटे एवी दुर्बुद्धि अमारा मनमां उत्पन्न थवा देशो नहिं. तमारी इच्छा प्रमाणे अमे वर्तिये एवी बुद्धि तमे अमने आपशो, ए तमारी पासे प्रार्थना छे.

हे कल्याणदाता दीनवत्सल भगवान्! अमे तमारो आश्रय पकड्यो छे, तमारा विना आ भयानक संसारमां कोण अमने अभय आपी शके छे? तमेज अमारुं रक्षण करो छो. हे दयानिधि! अमे तमारा प्रेमनो अनुभव करी सदाकाल तमारुं लक्ष राखी अमारा आत्मानी उन्नति थाय एवां मंगल कार्य करी तमने अर्पण करिये, एवो उत्साह अमारा मनमां जाग्रत रहे अने तमारो परित्याग न करिये. अमे तमारो त्याग नहिं करिये तो तमे अमारो परित्याग करवाना नथी ए निश्चय छे. माहं ब्रह्म निराकुर्यां मा मां ब्रह्म निराकरोदनिराकरणमस्तु।

॥ ॐ एकमेवाद्वितीयंब्रह्म. ॥

दिंडि. २२.

विश्व रचना अद्भूत चमत्कारी, सर्व वस्तु विषे युक्ति दिसे सारी;
सर्व प्राणि प्रते छे दया अपार, जगद्वंद्यने हुं वंदुं वारवार. १
नहीं अन्य देव देवि देवताओ, बहू देवतानि व्यर्थ कल्पनाओ;
तमे एक सत्य सगुण निर्विकार, जगद्वंद्यने हुं वंदुं वारवार. २
मुक्यो मात-हृदय पूर्ण स्नेहभाव, मुख्य एज छे कृपातणो पुराव;
सज्या पूर्व थकी पोषणोपचार, जगद्वंद्यने हुं वंदुं वारवार. ३
स्तुती गातां मन वाणि थाकि जाय, अतुल करुणातणुं माप नहीं थाय;
क्षणे क्षणे नाथ मानुं ऊपकार, जगद्वंद्यने हुं वंदुं वारवार. ४

दोधक.

मंगल देव दयानिधि दाता, सत्य समर्थ जगत्रय त्राता;
पातक नाश कृपाथि करोछो, संकट दुःख समस्त हरोछो. १
आदि नथी नथि अंत तमारो, सृष्टि तमे निज शक्तिथी धारो;
नाथ नथी अवतार तमारो, बाध करे तमने न विकारो. २
हस्त नथी पण कार्य करोछो, पाद नथी जगमां विचरोछो;
नेत्र नथी पण सर्व जुवोछो, श्रोत्र नथी पण सर्व सुणोछो. ३
धातु शिलादिकनी प्रतिमाने, मूढ जनो परमेश्वर माने;
वेद पुराण प्रमाण करे छे, एक अमूर्त परात्पर के'छे. ४
नित्य अखंड अनंत कृपालु, सत्य सनातन देव दयालु;
उपास्य परेश अमारो, मानुं हुं ते प्रभुना उपकारो. ५

दिव्य तमे प्रभु मंगलकारी, गाउं सदैव हुं कीर्ति तमारी;
ध्यान तमारुं हृदे महिं धारुं, मंगल सूक्त मुखेथि उचारुं. ६

नित्य कृपाजलस्रोत वहे छे, भक्त जनो अति हर्षथि ले छे;
सृष्टि विषे प्रभु शक्ति तमारी, सर्व दिसे अतिशे सुखकारी. ७

पालन शक्ति तमारि जणाय, शुं प्रभुनो उपकार वळाय;
कार्य तमारि कृपा थकि थाय, संकट दूर बधां प्रभु जाय. ८

नित्य तमे उपकार करोछो, पातक विघ्न समस्त हरो छो;
मातपिता परमेश्वर शास्ता, कृत्यनुसार तमे फल दाता. ९

पाय पडुं प्रभुने कर जोडी, प्रेमथि आवुं हुं संनिध दोडी;
दूर तमे नहिं नाथ रहोछो, भक्ति तमे करुणाथि ग्रहोछो. १०

गुप्त क्रिया तमथी नथि छानी, पामुं छुं हुं मनमां बहु ग्लानि;
नाथ निभावि कृपा करि लेशो, प्रेम थकी शुभ आशिष देशो. ११

चंचल चित्त अमारुं चलेछे, ब्रह्मपदे नहि निश्चल रे'छे;
आतुर छुं प्रभुनी करुणानो, वृत्ति अमारि तमे सहु जाणो. १२

भक्ति विना नथि मुक्ति अमारी, मातपिता मति द्यो शुभ सारी;
बालक नित्य करुंछुं हुं दोषो, ते अपराध तमे नव जोशो. १३

तारक हुं तमने प्रभु जाणुं, मंगल सर्व विधान हुं मानुं;
भावथि भक्ति विषे हुं विरामुं, अक्षय धाम तमारुं हुं पामुं. १४

ए परिपूर्ण करो अभिलाषा, जाउं नहीं प्रभुथी हुं निराशा;
जाग्रत सत्य अखंड समर्थ, सिद्ध करो सघळा शुभ अर्थ. १५

પ્રેમથિ પાતક સર્વ શમાવો, સત્ય ઉપાસન માર્ગ બતાવો;
મંગલ સ્તોત્ર જપું હું તમારું, સિદ્ધ કરો શુભ કાર્ય અમારું. ૧૬
સત્ય તમે ગુણ મંગલ ધારો, ભૂલ અમારિ કૃપાથિ સુધારો;
શાસન યોગ્ય કરી પ્રભુ મારું, સૂચવશો પ્રિય કાર્ય તમારું. ૧૭
જો પુત થાય કુપૂત તથાપિ, માતપિતા ન રિસાય કદાપિ;
પૂર્ણ કૃપાથિ જુવો મુજ સામું, પ્રેમપ્રસાદ નિરંતર પામું; ૧૮
વારિ કૃપા વરસાવિ અજસ્ર, માફ કરો અપરાધ સહસ્ર;
દુસ્તર દેવ ઉતારિ ભવાબ્ધિ, તત્પદ આશ્રય ઘો કરુણાથિ. ૧૯
નિત્ય સહાય તમે પ્રભુ રે'શો, શાન્તિ સુધા કરુણા કરિ દેશો;
પ્રેમપ્રસાદ હું માગું તમારો, હાથ ગ્રહી ભવસાગર તારો. ૨૦

શિખરિણી.

ન જાણું હું મંત્રો, નહિં પ્રભુ હું જાણું શ્રુતિ સ્મૃતિ,
ન જાણું પડ્શાસ્ત્રો, નહિં હરિ હું જાણું જપવિધિ;
ન જાણું હું ગાનો, નહિં વ્રત વિધાનો ન યમન,
પરન્તુ હું જાણું, શરણ પ્રભુનું કષ્ટહરણ. ૧
ન જાણું સાહિત્યે, નહિં વિદિત છે ભેદ રસના,
ન શબ્દાલંકારો, નહિં પદ ક્રમે કાવ્યરચના;
ન જાણું હું યોગો, નથિ કદિ કિધું શાસ્ત્ર શ્રવણ,
પરન્તુ હું જાણું, શરણ પ્રભુનું કષ્ટહરણ. ૨

न जाणुं हुं तंत्रो, नहिं वळिप्रदानो हवनना,
न जाणुं हुं सूत्रो, नहिं अनुक्रमे मंत्र रचना;
न जाणुं वेदांगो, नहिं विधिथी स्वाध्याययजन,
परन्तु हुं जाणुं, शरण प्रभुनुं कष्टहरण.

तमे सत्य स्वामी, विमुख नव राखो चरणथी,
अमारे कोईनो, प्रभु विण विजो आश्रय नथी;
कृपाकान्ता कोने, जई कहुं हुं मारुं विलपन,
दया लावी देवा, श्रवण करशो मारुं रुदन.

किधा छे में दोषो, नहिं प्रभु तमे लक्ष धरशो,
कृपा भावे मारो, नहिं कदि परित्याग करशो;
महा कष्टो मारां, प्रभु तम विना कोण हरशे,
कुपुत्रो तो थाशे, तदपि न कुमाता कदि थशे.

नथी कीधी सेवा, नहिं प्रभु सुशिक्षा अनुसर्यो;
बधा प्राणीओमां, अतिशय अभागी हुं निसर्यो;
विना देवा कोई, नहिं पतित उद्धार करशे,
कुपुत्रो तो थाशे, तदपि न कुमाता कदि थशे.

नथी दीधां दानो, व्रत नियम लीधा नथि अमे,
सहू जाणो मारी, हृदयगत वार्ता प्रभु तमे;
महा पापो मारां, तम विण क्षमा कोण करशे,
कुपुत्रो तो थाशे, तदपि न कुमाता कदि थशे. ७

नथी द्रव्याकांक्षा, नहिं विभव वाञ्छा प्रभु मने,
नथी निर्वाणेच्छा, नहिं सम थवा ब्रह्मपदने;
पितामाता मागुं, प्रभु तव समीपे रहुं सदा,
पुरो इच्छा मारी, भवपति तमे सत्य सुखदा. ८
नमुं छुं साष्टांगे, प्रभु शरण आवी हुं तमने,
नहीं राखो स्वामी, तम चरणथी दूर अमने;
तमे प्रेरो बुद्धि, प्रभु प्रिय अमे कार्य करिये,
तमारी शिक्षाओ, नहि कदि मनेथी विसरिये. ९
महा पापी कोई, नथि जगत मांही मुज सम,
क्षमा दाता कोई, नथि प्रभु अमारो तुज सम;
सहु कष्टो मारां, परम प्रभु निःशेष हरशो,
सदा वात्सल्येथी, मुजपर कृपा दृष्टि करशो. १०

उपेंद्रवज्रा.

कृपार्णवा किल्बिष क्लेश हर्त्ता, हृदे अमारे सुख शान्ति कर्त्ता;
उदारताथी अमने निभावो, समस्त संताप तमे शमावो. १
विशेष शुं नाथ करुं विनंति, तमे सुधारो प्रभु मारि वृत्तिः;
करुं नमस्कार हुं जोडि हाथ, पुरा करो योग्य मनोर्थ नाथ. २
प्रसन्न रे'शो प्रभु दास मत्ये, कृपासुधा पान करुं हुं नित्ये;
तमे सदा आशिष देव देशो, अमारि अर्चा प्रभु मानि लेशो. ३
अखंड सेवा करुं हुं तमारी, नहीं चळे वृत्ति कदी अमारी;
समीप आवी प्रभु पाय लागुं, महाधिराजा वरदान मागुं. ४

उपजाति.

सर्वज्ञने शुं कहुं हुं धयारे, तमे चडो सत्वर मारि वारे;
असत्पथेथी सुपथे चडावो, कृपा करी दोष बधा क्षमावो. १

गायन.

पद.

राग मल्हार. ताल चोताळ.

गाओ तेने गाओ सदा, तरुण भानु, ज्यारे अचेतन जगतने आपो प्राण; जन हृदय मफुल्लकर चंद्र तारा सहु मळि मळि गाओ तेने.॥०॥
सुगभीर गर्जनथी कंपावीने गगन मेदिनी महेशनो महद् यश विस्तारो, वारिद. सहु मळि मळि गाओ. १
प्रबल सिंधु उत्तरंग पर्वत सरित वनराजि, अभि तुषार कोई न करो विराम; जेटला विहंग चित्रविचित्र सर्वे आनंद रवे, गाओ विश्वविजयी ब्रह्मनाम. सहु मळि मळि गाओ तेने० २

पद.

राग काफी, ताल एकताल. चाल, धरिाना पदनी.

अपराध अमारारे, कृपा करी क्षमा करो,
शरणागत जाणिनेरे, विनति चित्तमांही धरो. अपराध०
दुष्ट विकारोनि जाळ विंटाइ विश्व, केम करी थाय उद्धार;
कृपाघना कृपादृष्टि करो तो, नव लागे कांइ वार;
वारे आवो मारेरे, भरुसो आपनो छे खरो. अपराध० १

पुण्य कर्म कांइ किधुं नथी अमे, पातकथी भरपूर;
प्रेम थकी प्रभु पावन करशो, दुर्गतिथी राखो दूर;
नूर निरखूं तारुंरे, निर्मळ मारि वृत्ति करो. अपराध० २
असन्मार्गथी सन्मार्गे चडावो, सहाय रहो जगदीश;
वहेमतणो दृढ बंध छोडावो, विनवुं नमावी शीश;
ईश अविनाशीरे, मनना मनोर्थ पूरो. अपराध० ३
मात तात सर्व हाथ तमारे, विश्वतणा सर्व तंत्र;
सत्ता थकी सृष्टियंत्र चलावो, सर्व कार्य करवा छो स्वतंत्र;
त्रिभुवन त्रातारे, त्रिविध संताप हरो. अपराध० ४

पद.

राग खमाच जिल्हो. ताल एक ताल. चाल, सच्चिद्घन ब्रह्मदेव.

शान्ति शान्ति शान्ति प्रभु शान्ति सदा आपो,
परम कृपा करी कृपाळ कलुष क्लेश कापो. शान्ति०
गहन गगन सदन भुवन, औषधि जळ वह्नि पवन;
शान्ति आपि सर्व करो, नाथ क्षमा पापो. शान्ति० १
शरण आवि विश्वनाथ, वंदन करि जोडि हाथ;
सर्व जपे भक्त साथ, शान्ति सूक्त जापो. शान्ति० २
करुणामय दृष्टि करो, हृदयतिमिर सर्व हरो;
मनवाञ्छित अर्थ पुरो, सुणि तमे विलापो. शान्ति० ३
जपि तमारुं पुण्य नाम, करिये तमने प्रणाम;
सत्य ब्राह्मधर्म सकळ, देश विषे स्थापो. शान्ति० ४

आरति.

जयदेव जयदेव जय सत्यानंता जय सत्यानंता;
सच्चिद्घन शिव शान्ता (२), जय करुणा कान्ता. जयदेव० ॥१॥
जन्म रहित जगदीश, जन मंगलकारी (२)
सत्य शुद्ध अविकारी (२), सात्विक गुणधारी. जयदेव० ॥२॥
सृष्टि यंत्रमां नाथ, छे अद्भुत युक्ति (२);
निरखि अमे सहु करिये (२), सत्य पराभक्ति. जयदेव० ॥३॥
निर्मल नदीना स्रोत, सृष्टि विषे व्हे छे (२);
प्रभु उपकार प्रमाणो (२), पूर्णपणे दे छे. जयदेव० ॥४॥
वृक्ष वेलि फळ पुष्प, अति सुंदर शोभे (२);
प्रभुगुणगणना करतां (२), मन वाणी थोभे. जयदेव० ॥५॥
भक्ति विना कदि नाथ, नहिं मुक्ति मळशे (२);
प्रभु करुणाथि अमारां (२), सहु पातक टळशे. जयदेव० ॥६॥
धन्य तमे महाराज, मंगल गुण धारो (२);
अति दुस्तर दुर्गम आ (२), भवसागर तारो. जयदेव० ॥७॥
राखि तमारो लक्ष, शुभ नामो स्मरिये (२);
शरणापन्न थई सहु (२), अभिवंदन करिये. जयदेव० ॥८॥



अंक २३ मो.

भुजंगी.

परब्रह्म मुक्ति प्रदाता दयाळ, जुओ प्रेमभावे तमे सर्वकाळ;
सदा प्राणिने पाळशो प्राणनाथ, नमस्कार स्वीकारशो विश्वनाथ. १
नियंता तमे नाथ छो सत्य एक, रचीछे तमे सृष्टि शोभा अनेक;
स्वयंभू तमे सर्व लोकाधिनाथ, नमस्कार स्वीकारशो विश्वनाथ. २
प्रभुप्रेमथी पाप संताप जाय, प्रभुप्रेमथी चित्तने शान्ति थाय;
तमारो अमे मागिये नित्य साथ, नमस्कार स्वीकारशो विश्वनाथ. ३
कृपादृष्टि पूरी तमारी जणाय, रह्योछो तमे सर्वकाळे सहाय;
सदा सन्मति प्रेरशो मात तात, नमस्कार स्वीकारशो विश्वनाथ. ४
तमे विश्वमां व्यापिने नाथ रो'छो, रुडां कार्य सर्वे कृपाथी करोछो;
जगत्सूत्र सर्वे तमारेज हाथ, नमस्कार स्वीकारशो विश्वनाथ. ५
दयाभावथी सर्व दोषो निवारो, भवाब्धियकी धर्मनौकाथि तारो;
विनंती करुंछुं प्रभु जोडि हाथ, नमस्कार स्वीकारशो विश्वनाथ. ६
तमे शुद्ध छो नित्य कल्याणकारी, तमे निर्विकारी सदा ऊपकारी;
तमे इंद्रियातीत छो सत्यनाथ, नमस्कार स्वीकारशो विश्वनाथ. ७
महानंदथी गाइये ब्रह्मगान, कृपाकान्त देशो तमे दिव्य ज्ञान;
अमारी विनंती सुणो दीननाथ, नमस्कार स्वीकारशो विश्वनाथ. ८

ॐ तत्सत् परमात्मने नमः

सत्यं ज्ञानमनन्तं ब्रह्म ॥ आनंदरूपममृतंयद्विभाति शान्तं शिवमद्वैतं शुद्धमपापविद्धम् ॥

तमे सत्य, तमारी सर्व ठेकाणे सत्ता छे, तमे ज्ञानरूप तमारुं ज्ञान सर्व ठेकाणे प्रकाशी रह्युं छे. तमे अनंत, तमारो आरंभ नथी, तमारी समाप्ति नथी, तमे देशकालथी अतीत सर्वव्यापी छो. तमे आनंद, अमृत, तमे, दुःखितने सुखी करो छो, तमे मृत्युनी यातनानो परिहार करो छो, परितापित प्राणियोनां मन शान्त करो छो. तमे शिव मंगल छो, आ जगत् तमारी दयानो महिमा गाय छे. तमे अद्वितीय, तमारा समान बीजुं कोइ नथी, आ समस्त जगत तमे एकलाए उत्पन्न कर्युं छे. तमे शुद्ध अपापविद्ध, पवित्र निर्मलस्वभाव छो, तमारा पुण्यनुं तेज एवुं छे के तेनुं एक किरण प्राप्त थाय तो पापीना हृदयनो अंधकार दूर थाय छे. एवा परम पवित्र सर्व शक्तिमान् देव तमे पापीनुं परित्राण करो छो, अमारां ऐहिक पारत्रिक कल्याण करनार तमे छो, तमे एकज अमारा स्तवनीय, संभजनीय, उपास्य तथा आराध्य देव छो. अमे तमारे शरणे आवीने तमने वंदन करिये छिये.

हे परमात्मन् ! तमे एवी करुणा करो के तमारुं सौन्दर्य अमे सर्वदा अमारा हृदयमां धारण करी शकिये. ग्रह, तारा, सूर्य, चंद्र, विद्युत्, ए सर्व ज्योतियोना ज्योति तमे छो. तमारा ज्योतिथी आ

जगत् संसार उज्ज्वळ तथा प्रकाशित थई रह्युं छे. तमे अमारा नेत्रना ज्योति छो, तमे अमारा आत्माना ज्योति छो. तमारुं भर्ग एटले तेज अति वरेण्य छे. अमारा पूर्वकाळना ऋषिगणो गायत्री मंत्रथी तमारा परम ज्योतिनी ध्यानपूर्वक प्रार्थना करता हता के "तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमही धियो योनः प्रचोदयात्" ईश्वरना श्रेष्ठ तेजनुं ध्यान करिये छिये, ए ईश्वर अमारी बुद्धिने प्रकाशित करी सत्कर्मानुष्ठानमां प्रवृत्त करो. हे करुणानिधान! अमारी बुद्धिना प्रकाशक परमेश्वर! अमे तमने शरणापन्न थया छिये. तमे अमारा आत्मामां शुभ बुद्धि प्रदान करी तमारो मंगलभाव प्रेरो. आ संसारमां अनेक प्रकारनां भय, त्रास तथा दुःख प्राप्त थाय छे, ते समये तमे मात्र अमने शान्ति आपोछो. आ भवसागर भयानक लागेछे, परन्तु अमारुं लक्ष तमारा उपर रहेछे, अमारो तमारा उपरनो विश्वास तथा प्रीति शिथिल नथी थतां, अने सर्वकाल तमारो ज्योति अमारा अंतःकरणमां बिंबित रहेछे, तो संसारनी भीति नष्ट थईने अमारा हृदयमां शान्ति वास करेछे, अमारामां धैर्य तथा धर्मबल वधेछे. आ तमारा मंगल तथा दयालु गुणनुं अमे शुं वर्णन करी शकिये? क्यां तमारो महिमा अने क्यां अमारी शक्ति! अमे अल्पज्ञ क्षुल्लक पामर प्राणी तमारी करुणा विना तमारी सहायता विना अमारुं जीवन चलाववाने अमारामां स्वतंत्र सामर्थ्य नथी. पापस्मरण अमारा मनने क्षोभ पमाडी लज्जायमान करेछे. सद्गति थवानो मार्ग सूझतो नथी. तमारी

उपासनामां मनोविकार आडे आवेछे. माटे हे प्रेमवत्सल विश्वंभर भगवान्! अमारी विनति ए छे के अमने सत्कर्म करवानुं बल आवे अने तमारा उपकारनुं अमने स्मरण रहे एवो तमारो प्रसाद विस्तीर्ण करो. अमे सहकुटुंब परिवार तमनेज पूज्य, उपास्य गणीने तमारुं आराधन भजन करिये. महर्षियो तमारां महामंगल सहस्र नामथी तमारा गुणनुं वर्णन करी तमारी उपासनामां प्रवृत्त हता. अमारी आर्यभूमि आ समयमां धर्महीन भक्तिहीन तथा श्रद्धाहीन थईछे, माटे हे दयामय ईश्वर! दया करो, अमने तथा अमारा मनुष्य भाईयोने सद्धर्मनी प्रेरणा करो, तमारा मंगल पथे जवाने अमने सामर्थ्य आपो, तमारी कृपाछायानो आ जगत्‌मां विस्तार करी आ देशमां तमारुं सत्य ज्ञान प्रकाशित करो. अमारा दुःखित आत्माने तमारी कृपा तथा शान्तिजलथी शीतळ करी अमने तमारी उपासनामां प्रवृत्त करी आ अमारी प्रार्थना कृपा करी स्वीकारशो.

॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

॥ ॐ एकमेवाद्वितीयम् ॥

दिंडि २३.

महामंगळ प्रभु नाम जपूं तारूं, सर्वकाल नाथ सन्निधान धारुं;
सेवुं प्रेमभक्तिभाव उपचारे, दयानाथ विना कोण मने तारे. १
नथी नाथ किधुं पुण्य धर्म दान, केम पामि शकुं प्रभुसमीप मानः
पुत्र स्नेह भाव राखि तुं उगारे, दयानाथ विना कोण मने तारे. २
वयहां जाउं नाथ कोण प्रते धाऊं, माततात जाणि समिप दोडि आवुं;
करुं रुदन दुःख मारुं तुं निवारे, दयानाथ विना कोण मने तारे. ३
विना प्रेम प्रभु क्षेम केम पामुं, नहीं नाथ जुवो मारि कृति सामुं;
विश्वसिंधु विषे मोह जाल भारे, दयानाथ विना कोण मने तारे. ४
भुली भान किधो वहन वृथा काल, द्वार आवि तने वंदुंछुं दयाल;
किधो अंध मने नाथ षड्विकारे, दयानाथ विना कोण मने तारे. ५
खरुं शरण तारुं छे दयानिधान, प्रणमि मागुं सत्य धर्म सत्य ज्ञान;
विनति शुं करुं हुं नाथने वधारे, दयानाथ विना कोण मने तारे. ६

शार्दूलविक्रीडित.

जेने शैव जनो पुजे शिव कही, वेदान्तमां ब्रह्म जे,
बौद्धो बुद्ध कही पुजे, जिन जनो अर्हन्त जेने कहे;
माने जैमिनि सूत्रने अनुसरी मीमांसको कर्मने,
कर्ता सत्य प्रमाण शास्त्रथि कहे नैयायिको जेहने. १

शांडिल्यादि महर्षियो कहि गया, छे सृष्टिथी भिन्न जे,
स्वामी सेवक भाव राखि विभुने श्रद्धा थकी जे पुजे;
एवो देव अचिंत्य सत्य सघळे सत्ता थकी व्याप्त जे,
पूरे छे मन वाञ्छितार्थ सघळा त्रैलोक्यना नाथ ते.　　२

जे छे एक अवर्ण ते वहुविधे सृष्टि सृजे शक्तिथी,
जे छे आद्यवसानमां जगतना जेना विना को नथी;
जे पूरे घटितार्थ सर्व जिवना, सर्वेश सिद्धिप्रदा,
ते आपी शुभ बुद्धि नित्य अमने, सत्कर्म प्रेरो सदा.　　३

चंपकमाला.

देव दयाळा शान्तिप्रदाता, सत्य चिदात्मा सृष्टिविधाता;
आवुं तमारे द्वार हुं दोडी, वंदुं दयासिंधु करजोडी.　　१
पातक सर्वाध्यक्ष शमावो, उन्नतिनो सन्मार्ग वतावो;
कोइ नथी बेली प्रभु मारो, आश्रय मारे सत्य तमारो.　　२
दर्शन देशो नाथ तमारां, मंगळ कार्यो थाय अमारां;
पाप अमारां कोण निवारे, शीघ्र तमे आवो मुज वारे.　　३
बोलुं शु हुं जाणो प्रभु सर्व, नाथ मने शुं हुं करुं गर्व;
चंचळ मारुं चित्त फरेछे, विह्वल ते नित्ये बहु रे'छे.　　४
शान्त थशे ते ब्रह्म कृपाथी, सत्य तमे मारा छो साथी;
पूर्ण कृपाभंडार तमे छो, संकट सर्वे दूर करोछो.　　५

दीन जनोनो हाथ ग्रहोछो, योग्य अमारा अर्थ पूरोछो;
धारुं तमारुं मंगल ध्यान, देव दयाथी द्यो वरदान. ६

नाथ नथी धर्ता अवतार, चिद्घन पूर्णात्मा अविकार;
वेद पुराणो सिद्ध करेछे, एक अनाद्यतेश कहेछे. ७

ते परमात्मा पूज्य अमारो, दूर करेछे दुष्ट विचारो;
देव तमे छो मंगलकारी, व्यापक सत्ता सर्व तमारी. ८

नाथ अमे कीधा बहु दोषो, ते करुणासिंधु नव जोशो;
दीन मने देशो शुभ बुद्धि, थाय अमारा ज्ञाननि वृद्धि. ९

पूर्ण कृपा जो थाय तमारी, दुष्कृति सर्वे जाय अमारी;
दुष्ट विकारो बाध करेछे, व्याकुलता चित्ते बहु रे'छे. १०

दुर्गुणथी राखो प्रभु दूर, सहरशो वृत्ती मुज क्रूर;
दास तमारो जाणि निभावो, सद्गतिनो सन्मार्ग बतावो. ११

पाय पडी वंदुं हुं देवा, सर्व ग्रहो स्वामी मुज सेवा;
शान्तिसुधाधारो वरसावो, नित्य कृपादृष्टि दरसावो. १२

इंद्रवंशा.

राजाधिराजा प्रभु सृष्टि नायक, त्राता तमे शाश्वत शान्ति दायक;
व्यापी रह्या व्यष्टिसमष्टिमंडल, मागुं सदा ब्रह्म कृपा हुं केवल. १

लज्जा तमे राखि मने निभावशो, सद्धर्मनो मार्ग सदा बतावशो;
राखो मनोवृत्ति अमारि निश्चल, मागुं सदा ब्रह्मकृपा हुं केवल. २
जाणो अमारा हृदयाशयो सहु, माटे वधारे तमने हुं शुं कहुं;
अज्ञान छुं बालक नाथ निर्बल, मागुं सदा ब्रह्मकृपा हुं केवल. ३
लक्षावधी दोष किधा प्रभु अमे, सर्वे शमावो करुणा करी तमे;
आवुं समीपे मुखथी हुं उज्ज्वल, मागुं सदा ब्रह्मकृपा हुं केवल. ४
माता शिशूनो हृद्भाव जाणि ले, जे योग्य लागे प्रभु ते पदार्थ दे;
ए भावथी द्यो प्रभु ज्ञाननुं बल, मागुं सदा ब्रह्मकृपा हुं केवल. ५
बाधे विकारो मनना मने घणा, वेगो बहु दुःसह इंद्रियोतणा;
राखे सदा वृत्ति अमारि चंचल, मागुं सदा ब्रह्मकृपा हुं केवल. ६
आपो परात्मा परमार्थसाधन, थाउं कृपानाथ कृपाथि पावन;
वर्सावशो नित्य तमे कृपाजल, मागुं सदा ब्रह्मकृपा हुं केवल. ७
तारी कृपावीण प्रसाद ना मळे, तारी कृपावीण विपत्ति ना टळे;
तारी कृपावीण प्रयत्न निष्फल, मागुं सदा ब्रह्मकृपा हुं केवल. ८
संसारना ताप नडे मने बहु, मातापिता विस्तरिने शुं हुं कहुं;
मारुं रहेछे बहु चित्त व्याकुल, मागुं सदा ब्रह्मकृपा हुं केवल. ९
शीर्षे अमारे वर हस्त थापशो, संसारना ताप समस्त कापशो;
राखो सदा दृष्टि तमारि प्रेमल, मागुं सदा ब्रह्मकृपा हुं केवल. १०
पादारविंदे प्रणमुं परात्परा, पापक्षमा मागुंछुं हुं महेश्वरा;
वृत्ति करो नाथ अमारि निर्मल, मागुं सदा ब्रह्मकृपा हुं केवल. ११

स्वीकारशो तमे सर्व कृपानिधि, आराधना आ समये अमे किधी;
देशो तमे दर्शन नित्य मंगल, मागुं सदा ब्रह्मकृपा हुं केवल. १२

मालिनी.

गुण अवगुण मारा, स्वामि जाणो अशेष,
विनति करि विभुने, शुं कहुं हुं विशेष;
प्रणमि प्रभु पदाब्जे, गाउंछुं धन्यवाद,
अविरत हुं तमारा, पामुं पूर्ण प्रसाद. १

जयजय जगत्राता, सर्व शान्ति प्रदाता,
जयजय पितुमाता, विश्वपाता विधाता;
दुरितकृतिनिहंता, छो तमे मात्र एक,
वरद विभु करोछो, नित्य प्रेमाभिषेक. २

उपजाति.

जगत्पिताने करुंछुं प्रणाम, पूरो तमे मंगल सर्व काम;
जपी तमारां हुं सहस्र नाम, पामुं परब्रह्मपदे विराम. १
अतर्क्यनी शुं स्तुति पूर्ण थाय, वाणी अमारी विभु थाकि जाय;
कृपाघना स्वामि समर्थ सत्य, मागुं परब्रह्मकृपा हुं नित्य. २

गायन.

पद.

मल्हार. ताल चौताल.

गाइये तमारुं नाम, रच्युं छे जेणे विश्व धाम,
दयानो ज्यां नथी विराम, वरसे नियत धारा. गाइये०
ज्योति जेनी गगन गगन, कीर्ति व्यापी अतुल भुवन,
प्रीति जेवी पुष्पित वन, कुसुमित रंग सारा. गाइये०
जेनो गुण पारस रतन, पापी जन मन ताप शमन,
प्रसाद जेनो प्रणत भक्तजन सुख दाता;
अंतहीन निर्विकार, महिमा प्रभु अपार,
मुनिजन मन वचन थाके तारा यश गुण गातां. गाइये०

पद.

राग खमाच मिश्र काफी जिल्ली. ताल त्रिताल.

चाल, प्राणपति सुणो विनति अमारी.

दयाघना दीनपर कर करुणा—कृपाघना०
वंदुं दयासिंधु दीनबंधु,
करि शुभ मंगल नामस्मरणा. दयाघना० १
अतिशय में अपराध किधा छे,
पावन करो प्रभु पतितोद्धारणा. दयाघना० २

अंतरनो जाणो छो आशय,
पूर्ण करशो विभु अघसंहरणा. दयाघना० ३

शांति सदा आपो सर्वेश्वर,
तूज शरण रहुं अशरणशरणा. दयाघना० ४

पद.

राग सोरठ. ताल त्रिताल.

कृति नव जोशो, कृति नव जोशो, कृपाघना प्रभुरे; कृतिनव.
अज्ञानी अति अल्प हुं प्राणी, करुं क्षण प्रतिक्षण दोषो. कृति
निर्मल वृत्ति विभु करो मारी, सुणि मूज प्रार्थनघोषो. कृति
साष्टांगे वंदी मागुंछुं, आपो प्रभु चितसंतोषो. कृति

पद.

राग खमाच जिल्हो. ताल त्रिताल. चाल ठुमरी.

अभिवंदन ब्रह्मपदे हुं करुं, शरण रही शुभ ध्यान धरुं. १
परमात्मा परमेश तमारुं, मंगल नाम सदा हुं स्मरुं. अभि० २
हृदय विशे विश्वेश तमारी, प्रेमल भक्ति हुं पूर्ण भरुं. अभि० ३
दुस्तर भवसिंधु प्रभूनी, परम कृपाथि हुं सत्य तरुं. अभि० ४

आरति.

जयदेव जयदेव जयजय जगकर्ता, जयजय जगकर्ता;
जगधर्ता जगभर्ता (२), भयसंकट हर्ता. जयदेव० ॥१॥
जे छे सत्य स्वरूप, जनमंगलकारी (२);
स्वेच्छाथी सरजावो (२), सृष्टि सकल सारी. जयदेव० ॥२॥
विश्वनाथ महाराज, मंगलगुण धारो ((२);
जगरचनामां दीसे (२), प्रभुना उपकारो. जयदेव० ॥३॥
नथि अवयव न शरीर, अक्षत अविकारी (२);
शुद्ध समर्थ परात्पर (२), ईश्वर उपकारी. जयदेव० ॥४॥
अज्ञानी जन मूढ, पूजे जडप्रतिमा (२);
मंगलनिधि ईश्वरनो (२), नव जाणे महिमा. जयदेव० ॥५॥
अधम[१] जीव ते जाय, सत्य निरय सदने (२);
ईशोपनिषद् बोले (२), सिद्ध श्रुति वचने. जयदेव० ॥६॥
प्रकृतिपरेश महेश, मंगलमय देवा (२);
मानसि अर्चन विधिथी (२), करुं हुं प्रभु सेवा. जयदेव० ॥७॥
सेवकजन संभाळ, करुणा करि लेशो (२);
आशीर्वाद तमारो (२),प्रभु अमने देशो. जयदेव० ॥८॥

---

१ अंधं तमः प्रविशन्ति येऽविद्यामुपासते (ईशोपनिषद्मंत्र ८) जे अव्यक्त प्रकृति (अविद्या) नी उपासना करे छे ते अन्ध तम (नरक) मां जाय छे.

अंक २४ मो.

कामदा.

सत्य देव हे शान्तिकारक, सर्व प्राणिना प्राणतारक;
शक्तिथी तमे सृष्टिधारक, पुण्यकारि छो पापहारक. १

द्वार आविने याचिये अमे, सांभळो प्रभु प्रार्थना तमे;
शान्ति आपशो सर्वदा हृदे, वंदिये अमे प्रीतिथी पदे. २

प्रेरशो तमे वृत्ति निर्मल, राखशो सदा दृष्टि प्रेमल;
आपशो तमे धर्मनुं बल, भक्तिमां रहे चित्त निश्चल. ३

ए अमारि छे नाथ प्रार्थना, पूर्ण ते करो हे कृपाघना;
मंगलानना ब्रह्म पावना, भक्तपालना पापमोचना. ४

द्यो दयार्णवा देव दर्शन, पाप तापनुं थाय मर्दन;
प्रेम भावथी भक्तमंडल, गाईये मळी गान मंगल. ५

शुद्ध शान्त छो विश्वना पिता, मात्र छो तमे पूज्य देवता;
अर्पिये अमे ब्रह्म पादुका, पूर्ण प्रेमनी पुष्पमालिका. ६

दीन दासने द्यो सहायता, सर्व वाञ्छना पूरशो पिता;
दुष्ट वासना नाश संहरो, पुण्य प्रेरणा सर्वदा करो. ७

धन्य धन्य छे धन्य आ सभे, नाथ सन्निधे आविये अमे;
दीन वत्सला सत्य कामदा, दृष्टि राखशो प्रेमनी सदा. ८

हे परमात्मन्! तमारा महिमानुं किये प्रकारे वर्णन करिये? क्यांथी आरंभ करिये अने क्यां समाप्त करिये? आ देशना महर्षिमुनिगणो वेद मंत्रथी तमारो महिमा गातां गातां विराम पाम्या, परन्तु तमारा गुणनो, तमारी अगाध शक्तिनो पार पामी शक्या नथी. तमारी आश्चर्यकारक शक्ति तथा जड जगत्नी रचना जोई दीन भावथी तमारे शरण आवी तमे एक अधिपति अगोचर, सत्य, महासमर्थ देव आ जगत्ना कर्ता तथा पालन कर्ता तथा भक्तजनोनुं ऐहामुष्मिक श्रेय तथा कल्याण करनार छो एम सिद्ध करी गयाछे. परन्तु दुर्दैवथी सांमतकालमां आ देशनी धर्म संबंधी स्थिति सर्वथा बगडी गइ, पाखंड तथा खोटा सांप्रदायिकोए सत्य धर्मने उच्छिन्न करी नांख्योछे, ते माटे अमारो आक्रोश सांभळी आ देशमा तमारा सत्य अने मंगल धर्मनो जीर्णोद्धार करी लोकोने धार्मिक तथा सदाचारी करो.

हे जगन्नियंता! तमारो आदि नथी, अंत नथी. आ जगत् नहोतुं ते समये पण तमे हता. तमे स्वेच्छाथी आ जगत् सरज्युंछे. तमारुं अस्तित्व तथा सर्वव्यापीपणुं आ सृष्टिनी यथाघटित रचना उपरथी सिद्ध थायछे. तमे पुत्रस्नेहभावथी अमारुं संरक्षण करोछो ए तमारा उपकारनुं केटलुं वर्णन करिये? तमारा प्रेमजलना अमे पिपासु छिये, कृपा करी अमने तमारा प्रेमामृतनुं पान करावो. अमारुं चित्त सदा शान्त रहे, विकारोने वश न थाय एवुं साधन अमने बतावो.

दयामयपिता ! आ संसारमां तमे अमने जन्म आपीने अमारुं कर्तव्य शुं छे ते, तथा परलोकमां तमारी प्राप्ति थवाने कियां साधनो छे तेनी तमे अमने प्रेरणा करो छो; परन्तु मनोविकारे अमने छेक दबावी नांख्या छे, अमारी मति मंद थई छे, अमने उन्नतिनो मार्ग जडतो नथी, माटे कृपा करीने अमारा अंतःकरणना अंधकारनो नाश करी, तमारी ज्ञानज्योत्स्ना प्रकाशित करीने अमारी कर्तव्यता शी छे ते जाणवानी तथा करवानी अमने शक्ति आपी अमारो उद्धार करशो. तमारो प्रसाद मेळववानुं मुख्य साधन तमारी पराभक्ति छे. एनुं माहात्म्य तथा सामर्थ्य एवु छे के श्रद्धापूर्वक तमारी उपासना तथा प्रार्थना थाय तो आ संसारमां रहीने आत्मानी उन्नति करी शकाय, तथा तमारा सान्निध्ये रही शकाय. माटे हे जगदीश्वर ! अमारी बुद्धि निर्मल करो. अमने एवो उपदेश करशो के अमे कोइ साथे द्वेष तथा वैर राखिये नहिं, अमारो द्वेष कोइ करे तो तेनी क्षमा करिये, तमारी शुद्ध भक्ति तथा अमारुं कर्तव्य करतां लोक अमारी निंदा करे, तथा अमने दुःसह दुःख आपे तथापि अमारा धर्मनो त्याग करिये नहिं.

हे भगवन् ! आ जगत्मां अज्ञानी लोकोनो समुदाय घणो छे. लोकोनी तथा तमारी ए रीते बन्नेनी प्रीति मेळवी शकाती नथी. एवां घणां काम छे के तमारा आदेश तथा शिक्षा विरुद्ध चालिये तो लोको प्रसन्न रहे, पण अमे लोकनिंदानो भय न राखतां तमारीज कृपा तमारीज प्रीति संपादन थाय एवां काम

करिये एवुं बल आपो. अने तेम करवाथीज अमारा आत्मानो अभ्युदय थइने पारमार्थिक लाभ थशे ए सिद्ध छे.

हे प्रभो! अमे नित्ये तमारी आराधना करिये, तमारुं ध्यान भजन कर्या विना अमारा दिवस खाली जाय नहिं, तमारी पासे आववाने योग्य थइये, एवां मंगल विधानोनी सर्व काले प्रेरणा करता रहेशो एवो अमे तमारो आशीर्वाद मागिये छिये ते आपी अमारुं आ लोक तथा परलोकमां कल्याण करशो.

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ।

॥ ॐ एकमेवाद्वितीयम् ॥



दिंडी २४.

जगतरूपि शास्त्र ग्रंथ छे पवित्र, घटित नियम एज छे प्रभु चरित्र;
नथी ईश्वरकृत कोइ शास्त्रग्रंथ, सारग्रहण एज सत्य धर्मपंथ. १

पूर्ण नियम थकी मनुष छे अजाण, सर्व वचन तेमनां नहीं प्रमाण;
भिन्न भिन्न वचन ऋषि वदे अनेक, सदाचरण सत्य धर्म ए विवेक. २

नथी ईश्वरकृत जातितणा भेद, मनुषजाति सर्व एक छे अभेद;
बंधु जाणि सर्वने थवुं सहाय, परब्रह्म प्रेम प्राप्ति सत्य थाय. ३

वर्ण आश्रमनुं छे वृथाभिमान, मूर्खताथि भुले मनुष,आत्म भान;
सर्व पुत्र मात तातने समान, भिन्न भावनाथि कोपशे निदान. ४
सर्वमां समान वृत्ति एज धर्म, भ्रातृभाव विना सर्व वृथा कर्म;
बंधुप्रीति मने नाथ सदा देशो, विनति मारि अंगिकार करी लेशो.५

वसंततिलका.

जे सत्यरूप शिव मंगल शान्ति दाता,
जे पूर्ण शक्ति थकि सृष्टि समस्त धाता;
जे छे समर्थ करवा शुभ पूर्ण काम,
पामे न जेनि करुणा कदिए विराम. १

जेनो प्रभाव महिमा जगमां जणाय,
जेनी स्तुती सकल शास्त्र विषे गवाय;
जेनो महा यश महर्षि गणो वखाणे,
ने तेज मात्र परिपूज्य समर्थ जाणे. २

जेना प्रताप बलनी तुलना न थाय,
जेनी अलौकिक क्रिया न कळी शकाय;
जेनो स्वभाव करुणामय ऊपकारी,
जे छे पवित्र परमेश्वर निर्विकारी. ३

जेना प्रसाद थकि पाप समस्त जाय,
जेना प्रसाद थकि मंगलकार्य थाय;

जे सत्य नित्य परिशुद्ध विमुक्त ईश,
ते ब्रह्मने चरण नित्य नमावुं शीश. ४

श्री विश्वनाथ स्मरतां भवभीति जाय,
अज्ञान सर्व टळि निर्मल बुद्धि थाय;
दारिद्र्य दुःख भयहारक कोई अन्य,
तारा विना नथि कृपानिधि को शरण्य. ५

सत्ये तमेज प्रभु एक उपास्य मारा,
प्रेमार्घ्य अर्पि गुण गाउं सदा तमारा;
साष्टांग वंदन करुं तमने हुं नित्ये,
सर्वोपकार करशो करुणार्द्र चित्ते. ६

संकेत सर्व प्रभुना शुभ श्रेयकारी,
प्राणी प्रते बहु दिसे करुणा तमारी;
सौन्दर्य ज्योति भुवने गगने प्रकाशे,
ते जोइने मुनिजनो मनमां उलासे. ७

अज्ञानि प्राणि तमने अतिक्रूर जाणे,
गौणार्चनो करि पुजे हुत द्रव्य दाने;
ए अर्चना परम ब्रह्म नहीं स्विकारे,
तेना त्रिवीधि परिताप नहीं निवारे. ८

चैतन्यव्याप्त विभु ते जड केम थाय,
जेनुं स्वरूप नहिं मापथकी मपाय;

जेनाथि श्रेष्ठ नहिं कोइ बिजो वधारे,
ते सत्य देव नहिं मानवि रूप धारे. ९

जे मूढ मंदमति ते जड मूर्ति माने,
पूजे पवित्र प्रभुने अविधी विधाने;
अल्पज्ञ ते जिव रहेज महांधकारे,
ए वाक्य वेद श्रुति सिद्ध करी उचारे. १०

ए गौण भक्तिविधिनो करुं सर्व त्याग,
राखुं पवित्र प्रभुना पदमां हुं राग;
साधुं तमारि प्रभु उत्तम भक्ति नित्ये,
पामे न मार्ग जड भक्ति कदापि चित्ते. ११

आराधना करुं तमारि अनन्य भावे,
स्वीकारशो प्रभु तमे करुणा स्वभावे;
सन्मार्गदर्शक तमे विभु विश्वपाल,
इच्छा अमारि परिपूर्ण करो कृपाल. १२

चामर.

एक अद्वितीय देवने करुं हुं वंदना,
प्रेम अर्घ्य अर्पि सेवुं स्वामि सत्य चिद्घना;
व्यापिने कृपार्णवा तमे त्रिलोकमां रहो,
प्राणि मात्रने करो सदा कृपा अनुग्रहो. १

नाथनी कृपा थकी निवासिये अहीं अमे,
सत्य एक पाळनार तारनार छो तमे;
मंदभाग्य छे अमारुं स्वामिने नहीं भज्या,
पापना विकारने अमे नहीं कदी तज्या. २

आपशो पवित्रता तमे मने कृपा करी,
कापशो कृपाल सर्व पातको तमे हरि,
मात तात छो वधू वदुं शुं हुं फरी फरी,
राखशो तमारि दृष्टि सर्वदा दया भरी. ३

धन्य धन्य धन्य देव धन्य छे कृती वधी,
सृष्टि पाळवा सृज्यां तमे फलान्न औषधि;
मातने स्तने तमे सृजाव्युं प्रेमथी पय,
बालजीवनार्थ ए दया किधी दयामय. ४

व्योममां विराजिने रहे रवींदु मंडळ,
सर्वमां जणाय सत्य नाथनुं बहू बल;
गाउं हुं तमारुं नाम, नित्य भक्तवत्सल,
भक्तिमां रहे कृपाल वृत्ति मारि निश्चल. ५

पुण्यकारि कार्य देव हर्ष भावथी करुं,
प्राण जाय जो कदी तथापि नाथ ना डरुं;
यत्नशील थाउं सत्य धर्मना प्रचारमां,
अर्पुं देह,धैर्यथी सदा हुं धर्मकार्यमां. ६

दृत्ति राखशो सदैव देव मारि निर्मल,
पामुं सत्य इष्ट ब्रह्मनी कृपा हुं केवल;
एक मात्र छो तमे अमारुं सत्य जीवन,
प्रेम भावथी करो समस्त जीव पालन. ७
सत्य धर्म आ पवित्र आर्य देशथी गयो,
शुद्ध भक्तिनो सुमार्ग लेश मात्र ना रह्यो;
भिन्न भिन्न संप्रदाय पंथ धर्मना थया,
लोक शुद्ध सत्य धर्म मार्गने भुली गया. ८
देव हे दया थकी करो कृपावलोकन,
सत्य धर्म पाळि आर्य देश थाय पावन;
हाथ जोडि मागुं हुं विपत्ति दुःख टाळशो,
दीन दासने तमे दयाथि नित्य पाळशो. ९
दुर्विकारनो करुं हुं सर्वथा पराजय,
पामवा प्रसाद योग्य थाउं हुं कृपामय;
विश्वमां वसु सदा दयाथि नाथ निर्भय,
अंतमां हुं पामुं दिव्य पुण्यधाम अक्षय. १०
अर्चना करी जपूं तमारुं नाम मंगळ,
ईश्वर प्रसादथी हुं पामुं यत्ननुं फळ;
प्रेमथी नमी नमी हुं मागुं पापनी क्षमा,
चित्त शान्ति आपशो तमे मने दयाघना. ११

प्रियंवदा.

जगपिता प्रभु करुं हुं वंदना, विनति सर्व सुणशो दयाघना;
सकल सृष्टि प्रभु धारिने रहो, सहु जनो अनुभवे अनुग्रहो. १
प्रभु तमे सरजि आ वसुंधरा, कृति वधी किधि तमे मनोहरा;
मुनिजनो मुदित निरखि थाय छे, नमि नमी प्रभु समीप जाय छे.२
रविशशी दिपि रह्या दयावडे, प्रभुप्रभा सकल वस्तुमां पडे;
हृदयने निकट छो सदा तमे, तदपि देव नहिं देखिये अमे. ३
तिमिर जो हृदयनां वधां जशे, प्रगट कान्ति परमेशनी थशे;
हृदयमां करि तमारुं दर्शन, प्रभुपदे प्रणमिये प्रतिक्षण. ४
गहन छे प्रभु तमारि तो गति, नहिं पुरी करि शकुं प्रभु स्तुति;
जननि तुल्य प्रभु पाळशो तमे, मन मनोर्थ पुरशो वधा तमे. ५
परम देव जगदादि कारण, प्रभु तमे सकल सृष्टि तारण;
अभय दान करुणाथि आपशो, दुरित कर्म प्रभु सर्व कापशो. ६
प्रथमना ऋपिगणो वधा थया, सकल सत्य प्रभुने कही गया;
निरखि सृष्टि रचना सुखप्रदा, स्तुति किधी श्रुति भणी प्रियंवदा. ७
जय जगत्पति परात्परेश्वर, प्रणमुं छुं प्रभु पदे निरंतर;
वशि रहुं तव कृपाद्रुमो तळे, हृदयशान्ति मननी सदा मळे. ८
भवसमुद्रथि मने वचावशो, सुपथ नाथ अमने वतावशो;
प्रभु कृपाजलनिषेचनो करो, विभु व्यथा हृदयनी वधी हरो. ९
अवगुणो नहिं पिता गणो कदी, शिशु तणी भुल क्षमा करो वधी;
शुभ समे करुं छुं हुं उपासना, सुमति द्यो प्रभु तमे कृपाघना. १०

आर्या.

आवी प्रभु तव शरणे, विनति करुं छुं कृपायना तमने;
सत्वर विभु आ भवथी, नाथ उतारो तमे अमने. १
करुणा दृष्टि तमारी, करशो मुज दीन उपर प्रभु नित्य;
सत्य तमे मुज त्राता, प्रभु तमने हुं कहुं सत्य. २
जय जय जय जगदीश्वर, करशो मुज पाप कर्मनी क्षान्ति;
आपो ईश्वर अमने, परमावधि परभवे शान्ति. ३

गायन.

पद.

राग कल्याण. ताल चौताल.

आज सहु गाओ आनंदे तेनुं पवित्र नाम लेई जीवन करो सफल;
सकल हृदयथी आवो भाइयो अमृतने द्वारे, मळशे सारुं फल. आज०
दुर्बल सबल, भीरु अभय, अनाथ गतिहीन थाय सनाथ;
ते प्रेम शशी ज्यारे विकसित करे साधुनां हृदय कमल. आज०१

पद.

राग खमाच जिल्हो. ताल त्रिताल. चाल, ते सविता परब्रह्म प्रभुनुं०

हे जगदीश दयानिधि मुजने दीन जाणी संभाळोरे. ॥०॥
आ दुस्तर भवसागरमां छे, मोह विषयनी जाळोरे;
नथी तरण शक्ति निज बळथी, कृपा करी कर झालोरे. हे जगदी० १

दयाघना दिनवत्सल व्यापक, दास तमारो पाळोरे;
करजोडी मांगूं वरदान हुं, नव जाउं कदि टाळोरे. हे जगदी०

इच्छा ज्ञान क्रिया शक्तिथी, सरज्या सर्ग विशाळोरे;
सर्व वस्तुमां घटित मुक्यो छे, गणित नियमनो ताळोरे. हे जगदी० ३

यथाघटित रचनाथी कीधा, ऋतू भेदना काळोरे;
जिवपोषण अर्थे सरजाव्यां, अन्नोषधी रसाळोरे. हे जगदी० ४

शुभाशुभ कर्मोनो जाणो, सत्य तमे शरवाळोरे;
प्रेम थकी प्रभु सर्व जिवोनी, सदा करो प्रतिपाळोरे. हे जगदी० ५

अंतर्यामि अतींद्रिय ज्ञानी, जिव कृतियो निहाळोरे;
दया करी दिन जन सेवकनी, मलिन मति उज्ज्वाळोरे. हे जगदी० ६

विषय वासनाथी प्रभु मारी, वृत्तिं निरंतर वाळोरे;
कृपाघना करुणा करि मारां, दुःख संकटो टाळोरे. हे जगदी० ७

पद.

राग खमाच जिल्लो, ताल एकताल, चाल, दीननो दयाल छोडी०

एक अद्वितीय पूर्ण ब्रह्मने उपासुं,
सृष्टि नियम निर्खि नित्य चित्तमां उलासुं,
मंगल यश गूण गाई वाणिने विलासुं. एक० १

करणि सर्व मारि विश्वनाथ जो तपासुं,
अल्पमति मंद प्राणी तुच्छ मात्र भासुं. एक० २
आत्मश्रेयप्राप्तिनो हुं नाथ छुं पिपासु,
परम प्रेम भक्तिमां हुं चित्तने अभ्यासुं. एक० ३
सत्य धर्म धारि ज्ञानदीपने प्रकासुं,
प्रभु कृपाद्रुमोलता निचे सदा निवासुं. एक० ४

पद.

राग बिभास अथवा खमाच. ताल झंपा.

जयजय परब्रह्म अपार तमे अगम्य, परात्पर तमे सारात्सार;
सत्यनुं तमे निदान,प्रेमनी अमूल्य खाण,मंगलना तमे मूलाधार.जय.१
नाना रसयुत भव्र, गंभीर रचना तव, अत्याश्चर्य शोभाथी शोभाय;
महाकवि आदिकवि,गाताउठे शशिरवि,गाता पुनःअस्ताचलेजाय.ज.२
तारका कनक माल उज्ज्वळ अक्षर जाल, गीत लेख नीलांबर पाने;
षड्ऋतु संवत्सरे, सतत कीर्तन करे, तव यश सुमधुरताने. जय. ३
कुसुमे तमारी कान्ति, सलिले तमारी शान्ति, वज्ररवे रुद्र तमे भीम;
तव भाव गूढ अति, शुं जाणे मूढमति, ध्यान धरे युगांत असीम. ज.४
आनंदे सहु आनदे, तमारे चरण वंदे, कोटि सूर्य कोटि चंद्र तारा;
रचना निरखि तारि, मोह पामे नरनारि, नेत्रे वहे आनंदाश्रुधारा. ज.५
मळी नरनारी सहु, प्रणमिये तने विभु, तमे सर्व मंगल आलय;
द्यो ज्ञान, द्यो प्रेम, द्यो भक्ति, द्यो क्षेम, द्यो द्यो तत्पद आश्रय. जय.६

आरति.

जयदेव जयदेव जय सत्यानंदा, जय सत्यानंदा;
सर्वोत्तम सुख कंदा (२), जयजय जगवंद्या. जयदेव० ॥१॥
अजर अमर अविचिंत्य, विश्व विषे व्यापो (२);
संध्या समये करिये (२), प्रभु मंगल जापो. जयदेव० ॥२॥
शान्त दान्त शिवरूप, अद्वय अविकारी (२);
सुंदर रचना शोभे (२), सृष्टि विषे सारी. जयदेव० ॥३॥
सकल वस्तुमां नाथ, दीसे शुभ कान्ति (२);
स्तवन भजन कीर्तनथी (२), मळशे चित शान्ति. जयदेव० ॥४॥
मागीए महाराज, मंगल गुण देशो (२);
नम्र विनंति अमारी (२), प्रभु लक्षे लेशो. जयदेव० ॥५॥
प्रभु इच्छा अनुकूल, अनुवर्तन करिये (२);
अनुग्रह सर्व तमारा (२), कदि नव वीसरिये. जयदेव० ॥६॥
सर्व विदित छे नाथ, विस्तरि शुं कहिये (२);
पुण्य कर्म करि संतत (२), प्रभु सन्निध रहिये. जयदेव० ॥७॥
मंगलमय महाराज, आराधन करिये (२);
आरति गाइ तमारी (२), शिष चरणे धरिये. जयदेव० ॥८॥



अंक २५ मो.

अभंग.

जयजय देव, जय जगवंद्य; शान्ति सुखकंद, सत्यानंद. १
अमे अल्प प्राणी, रह्या अंधकारे; कष्ट कोण टाळे, प्रभु विना. २
विश्वास तमारो, अमने छे भारे; आव्या तव द्वारे, आशा राखी. ३
सर्वशक्तिमान, तमे कृपावान; तमे क्षमावान, भगवान. ४
भव मोह पाश, कृपा करि कापो; शान्तिसुख आपो, परब्रह्म. ५
गाइये तमारां, मंगळ कीर्तन; करशो श्रवण, कृपाघन. ६
आश्रित जनोने, दूर नहिं राखो; दयानिधि दाखो, दिव्य ज्योति. ७
सुंदर सुरम्य, शुभ आ समय; पधारो हृदय, प्रेममय. ८

ॐ तत्सत् परमात्मने नमः ।

एको देवः सर्वभूतेषु गूढः ।
सर्वव्यापी सर्वभूतान्तरात्मा ॥

अद्वितीय परमेश्वर सर्व वस्तुमां गूढ रूपे रहेलो छे, ते सर्वव्यापी तथा सर्वनो अंतरात्मा छे. प्रत्येक देशमां प्रत्येक काळे विराजमान छे. एवा मंगलनिधान परमेश्वरने शरणापन्न थइ तेनी प्रार्थनामां प्रवृत्त थइये.

हे परम इष्ट परमगुरु परमदेव ! तमारा महिमानुं, तमारा मंगळ गुणनुं, तमारा उपकारनुं तथा तमारी शक्तिनुं स्मरण करवाथी, अमारी निर्बळतानो तथा अपवित्रतानो तथा पातकोनो अमने अनुभव थाय छे, अने अनुतापित चित्तथी तमारी दया तथा क्षमा मागवानी अमने स्वाभाविक इच्छा थाय छे.

हे जगदीश्वर ! तमारी प्रार्थनाद्वारा तमारी पवित्रता आत्मामां अवतीर्ण थाय छे अने मनोविकार सर्वे नाश पामे छे. जीवननी गति बदलाई जाय छे, पापनो भार हलको थाय छे. माटे तमारा प्रते अमारो भक्तिभाव उदय करो. जेटलो ए भाव दृढ थशे तेटलो मननी अंदर पुण्यभाव वृद्धि पामशे. एटले सुधी के आ पृथ्वीमांज संपूर्ण जीवन्मुक्त जेवी अवस्था प्राप्त थईने परमात्मामां अमे निवास करी शकीशुं. शारीरिक क्लेशथी अथवा तीर्थद्वारा तमारो लाभ मळवानो नथी. केवल मननो जय करवाथी ए लाभ प्राप्त थाय छे, माटे हे परमात्मा ! अमे मननो जय करिये. सर्व मोहथी मुक्त थइये, मात्र तमारी मंगल इच्छाने आश्रित रही आध्यात्मिक योगथी तमारो प्रसाद तथा प्रेम संपादन करिये, एवी अमारा मनने दृढता आपी अमारा आत्मानो उत्तरोत्तर अभ्युदय करो. तमारी भक्तिथी मन पवित्र थई ब्रह्मानंद प्राप्त थाय छे.

हे जीवनदाता जगदीश्वर ! मात्र तमने अमे अमारा उपास्य, तथा पूजनीय देव मानिये छिये. बीजा कोइ देव वा मनुष्य

अथवा जड मूर्तिनी आराधना करवी ए खरी उपासना तथा पवित्र भक्ति नथी ए अमे निश्चयात्मक जाणिये छिये. तमारी सत्य भक्ति करीशुं तो अमे कोइपण अवस्थामां निराश थवाना नथी. हे प्रभो कृपा करी अमारी वृत्ति निर्मल करो के तमारां दर्शन करिये तमारा आदेश सांभळिये.

तमे एक मात्र आ सृष्टि उद्भवलय कारण छो. तमे एने धारण करी रह्या छो. तमे जगत्‌नुं परिपालन करो छो. तमे शान्त सौम्य स्वतंत्र समर्थ छो. तमारी कोइने उपमा आपी शकाती नथी "न त्वत्समोऽस्त्यभ्यधिकः कुतोन्यो लोकत्रयेप्यप्रतिमप्रभाव" हे अतुल पराक्रमी परमेश्वर! त्रणे लोकमां तमारा जेवो बीजो कोइ नथी, तो तमाराथी चढतो क्यांथी होय? आवां वचनथी भगवद्भक्त जन तमारी स्तुति करी गया छे. तमे अनुपम तथा अप्रतिम छतां तमने जड वस्तुमां आरोपण करी तमारी पूजा अर्चा करवी ए केवल अधम दशामां रहेवानो विधि छे. तमारी उत्तम विधानथी आराधना करवी एज श्रेयस्कर छे, एथीज अमारा आत्माने उच्चावस्था प्राप्त थशे ए विश्वास अमारा मनमां जाग्रत राखो.

हे कृपालु पिता! तमे सतत अमारी साथे रहो, अर्थात् तमारा ज्योतिनो प्रकाश अमारा ज्ञानज्योतिमां प्रकाशित रहो. विश्वासमां तथा प्रेममां शीघ्रताथी चढिये एवुं अमने सामर्थ्य आपो. अमे सर्व तथा जगत्‌ना सर्व प्राणिजनो तमारुं मंगळ नामोच्चारण करी तमने प्रीतिकर कार्यमां अमारो देह तथा प्राण अर्पण करिये, ए तमारुं

वरदान तथा आशीर्वचन मागिये छिये. तमारा प्रसादथी आ अमारी मनकामना पूर्ण थाओ.

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ।
॥ ॐ एकमेवाद्वितीयम् ॥

दिंढि २५.

अतीदीन हुं अशक्त अल्प प्राणि, वधू शुं वदुं हुं नाथ प्रते वाणि;
दयानाथ तमे दिन जन प्रतिपाल, सदा सन्मति प्रभु प्रेरशो कृपाल. १
क्षणभंगुर आ देह तणो घाट, रहे सर्व अहींनो अहींज थाट;
तरे धर्म एक मात्र अंतकाल, सदा सन्मति प्रभु प्रेरशो कृपाल. २
रहे ज्यांसुधि आ विश्वमां निवास, करुं सर्व काल सज्जन सहवास;
दीनवाणि वदी विनवुं विश्वपाल, सदा सन्मति प्रभु प्रेरशो कृपाल. ३
असत्पंथ प्रते पाद न हुं मूकुं, नीति सहित प्रेम भक्ति नहीं चूकुं;
शरण आवि दया मागुंछुं दयाल, सदा सन्मति प्रभु प्रेरशो कृपाल. ४

शार्दूलविक्रीडित.

शान्ति प्रेम सुधा निधान सविता, सर्वेश सच्चिद्घना,
सर्वाध्यक्ष समस्त पातकहरा, मुक्तिप्रदा पावना;
साष्टांगे तमने प्रणाम करिने, आरंभिये प्रार्थना,
निर्विघ्ने परिपूर्ण कर्म करशो, ए छे मनोवाञ्छना. १

वैश्वदेवी.

सत्ताधीशा हे, देव संकष्ट हारी, मागुं नित्ये हुं, प्रेम दृष्टि तमारी;
देवा तुं मारो, प्राणदाता दयाल, पाळोछो स्वामी, जाणि अज्ञान बाल.१
आ संसारे जे, हानि के लाभ थाय, संकेतो तारा, नाथ तेमां जणाय;
स्वामी तुं सत्ये, अन्नदाता अमारो, मागुंछुं नित्ये, पाड हुं नाथ तारो.२
जे जे में कीधां, ज्ञात अज्ञात पापो, सर्वे ते दोषो, नाथ निःशेष कापो;
चैतन्यात्मा तुं, धारुं तारुं हुं ध्यान, सर्वस्थाने छुं, तु सदा विद्यमान. ३
आविर्भावे तुं, हृत्सरोजे पधारे, प्रेमेथी मारी, चित्त शान्ति वधारे;
भावेथी चित्ते, ध्यान योगाधिरूढ, आलोकुं प्रीते, कान्ति हुं दिव्य गूढ.४
क्लेशाग्नि ज्वाले, हुं थयो नाथ तप्त, देवा थाशे ए, मात्र तुंथी निवृत्त;
दीनोद्धारा हे, नित्य रे' योग तारो, त्राता साचो तुं, एक छुं मात्र मारो.५
साष्टांगे वदुं, हुं तने विश्वनाथ, पापी हुं पूरो, छुं ग्रह्यो नाथ हाथ;
संसारे मारो, ज्यां सुधी थाय वास, भक्ति श्रद्धानो, थाय किंचिन्नहास.६
तारी सेवानुं नाथ माहात्म्य भारे, मागुं छुं भिक्षा, नाथ आवी हुं द्वारे;
धारो लक्षे आ, नम्र मारी विनंति, भक्तिमां तारी, राखुं नित्ये हुं वृत्ति.७
इच्छा जे तारी, होय ते थाय सत्य, जीवोना मिथ्या, जाय सर्वे प्रयत्न.
आशा तृष्णाना, पाशमां छुं हुं बद्ध, देवा थाउं हुं, तुं कृपाथी विशुद्ध.८
स्वामी सर्वेना, क्षेम कल्याणकारी, राखो छो नित्ये, प्रेम दृष्टी तमारी;
आज्ञा जे तारी, थाय ते नित्य पाळुं, तारी शिक्षार्थी, हुं विरुद्धे न चालुं.९
अज्ञाने दोषो, हुं करुं छुं सहस्र, वर्से छे तोये, प्रेमधारा अजस्र;
पाळो छो स्वामी, जीवने सर्वकाल, प्रत्यक्षे दीसे, छे कृपाओ कृपाल.१०

'पूर्णात्मा मारा, छो तमे मात्र ध्येय, चे लोके स्वामी, आपजो पूर्ण श्रेय;
साष्टांगे वंदुं, हुं तने जोडी हाथ, सत्कर्मोनी द्यो, सन्मति प्राणनाथ. ११

मौक्तिकमाला.

मंगल सर्वोत्तमपददाता, शान्त दयालू त्रिभुवन त्राता;
वंदुं तने निर्मल मनथी हुं, वाञ्छित मारां सकल कहुं हुं. १

छो करुणासागर हितकारी, पूज्य परात्मा वहु उपकारी;
पालन सर्वे जिवनुं करोछो, पाप अमारां सकल हरोछो. २

ध्यान तमारुं हृदय हुं धारी, मानसि अर्चा करुं हुं तमारी;
मंगल स्तोत्रो भणि गुण गाउं, मात पिताने शरण हुं जाउं. ३

शुद्ध मनेथी भजन करे जे, ईश्वर साथे सतत रहे ते;
सन्निध आवी नमन करुं छुं, शीष तमारे चरण धरुं छुं. ४

देव कृपाथी सफल अमारां, कार्य थशे मंगल सहु सारां;
सर्व अमारा अविनय कापो, दीन दयाला शुभ मति आपो. ५

नाथ तमे मंगल गुण धारो, नित्य अमारे हृदय पधारो;
सर्व अमारां दुरित निवारो बाध न दे को मलिन विकारो. ६

आत्म समाने सहु जन जाणुं, मानवि जाती पृथक न मानुं;
एक पितानी सकल प्रजा छे, ईश्वरने ते सहु सरखा छे. ७

आज्ञा ईश्वरनी नव तोडुं, संग तमारो प्रभु नव छोडुं;
दीन तमारो छुं हुं प्रभु दास, पामुं नहिं संकट भय त्रास. ८
एक तमे अद्वय अविनाश, व्यापि रह्याछो परम प्रकाश;
सत्य तमे छो अकल अजाता, ऐहिक आमुष्मिक सुख दाता. ९
भूतदया विस्तरि मुज चित्ते, आशिष द्यो मंगल प्रभु नित्ये;
ब्रह्म तमारो जयजय थाओ, भक्त जनो मंगल गुण गाओ. १०
प्रेम तणी मौक्तिक शुभ माळा, अर्पि तने हुं प्रणमुं कृपाला;
पातक मारां सकळ शमावो, मुक्त थवानो सुपथ बतावो. ११

साकी (मराठी चालनी).

प्राणनाथ परमेश्वर तमने, मळिने सहु जन वृंद;
वंदे छे प्रभु शुद्ध भावथी, पामे छे आनंद. १
आ स्थाने मळिने सहु करिये, सामाजिक शुभ भक्ति;
मंगळ स्तोत्रो गाइ मागिये, सत्कर्मोनी वृत्ति. २
प्रभु सन्निध आवी अति हर्षे, वदिये जय जय वाद;
करुणा दृष्टि करी प्रभु अमने, आपो प्रेम प्रसाद. ३
भ्रातृ भाव राखी सहु रहिये, करिये नहिं कदि द्वेष;
अत्यादर भावेथि मानिये, प्रभुना शुभ आदेश. ४
दीन जनोना प्रभु पालक छो, तारक छो जगदीश;
ऐहामुष्मिक सुख प्राप्तिनी, देशो शुभ आशीष. ५

करुणानिधि करशो सहु देशे, सत्य धर्म विस्तार;
धन्यवाद वदि सर्वे करिये, मंगल नामोचार. ६
करुणाद्रुमछायामां अमने, राखि सदा विश्वेश;
हृदयतापने कापि नांखशो, कृपाकान्त निःशेष. ७
अवगणना अपराध अमारा, प्रभु लक्षे नहि लेशो;
लाभ तमारा शुभ दर्शननो, प्रसन्न थइ प्रभु देशो. ८

गायन.

पद.

राग जयजयंति तथा सर्व रागमां गवाय. ताल चोताल.

तमे पूर्ण परब्रह्म, तमे ईश तमे महेश;
तमे आदि तमे अंत, तमे अनादि तमे अशेष;
जल स्थल वायु व्योम, पशु मनुष्य देव लोक,
तमे वधाना सृजनहार, हृदाधार त्रिभुवनेश. तमे.

तमे एक तमे पुराण, तमे अनंत सुखसोपान,
तमे ज्ञान तमे प्राण, तमे मोक्षधाम;
पूर्ण थयो नमस्काम, लेइ आज तव नाम,
तव पाय शतवार, करुं प्रणाम करुं प्रणाम. तमे. १

पद.

राग खमाच जिल्हो. ताल त्रिताल. चाल; ते सविता परब्रह्म प्रभुनुं.

हे भगवन् षड्गुण संपन्न सर्वेश्वर संकट सर्व हरो०
सत्ता व्यापि रही त्रिभुवनमां, त्रिगुण शक्ति संपूर्ण धरो;
सर्वात्मा सर्वांतर्यामी, सकल विश्वमां विभु विचरो.
हे भगवन्० १

जड चैतन्य विवेक करी, निज शक्ति थकी सघळे पसरो;
दीनदयाल प्रभु परमेश्वर, चित्त थकी कदी ना विसरो.
हे भगवन्० २

सदय तमारा हृदय थकी, करुणामृत दृष्टि पूर्ण झरो;
प्रभु तुज पदपंकजमां मारी मनवृत्ति सर्वत्र ठरो.
हे भगवन्० ३

मन वाणीथी अकल अगोचर, वास प्रभुनो पृथक परो;
दृढ विश्वास थकी हुं मानुं, एक देव अविनाशि खरो.
हे भगवन्० ४

विनय थकी विनति करि मागुं, सुख संपाचि सर्व भरो;
कृपाकटाक्ष थकी प्रभु मारां, मनवाञ्छित परिपूर्ण करो.
हे भगवन्० ५

पद.

राग काफी जिल्लो. ताल दीपचंदी.

विनंति सांभळो मारी करुणानिधि भगवान्:
सत्‌चिद्‌घन आनंद तमे छो, प्रभु शुद्ध सगुण सकल शक्तिमान;
विनंति० १

सत्य सबल आश्रय छे तमारो, नथी कोई त्रिभुवनमां तुं समान.
विनंति० २

स्मरण भजन कीर्तनथि तमारुं, करुं दीनवत्सल निशदिन ध्यान.
विनंति० ३

काम क्रोधादिक षड् विषयोना, विकारो छे अतिशयरे बलवान.
विनंति० ४

विना अनुग्रह निग्रह मननो, प्रभु नयम करि हुं शकुं अज्ञान.
विनंति० ५

निर्मल शुद्ध मति प्रभु प्रेरो, कृपासिंधु करो मने नीतिमान.
विनंति० ६

साक्षी सकल कर्मना प्रभु जाणी, करुं सदा सत्कर्मनुं अनुष्टान.
विनंति० ७

चित्त सदा चरणार्पित राखुं, आपो प्रभु अभय मने वरदान.
विनंति० ८

क्षमा करी अपराध अमारा, तमे राखो वचन तणुं अभिमान.
विनंति० ९

आ भवमां पुरुषार्थ हुं पामुं, अंते पामुं तारुं अविचल स्थान.
विनंति० १०

पद.

राग कहारवो, ताल त्रिताल.

कृपाविना प्रभु क्यम कार्य सरे रे, सत्‌चिद्‌घन तमे साहाय्य करो;
कृपाविना प्रभु क्यम०

अवलंबन आधार तमारो, प्रभुविना अमारुं कष्ट कोण हरे रे;
सत्‌चिद्‌घन तमे साहाय्य करो. कृपाविना प्रभु क्यम० १

भक्त तणुं रक्षण करवानी, प्रभु प्रतिज्ञा तमारी कदि नव फरे रे;
सत्‌चिद्‌घन तमे साहाय्य करो, कृपाविना प्रभु क्यम० २

शरण तमारुं ग्रहण करे जे, भवसिंधु थकी सत्य ते तरे रे;
सत्‌चिद्‌घन तमे साहाय्य करो, कृपाविना प्रभु क्यम० ३

आरति.

जयदेव जयदेव जय भवभयहारी, जय भवभयहारी;
हितकारी उपकारी (२), जय शुभ गुणधारी. जयदेव० ॥१॥
अजर अमर अविचिंत्य, अद्वय अविकारी (२);
कल्पद्रुम करुणानिधि (२), जय मंगलकारी. जयदेव० ॥२॥
एक अमूर्त अनंत, सुख शान्ति दाता (२);
आध्यात्मिक सुख दाता (२), प्रणत जन त्राता. जयदेव० ॥३॥
शान्ति विधायक नाथ, नथि कोइ अन्य (२);
नित्य तणा छो नित्य (२), चेतन चैतन्य. जयदेव० ॥४॥
बहु तणा छो एक, परिपालन कर्ता (२);
प्राणि मात्रना प्रभु छो (२), अर्थ सकल भर्ता. जयदेव० ॥५॥
धैर्यवान प्रभु भक्त, मनमां बहु हरखे (२);
मंगल ज्योति तमारी (२), निज हृदये निरखे. जयदेव० ॥६॥
श्रुति स्मृति सर्व पुराण, वचन वदे सत्य (२);
श्वेताश्वतर विषे छे (२), ए श्रुति सिद्धान्त. जयदेव० ॥७॥
शरण अमे महाराज, प्रभु नित्ये रहिये (२);
लाभ लेइ दर्शनना (२), प्रभु पावन थइये. जयदेव० ॥८॥

अंक २६ मो.

दिंडी.

सत्य शान्त दान्त इष्ट कृपाकान्त, हरो हृदय तणुं सर्व तमे ध्वान्त;
प्रेमवत्सल परिपालक परमेश, करो नष्ट तमे त्रिविधि जनित क्लेश. १
परब्रह्म करो पातकनो नाश, थाय हृदय ज्ञान ज्योतिनो प्रकाश;
दया दृष्टि सदा राखशो दयाल, धर्म कर्म वृत्ति प्रेरशो कृपाल. २
मात तातनी समीप सर्व जाय, महा प्रेम थकी भजन स्तवन गाय;
थाय मनमां आनंद अनिर्वाच्य, नहीं उचरि शके वाणि वधू वाक्य. ३
यथाशक्ति गाइये प्रभू चरित्र, गिरा थाय अमारी महा पवित्र;
धन्य भाग्य महाराज ए अमारुं, दिव्य दर्शन प्रभु थाय जो तमारुं. ४
पतित पावन प्रभु छे तमारुं नाम, पूर्ण करशो प्रभु योग्य अर्थ काम;
अर्पि नाथ पदे प्रेमकुसुमदाम, सर्व करिये प्रभुने अमे प्रणाम. ५

ॐ तत्सत् परमात्मने नमः ।

ॐ सत्यं ज्ञानमनन्तं ब्रह्म यो वेद निहितं गुहायां परमे व्योमन् सोऽश्नुते कामान् सह ब्रह्मणा विपश्चिता ॥

जे सत्यस्वरुप ज्ञानस्वरुप अनन्त ब्रह्मने पोताना शरीरना परमाकाशमां आत्मस्थ जाणे छे, तेज ए सर्वज्ञ परमेश्वरनी साथे पोतानी कामनानी सकळ वस्तुओनो उपभोग करे छे.

ए रीते हे कृपामय परमेश्वर! तैतरीय उपनिषद्मां ऋषिगणोए तमारो महिमा वर्णव्यो छे, ते तमे परम पवित्रने अमे प्रणाम करीने प्रार्थनानो आरंभ करिये छिये.

हे जगदीश्वर! तमे सर्व ठेकाणे व्यापक छो, तमे अमारा अंतःकरणनी गुहामां विराजमान छो, परन्तु अमारा दुर्भाग्यथी अमने तमारुं दर्शन थतुं नथी, एमां अमारो पोतानोज दोष छे. तमारी प्रार्थनानुं बल एटलुं वधुं छे के घोरतर पातक कर्युं होय तो तेथी पावन थईने तमारा समीप आवी तमारां दर्शन लेवाने पात्र थई शकाय; त्यारे अमारी आवी अधमावस्था केम रहे छे? अमे कहुं अने फरीथी कहिये छिये के एमां अमारो पोतानोज दोष छे. विषय विकारोथी मुक्त थवानी तमारी पासे प्रतिदिन प्रार्थना करिये, अने तेनो त्याग करवाने अमारी इच्छा न होय अने ते पाप कर्म कर्ये जइये; एक तरफथी तारी प्रार्थना करिये, अने बीजी तरफथी पातक कर्ये जइये, तो ते केवल दंभ ढोंग अने साधुपणानो वेश मात्र छे. शुद्धान्तःकरणथी तमारी प्रार्थना थाय तो निःसंशय पावन करी तमारा प्रसादने तथा तमारा दर्शनने पात्र करो छो. साची भक्ति अने साची प्रार्थना कदी निष्फळ थती नथी. माटे दांभिक लोको प्रमाणे अमे बाहारनो ढोंग न करतां, नम्र भाव तथा पवित्र हृदयथी तमारी प्रार्थना करिये एवी अमारी वृत्ति करशो.

हे परमात्मा! अमारी प्रकृतिमांज तमे ए भाव मुकेलो छे के तमारी प्रार्थना करवी ए अमारी कर्तव्यता छे. परन्तु अमारा

मननी निर्बलता तथा विषय वासना आ धर्म अमने भुलावी दे छे. जन्मकालथी तमारा प्रसादनो उपभोग अमे करिये छिये, तमारी उपासना करवी ए अमारुं कर्तव्य छे ए ज्ञान अमने तमे स्वाभाविक आपेलुं छे; परन्तु दुर्दैवथी अमे तेनुं विस्मरण करिये छिये. माताना खोळामां बालक जे रीते निर्भय रही कल्लोल करे छे, ए प्रमाणे अमे तमारा उपकारने भुली न जतां कृतज्ञता पूर्वक तमारी पासे गद्गद् स्वरे तथा प्रेमाश्रुयुक्त, तमे सर्व जगतना.जे राजा तेनी अमे आराधना करिये तो तमे शरणागतवत्सल अमने पापथी मुक्त करशो, आ विश्वासथी अमे तमारी पासे आवी अमारा मनोभावनुं निवेदन करिये छिये के तमे अमारां पातकोनी क्षमा करी अमारा मनमां तमारो सत्य प्रेम, सत्य भक्ति तथा सत्य श्रद्धा स्थापन करो के जेथी अमे वारंवार पापना कूपमां न पडतां तमारी कृपारूपी पुण्य जलप्रवाहमां अवगाहन करी पवित्र थई तमारे शरणे आवी सतत तमारो सहवास करिये.

दयामय देव ! तमने अधिक शुं कहिये ? तमेज अमारुं सत्य शाश्वत धन छो. तमेज मुक्तिदाता, तमेज त्राता अने परिपालक छो. तमारा मंगल आदेशनुं अमे अनुवर्तन करिये एवी सुमति प्रेरी उभय लोकमां अमारा आत्मानुं श्रेय तथा कल्याण करशो. आ अमारी वान्छना परिपूर्ण करनार तमे समर्थ छो.

॥ ॐ एकमेवाद्वितीयम् ॥



दिंडि २६.

प्रेम पुष्प हार अर्पि प्राणनाथ, नमस्कार करुं जोडि बेउ हाथ;
सदा काल रहुं नाथ तारि साथ, करो रक्षण विभु मारुं विश्वनाथ. १
सृष्टि सर्ग नाथ छे वहू विशाल, मनुष प्राणि प्रते छे तमारुं वाल;
धर्म कार्यमां हुं क्रमण करुं काल, सदा दर्शन द्यो दीनने दयाल. २
विश्व मोहजाल सर्व तमे कापो, सत्य धर्म ज्ञान नाथ मने आपो;
सर्व विश्वमां दिसे प्रभु प्रताप, करो नाश तमे त्रिविधि जनित ताप. ३
अभयदान आपि भव समुद्र तारो, सत्य आश्रय जगदीश छे तमारो;
नहीं निज वलेथि विश्वथी तराय, कृपावंत थईने रहो सहाय. ४

शार्दूलविक्रीडित.

जे छे एक अखंड मंगलनिधी जे छे जगत्कारण;
जे छे पालक सत्य सर्व जिवना जे छे महा पावन;
जेनुं ध्यान धरी महर्षि मुनियो नित्ये करे प्रार्थना,
तेने पूज्य उपास्य मानि करिये नित्ये अमे वंदना. १

सर्वाधार शरण्य शान्त सुखदा दाता दयाळू तमे,
अंतर्यज्ञ करी कृतार्थ थईये देवप्रसादे अमे;
पुत्रस्नेहथि नाथ लावि करुणा दोषो नहीं मापशो,
आशीर्वाद दयानिधान अमने नित्ये तमे आपशो. २

आरंभे प्रभु मंगलार्चन करी पाये अमे लागिये,
साष्टांगे अभिवंदना करि अमे पापक्षमा मागिये;
आत्मज्योति प्रदीप्त नाथ करिने हृद्ध्वान्तने टाळशो,
सत्कर्मो करवा सुबुद्धि अमने आपी सदा पाळशो. ३

विबुधप्रिया.

आदि कारण विश्वना अजरामरा परमेश्वरा,
गाइने स्तुति प्रेमथी करिये अमे अभिवंदना;
आपशो अमने तमे शुभ कर्मनी प्रभु साधना,
पापहारक पावना करशो सदा प्रतिपालना. १

एक अद्वय देव छो नथि देवि को नथि देवता,
सत्य पालक सृष्टिना सुख शान्ति दायक छो पिता;
भ्रान्तिमूलक सर्व छे बहु देवता तणि कल्पना,
पापहारक पावना करशो सदा प्रतिपालना. २

*श्रोत्रना पण श्रोत्र छो प्रभु प्राण छो सहु प्राणिना,
चक्षुना प्रभु चक्षु छो विभु वाणि छो सहु वाणिना;
चित्त छो सहु चित्तना प्रभु सत्य आश्रय सर्वना,
पाप हारक पावना करशो सदा प्रतिपालना. ३

* श्रोत्रस्य श्रोत्र मनसो मनो यद्वाचो ह वाचं स उ प्राणस्य प्राणश्चक्षुषश्च चक्षु (तलवकारउपनिषद्, प्रथमखंड, मंत्र २.)

सृष्टिथी प्रभु भिन्न छो निज शक्तिथी सघळे रहो,
प्राणिनी मन वाञ्छना विभु हेतथी मनमां लहो;
स्वामि सेवक भावथी करिये अमे प्रभु अर्चना,
पाप हारक पावना करशो सदा प्रतिपालना. ४
सर्व मंगल मंगला शिव शान्त छो प्रभु चिद्घना,
सन्निधे प्रभु आविने करिये अमे सहु प्रार्थना;
पूरशो परमेश्वरा सघळी तमे शुभ कामना,
पाप हारक पावना करशो सदा प्रतिपालना. ५
गान मंगल गाइये नरनारियो मळि हर्षथी,
प्रार्थना परब्रह्मनी करिये अमे करुणानिधि;
पापमोचन नाथ छो करशो नहीं कदि भर्त्सना,
पाप हारक पावना करशो सदा प्रतिपालना. ६
अर्पिये तमने अमे प्रभु प्रेमनी कुसुमांजलि,
स्वस्ति वाचन मंत्रथी स्तुति गाइये जन मंडली;
मंगलानन निर्खिये निशदीन हे जगदात्मना,
पाप हारक पावना करशो सदा प्रतिपालना. ७
प्रेरशो प्रभु सन्मति तजिये अमे सहु दुष्कृति,
आपशो परलोकमां अमने कृपानिधि सद्गति;
राखशो तम आश्रये निज दासने करुणाघना,
पाप हारक पावना करशो सदा प्रतिपालना. ८

रुचिरा.

एक अखंड अनादि कृपामय अनुपम उत्तम पद दाता,
न्यायसिंधु मंगलगुण धाता दाता त्रिभुवनना त्राता;
परित्राण करि नाथ अमारुं कुशल क्षेम कल्याण करो,
जय जय हे जगदीश दयानिधि दुःख अमारां सर्व हरो. १
अंतर बाहर व्यापि रहो शिव शान्त अनन्त दयाल तमे,
मंगल नाम तमारुं स्मरी विभु वंदन करिये नित्य अमे;
करुणा करि हरि शीष अमारे वरदायक शुभ हस्त धरो,
जय जय हे जगदीश दयानिधि दुःख अमारां सर्व हरो. २
शरणागत वत्सल विश्वंभर सत्य तमे सुख शान्तिनिधि,
पालन शक्ति थकी जग पाळो टाळो विघ्न विपत्ति वधी;
प्रेम थकी प्रभु भक्ति तमारी हृदय अमारे पूर्ण भरो,
जय जय हे जगदीश दयानिधि दुःख अमारां सर्व हरो. ३
सकल कर्मना छो प्रभु साक्षी निर्मल अविचल अविनाशी,
क्षमा करो अपराध अमारा कल्पद्रुम करुणाराशि;
आशीर्वाद तमे प्रभु आपी मनवाञ्छित सहु अर्थ पुरो,
जय जय हे जगदीश दयानिधि दुःख अमारां सर्व हरो. ४
सत्य अनन्त अमूर्त तमे छो सर्वान्तर्गत सर्वात्मा,
जन्म रहित जगवंद्य दयाघन मंगलमय छो मात पिता;
अवगुण दोष असंख्य थाय पण तेह उपर नहिं लक्ष धरो,
जय जय हे जगदीश दयानिधि दुःख अमारां सर्व हरो. ५

एज तमारी छे प्रभुताई वाणि नथी वर्णन करवा,
सदाकाल उपकार करो छो शक्ति नथी गुण उच्चरवा;
अमने छे परब्रह्म तमारो एक मात्र आधार खरो,
जय जय हे जगदीश दयानिधि दुःख अमारां सर्व हरो. ६

ज्यां जोउं त्यां देव तमे अविंचित्य शक्तिथी व्यापि रहो,
प्राणपति प्रभु प्रेमदृष्टिथी प्रणत भक्तनो हाथ ग्रहो;
विभु विण को स्थल नथि खाली जगनाथ तमे त्रिभुवन विचरो,
जय जय हे जगदीश दयानिधि दुःख अमारां सर्व हरो. ७

*जगदुद्भवना पूर्व परात्मा हता सत्य सत्ता धारी,
इच्छा थकि आ सृष्टि सृजीने दया तमारी विस्तारी;
महा सिंधु पृथिवी गिरि गव्हर सुंदर सरज्यां सरोवरो,
जय जय हे जगदीश दयानिधि दुःख अमारां सर्व हरो. ८

जिव पालन पोषणने अर्थे अन्नौषधि उत्पन्न कर्या,
वसुंधरामां विविध विधीनां रत्न मनोहर सर्व भर्यां;
प्राणी निर्वाहार्थ सज्या छे उपयोगी बहु उपस्करो,
जय जय हे जगदीश दयानिधि दुःख अमारां सर्व हरो. ९

भक्ति करी भगवन्त तमारी भक्त घणा भवसिंधु तर्या,
पाप तापथी मुक्त थईने परलोके प्रभु पास ठर्या;

*ब्रह्म वा एकमिदमग्र आसीत् नान्यत् किञ्चनासीत्। तदिद सर्वमसृजत्।

कृपा दृष्टिथी नाथ तमारा दीन दासने नहिं विसरो,
जय जय हे जगदीश दयानिधि दुःख अमारां सर्व हरो. १०
जाणोछो जगदीश अमारी स्थिति दुर्बल अति मंद मति,
कृपाविना दुस्तर भव तरवा शक्ति अमारी नाथ नथी;
धैर्यथकी सहिये प्रभु दुःसह दुःख तणां अति तीक्ष्ण शरो,
जय जय हे जगदीश दयानिधि दुःख अमारां सर्व हरो. ११
क्षमा दया श्रद्धा सद्गुणथी भूषित करि अमने पाळो,
पशु वृत्ति निःशेप अमारी प्रभु करुणा करिने टाळो;
मंगळ प्रभुना प्रेम प्रसादे मंद अमारी मति सुधरो,
जयजय हे जगदीश दयानिधि दुःख अमारां सर्व हरो. १२
सदा तमारा कृपाजले अभिषिक्त तमे करशो अमने,
दिव्य ज्ञान देशो जगदीश्वर विनति करी कहिये तमने;
पतितोद्धारक नाथ अमारो कृपा करी उद्धार करो,
जयजय हे जगदीश दयानिधि दुःख अमारां सर्व हरो. १३
दुर्भाग्ये आ पुण्य देशथी सत्य धर्मनो लोप थयो,
व्हेम अने पाखंड पंथथी अनाचार अतिशय पसर्यो;
सर्वोत्तम आ आर्य देशमां सत्य धर्म सत्वर प्रचरो,
जयजय हे जगदीश दयानिधि दुःख अमारां सर्व हरो. १४
तव प्रेमामृतपान पिपासित तृप्त करो करुणाजळथी;
विना कृपा आ विश्वसिंधुथी नहिं तरि शकिये निज बळथी;
शुद्ध तमारी पराभक्तिमां सदा अमारी वृत्ति ठरो,
जयजय हे जगदीश दयानिधि दुःख अमारां सर्व हरो. १५

शिर साष्टांगे प्रणमि मानिये नित्य तमारा अनुग्रहो,
महाराज मंगल प्रभु अमने दर्शन आपि प्रसन्न रहो;
प्रेमारतियो वालि प्रभूने वादिये जयजयकार स्वरो,
जयजय हे जगदीश दयानिधि दुःख अमारां सर्व हरो. १६

गायन.

पद.

राग जयजयंति तथा सर्व रागमां गवाय. ताल चोताल.

विषय तिमिर जाल, कर्यो छे निशाकाल,
शी रीते पामिये पार, संसार सागरे;
विना तमे कर्णधार, कोण करे उद्धार,
अखिल तारण तमे, क्यां छो आ समये. विषय०
सांत्वननी दिश अंधार, विपादघनोदये,
संपद् तडित् समान, प्रज्वली जती रहे;
पाप तिमिर नाशी, ज्ञानलोक प्रकाशी,
द्यो हे नाथ मोह, अंध हृदये. विषय० १

पद.

राग काफी, ताल दीपचंदी.

अर्चा करी प्रभु अंतर्यामनी, माला जपुं शुभ मंगल नामनी अर्चा०
भक्ति थकी भगवंत भजुं हुं, तजुं हुं तृष्णा तुच्छ विषय कामनी;
माला जपुं शुभ मंगल नामनी. अर्चा० १

आ दुस्तर भव सिंधुथी तरवा, मागुं कृपा हुं परमात्मारामनी;
माला जपुं शुभ मंगल नामनी. अर्चा० २
आ संसारे घटित सुख आपो, आपो अंते मुक्ति समीपधामनी;
माला जपुं शुभ मंगल नामनी. अर्चा० ३

पद.

राग खमाच जिल्हो, ताल पंजाबी, चाल, स्तवन शुभ तारं करुंरे०

परम पद आपो मनेरे, हे प्रभु परमात्मा परब्रह्म. परम पद०
नमी नमी मात तात, तमने कहुं जोडी हाथ,
दूर करो दयानाथ दुष्ट कर्म. परम० १
हुं शरण तमारे, तम विण कोण तारे,
मने भरुसो छे भारे राखो भर्म. परम० २
सत्यव्रत धारी चित्त राखुं तव पद प्रीत,
मने तारी छे प्रतीत विधाता. परम० ३
प्रभु तुं अनाथ नाथ, जीवन छे तारे हाथ,
नमुं छुं हुं मात तात दीननाथ. परम० ४
जय जय भगवन्, करुं छुं तने नमन,
रहे तुं सदा प्रसन्न भक्त त्राता. परम० ५

पद.

राग कल्याण. ताल एकताल. चाल, मां गिरीश सुखद पाद.

मंगलमय परम देव, दर्शन शुभ देशो,
तव कृपाथी दूर थाय, दुरित कर्म दोषो. मंगल०

तमारो प्रेमप्रसाद तथा कृपा संपादन करिये, एवी शुभ वासनानी प्रेरणा करशो. अमारुं तीर्थ तमे छो, अमारुं मोक्षधाम तमे छो; गंगास्नान करवाथी तथा लोकोए कल्पेलां तीर्थधाम जवाथी मन निर्मल थवानुं नथी. पापना पुंज काढवाने अंतर्यजन तथा तमारी साथे पवित्र योग एज साधन छे. तमारी उपासना भक्ति स्तुति प्रार्थनारूपी पुण्यतीर्थमां अवगाहन करवाथी अमे पवित्र थइशुं, अमारा आत्मामां तमे परमात्मानुं दर्शन लेइशुं, तोज अमे पापथी मुक्त थइ तमारी पासे आववाने अधिकारी थइशुं. माटे अमने सत्य भक्ति सत्य ज्ञान तथा सत्य धर्म आपो. "सत्यमेव जयते नानृतं" सत्यनोज जय थाय छे, असत्यनो कदी जय थतो नथी. माटे हे सत्यरूप परमपावन परमेश्वर! तमारा भक्तिरसथी अमने परितृप्त करो. अहिं जे कांइ अमे सुख भोगविये छिये ते तमारा प्रसादथी. तमारो सत्य तथा मंगल पथ अमने बतावो, तमारी प्रीति मेळववाना अधिकारी करो. तमारी साथे अमारा संबंधनो हेतु अमारा मनमां दृढ थाय, तमारी साथे चिरकाल सहवास रहे. एवुं साधन आपी अमने कृतार्थ करो. तमारा प्रेमामृतथी अमने अभिषिक्त करो. तमारा नियमनुं उल्लंघन करिये तो अमारो दंड करशो परंतु अमारो परित्याग करशो नहिं. एज तमारी पासे प्रार्थना छे.

॥ ॐ एकमेवाद्वितीयम्. ॥



दिंडि २७.

तमे जाग्रत जगवंद्य देव साचा, प्रभु नाथ नित्य काय मनो वाचा;
अंतहीन निर्विकार निराकार, अतुल गहन शक्ति नाथनी अपार. १
दयासागर सुख शान्ति अधिष्ठान, करुं अंतर थकि अर्चना विधान;
दीन दास जाणिने मने निभावो, सदा पापकर्मथी मने बचावो. २
कृपादृष्टि थकी पापमुक्त थाउं, मने नाथ खरुं आपनुं वळावुं;
विदित सर्व मारि अन्तरगत वात, पुरो सर्व रुडा वाञ्छितार्थ नाथ. ३
अती दुःखित अनुतापित चित्त मारुं, लिधुं मंगलमय शरण में तमारुं;
दिसे प्रभूता प्रभूनाथ बहू मोटी, चरणपंकजे हुं करुं प्रणाम कोटी. ४

महीदीप.

मंगल भगवान् वरिष्ठ इष्ट देव साचा,
स्तुति करवा नहिं अमारि चालि शके वाचा;
एक आदि कारण प्रभु कलुष क्लेशहारी,
निर्मल निःसंग सत्य नित्य निर्विकारी. १

अजर अमर भवभयहर सुखकर शुभकारी,
अकल अचल सकल सबल शक्ति छे तमारी;
हस्त चरण श्रोत्र नेत्र सर्व तमे कीधां,
इंद्रियोपकरण यथायुक्त तमे दीधां. २

शिर साष्टांग प्रणमि मानिये नित्य तमारा अनुग्रहो,
महाराज मंगल प्रभु अमने दर्शन आपि प्रसन्न रहो;
प्रेमारतियो वाळि प्रभूने वादिये जयजयकार स्वरो,
जयजय हे जगदीश दयानिधि दुःख अमारां सर्व हरो. १६

गायन.

पद.

राग जयजयंति तथा सर्व रागमां गवाय. ताल चोताल.

विषय तिमिर जाल, कर्यो छे निशाकाल,
शी रीते पामिये पार, संसार सागरे;
विना तमे कर्णधार, कोण करे उद्धार,
अखिल तारण तमे, क्यां छो आ समये. विषय०
सांत्वननी दिश अंधार, विषादघनोदये,
संपद् तडित् समान, प्रज्वली जती रहे;
पाप तिमिर नाशी, ज्ञानलोक प्रकाशी,
द्यो हे नाथ मोह, अंध हृदये. विषय० १

पद.

राग काफी, ताल दीपचंदी.

अर्चा करी प्रभु अंतर्यामिनी, माला जपुं शुभ मंगल नामनी अर्चा०
भक्ति थकी भगवंत भजुं हुं, तजुं हुं तृष्णा तुच्छ विषय कामनी;
माला जपुं शुभ मंगल नामनी. अर्चा० १

आ दुस्तर भव सिंधुथी तरवा, मागुं कृपा हुं परमात्मारामनी;
माला जपुं शुभ मंगल नामनी. अर्चो० २
आ संसारे धटित सुख आपो, आपो अंते मुक्ति समीपधामनी;
माला जपुं शुभ मंगल नामनी. अर्चो० ३

पद.

राग खमाच जिल्लो, ताल पंजाबी, चाल, स्तवन शुभ तारं करुरे०

परम पद आपो मनेरे, हे प्रभु परमात्मा परब्रह्म. परम पद०
नमी नमी मात तात, तमने कहुं जोडी हाथ,
दूर करो दयानाथ दुष्ट कर्म. परम० १
हुं शरण तमारे, तम विण कोण तारे,
मने भरुसो छे भारे राखो भर्म. परम० २
सत्यव्रत धारी चित्त राखुं तव पद प्रीत,
मने तारी छे प्रतीत विधाता. परम० ३
प्रभु तुं अनाथ नाथ, जीवन छे तारे हाथ,
नमुं छुं हुं मात तात दीननाथ. परम० ४
जय जय भगवन्, करुं छुं तने नमन,
रहे तुं सदा प्रसन्न भक्त त्राता. परम० ५

पद.

राग कल्याण. ताल एकताल. चाल, मां गिरीश सुखद पाद.

मंगलमय परम देव, दर्शन शुभ देशो,
तव कृपाथी दूर थाय, दुरित कर्म दोषो. मंगल०

विनति करिये विश्वनाथ, जोडि अमे उभय हाथ;
कृति अमारी मात तात, नव कदापि जोशो. मंगल० १
प्रणमि प्रभु समीप जाय, पावन सहु प्राणी थाय;
स्तवन भजन भक्त गाय, देशो हृदय तोषो. मंगल० २
वदिये अमे धन्यवाद, मागिये प्रभु प्रसाद,
पामिये नहिं विषाद आशिष शुभ देशो. मंगल० ३
करिये प्रभु पदे प्रणाम, जपिये शुभ तमारुं नाम,
पूर्ण करी सर्व काम, प्रसन्न वदन रहेशो. मंगल० ४

पद.

राग काफी जिल्हो, ताल एकताल. चाल, सच्चिद्घन ब्रह्मदेव०

धन्य धन्य धन्य आजदिन आनंदकारी,
सुहृद सुजन मळि सहु प्रभु स्तुति करे तमारी. धन्य०
सत्य छे तमारुं नाम, सत्य छे तमारुं काम,
नथि दया तणो विराम, मंगल गुणधारी. धन्य० १
ब्रह्मगीत सर्व गाय, भक्त जन कृतार्थ थाय,
रहो सदा तमे सहाय, संकट भयहारी. धन्य० २
जय जय जयकार करो, सर्व विघ्न व्याधि हरो,
वाञ्छना अमारी पुरो, परम उपकारी. धन्य० ३
मंगलमय मात तात, सर्व छे तमारे हाथ;
श्रवण करो विश्वनाथ, प्रार्थना अमारी. धन्य० ४

आरति.

जयदेव जयदेव जय सर्वव्यापी, जय सर्वव्यापी;
अद्भुत सुंदर रचना (२), जगतविषे स्थापी. जयदेव० ॥१॥
विश्ववंद्य महाराज, अभिवंदन करिये (२);
मंगल शिक्षा प्रभुनी (२), नहिं कदि वीसरिये. जयदेव० ॥२॥
हृदयांतर्गत सर्व, विभु कहिये तमने (२);
प्रभु छे सत्य तमारो (२), सबळाश्रय अमने. जयदेव० ॥३॥
विघ्न विपत्ति कृपाळ, करुणा करि कापो (२);
आश्रित सर्व जिवोनां (२), क्षमा करो पापो. जयदेव० ॥४॥
दुःख समय महाराज, प्रभु आपो धैर्य (२);
अभ्युदयमां अमने (२), नव थाये गर्व. जयदेव० ॥५॥
ज्ञान भक्ति वैराग्य, साधन छे मुख्य (२);
योगाभ्यासथि मळशे (२), परमावधि सौख्य. जयदेव० ॥६॥
भूतदयाविस्तार, विश्व विषे करशो (२);
अविनय दोष अमारा (२), सर्व तमे हरशो. जयदेव० ॥७॥
नमस्कार साष्टांग, करि तमने देवा (२);
प्रेमारति ऊतारी (२), समापिये सेवा. जयदेव० ॥८॥



अंक २७ मो.

अभंग.

ज्यहां नहिं भासे, रवि शशी ज्योति, विद्युतनो द्योति, न प्रकासे. १
त्यहां परब्रह्म, महा पुण्यराशि, रहेछे प्रकाशी, स्वसत्तायी, २
इच्छाथी सृजावी, जेणे सर्व सृष्टि, जेनी प्रेम दृष्टी, छे सदैव. ३
एवा परब्रह्म, प्रभु छो मंगल, करशो सफल, शुभ कार्य. ४
शुद्ध भाव राखी, करिये वंदन, आपशो दर्शन, दयाघन. ५
ज्ञानरूपी हृदे, भक्तिजले स्नान, उत्तम विधान, हृच्छुद्धिनुं. ६
एवा पुण्यतीर्थे, करी अमे स्नान, ब्रह्मस्तुति गान, आरंभिये. ७
ईश्वरप्रसादे, थइये कृतार्थ, सर्व पुरुषार्थ, थाय पूर्ण. ८

ॐ श्रीजगदीश्वरायनमः ।

जेणे अखिल भुवन उत्पन्न कर्यां छे, जे तेने धारण करी रह्या छे, जे सर्व प्राणीनुं संरक्षण तथा पालन पोषण करे छे, आ जगत् नहोतुं ते वेला स्वयंप्रकाश अद्वितीय हता एम उपनिषदोमा जेनु वर्णन करेलुं छे, ए परब्रह्म परमेश्वरने शरणे आवी तेनी अमे प्रार्थना करिये छिये.

हे परम पवित्र परमात्मा ! तमे सर्व कालमां प्रकाशमान छो. प्रातःकाल मध्याह्नकाल तथा सायंकाले महानुभाव ऋषिगणो तमारुं संध्योपासन करेछे. उपाकाल तथा प्रदोषकालनी शोभामां, सूर्य चंद्र ताराओनी शोभामां, वृक्ष फल पुष्पनी कान्तिमां तमारुं सत्य सुंदर तथा मंगल स्वरूप अमे जोई शकिये तो मनुष्यना हृदयमां तमारो आविर्भाव देखी शकाय. परन्तु जो अपवित्र वासनाओथी मन मलिन थयुं होय तो तमारा ज्योतिनो प्रकाश तेमां बिंबित थवानो नथी. माटे विषय विकारोने मनमांथी काढी नांखी अमारा हृदयाकाशमां तमारुं दर्शन लेई शकिये एवां साधनोना विधाननुं दान करो. अमने पीडा थाय छे, मोटी विपत्ति माथे पडे छे, तोपण तमे अमारी साथेज रहो छो. तमारे आधीन थवाथी अमारो क्लेश संताप दूर थाय छे तमारे स्वाधीन थवुं एमांज अमने सुख तथा शान्ति छे, आधिव्याधि वाध करी शकता नथी.

हे कृपामय प्रभु ! तमारी मात्र अमे आशा राखिये छिये. जगत्ना लोको बाहारना आडंबर तथा वेशधारणथी मोहित थईने खोटी प्रशंसा करी मान आपे छे, परन्तु अमे एवी प्रशंसा के मान मागता नथी. अंतरना शृंगारथी अमने भूषित करो अर्थात् तमारी भक्ति श्रद्धा तथा सदाचरणमां अमारुं मन प्रवृत्त रहे, लोक निंदो किंवा वंदो, अमे लोकने राजी राखवा सत्यनो परित्याग करिये नहिं, तमारी सत्य शुद्ध अने उत्तम भक्ति करी

तमारो प्रेमप्रसाद तथा कृपा संपादन करिये, एवी शुभ वासनानी प्रेरणा करशो. अमारुं तीर्थ तमे छो, अमारुं मोक्षधाम तमे छो; गंगास्नान करवाथी तथा लोकोए कल्पेलां तीर्थधाम जवाथी मन निर्मल थवानुं नथी. पापना पुंज काडवाने अंतर्यजन तथा तमारी साथे पवित्र योग एज साधन छे. तमारी उपासना भक्ति स्तुति प्रार्थनारूपी पुण्यतीर्थमां अवगाहन करवाथी अमे पवित्र थइशुं, अमारा आत्मामां तमे परमात्मानुं दर्शन लेइशुं, तोज अमे पापथी मुक्त थइ तमारी पासे आववाने अधिकारी थइशुं. माटे अमने सत्य भक्ति सत्य ज्ञान तथा सत्य धर्म आपो. "सत्यमेव जयते नानृतं" सत्यनोज जय थाय छे, असत्यनो कदी जय थतो नथी. माटे हे सत्यरूप परमपावन परमेश्वर! तमारा भक्तिरसथी अमने परितृप्त करो. अहिं जे कांइ अमे सुख भोगविये छिये ते तमारा प्रसादथी. तमारो सत्य तथा मंगल पथ अमने बतावी, तमारी प्रीति मेळववाना अधिकारी करो. तमारी साथे अमारा संबंधनो हेतु अमारा मनमां दृढ थाय, तमारी साथे चिरकाल सहवास रहे. एवुं साधन आपी अमने कृतार्थ करो. तमारा प्रेमामृतथी अमने अभिषिक्त करो. तमारा नियमनुं उल्लंघन करिये तो अमारो दंड करशो परंतु अमारो परित्याग करशो नहिं. एज तमारी पासे प्रार्थना छे.

॥ ॐ एकमेवाद्वितीयम्. ॥



दिंडि २७.

तमे जाग्रत जगवंद्य देव साचा, नमुं नाथ नित्य काय मनो वाचा;
अंतहीन निर्विकार निराकार, अतुल गहन शक्ति नाथनी अपार. १
दयासागर सुख शान्ति अधिष्ठान, करुं अंतर थकि अर्चना विधान;
दीन दास जाणिने मने निभावो, सदा पापकर्मथी मने वचावो. २
कृपादृष्टि थकी पापमुक्त थाउं, मने नाथ खरुं आपनुं वळावुं;
विदित सर्व मारि अन्तरगत वात, पुरो सर्व रुडा वाञ्छितार्थ नाथ. ३
अती दुःखित अनुतापित चित्त मारुं, लिधुं मंगलमय शरण में तमारुं;
दिसे प्रभुता प्रभूनाथ वहु मोटी, चरणपंकजे हुं करुं प्रणाम कोटी. ४

महीदीप.

मंगल भगवान् वरिष्ठ इष्ट देव साचा,
स्तुति करवा नहिं अमारि चालि शके वाचा;
एक आदि कारण प्रभु कलुष क्लेशहारी,
निर्मल निःसंग सत्य नित्य निर्विकारी. १

अजर अमर भवभयहर सुखकर शुभकारी,
अकल अचल सकल सवल शक्ति छे तमारी;
हस्त चरण श्रोत्र नेत्र सर्व तमे कीधां,
इंद्रियोपकरण यथायुक्त तमे दीधां. २

पामर जिव भूलि जाय ईश्वर उपकारो,
पशु समान सर्व खुवे उत्तम जन्मारो;
अधवचला जीव रहे ना अहीं न त्यांना,
आत्महानि करि कदि नहिं प्रभु पदे जवाना. ३

सृष्टिसूत्र सर्व नाथ हाथ छे तमारे,
अवलंबन एक मात्र आपनुं अमारे;
दिव्य ज्ञान आपि नाथ हृदयमां पधारो,
त्रिविधि जनित ताप तमे सर्वथा निवारो. ४

मात तमे तात तमे भ्रात छो अमारा,
विद्या धन द्रव्य तमे सर्वोत्तम सारा;
सत्य तमे एक मात्र सकल जीव त्राता,
धाता प्रभु पाता शिव शाश्वत सुख दाता. ५

मंगल आ शान्त समय हृदय प्रेम धारी,
करिये सहु मंडलि मळि प्रार्थना तमारी;
एज धन्य भाग्य कृपाकान्त छे अमारुं,
प्रतिदिन प्रभु प्रेम वदन निरखिये तमारुं. ६

पाप ताप सकल कृपा करि कृपाल कापो,
दिव्य ज्ञान दान दया नाथ तमे आपो;
प्रभु अशरण शरण तमे हृदय शान्ति देशो,
सर्वदा सहायकारि नाथ तमे रे'शो. ७

तरुण काल सर्व विषय भोग विषे खोयो,
आत्मोन्नतिनो उपाय नहिं कदापि जोयो;
आवशे जरा त्वराथि काळ लेइ जाशे,
विकट समय तुज विण प्रभु हाथ कोण सा'शे. ८

वैभव धन द्रव्य सर्व ज्यांनुं त्यहां रेशे,
इष्ट बंधु पुत्र मित्र सहु विदाय लेशे;
धर्म मात्र एक सत्य जीव संग जाशे,
पुण्यहीनने न कदी मुक्ति प्राप्त थाशे. ९

धर्मनुं प्रधान अंग भूतदया मोटुं,
बाहरनुं डोळ दंभ आडंबर खोटुं;
दया रहित भक्ति प्रभू कदि नहीं स्विकारे,
शत सहस्र नाम मंत्र मुख थकी उच्चारे. १०

विषयी व्यवसायि नहिं जाय पुण्य धामे,
नहिं अशान्त जीव कदी शाश्वत सुख पामे;
दुर्गुणथी दूर दयासिंधु सदा राखो,
मंगलनिधि मंगल पथ करुणा करि दाखो. ११

भक्तवृंद सर्व गाय गान मधुर रागे,
प्रार्थना समाप्त करी पाय तने लागे;
विश्वनाथ विनति सर्व लक्ष विषे लेशो,
शान्ति सुधावर्षण करि प्रभु प्रसन्न रे'शो. १२

प्रमाणिका.

जगत्पिता परात्परा, समस्त पापसंहरा,
सुणो अमारि प्रार्थना, कृपा करो कृपाघना. १

रह्या प्रभू कृपाश्रये, अमे समस्त निर्भये,
तमे शरण्य सर्वना, कृपा करो कृपाघना. २

कृपा तमारि जो हशे, मनोर्थ सिद्धिये जशे,
रहो सहाय चिद्घना, कृपा करो कृपाघना. ३

अनंत शक्तिधारक, तमेज सत्य तारक,
शरण्य सर्व जीवना, कृपा करो कृपाघना. ४

महा समर्थ छो तमे, सदैव वंदिये अमे,
पिता समस्त पावना, कृपा करो कृपाघना. ५

प्रपंचपाश कापशो, विशुद्ध ज्ञान आपशो,
अमारि एज वाञ्छना, कृपा करो कृपाघना. ६

उपासना करी अमे, समर्पिये प्रभूपदे,
सुगंध पुष्प प्रेमनां, कृपा करो कृपाघना. ७

महेश मंगळानन, करी कृपावलोकन,
पुरो घटीत कामना, कृपा करो कृपाघना. ८

गायन.

पद.

राग भैरव तथा सर्व रागमां गवाय. ताळ चोताल.

आनंद दिन आज, मानिने महाधिराज,
सर्व भक्त जन समाज, गाइये गुणानुवाद;
तमे सत्य एक देव, नहिं अन्य कोइ सेव्य,
भक्तिथी सदा तमारो, पामिये अमे प्रसाद. आनंद०
अमे सर्व मंडली, प्रेमपुष्प अंजलि,
अर्पी प्रभुने पाद, उचरिये धन्यवाद;
मति करो निर्मल, प्रभु आपो धर्म बल,
एज मागिये तमारो, मंगल आशीर्वाद. आनंद० १

पद.

राग खमाच जिल्लो. ताळ त्रिताल. चाल ठुमरी.

जगकर्ताए जगरचनामां अद्भुत कीधी चतुराई,
सुंदर सुखकर नियम निरखि, मुनिजन मन हरखे हरिगुण गाई.
जगकर्ताए० १
किया यंत्रथी पवन वहेछे, ऋतु क्यम जाये पलटाई. जग० २
किया नियमथी घन वरसेछे, अभ्र रहे गगने छाई. जग० ३
जे सरजावे ते संहारे, जुवो प्रभुनि ए चतुराई. जग० ४
धन्य धन्य ए कारीगरने, शरण अमे जईये धाई. जग० ५

पद.

राग झिंझोटी. ताल, दीपचंदी.

तुं प्रभु राज महाराज विना, मुज त्राता नथी त्रिभुवनमां, ,
प्रभु मारो त्राता नथी त्रिभुवनमां.
त्राता नथी सुख दाता नथी, मने राखो निरंतर मनमां,
प्रभु मने राखो निरंतर मनमां. तुं प्रभु० १
सद्गुण नियमो दाखि दयानिधि, वृत्ति राखो प्रभु पदमां,
प्रभु मारी वृत्ति राखो प्रभु पदमां. तुं प्रभु० २
अति चंचल चित्त छे प्रभु मारुं, दोष थाय क्षण क्षणमां,
प्रभु बहु दोष थाय क्षण क्षणमां. तुं प्रभु० ३
मंगलमय भगवंत तमारुं, ध्यान धरुं छुं हृदयमां,
प्रभु तारुं ध्यान धरुं छुं हृदयमां. तुं प्रभु० ४

पद.

राग काफी जिल्हो. ताल एकताल. चाल, प्रियधाम बहुत काम तुझशीर.

प्रिय धाम, पूर्ण काम, जपुं नाम तमारुं; प्रभु शुभ नाम तमारुं;
कदि नहिं नाथ कृपाभाव तमारो हुं विसारुं. प्रियधाम०
जेनि शक्ति थकी लहे सकल विश्व प्रकाश.
जेह दर्शन थकि पातकनो थाय विनाश. प्रियधाम० १

कृपासिंधु करो पूर्ण सकल अर्थ अमारा;
वर्णवुं शुं गुण वरदायक विभुराय तमारा. प्रियधाम० २
तर्या भाविक बहु भक्त करी भक्ति तमारी;
दयानाथ दीन दासने मुको न विसारी. प्रियधाम० ३
आवो अवसर नहिं खोउं वृथा काढुं न काळ;
हरि नाम स्मरण करि कृतार्थ थाउं कृपाळ. प्रियधाम० ४

पद.

राग काफी, ताल एकताल. चाल, तारवो तिहारो अख्तियार हे.

तारवा तमे प्रभु समर्थ छो, जेवो छुं तेवो; तारवा०
अवगुण दोषो अपार नाथ छे अमारा,
दया करी तारो तो तारवा समर्थ छो. तारवा० १
योग्यता नथी तथापि आश राखुं छुं तमारी,
दीन जाणि पाळो तो पाळवा समर्थ छो. तारवा० २
मुक्तिपद मागवानी हाम केम चाले मारी,
कृपा करी आपो तो आपवा समर्थ छो. तारवा० ३
करुणानिधान नाम नाथ छे तमारुं माटे,
पाप ताप कापो तो कापवा समर्थ छो. तारवा० ४

आरति.

जयदेव जयदेव जय सच्चित्सविता; जयसच्चित्सविता;
परमात्मा पालयिता (२), मनवाचातीता. जयदेव० १
एक अवर्ण अनन्त, मंगल गुण धारो (२);
सकल जीवोपर प्रभुना (२), छे बहु उपकारो. जयदेव० २
अनन्य भावथि नाथ, प्रभु सेवा करिये (२);
मंगल स्तोत्र तमारां (२), मुख थकि उच्चरिये. जयदेव० ३
नथि प्रभुनो अवतार, नथि प्रतिमा मूर्ति (२);
ऋग्यजुसामाथर्व (२), बोले सत्य श्रुति. जयदेव० ४
मत्स्यादिक अवतार, माने मूढ जनो (२);
भगवद्गीता शास्त्रे (२), सिद्ध कर्यां वचनो. जयदेव० ५
स्वयंभु छो स्वप्रकाश, विश्व विषे व्यापो (२)
उत्तम भक्ति विधानो (२), प्रभु अमने आपो. जयदेव० ६
ब्रह्म यज्ञ सुसमाप्त, करि तमने नमिये (२),
प्रेमार्घ्यांजलिदाने (२), प्रभु अर्चन करिये. जयदेव० ७
कृपा करी महाराज, पाप सकल हरशो (२);
शान्तिसुधाजलवर्षण (२), प्रभु संतत करशो. जयदेव० ८



अंक २८ मो.

तोटक.

कलहो कपटो जनमंडलनां, वळि दुष्ट विकार अमंगलता;
अहिं पार्थिव जीवनने वळग्यां, सहु दुःखद जे न रहे अळगां. १
अति कर्कश नादज तेह तणो, तजि आज करो प्रभुनां स्मरणो;
पछि शान्तिनदी मन रेलि रहो, झट ध्यान तणुं दृढ नाव ग्रहो. २
ग्रहि धाम अनंत भणीज वहो, जइने प्रभु दर्शन लाभ लहो;
लहि दिव्य अनूपम गान सुणो, प्रभुना जहिं दिव्य गवाय गुणो. ३
ध्वनि गान तणो निज अंतर ए, भरि गान सुणोज निरंतर ए;
भुलि कर्कश पार्थिव नाद अहिं, स्थिति ल्यो क्षण ध्यान समाधिमहिं. ४

ॐ जगदात्मने नमः ।

हे दयासिंधु ! तमे सर्वेना शरण्य सर्वेना पिता माता अने पालनकर्ता छो, अमे जीवधारियोनुं प्रत्येक अवस्थामां रक्षण करीने मंगल विधाननी प्रेरणा करो छो; परन्तु अमे दुर्भाग्य जीव तमारी आज्ञा, तमारी कृपा तथा तमारो उपकार भुली जइने अनुचित तथा तमने अप्रिय लागे एवां कार्योमां प्रवृत्त थई अमारा

नमुं विश्वंभर विश्वना नियंता, नमुं सच्चिद्घन एक अनाद्यंता;
नमुं सर्व साक्षि सत्य मुक्तिदाता, नमुं मंगलमय भक्तजनत्राता. २
नमुं निर्मळ निःसंग न्यायकारी, नमुं सर्वशक्तिमान उपकारी;
नमुं सर्वसेव्य शान्तिसुखस्थान, नमुं करुणाकर सर्वशक्तिमान. ३
जगन्नाथ तमे सात्विक गुणधारी, दयायुक्त दिसे कृति वधी तमारी;
मागुं सुमति सदा विनवि वारवार, नाथ चरणकमल करुं हुं नमस्कार.४

आर्या.

अकल कला प्रभु तारी, नव विस्तारी गवाय कदि जिवथी;
प्रभु तुं बहु उपकारी, तुज सम बलवान् कोइ नथी. १
अवगणना बहु कीधी, नहिं प्रभु शिक्षा लिधी सुलक्ष विषे;
करुणा विना तमारी, प्रभु न अमारी विशुद्धि थशे. २
जगदात्मा नव जोशो, अगणित दोषो तमे कृपाभावे;
मातपिता सुत प्रत्ये, अभाव चित्ते कदि न लावे. ३
नहिं तीर्थोदकस्नाने, नहिं जलपाने पवित्र मन थाशे;
परमेश्वरप्रणिधाने, पाप सकल जीवनां जाशे. ४
हृदयतिमिर सहु कापो, प्रभु आपो शुभ अभीष्ट वरदान;
शरण रही प्रभु करिये, तव भक्तिसुधा तणुं पान. ५
अस्थिर छे धन यौवन, प्रभु अस्थिर छे मनुष्यनो देह;
सत्य जवुं परलोके, तेमां नहिं कांइ संदेह. ६

मंगल पथ दर्शावो, वरसावो प्रभु कृपासुधाधारा;
प्रेमळ दृष्टि तमारी, मागुं छुं प्रभु कृपागारा. ७
अष्टांगयोग साधन, प्रभु आराधन अमे सदा करिये;
इच्छा अमे तमारी. आदरथी नाथ अनुसरिये. ८
जाणो सहु हृदयाशय, फरि फरि वधू शुं नाथ अमे कहिवे,
उत्तम मति प्रभु देशो, सदैव रे'शो सहाय तमे. ९

स्रग्विणी.

मंगलानंद दाता दयासागरा, सत्यरूपी सदा शान्त सर्वेश्वरा;
प्राणत्राता तमारा विना को नथी, सांभळो नाथ आ प्रार्थना प्रेमथी. १
प्राणपाता पिता पाप संहारशो, प्रेम राखी कृपाभाव विस्तारशो;
शुद्ध भावे अमे नित्य आराधिये, आत्मकल्याणनां साधनो साधिये. २
अल्प प्राणी अमे सर्वथा निर्बल, यत्न सर्वे अमारा जशे निष्फल;
मात्र देवप्रसादे अमे जीतिये, भक्ति सेवा करी चालिये नीतिये. ३
प्रेमदाता क्षमा पाप मारां करो, दुःख दारिद्र्य संकष्ट सर्वे हरो;
ईश्वराधीन छे सर्व मारी स्थिति, कांइ छानी नथी नाथ मारी कृति. ४
जन्म आप्यो तमे पुण्य मार्गे जवा, एक बीजा जनोने सहायी थवा;
धर्मशिक्षा तमारी अमे मानिये, लाभ तेमां अमारो खरो जाणिये. ५
हे दयासिंधु दोषो नहीं मापशो, सत्क्रियानी सदा सन्मती आपशो;
दीनबंधु दयासिंधु सच्चिद्घन, नित्य देशो तमारां प्रभु दर्शन. ६

आत्मानी हानि करिये छिये. अमारो उद्धार केम थशे, अमे तमारा समीप शी रीत्ये आवी शकीशुं ? आ विचार ज्यारे अमारा मनमां उत्पन्न थाय छे त्यारे अमारुं मन भयभीत तथा शोकग्रस्त थाय छे. हे भगवन् ! आ दुस्तर भवसागरथी उतरवाने तमारी भक्तिरूपी नौका मात्र साधन छे, आ वात अमे समजिये छिये तथापि विषयविकारांध थईने उलटे मार्गे जई भवसागरमां गोथां खाइये छिये, अने तेमांथी तरणोपाय मात्र तमारी पराभक्ति ते अमे करता नथी. आवी अमारी स्थिति छे. "कोऽहं कस्मात् कुत आयातः" हुं कोण छुं, क्यांथी आ जगत्मां आव्यो छुं अने आववानो शो हेतु छे; ए वातनो मनमां वारंवार विचार करवो जोइये. ते न करतां अहोरात्र द्रव्योपार्जनमां तथा बीजां अनित्य सुख मेळववामां अमारो कालक्षेप करिये छिये. आ अमारुं केवुं दुर्दैव छे !

हुं देहथी भिन्न चैतन्यरूप जीव छुं, देहनी साथे मारो नाश नथी, परन्तु देहथी वियोग थया पछी मारुं कर्म मारे भोगववानुं छे, ईश्वरे मने उत्पन्न कर्यो छे, अने आ जगत्मां पुण्याचरण करवाने जन्म आप्यो छे माटे ए कर्तव्य कर्म मारे अवश्य करवुं जोइये, ते न थाय तो ईश्वरी आज्ञानो भंग थाय अने दंडने पात्र थाउं. आ वात अमारा मनमां दृढ थाय नहिं त्यांसुधी तमारा प्रसादनो लाभ तथा तमारुं दर्शन घणुं दूर छे. तमे पासे छो तेमज दूर छो. "तद्दूरेतदंतिके"* ते ईश्वर अभक्तथी दूर छे अने भक्ति-

* इशोपनिषद् मंत्र ५.

मानवी समीपे छे. माटे हे महाराज ! अमे तमारा रंक प्राणी उपर दया करी तमारी सत्य अने श्रेष्ठ भक्तिनो मार्ग बतावी अमारो उद्धार करो, अमने निंदित कर्मथी दूर राखो.

जेम जेम अमे अमारा अंतरमां विचार करिये छिये तेम तेम अमने एज बोध थायछे के आ जगत्नो वैभव सर्व अस्थिर तथा अशाश्वत छे. गमे तेटली संभाळ राखीशुं परन्तु परिणामे ते सर्व मुकीने जवानुं छे. तमारी भक्ति एज सत्य तथा शाश्वत धन छे तेनो लाभ लेई तमारो प्रेमप्रसाद संपादन करिये, एज अमारी अभिलाषा छे, एथीज अमारुं उभय लोके कल्याण छे हे दयानिधे ! कृपा करी ए शाश्वत धन अमने आपो. अमारा आत्मानी उत्तरोत्तर उन्नति थई तमारो संबंध तथा तमारो सहवास सदाकाल रहे एवो आशीर्वाद देशो.

अमे मुमुक्षु थइने तमारे शरणे आविये छिये, तमे अमने शुभ बुद्धि आपो तमारी इच्छानुसार वर्तवानी प्रेरणा करो.

॥ ॐ एकमेवाद्वितीयम् ॥

दिंडी २८.

नमुं विश्वनाथ देव दयासिंधु, नमुं दिव्य महातत्त्व दीनबंधु;
नमुं शुद्ध मुक्त नित्य सदा शान्त, नमुं परम पिता पूर्ण कृपाकान्त.१

नमुं विश्वंभर विश्वना नियंता, नमुं सच्चिद्घन एक अनाद्यंता;
नमुं सर्व साक्षि सत्य मुक्तिदाता, नमुं मंगलमय भक्तजनत्राता. २
नमुं निर्मळ निःसंग न्यायकारी, नमुं सर्वशक्तिमान उपकारी;
नमुं सर्वसेव्य शान्तिसुखस्थान, नमुं करुणाकर सर्वशक्तिमान. ३
जगन्नाथ तमे सात्विक गुणधारी, दयायुक्त दिसे कृति बधी तमारी;
मागुं सुमति सदा विनवि वारवार, नाथ चरणकमल करुं हुं नमस्कार.४

आर्या.

अकल कला प्रभु तारी, नव विस्तारी गणाय कदि जिवथी;
प्रभु तुं बहु उपकारी, तुज सम बलवान् कोइ नथी. १
अवगणना बहु कीधी, नहिं प्रभु शिक्षा लिधी सुलक्ष विषे;
करुणा विना तमारी, प्रभु न अमारी विशुद्धि थशे. २
जगदात्मा नव जोशो, अगणित दोषो तमे कृपाभावे;
मातपिता सुत प्रत्ये, अभाव चित्ते कदि न लावे. ३
नहिं तीर्थोदकस्नाने, नहिं जलपाने पवित्र मन थाशे;
परमेश्वरप्रणिधाने, पाप सकल जीवनां जाशे. ४
हृदयतिमिर सहु कापो, प्रभु आपो शुभ अभीष्ट वरदान;
शरण ग्रही प्रभु करिये, तव भक्तिसुधा तणुं पान. ५
अस्थिर छे धन यौवन, प्रभु अस्थिर छे मनुष्यनो देह;
सत्य जवुं परलोके, तेमां नहिं कांइ संदेह. ६

मंगल पथ दर्शावो, वरसावो प्रभु कृपासुधाधारा;
प्रेमल दृष्टि तमारी, मागुं छुं प्रभु कृपागारा. ७
अष्टांगयोग साधन, प्रभु आराधन अमे सदा करिये;
इच्छा अमे तमारी, आदरथी नाथ अनुसरिये. ८
जाणो सहु हृदयाशय, फरि फरि वधू शुं नाथ अमे कहिये,
उत्तम मति प्रभु देशो, सदैव रे'शो सहाय तमे. ९

स्रग्विणी.

मंगलानंद दाता दयासागरा, सत्यरूपी सदा शान्त सर्वेश्वरा;
प्राणत्राता तमारा विना को नथी, सांभळो नाथ आ प्रार्थना प्रेमथी. १
प्राणपाता पिता पाप संहारशो, प्रेम राखी कृपाभाव विस्तारशो;
शुद्ध भावे अमे नित्य आराधिये, आत्मकल्याणनां साधनो साधिये. २
अल्प प्राणी अमे सर्वथा निर्बल, यत्न सर्वे अमारा जशे निष्फल;
मात्र देवप्रसादे अमे जीतिये, भक्ति सेवा करी चालिये नीतिये. ३
प्रेमदाता क्षमा पाप मारां करो, दुःख दारिद्र्य संकष्ट सर्वे हरो;
ईश्वराधीन छे सर्व मारी स्थिति, कांइ छानी नथी नाथ मारी कृति. ४
जन्म आप्यो तमे पुण्य मार्गे जवा, एक बीजा जनोने सहायी थवा;
धर्मशिक्षा तमारी अमे मानिये, लाभ तेमां अमारो खरो जाणिये. ५
हे दयासिंधु दोषो नहीं मापशो, सत्क्रियानी सदा सन्मती आपशो;
दीनबंधु दयासिंधु सच्चिद्घन, नित्य देशो तमारां प्रभु दर्शन. ६

ध्यान तारुं अहोरात्र राखी अमे, मागिये प्रेम आपो कृपाथी तमे;
पुण्य कार्यो अमे कांइ कीधां नथी, सत्य नीमो अमे नाथ लीधा नथी.७
मोहना सागरे मग्न पूरा थया, धर्मनो शुद्ध सन्मार्ग भूली गया;
छो कृपालु कृपाभावथी पाळशो, बूडताना तमे हाथने झालशो. ८
विघ्न आपत्ति सर्वे तमे टाळशो, वृत्ति मारी सुमार्गे सदा वाळशो;
बाळको मातनी पास आवी कहे, स्नेह भावे सदा लक्षमां ते ल्हे. ९
नाथ सामर्थ्य बीजुं अमारुं नथी, पापनी क्षान्ति आपो कृपादृष्टिथी;
प्रार्थना मात्र छे नाथ मारुं बळ, सर्व पूरी करो वाञ्छना मंगळ. १०
सत्य छो सर्व जीवो तणा जीवन, पुत्रस्नेहे करोछो तमे पालन;
ए कृपानो अमे पाड शुं वाळिये, जेवि आज्ञा करो ते विधे चालिये. ११
सर्व ब्रह्मांडना नाथ छो नायक, सत्य देवा तमे शान्तिना दायक;
पुण्यशाली जिवो पुण्य लोके जशे, वास तेनो प्रभूनी समीपे थशे. १२
भोग्य छे जीवने कृत्य जेवुं करे, ईश्वरी नीम छे ते कदी ना फरे;
इंद्रियोना विकारो घणा दुर्जय, ईश्वरानुग्रहे थाय तेनो जय. १३
हृत्सरोजे भरी भक्ति श्रद्धा जल, प्रेम अर्घ्यांजली आपिये निर्मल;
सृष्टि शोभा प्रभा निरिखये निश्चल, दर्शनो एज तारां महा मंगल. १४
मंगलाचार प्रेरो सदा दासने, संचरुं विश्वमां राखि विश्वासने;
कष्ट सर्वे कृपासिंधू संहारशो, नाथ मारा नमस्कार स्वीकारशो. १५
इश्वरोपासना नाथ ना मूकिये, हृद्य कार्यो तमारां नहीं चूकिये;
प्रार्थना ए तमे लक्षमां धारशो, नाथ मारा नमस्कार स्वीकारशो.१६

पातको सर्व पामे अमारां लय, आपशो तत्पदे दासने आश्रय;
शान्तिदाता तमे प्रेम विस्तारशो, नाथ मारा नमस्कार स्वीकारशो.१७
सर्व जाणो अमारो तमे आशय, राखशो दासने विश्वमां निर्भय;
मुक्तिदाता दया राखि उद्धारशो, नाथ मारा नमस्कार स्वीकारशो.१८
पाय सर्वे परब्रह्मने लागिये, हाथ जोडी क्षमा पापनी मागिये;
भक्ति द्यो मुक्ति द्यो देवि संपत्ति द्यो, लक्षमां नाथ आ प्रार्थना सर्व ल्यो.
वृत्ति मारी कदी भक्तिथी ना चळे, दुर्विकारो कदापी मने ना छळे;
सत्य नामे रहुं हुं तमारे बळे, मुक्तिनो लाभ देवप्रसादे मळे. २०
प्रेमदृष्टी थकी नाथ सामुं जुवो, किल्विष क्लेश सर्व अमारां धुवो;
सन्मति प्रेरशो भक्तिमुक्तिप्रदा, क्षेम कल्याण आरोग्य आपो सदा.२१

गायन.

पद.

राग भैरव तथा सर्व रागमां गवाय. ताळ चोताल

मंगल गुण महान्, सत्य रूप ज्ञानवान्,
अखंड ऐश्वर्यवान्, गाइये तमारुं गान;
गहन तमारी गति, नव पामे मूढ मति,
अद्भूत छे सर्व कृति, तमारी कळानिधान. मंगल०
आवो सर्व भक्तजन, गाओ प्रभुनां स्तवन,
जाओ चरण शरण, धरो तेनुं चित्त ध्यान;

धन्य एज भाग्यवान्, रहे प्रभु संनिधान,
अर्पे प्रेमअर्ध्यदान करे भक्तिसुधापान. मंगल० १

पद.

राग छायानाट. ताल त्रिताल. चाल, सांवरे सावरे मेरे गुन अवगुन.

गाओरे गाओरे प्रभु शुभ यशगुण.
हृदे धरिये करिये हरि साथे हेत,
राखिये प्रभुनों भरुंसो. गाओरे०
सकल ऋषि मुनि नाम जपे छे,
तुं मंगल रूप तारुं प्रेममुख निशिदिन निरखे छे,
तुज मते धाइए. गाओरे० १

पद.

राग झिंझोटी. ताल, दीपचंदी.

नाथरे तारे चरणे हुं वंदुं, चरणे हुं वंदुं, तारे चरणे हुं वंदुं. नाथरे०
पतित पावन परम पवित्र, प्रभु प्रणत प्राणी जन बंधु, नाथरे० १
प्रेमळ अंतःकरणथि तारी, भक्ति विशे हुं आनंदुं. नाथरे० २
शरणागत मुज दिन जन ऊपर, दयादृष्टि करो दयासिंधु. नाथरे० ३

पद.

राग काफी, ताल दीपचंदी

जय जय जय जय जगदादि कारण,
सत्य एक अखंड अनादि सबल सर्व सृष्टितारण. जय जय०
सर्वाश्रय सर्वसेव्य सनातन,
सच्चिद्घन सर्व ताप हरोरे;
तव करुणामृत पानपिपासित,
करिये अमे तमने नम्र प्रार्थन. जय जय० १
दीनवत्सल दीनबंधु दयाळ,
देव सदा दयादृष्टि करोरे;
असत् थकी सन्मार्गे विचरवा,
आपो प्रभु तमे सत्य साधन. जय जय० २
सत्य तमे सर्व सृष्टि नियंता,
नियमथकी तमे कदि ना फरोरे;
पुण्य प्राणी पुण्य धामे विरामे,
पामे पापी जन योग्य शासन. जय जय० ३
मंगल गुण यश मंगल महिमा,
गावा सदा सद्वृत्ति प्रेरोरे;
प्रेमथकी सर्व प्रणतजनोनुं,
करशो कृपानिधि नित्य पालन. जय जय० ४

पद.

राग, भैरव अथवा देशाख. ताल त्रिताल.
चाल, राधिका विरहे तव केशव. अष्टपदी.

जय परमात्मा प्रभु उपकारी,
करुणामय मंगल गुण धारी;
पादुका प्रणमुं तवमंगल,
मंगल सुंदर सुखकर अविचल. पादुका० १
दिशादिश तव कीर्ति विस्तारी,
वर्णवुं शुं प्रभु प्रभुता तारी. पादुका० २
विषय सुखे बहु लागी वृत्ति,
भक्ति विषे नथि थति अनुरक्ति. पादुका० ३
परितापित छे चित्त अमारुं,
थाय नहीं प्रभु ध्यान तमारुं. पादुका० ४
तव प्रेमामृत पानपिपासु,
शरण आवि प्रभुने हुं उपासुं. पादुका० ५
हरि हरि हरि शुभ नाम स्मरुंछुं,
करद्वय जोडी विनंति करुंछुं. पादुका० ३
प्रभु करुणाथी पावन थइये,
प्रसन्न चित्ते प्रभु पद जइये. पादुका० ७
मातपिता प्रतिपालक मारा,
वरसावो करुणाजल धारा. पादुका० ८

आरति.

जयदेव जयदेव जय सत्ताधीशा, जय सत्ताधीशा;
परात्परा परमेशा (२), प्रभु सर्वाध्यक्षा. जयदेव० ॥१॥

सत्य तमारो नाथ, आश्रय छे अमने (२);
मननी सहु इच्छाओ (२), प्रभु कहिये तमने. जयदेव० ॥२॥

परम कृपालू नाथ, हाथ ग्रही तारो (२);
अति अज्ञानी अमने (२), नव सूझे आरो. जयदेव० ॥३॥

नथी वास चिर काल, जिवनो आ लोके (२);
कृत्यनुसार मळे फल (२), संचित परलोके. जयदेव० ॥४॥

विघ्न विपत्ति समस्त, करुणा करि कापो (२);
आश्रित प्रणत जनोनां (२), पाप नहीं मापो. जयदेव० ॥५॥

अनन्य भावथि नाथ, करिये प्रभु सेवा (२);
अविहित अधम पुजनथी (२), दुर राखो देवा. जयदेव० ॥६॥

प्रभु इच्छा अनुसार, नित्य वर्तन करिये (२);
सच्छिक्षा वचनोने (२), हृदय विषे धरिये. जयदेव० ॥७॥

आशीर्वाद दयाल, नित्य तमे देशो (२);
ग्रहण करी अर्चनने (२), प्रसन्न प्रभु रे'शो. जयदेव० ॥८॥



अंक २९ मो.

अभंग.

आज भक्तवृन्द, धरीने आनंद;
सत्य सुखकंद, धामे चालो. ॥ १ ॥
चालोने उमंगे, प्रेम भाधु सगे;
लई हर्ष रंगे, मार्गे म्हालो. ॥ २ ॥
करी भक्तिपान, गातां ब्रह्मगान;
अमृत सोपान, पंक्ति चढो. ॥ ३ ॥
चढी दिव्यधाम, लईने विराम;
प्रभु अभिराम, पाये पडो. ॥ ४ ॥
पडरिश्वापद, विकट निनद;
करी तम—पद, धुजावे जो. ॥ ५ ॥
धैर्य कवचस्थ, लई ज्ञान शस्त्र,
प्रहरो समस्त, शत्रुने तो. ॥ ६ ॥
कदी अकस्मात्, दुःख वज्रपात;
विपज्झंझा वात, थाय भारे. ॥ ७ ॥
श्रद्धाशैले शान्ति, गुहामां विश्रान्ति;
लई अध्वक्रान्ति, वामो त्यारे. ॥ ८

एम भक्तबंधु, जोवा सुख सिन्धु,
पीवा अमी बिन्दु, पंथे पळे. ॥ ९ ॥
प्होंची इष्ट लक्ष्य, निरखी समक्ष;
ब्रह्मांड अध्यक्ष, पाये ळळी. ॥ १० ॥

माहं ब्रह्म निराकुर्यां मा मा ब्रह्म निराकरोत् अनिराकरणमस्तु.

हे जगदात्मन् ! प्रेमनिधान ! कदी पण हुं तारो परित्याग करुं नहिं अने तुं पण मारो परित्याग करीश नहिं, एम परस्पर अपरित्याग रहो,—एवी मारी सोत्कंठ प्रार्थना छे. मने संपूर्ण विश्वास छे के हुं जो तारुं निराकरण, परित्याग नहिं करुं, तो सर्वथा तुं मारो परित्याग नहिंज करे. जे दयानिधि तुं तारो परित्याग करनार पापिष्ठने पण सद्बुद्धि प्रेरी तारुं परम धाम पामवानो मार्ग दर्शावतां चूकतो नथी, अने पदे पदे स्खलन पामतां शिशुजन उपर माता जेम स्नेहभरी दृष्टि नांखी सुस्थित पद मूकतां शिखवे छे, तेम तारां अज्ञ मनुज शिशुनी चूको उपर प्रेममय नयनथीज जोई तेमनी उन्नति थवाज इच्छा राखे छे, ते तुं तारो परित्याग न करतां तनेज वळगी रहेनार भक्तजननो कदी पण परित्याग शी रीते करे? एज श्रद्धा वळथी आ अन्यथाःभयमद संसारपथमां निर्भय थई हुं चाली शकुं छुं. ए श्रद्धाबळे मने

कदी दगो दीधो नथी, दगो देनार नथी. संसारनां तत्काल तो संताप जनक एवां दुःखोए मने जे वेळाए विषादज्वालाग्रस्त कर्यो छे, ते वेळाए एज श्रद्धावले करीने अंतरात्म ए ज्वालाने शीतल कौमुदीवत् गणी अक्षुब्ध रही शक्यो छे. एज श्रद्धावले करीने जे वेळा दुष्ट विकारोनां दुर्मोहजनक मधुराभासि गानोथी लुब्ध थई छेतराईने विपथ पग मुकवा हुं तत्पर थयो छुं, ते वेळा 'माहं-ब्रह्म निराकुर्यां मा मा ब्रह्म निराकरोत्' ए गंभीर वाणी मूर्तिमती थईने "सावधान! पुत्र ए मार्ग ब्रह्मधामे जवानो नथी, एम जतां परित्याग थशे! सावधान!" एम मृदु पण उपालंभयुक्त वचन बोलती सांभळी हुं अचानक पापना गंभीर गर्तमां पडते पडते अटक्यो छुं. सुंदर अने सुगंधमय कुसुमित लताथी ढंकायला मलिन दुर्गंधमय अंध कूपना मुख उपरथी ए कुसुम लेवाने अर्थे एक पग तट उपर मूकी बीजो पग अलक्षित कूपना मुखमां मूकवा तत्पर थयेला मनुष्यनो सहसा पाछळथी आवी कोइ हाथ खेंची ले तो तेना हृदयमां यथार्थ स्थिति जाणतां जे भावसंचलन थतुं हशे, तेवुंज पण तेथी सहस्रगुण भावसंचलन मारा सहसा उन्निद्र थयेला आत्मामां ते वेळा थयुं छे. ए भावमांनो एक गंभीर भाव ए श्रद्धाबल उपर उपकारवृत्ति. ए बल मारी कने होवाथी हुं पोताने केटलो धन्य मानुं छुं! 'हुं तारो परित्याग नहिं करुं तो तुं मारो परित्याग नहिंज करे!' आ विचारे, आ श्रद्धा बले, कंटकमय भवारण्यना मार्गने मारी दृष्टिये कुसुमाकीर्ण कर्यो छे. एज बलथी ए कंटकोमां पण सोत्साह पग मूकतो मूकतो हुं ए

अरण्यमां थइने दूर दूर क्षितिजमां देखाता तारा आनंदधामना ज्योत्स्नामय प्रकाश उपर निरंतर बद्धलक्ष्य रही सक्यो छुं. तुं मारो सर्वथा परित्याग नहिं करे ! जे वेळा पुत्र, बंधु, भगिनी, पत्नी, मित्र, सर्वे मारो परित्याग करशे, ते वेळा निराशाथी भंगोन्मुख आ हृदयने धारण कोण करशे? सदाना बंधु ! एज तारा अपरित्यागनी श्रद्धानुं बल; ते शिवाय बीजुं कोण धारण करे? एवा सर्वकाळ अपरित्याग करनारा अपरित्याग श्रद्धा बलनुं मूल शुं करी सकुं? हे दयानिधान ! ए बळथी हुं कदी हीन न थाउं ए मारी अंतरनी प्रार्थना छे.

महान् पिता ! आ बलनो आटलो बधो महिमा जाण्या छतां एनो लाभ कांइक कांइक अनुभव्या छतां, मूर्ख पामर हुं केटली बधी वेळा ए बळनी अवमानना करी भूलमां पड्यो छुं ! असंख्य वेळा तारो परित्याग करी मारी आत्मोन्नतिना प्रतिबन्धक विकारोना मोहपाशमां पड्यो छुं. अज्ञान दृष्टिये विषमय पण तत्त्व दृष्टिये निरंतर अमृतमय एवो तारो सहवास तजी अमृताभासि पण परिणामे विषमय एवां पार्थिव सुखोनो परिचय करतां हुं तृप्त नथी थयो, विषमय परिणाम चाख्या छतां विषवत् तेनो त्याग नथी कर्यो. अपरित्याज्यनो परित्याग कर्योछे, परित्याज्यनो अपरित्याग कर्योछे. आम छतां पण, परित्यागनो पण अपरित्याग ए दयामय अंशयुक्त तारो स्वभाव मनमां लाववाथी कांइक हृदयने अवलम्बन मळे छे. परंतु ए मात्र अवलम्बन छे. तारी

कृपाना सोपान उपर क्रमे क्रमे चढवाने माटे योग्यता संपादन करवानो यत्न तो मारे करवोज जोइये. माटेज हुं प्रार्थना करी याचुंछुं के तारा अपरित्यागनो अपात्र छतां तारी दयाना मंद अवलम्बन उपर वेशी न रहेतां, ए अपरित्यागने सर्वथा पात्र थवाने अर्थे मुख्य साधन जे तारो अपरित्याग ते करवाने मने सामर्थ्य आप.

अनेक भक्तो तारी कृपाथी आ अपरित्यागश्रद्धाने वळे तर्या छे. मारामां महान् भक्तोनी योग्यतानो क्षुद्रतम पण अंश नथी. तथापि क्रमे क्रमे योग्यतानी श्रेणीमां चढवानुं उन्नत लक्ष्य राखीने, तेमज क्षुद्रतम जंतुनुं पण हित तारा हृदयमां निरंतर छे अने तेनी क्रमशः उन्नति थवानो तारो महान् उद्देश छे एम हुं जाणुंछुं तेथीज करीने, आ समये पण अयोग्य हुं छुं तोपण, अन्यथा असुलभ पण तारी दयामय वृत्तिने लीधे सुलभ एवी पदवीनी आकांक्षाथी, तुं मारो परित्याग ना करीश एम दीनभावे याचुंछुं, अने याचुंछुं के ए अपरित्याग निर्भय करवाने अर्थे हुं पण तारो कदी परित्याग न करुं ए श्रेष्ठ साधन तरफ मारुं निरंतर अने अव्यभिचरित लक्ष रहे एवुं वरदान आप. माहं ब्रह्म निराकुर्यां मा मा ब्रह्म निराकरोद् अनिराकरणमस्तु.

— — तथास्तु.

दिंडी २९.

आदि कारण परब्रह्म देवदेवा, प्रकृति सर्व सदाकाल करे सेवा;
नियमपूर्वक यश कीर्तन गुण गाय, अहोरात्रि मुलाधार प्रते जाय.१

वृक्ष वेलि लता छत्र चमर ढाळे, नमे नित्य धरा पुष्प भरी थाळे;
करे शितळ पवन व्यजन सर्व काळे,रुडा मंगलमय नियम सदा पाळे.२

सिंधुलहरि तने आपि बहू मान, करे नित्य अर्घ्यअंजलिप्रदान;
महागव्हरगिरि गाय तारुं गान, ऋतू काल करे यजन अनुष्ठान.३

ग्रहे औषधी सुगंध रम्य श्वास, धरे चंदन सह धूपनो सुवास;
रत्न धान्य द्रव्य संपत्ति भंडार, करे अर्पण नैवेद्य वारवार। ४

गहन मेघनाद दुंदभी वगाडे, महच्छक्ति सुचवि जीवने जगाडे;
इंद्र वरुण करेछे महाभिषेक, प्रकृति एम करे अर्चना अनेक. ५

अहो तारा नक्षत्र गण अयूत, दिसे शोभा अति सुंदर अद्भूत;
भ्रमण रूपि करे नित्य महत् कृत्य, करे राशि चक्रमंडले सुनृत्य. ६

प्रगटि सूर्य महाज्योतिनो प्रदीप, नमे नित्य परमपूज्यपद समीप;
कोटि किरण थकी आरती उतारे, करे वंदना सहस्र नमस्कारे. ७

षोडशोपचाररूपि कला धारी, करे चंद्रमा प्रदक्षिणा तमारी;
पुंजं तेज परम देव जोडि पाणि, वदुं जयजयजयकार मुखे वाणि. ८

ऊनमहीदीप.

प्रेमसिन्धु ! प्रेमनो प्रसाद सर्वने,
आपतो दिसे तुं, तो हु जीव अल्पने;
एक बिन्दु प्रेम अमृत करुं शुं मळे ?
जे थकि चिरतृपित कंठशोप कंइ टळे. १

आश राखुं शुं हुं एह अमृत बिन्दुनी ?
जे हुं पापि रह्यो विमुख न्यायसिंधुनी;
दीर्घकाळ मूर्ख बाळ विपथ हुं भम्यो,
दूर भमी अधम पापपुंजमां रम्यो. २

दुर्विकार दास हुं स्वच्छंदि थई फर्यो,
आज्ञ उलंघी हुं निरंकुशज संचर्यो;
ने निषिद्ध मार्ग भटकवा हुं नीसर्यो,
तजी तातनो निवास, सुपथ वीसर्यो. ३

प्रेमयुक्त तंत्र तातनो उवेखियो,
योग्य नियंत्रण तणो न लाभ लेखियो;
'आव्य पुत्र' एम प्रेमभर पुकारियो;
तात, तेह शब्द में न श्रवण धारियो. ४

ज्ञान मूडि आपि तात ते गुमाविने,
चावरी यथेच्छ कुमार्गे उडाविने;

शिथिल रश्मि सर्व दुर्विकारनी करी,
पापमां पड्यो अनेकधा फरी फरी. ५

तात पास शुं जई सकुं हवे खरे?
चरणनी समीप जई हुं पडीशरे;
तात मंदिरे ज स्थान इजि हशे अरे,
स्थान एक दास तणुं—काज माहरे. ६

जो! उभा पिताजि मार्ग मुख निरीखता,
जो! उभा करो प्रसारि प्रेममय पिता;
प्रेममूर्ति ईश जाणुं, जाणुं हुं खरे,
छे हजी मदर्थ प्रेम तातमंदिरे. ७

शिखरिणी.

भर्यो दुःखावर्ते विकटपथ क्षाराब्धि भवनो,
ज्यहां जोरे गाजे पडरिगणना चंड पवनो;
रह्या ज्यां छूपेला विषम खडको दुर्विषयना,
प्रभो! नौका मारी सरल चलवो राखि करुणा. १

धरी ज्ञानज्योति खडक खडके अंबुभ्रमणे,
दई धर्मास्थाना दृढ बळ तणो नाविक मने;
भरीने भंडारो मधुर तुज प्रेमामृत तणा,
प्रभो! नौका मारी सरल चलवो राखि करुणा. २

न जाणुं अज्ञानी अति विकट नौचालनविधि,
रह्यो आशे तारी, अखुट करुणानो तुज निधि;
सुखद्वीपो मार्गे स्मितमय रह्या जे अणगण्या,
त्यहां नौका मारी सरल चलवो राखि करुणा. ३

कदी घेरे घेरी हृदय विपदोनी घनघटा,
मचावी अंधारूं नयन थकि लोपे पथ, तदा;
कृपारश्मि मेरो, घनदळ विखेरी दइ घणा,
प्रभो! नौका मेरो सुसरलपथे राखि करुणा. ४

जवानुं अंते जे सुखमय किनारे श्रम करी,
ज्यहां प्होंची पाछा वळवुं नहि कोने कदि फरी;
धरी लक्षे तेने चलनु मुज नौका सुतरणा,
न जावा द्यो आडी अवळि, करिने नाथ! करुणा. ५

नहि ध्वान्तो रोके, नहि विषय झंझानिल वहे,
ग्रसे ना आवर्तो, खडक अथडाई नव रहे;
तरे एतो क्षेमे सबल धरिने वेग द्विगुणा,
ज्यहां प्रेरे नौका प्रभु निज करे राखि करुणा. ६

तरीने ए क्षेमे स्मितमय सुरा व्योमभि तळे,
वही चाले मेरी सुचरित तणा मन्द अनिले;
जलो नाचंती ए मृदु लहरिमा क्षोभन्न विना,
प्रभु मेरी नौका अनुभवति ए दिव्य करुणा.

अने अंते पेला स्मितमय किनारा-जहिँ पड्या,
भर्या आनंदोए अनुपम सुखो रे' जहिँ जड्यां;
तहीं दे ऊतारी सरल गतिथी ए सुसरणा,
भर्या ! नौका मारी चलवि अतुला धारि करुणा. ८



वसंततिलका.

जे एक व्याप्त जगदात्म स्वरूप तत्त्व,
जेनुं अतीत वचनोथी रह्युं महत्त्व;
जेने बळे अनवलम्बि रह्या विराजे,
ज्योतिर्गणो अगण व्योम समुद्र राजे. १

ते तत्त्वशुं हृदय योग समाधिलीन,
धारी, लहुं सुख अवर्ण्य बनीज दीन;
तेने बळे अवळ एक हुं अल्प जंतु,
क्षेमे तरुं विकट आ भवदुःखसिन्धु. २

विस्तीर्ण व्योमपट मांहिं विराजतो जे,
गंभीर सिन्धु घुघितो महिं गाजतो जेः
सोधे भमी विपथगामि विदेश जेने,
अंतर्गुहा महिं निलीन निहाळुं तेने. ३

जे वेळ गान विषयो तणुं विप्रलम्भि,
दोरे मने विपथ ते समये हुं थंभी;

अंतर्निलीन तुजने स्मरिने सुपंथे,
पाछो फरूं, जइ रहुं तुज धाम अंते. ४

एवुं सदा बळ मने करुणाब्धि देजे,
सर्वे विपत्ति समये तुं समीप रे'जे;
जेथी भवाटविनि पार तरुं हुं स्हेजे,
दीनोनुं कार्य करता करुणार्द्र छे जे. ५

अंधार आ जगदरण्य कराल दीसे,
दुःश्वापदो विषय त्यां विचरे अतीशे;
दे ज्ञानदीप, सुपथे विचरुं विचारी,
दे धर्मशस्त्र, दउं श्वापदने विदारी. ६

अत्यंत छे कठिन ए असिधार नृत्य,
तारी कृपा सफल ए करशे ज कृत्य;
होये नहीं तुज कृपाबळ जो मुहूर्त,
तो विश्वयंत्र सघळो विरमे ज तुर्त. ७

आव्यो हुं तात तुज धामथि तो विशुद्ध,
संसार पंक पडतां बनियो अशुद्ध;
थाउं फरी विमल ईश्वरभक्तिस्नाने,
ने थाउं योग्य तुज द्वार विशे जवाने. ८

एवी हुं वाञ्छुं सुखसिद्धि सदैव नाथ,
साफल्य आपवुं दयानिधि तूज हाथ;

सद्भक्तिनी सरित मांहि निमग्न यातां,
संसारदाह दुःख सर्व शमीज जातां. ९

मागुं न कांइ प्रभु पार्थिव वैभवो हुं,
माया विनश्वर सुखोथि कदी न मोहुं;
मागुं हुं भक्तिसरिता परिताप हारी,
जे अंतमां अमृतसिन्धु विशे जनारी. १०

गायन.

पद.

राग भैरव तथा सर्व रागमां गवाय. ताल चोताल.

विपदतिमिर भेदी, शोकघनदल छेदी,
ईश प्रेम रवि पूर्ण, प्रभाथी प्रकासे छे;
जागो भक्त वृन्द सवे, विकसित चित्त पद्मे,
ब्रह्मगान गुंजारव भरो दुःख नासे छे. विपद०

विषयउलूकगण, पेखी रविने गगन,
करे शीघ्र पलायन, तेजथी ए त्रासे छे;
आत्मपक्षिवृन्द उडो, आनंदअनिल चडो,
सुखदायी दिव्य रुडो प्रेमभानु भासे छे. विपद० १

पद.

राग काफी अथवा विहाग, ताल दीपचंदी.
चाल, गोविंदना गुण गाओरे. सर्व मंगल थाशे०

प्रभु महिमा गुण गाओरे, सर्व मंगल थाशे. ॥ ० ॥
त्रिभुवनपालन ब्रह्म सनातन, सच्चिद्घन पद धाओरे; सर्व मंगल थाशे. प्रभु महिमा० १
पराभक्तिना पुण्य तीर्थमां, निर्मल मनथकी नाहोरे; सर्व मंगल थाशे. प्रभु महिमा० २
परमामृत पद प्राप्त थवाने, प्रभु शरणापन्न थाओरे; सर्व मंगल थाशे. प्रभु महिमा० ३
कुत्सित कर्मनो त्याग करीने, मंगल मार्गे जाओरे, सर्व मंगल थाशे. प्रभु महिमा० ४
परमात्मा परब्रह्मपदाब्जे, प्रीतिपुष्प वधावोरे, सर्व मंगल थाशे. प्रभु महिमा० ५

पद.

राग देश वराडी. ताल झंपा. चाल, वदसि यदिकिंचिदपि—अष्टपदी.

जगदधिप देव ! तव द्वार सहु सेवको, अति करुणरव करि पुकारे;
इतर नव को दिसे शरण प्रभु तुं विना, आर्तरव तुं श्रवण धारे.
प्रभो शान्तिसिन्धो प्रभो शान्तिसिन्धो ०

देहि प्रभु देहि प्रभु शान्ति, दहन संसार अंगार अतिशय करे;
नव मळे कांइ विश्रान्ति. प्रभो शान्ति० २

षडरिगण हृदुपवन प्रज्वली नांखता, छेदि सद्वृत्ति सुलताने;
पुण्यमति कुसुमकळि मर्दि नांखे वळि जे खिली धर्मजलपाने.
प्रभो शान्ति० ३

मुदु सदुपदेश माळी मथे रोपवा, पुण्यमति वीज उद्याने;
त्वरित करि द्वारनीं व्हार मंडे पछी बीज उच्छेद करवाने.
प्रभो शान्ति० ४

पापविषतरु तणां वीजनुं उपवने, वपन करताज स्वच्छन्दे;
कुमतिजलधार अविरत करी वृक्षने, दुःख पुष्पित करे अंते.
प्रभो शान्ति० ५

ए विपज्वालथी वाल तुज त्रासिने, नासिने द्वार तुज आवे;
झटिति करुणामृते, प्रशम कर दाहनो, दीन जन याचता भावे.
प्रभो शान्ति० ६

सकल विषवृक्ष निर्मूल उच्छेदवा, सबलतर ज्ञानसुकुठारे;
दिव्य वळ दइ, सुमतिवेलि कुसुमितकरो, सींचिने शान्तिजलधारे.
प्रभो शान्ति० ७

एम प्रभु प्रेमकुसुमो हृदुद्यानमां, खिलवि भजनानिलनि ल्हेरे;
नित्य सुखहासमां, भक्तिसुविलासमां, राख तुज दासने म्हेरे.
प्रभो शान्ति० ८

पद.

राग मह्राड. ताल एक ताल.

दयासिंधु तारे वारणे पुकारुं दीन बाल.
कृपासिंधु—दीनबंधु तारे वारणे पुकारुं दीनबाल. ॥ ० ॥

दिन ऊगे वळि सांज पडेरे, वेगे वीती जाय काळ;
अज्ञानी समजुं नहींरे, करो प्रभु तमे प्रतिपाल. दयासिंधु० १

शुं करवाने जन्म दियोरे, तेनो करुं छुं विचार;
करवानुं ते किधुं नथीरे, छूटि पड्यो अवतार. दयासिंधु० २

मात पिता लाडी लाडी मागुंरे, नव करो कदी रीस,
पतितपावन छो तमेरे, सदा साह्य करो जगदीश. दयासिंधु० ३

क्षमा करो पापनी प्रभुरे, किधां जे आज पर्यंत;
हवे फरी फरी नहीं करुंरे, तारो मने भगवंत. दयासिंधु० ४

तारो तारो प्रभु तारो मनेरे, तारो त्रिभुवन नाथ;
भवसागर मांहीं भमुं छुं कृपा करि ग्रहो हाथ. दयासिंधु० ५

आरति.

जयदेव, जयदेव, जय जगदधिराया, जय जगदधिराया;
तप्त हृदय भक्तोपर (२), करो कृपा छाया. जयदेव० ॥१॥
अमृतनिकेतन नाथ!, मृत्यु भयो फेडो (२);
विषमय विषयाथि छोडी (२), निज धामे तेडो. जयदेव० ॥२॥
आवि चरण तव तात! मरणभय न धरिये (२);
अमृतसिन्धु! सुन्दरमुख (२) निरखि दुख विसरिये. जयदेव० ॥३॥
अशरण शरण तुं एक, तुज पद नौकाए (२);
विकट भवजलधि केरुं (२), तरण सरल थाए. जयदेव० ॥४॥
सहज उतरि भवपार, रहि दिव्य किनारे (२),
स्नान सतत करिये तुज (२), स्मितज्योत्स्नाधारे. जयदेव० ॥५॥
माळि तुज वाळ विशाल, दिव्यवने रमिये (२);
अमृत कुसुमगण विणतां (२), स्वच्छंदे भमिये. जयदेव० ॥६॥
प्रेमभिनी सहु भक्त, हृदय कुसुम कळिये (२);
अनुपम माळ गुंथी तुज (२), पद अर्पी ढळिये. जयदेव० ॥७॥
शान्त दिव्य तुज भव्य, वदन निरखि क्षेमे (२);
भक्तिगान मधुर स्वे (२), करिये सहु प्रेमे. जयदेव० ॥८॥



अंक ३० मो.

दिंडि.

जाव दूर जाव दूर विषय चोर, हवे ऊडि गई मोहरजनि घोर;
ज्यहां दिव्य प्रेम तणो ज्योति भासे, त्वरित विषय निशाचर
त्यहांथि नासे. १
हृदय मंदिर प्रकाश दिव्य आवे, भक्त जागि उठो प्रेम पूर्ण भावे;
करी आवाहन मधुर प्रेम गाने, करो तहिं विराजमान जगविताने. २
निरखि दिव्य पितानुं अमूर्तरूप, स्तवन विषय करो एह-गुण अनूप;
जेह वाणि तणी शक्तिथी अतीत, मन्दबुद्धि स्तवे तेहने शि रीत. ३
भजन प्रेम विनां वचनवडे गाओ, वाणि दान मळ्युं सार्थक ते थाओ;
विसरि दुर्विकार क्षणभर बनि दीन, याव प्रभुप्रेम योग विशे लीन.४
जेह प्रेमसिन्धु विश्व विशे व्यापे, मनुज बुद्धि चंचु जे शि रीत मापे;
कीट कुंजर सहु ज्यां रमे अशंक, तेह प्रेम विशे डुबो बनी रंक. ५
काय वाणि मने पाप कियां नित्ये, जाणिने अजाणतां विमूढ चित्ते;
करो भस्म ते प्रज्वालि अनुतापे, याव दीन दयासिन्धु क्षमा आपे.६
करो प्रार्थन बनि नम्र नाथ केरुं, हृदय केरुं ध्वान्त जेथि जाय घेरुं;
पाप बुद्धि पुनरुदय कदी न पामे, एम याचि रहो, जवा पुण्यधामे. ७
लई मंगलमय अमळ भक्ति दीप, करो आरति जइ नाथनी समीप;
प्रेमवदन अमृतसदननुं निहाळो, करी कोटि नमन चरण शीर्ष ढाळो.८

ॐ असतो मा सद्गमय तमसो मा ज्योतिर्गमय मृत्योर्माऽमृतं गमय। आविरावीर्म एधि। रुद्र यत्ते दाक्षिणं मुखं तेन मां पाहि नित्यम्॥

हे सत्यस्वरूप प्रभो! असत्मांथी अमने सत्मां लई जाओ. सर्व इन्द्रियग्राह्य ब्रह्मांड ते मिथ्याभासि नथी ते हमे जाणिये छिये. परंतु एमां सत् अने असत् बे अंश छे. तारी अद्भुत शक्ति तथा तारो अवर्ण्य महिमा तेमज तारा प्रौढ तथा सुंदर गुणो,–ए सर्व अनश्वर तथा सत् पदार्थोनी गूढ सूचनाओ जेटले अंशे आ बाह्य जगत् करेछे तेटले अंशे ते सत्छे. तेम ज तारुं परम धाम पामवाने सहायभूत जेटले अंशे ए जगत् अने एना पदार्थो थाय छे, ते एनो सत् अंशछे. बाकी आ सृष्ट पदार्थोनो महान् समुदाय चिरस्थायी नथी, अंते तो नाश पामनार छे, तेम ज आ जड जगत्नां ईश्वरविमुख सर्व अंग ते असत् ज छे. परम सत् वस्तु तो तुं ज अने जे कांइ तारुं छे ते ज छे. असत् छे ते कालमहोदधिमां कोइने कोइ दिवसे डूबी जनार छे, ए निःसंशय छे; अने सत् छे ते अनश्वर होई ए कालसागरमां जीवंत सतेज व्हेतुं रहेनार ज छे. माटे हे सत्स्वरूप ईश्वर! तुं अमने आ जड जगत्ना सर्व असदंशथी दूर राख; ए ईश्वरविमुख दुर्विकारपूर्ण जड असत् अंशमां अमे पड्या होइये ते वेळा तरत तेमांथी काढीने अमने तारा मंगलधामनी आनंदमय प्रेरणा करनार सदंशमां लई जा, ए सत् उपर अमारी अनन्य प्रीति टकावी राख.

हे अलौकिक ज्योतिर्मय देव ! अंधकारमांथी अमने ज्योतिमां लइ जा.

तारा अमृतनिकेतनमांथी—अमारा पूर्ववासस्थानमांथी नीकळीने, आ संसाराटवीमां पडतां, अमे गाढ अज्ञानना, मोहना, निविड अंधकारमां पडया छिये. मूढचित्त अमे ए अंधकारनुं स्वरूप न जाणतां अनेक वेळा जाणे प्रकाशमां छिये एम मानी विपथ जता रहिये छिये, माटे हे दयानिधि ! तुं ज्योतिर्मय छे, तारुं धाम अंधकार रहितछे,—तो तारां दीन बाळकोनो आर्तरव सांभळीने, आ जड अंधकारमांथी काढी तारा दिव्य ज्योतिना आनंदनो उपभोग कराव. अने एवुं बल आप के ए ज्योति निरंतर अमारे दृष्टिगोचर रहे. आ जगत्‌मां प्रबल विषयवातथी अमारा आत्मदीप होलाई जई आ भवाटवीना तिमिरमां लीन थयाछे. फरीथी तारा दिव्य ज्योतिमां ए आत्मदीप सळगावी निरंतर प्रदीप्त राखिये एवुं सुभाग्य, हे ज्योतिर्निधि ! अमने आप. ज्योतिमांथी अन्य ज्योति प्रदीप्त थतां प्रदीपक ज्योतिमांथी कांइ ऊणुं थतुं नथी. तो तारा महान् ज्योतिःपुंजमां आ भक्तवृन्दना आत्मदीप तो शुं !—पण सर्व जगत्‌मांना सर्व चेतनाचेतन दीपोने प्रदीप्त करतां तारो ज्योतिःपुंज तद्वत् रहेशे; अने आ बीजा सर्व दीप प्रगटाईने अलौकिक ज्योतिर्माळ झगझगी रहेशे. हे महान् प्रभु ! आवुं दिव्य परिणाम आ तारा अल्पबाळकोनी

दृष्टिये पाड. अहिं रहीने पण,–तारा ज्योतिर्मय धाममां आव्यानी पूर्वे पण,—ए ज्योतिर्माळना झगझगाटनी कांइ कांइ झांखी थई सकेछे. ते करवानी शक्ति आपी अंते आ परमज्योतिना समीप वास आपनार तुं समर्थ दाताछे. अमे तो एटलुं ज याचिये छिये के ए स्थिति पामवाने योग्यता आवे एवी सद्बुद्धि अमने निरंतर प्रेरतो रहेजे. अने ते थवा माटे आ अंधकारमय जगत्मां चालतां पण तारो दिव्यज्योति निरंतर अमारा हृदयमां धारण करी राखिये एवुं सुभाग्य आप.

हे अमृतस्वरूप! मृत्युमांथी अमने अमृतमां लई जा. अमृतसिन्धु! आ जगत्ना जड विषयोमां मनने निबद्ध राख्याथी अमारो अमृत आत्मा ते पण दुर्विकारना विषथी मृत्युवश थायछे, मृतमाय थायछे. ए मृत्युनी स्थिति अमने कदी प्राप्त ज न थाय तो तो म्होटुं सुदैव. एम थवाने माटे तो ए विषयविषपानथी विमुख ज रहेवुं जोइये. पण हे दयामय! कदी ए विषस्पर्शथी अमारो आत्मा मरणोन्मुख थाय तो तारा प्रेमामृत वडे मूर्छा दूर करी नांख, अने अमृतपथमां निरंतर राख. कदी ए विषयपानथी मृत ज थाय तोपण तारा सबळ दयामय स्वभावने अनुरोधे, अद्भुत अमृत साधनोथी अमारा आत्माने पुनरुज्जीवन आपवानुं सामर्थ्य प्रभु! तारी कने छे ज, तो ते वडे अमारुं पुनरुज्जीवन कर. ए ज अमारी सोत्कंठ प्रार्थना छे.

तुं अमारी आगळ मकाशित था. स्वयंमकाश! असत्‌थी अमने सत्‌मां लाव्या पछी, अंधकारमांथी अमने ज्योतिर्मां लाव्या पछी, मृत्युमांथी अमने अमृतमां आण्या पछी,—तुं आपोआप अमारां आत्मचक्षुनी समीपे मकाशित थईश ज. पछी विशेष शुं मागिये के मकाशित था? ए ज के ए तारो आविर्भाव अमारा हृदयमां थतां जे अलौकिक आनंद माप्त थाय ते आनंद क्षणिक न बने अने चिरकाल एनां सुफळ अमने माप्त थाय एटलुं अमने कृपा करी आप.

छेवटे एटलुं ज मागिये छिये के हे भव्य मभो! तारा सुंदर स्वरूपने मतापे अमारुं निरंतर रक्षण कर. जेम तारी दया ते न्यायना अंशथी सबळ छे. तेम तारो कोप पण दयाना अंशथी मिश्रित होवाथी मृदु छे. माटे ज तारा दयामय अने तेथी ज सुंदर स्वरूपनुं संबोधन करी तारी कने रक्षण मागिये छिये.

हे न्यायसिंधो! आ सर्व म्होटा म्होटा पदार्थोनी मार्थना यथोचित स्वीकारजे.

तथास्तु.

दिंडी ३०.

चमत्कार प्रभु शक्तिनो अपार, तर्क थाय नहीं अवधि थंकी पार;
सर्व वस्तु नियम पूर्वके जणाय, सजनहारतणो सत्य बोध थाय. १
हृदयथाळ भरी प्रेमऊपहारे, अर्पुं चरण तने नाथ वारवारे;
गाउं तारा गुण नित्य मधुर नादे, थाउ तृप्त पूर्ण प्रेमना प्रसादे. २
कृपाकांत हृदयध्वांत सकल कापो, करो शान्तिजले शमन सर्व तापो;
सदा सत्य धर्म ज्ञान मने आपो, परा भक्तिरूपि छाप हृदय छापो.३
सत्य धर्म पाळि विमळ हृदय थाउं, निंद्य मार्ग नाथ नहिं कदापि जाउं;
शुमति आपि सफल जन्म करो मारो, हृदयतिमिर ज्ञानज्योतिथी निवारो. ४
शरण आवि तने वंदु विश्वपाला, अर्पुं प्रेमथकी दिंडि गीति माला;
धन्यभाग्य मानि उचरुं धन्यवाद, हाथ जोडि मागुं प्रेमनो प्रसाद. ५

उपजाति.

रह्युं अनालम्बन जे प्रतापे, ब्रह्माड आ, ने महिं जेह व्यापे;
व्यापी दिशा सर्व विशे विराजे, तथापि रे'तो अवशेष गाजे. १
विभुत्व जे अद्भुत एवुं धारे, तेनी करुं शी स्तुति हुं वधारे ?
अनंत दिङ् काल तने न मापे, तारे विशे जाय समाइ आपे. २

अतीत वाचा मन इन्द्रियोथी, स्वरूप तारुं नहिं गम्य कोथी;
तथापि भक्तो तुज दिव्य ज्योति, अंतर्गुहा लीन जुवेज सोधी. ३

अद्भुत ए ज्योति नदी विशाळी, विस्तीर्ण थाती जगमां निहाळी;
आनंद आश्चर्य भरेल नेने, स्तवी रह्या भक्त असंख्य तेने. ४

ए ज्योतिने दिव्य प्रवाह डूबी, ब्रह्मांड धारे शि अवर्ण्य खूबी!
अंजाइ जे चिन्तनथी विरामे, भमी मनःकल्पन थाक पामे. ५

विचित्र ने अद्भुत सान्ध्यरंगे, गंभीर अंभोनिधिना तरंगे;
ज्वलंत जीवंत सदाय रे'तुं, ए दिव्य ज्योतिर्नदीपूर व्हेतुं. ६

असंख्य आ तारकना सुवृन्दे, प्रचंड ने मन्द रवीन्दु बिम्बे;
ज्वलंत जीवंत सदाय रे'तुं, ए दिव्य ज्योतिर्नदीपूर व्हेतुं. ७

लिली धरा जे चळकंति हासे, अने भुरुं व्योमवितान भासे;
ज्वलंत ए मांहिं सदाय रे'तुं, ए दिव्य ज्योतिर्नदीपूर व्हेतुं. ८

उरे धरी सुस्मित पुष्पमाला, शिरे धरी मेघकिरीट काळा;
शैलो परे निर्झरनी विभूति, ए दिव्य ज्योतिनदी त्यांहिं व्हेती. ९

ए ज्योतिमां आत्म डुबावि देवा, सुचिन्तने योग समाधि लेवा;
भक्तो मळ्या आज पवित्र स्थाने, सुभाग्य टे सिद्धि न ए थवाने. १०

अंधाइरूं पट गाढुं गुंथी, देवा मथे ढांकि तनेज हुंथी;
नितान्त दे अंध मने बनावी, ए ज्योतिनी ने मुज मध्य आवी. ११

संसार केरा विषयो समस्त, करी जडाच्छादन तेनुं ध्वस्त;
मुकोज मारां नयनो समीप, ए ज्योतिनो अद्भुत दिव्य दीप. १२

जेने निहाळी जगजाळ तोडुं, जे संग हुं आत्मसुदीप जोडुं;
सुसंगमां ए चिरकाळ लागुं, जगत्पिता ! कांइ बिजुं न मागुं. १३

तोटक.

अति अद्भुत आ जगनी रचना, रचि नाथ किधी घटिता घटना;
सुखबीज मुक्युं सहु दुःख विशे, जगनां सुखमां दुःख मिश्र दिसे. १

तुज हेतु गभीर पुरो न कळे, मथतां मथतां नव पार मळे;
करि तर्क महामुनि थाकि गया, तुज ज्ञान विशे सहु बाळ रह्या. २

तुज अद्भुत ए महिमा प्रसर्यो, जगमां, सहु ठाम दिसे विचर्यो;
रविबिम्ब विशे वळि इन्दु विशे, महिमा तुज पूर्ण प्रदीप्त दिसे. ३

फळ पुष्प भरी धरणी उपरे, वळि तारकफेनिल व्योमसरे;
प्रभुनो महिमा उजळो पसरे, करि जे तणुं चिन्तन बुद्धि ठरे. ४

पडुं तर्कनी जाळ विशे नव हुं, तुज भक्ति तणो अवलम्ब ग्रहुं;
नव जाणुं बिजो कंइ मार्ग प्रभु, तुज प्रेम वडेज अहीं हुं नमुं. ५

जननी सम लालन पालन जे, करि भक्त तणुं, न घडीक तजे;
अति प्रेमल ए प्रभुने विसरे, धिक ते तणुं जीवन व्यर्थ सरे. ६

मुज जीवनपंथ अनेक समे, प्रभु ते भरियो मिठडां कुसुमे;
कदि कंटक तोय सर्या चरणे, सिंच्युं प्रेम अमी अणमोलुं व्रणे. ७

उपकार अतोल अमोल कर्या, तुज ए क्यम जाय कदी विसर्या?
क्यम पाड वळे जन रंक थकी? तुज दास बनी रहुं नाथ नकी.८

बनि दास निरंतर नम्र रहुं, सुख दुःख विशे स्थिरता ज लहुं;
सुख-पान थकी नव मत्त थउं, दुःखमां तुजने नव दोष दउं. ९

रिपुने पण धारि उदारपणुं, दउं क्षान्ति, नही अपकार गणुं;
तुज पाड तणो प्रभु एह रिते, बदलो दउं-एटलुं मागुं प्रीते. १०

गीति.

अद्भुत आ ब्रह्मांडे विपुल कीर्ति व्यापि जेह एक तणी;
महान ते प्रभु शरणे आवी भक्तो उभा सुदीन बनी. १

स्तुति ए तुज कीर्ति तणी क्यम करि सकिये अमे अल्प जंतु?
सानंदाश्चर्य भर्या धरि रहिये मौन हे कलासिन्धु! २

गहन गगन कुहर विशे चमकि रह्यो गण असंख्य तारानो;
गंभीर भाव भरियां तुज कीर्ति तणां करे स्तवन गानो. ३

स्तवन गान वळि गातां विविध स्वरे पंखिडां उषाकाळे;
सन्ध्या समये सिन्धु उपहार गभीर गानने ढाळे. ४

ए स्तुति गानो अनुपम प्रकृति रचे नवनवां ज ते आगे;
मनुज तणां स्तुति गानो शुष्क निरस निर्बळां वर्यां लागे. ५
स्तुति विधि नव कंइ जाणुं जाणुं हुं एक भक्ति प्रेम भरी;
जे भक्ति तणे योगे दुस्तर भवसिंधु जाउं सहज तरी. ६
तारिया अनेक भक्तो प्रभु तुज करुणावले विपद सिन्धु;
धरि मन ए विश्वासो आज अमे प्रार्थिये अवळ जन्तु. ७
न मागिये पार्थिव सुख, नव वान्छा विपुल बुद्धिवैभवनी;
एक ज प्रार्थन आ छे–द्यो भक्तिसुधा भवाग्निवलशमनी. ८

गायन.

पद.

राग भैरव तथा सर्व रागमां गवाय. ताल चोताल.

शान्त आ सायंसमय, शुद्ध शान्त रसमय,
करीने निज हृदय शान्तिसिन्धु ध्याइये;
शान्त सान्ध्यघनरंग, शान्त उदधितरंग,
निरखीने निज अंग शान्ति छाय छाइये. शान्त०
अनंतोदधि किनारे, रही जननी पुकारे,
प्रेममय स्मित धारे, तेह पद्र धाइये;
जई जननी उछंग, धरीने प्रेम उमंग,
मळी सर्व बाळसंग, भक्तिगान गाइये. शान्त० १

पद.

राग कल्याण. ताल त्रिताल. चाल, लवकरी धाव सख्या यदुराया०

सत्वर धाओ सखा जगराया; अति दुर्घट दुर्गम दुस्तर छे,
तुज माया; सत्वर० ०
मंगलनिधि मंगल महिमा गुण, वेद शास्त्रे गवाया. सत्वर० १
दीनकिंकरपर करशो निरंतर, प्रभु करुणाद्रुमजाया. सत्वर० २

पद.

राग खमाच मिश्र काफी जिल्हो, ताल त्रिताल.

आज आ घडी शुभकारक हो—आज०
अति सुंदर मंदिरमां मळीने, गाय तारा गुण नरनारिरे;
शुभकारक हो. आज० १

प्रसन्न रहो परब्रह्म परात्पर, मागिये अमे सदा कृपा तारीरे;
शुभकारक हो. आज० २

जगदात्मा आशिष शुभ देशो, वरसो अखंडित प्रेमवारिरे;
शुभकारक हो. आज० ३

पद.

राग विहाग. ताल झमक.

जय परम शुभ सदन ब्रह्म सनातन,
करुणासागर कलुष निवारण.		जय परम० ०
जय विश्वपाता अनंत विधाता;
जयदेव देवेश जीवनुं जीवन.		जय परम० १
जयशान्तिदाता अखंड अजाता;
जय जगतारण जगदादिकारण.		जय परम० २
जय विश्ववंदन विघ्ननिकंदन;
जय विश्वपावन पापविनाशन.		जय परम० ३
आनंदे आनंदे प्रणमि पदारविंदे;
गाइये सहु मळि मंगल गायन.		जय परम० ४
विश्वनियंता विपत्तिनिहंता;
आपो अखंडित भक्तिनुं साधन.		जय परम० ५
तव करुणामृत पान पिपासित;
द्यो शुभ दर्शन देव दयाघन.		जय परम० ६
जय भक्तत्राता मुक्तिप्रदाता;
मागिये प्रभु अमे पाप क्षमापन.		जय परम० ७
जयदेव जय जय जय मंगलमय;
करशो कृपाघन करुणावलोकन.		जय परम० ८

आरति.

जयदेव जयदेव, जय आनंदघना, जय आनंदघना;
अविरत सुखजलवर्षण (२), कर सुंदर वदना. जयदेव० ॥१॥
प्रचंड भवनो ताप, हृदयकुसुम सुकवे (२);
तुज शीतल छाय तळे (२), तुज सुखजल खिलवे. जयदेव० ॥२॥
आनंदघन गभीर, आत्मगगन घेरे (२);
रसमय हृदयकुसुम वनि (२) हर्षानिललहेरे जयदेव० ॥३॥
भक्तिपूर भरपूर, तुज वर्षण थातां (२);
गंभीर रवे गाजे (२), अमृत उदधि जातां. जयदेव० ॥४॥
तुज गर्जन गंभीर, सुणि भक्तमयूरो (२);
केकारव भजन तणो (२), करता सुमधुरो. जयदेव० ॥५॥
हृदयकुंजमां गूढ, प्रेमपरभृत रमे (२);
करतो मृदुल कुहूरव (२), कदि नव ए विरमे जयदेव० ॥६॥
आ निष्ठुर जगरान, भरियुं दुख झाळे (२);
तुज आनंदघनजले, स्मितमय वनि ठारे जयदेव० ॥७॥
नित्य निरंतर एह, घनछाया सेवी (२);
निर्वापण जगतापनुं (२), करुं, वाञ्छा एवी. जयदेव० ॥८॥



कठण शब्दनो कोश.



अखंड.	जेना भाग थाय नहिं; जेना अंश थाय नहिं ने होय नहिं.
अखिल.	सर्व; कुल; बधुं.
अगम्य.	न पामी सकाय एवुं; न जणाय एवुं.
अगाध.	अपार; गहन.
अगोचर.	इंद्रियोना जाणवामां न आवे एवुं.
अग्र.	आगळ; पहेलां.
अघ.	पाप, अपराध, गुन्हो.
अङ्कित.	सेवक, दास, चाकर, नोकर.
अचिन्त्य.	विचारमां आवी शके नहिं एवुं.
अज.	जेने जन्म नथी ते.
अजर.	जेने घडपण नहिं ते.
अजस्र.	निरंतर.
अजात.	जन्मरहित, जेने अवतार नथी ते.
अंजलि.	खोबो, पोश.
अतर्क्य.	विचारमां न आवी शके, जेनो तर्क थइ न शके
अतुल.	जेनी बरोबर बीजुं नहिं ते.
अत्युग्र.	मोटुं, भारे, महा.

अदृश्य.	देखाय नहिं तेवुं.
अद्भुत.	आश्चर्यकारक, चमत्कारी.
अद्वितीय.	जेना जेवुं वीजुं नथी.
अधिष्ठान.	स्थिति, राज्य.
अधोगति.	नठारी दशा.
अध्यक्ष.	मुख्य, मुख्य.
अध्यात्मिक.	आत्मानुं.
अध्व.	मार्ग.
अध्वक्लान्ति.	रस्तानो थाक.
अनन्यभक्ति.	एक ईश्वर विना वीजा कोइ देव उपर भक्ति राखवी ते.
अनश्वर.	नाश न पामे एवुं.
अनादि.	आरंभ वगरनुं.
अनाद्यंत.	जेनो आरंभ अने अंत नथी ते.
अनालम्बन.	आधार वगर.
अनिर्वाच्य.	कही सकाय नहिं, वर्णवी सकाय नहिं तेवुं.
अनिल.	पवन.
अनुकंपा.	दया, करुणा.
अनुग्रह.	कृपा, महेरबानी, उपकार.
अनुताप.	पस्तावो.
अनुपम.	जेने कोइ जोडे सरखावी सकाय नहिं एवुं.

अनुभवुं.	भोगववुं.
अनुरक्ति.	प्रीति.
अनुराग.	प्रीति.
अनुवर्त्तन.	पाछळ पाछळ चालवुं.
अन्तः	अंतरनुं, मननुं, मांहेनुं, अंदरनुं.
अन्तर्गत.	मनमांनुं, मनमां रहेलुं.
अन्तर्यजन.	हृदयमां ध्यान धरवुं.
अन्तर्याग.	मानसिक पूजा.
अन्तःस्थ.	मनमां रहेलुं.
अन्य.	बीजुं.
अन्योन्याकर्षण.	एक बीजा तरफ खेंचवानो गुण.
अपरिमेय.	मापी सकाय नहिं तेवुं, मापमां न आवे एवुं.
अपाय.	दुःख, कष्ट, सन्ताप.
अप्रतिम.	जेनी मूर्त्ति नथी, जेनी छबी नथी एवुं.
अप्रमेय.	मापी शकाय नहिं तेवुं.
अबाध.	निर्दोष.
अब्धि.	सागर; मोहाब्धि एटले मोहनो सागर.
अभाव.	न होवुं.
अभिराम.	सुंदर.
अभिलाष.	इच्छा, आशा, उमेद.
अभिवंदन.	नमस्कार.

अभिषेक.	सींचवुं.
अभीष्ट.	इच्छेलुं, सारुं, भक्ताभीष्ट एटले भक्तनुं इच्छेलुं.
अभेद्यपट.	भेद–प्रवेश न थाय एवो पडदो.
अभ्युदय.	चढती कला, सारो वखत.
अभ्र.	वादळुं.
अभ्रान्त.	नक्की.
अमर.	जेने मरण नहिं.
अमी.	अमृत.
अंबुभ्रमण.	पाणीनो चकरावो.
अम्भोनिधि.	समुद्र.
अरिष्ट.	अमंगल, पीडा, संताप.
अर्चन.	सेवा, पूजा.
अर्णव.	सागर.
अर्थ.	सार, फल, लाभ.
अर्भक.	वालक, छोकरुं.
अर्हन्त.	जैन मत प्रमाणे निर्वाण पामेला पुरुषो; गुणवान.
अलक्षित.	न देखायलुं.
अल्पधी.	थोडी बुद्धिवाळु.
अल्पज्ञ.	थोडुं जाणनार, अणसमजु, अल्प एटले थोडुं, ज्ञ जाणनार.

अवकृपा.	गेरमहेरबानी.
अवगणना.	न गणकारवुं.
अवतीर्ण.	उतरेलुं.
अवमानना.	अवगणना.
अवर्ण्य.	वर्णन थाय नहि एवुं.
अवलंबन.	वळगी रहेवु, पकडवुं, आश्रय, आशरो.
अवसान.	अंत.
अविचिन्त्य.	कळी शकाय नहीं तेवो.
अविद्या.	अज्ञान.
अविनाश.	नाश नहि पामे तेवुं, सदाकाल रहे एवुं.
अविरत.	सतत, बंध नहि पडेलुं.
अविहित.	जे करवानुं कहेलुं नहिं ते; जे करवानो निषेध करेलो ते.
अव्यक्त.	गुप्त, अदृश्य, माणसनी दृष्टिवडे देखाय नहि एवुं.
अव्यभिचरित.	एकलक्षी. अनन्य.
असदंश.	खोटा अंश.
असि.	तरवार.
असीम.	सीमा विनानुं.
अस्तित्व.	होवापणुं.
अक्षुब्ध.	क्षोभ विनानुं, आकुळ नहि थएलं
आक्रोश.	बूम.

आदेश	हुकम.
आनन.	मुख.
आनंदघन.	आनंदनो भंडार. आनंद रुपी वादळुं.
आर्त.	दुःखी.
आर्तिहारक.	दुःख हरनार.
आर्द्र.	भीनुं, स्नेहवाळुं.
आलय.	ठेकाणुं.
आविर्भाव.	प्रकट थवुं.
आशय.	हेतु, मतलब, भावार्थ, तात्पर्य.
आश्वासन.	दिलासो, धीरज.
इतर.	बीजुं.
इन्दु.	चन्द्र.
इन्द्रियातीत.	इन्द्रियोथी जणाय नहिं तेवुं.
इषणा (ईप्णा.)	मननी इच्छा.
इष्ट.	इच्छेलुं, प्रिय, वाहालुं, सारुं.
ईश.	धणी, स्वामी, राजा.
उचित.	योग्य.
उछंग.	खोळो.
उत्पादक.	उत्पन्न करनार, सरजनार.
उदधि.	समुद्र.
उद्भव.	उत्पत्ति.

ઉન્નતિ.	ઉંચી અવસ્થા, ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિ.
ઉન્નિદ્ર.	જાગ્રત.
ઉપકૃતિ.	ઉપકાર, પાડ.
ઉપગ્રહ.	ગ્રહની પાછળ ફરનાર નાનો ગ્રહ, જેમ ચંદ્ર એ પૃથ્વીનો ઉપગ્રહ.
ઉપવન.	બાગ.
ઉપશાંતિ.	શાંતિ.
ઉપસંહાર.	સમેટી લેવું.
ઉપસ્કર.	સામગ્રી.
ઉપહાર.	ભેટ.
ઉપાધિ.	મોહજાલ, વિષયો, પદાર્થો, કારણો.
ઉપાર્જન.	મેળવવું.
ઉપાલંભયુક્ત.	ઠપકા ભરેલું.
ઉપેક્ષા.	વિસારવું, ભૂલવું.
ઉભય.	બેઉ.
ઉલૂક.	ઘૂડ.
ઉષાકાળ.	પ્રાતઃકાળ.
ઊર્મિ.	ઉછાળો, તરંગ, મનોવૃત્તિ.
ઐહામુષ્મિક.	આ લોક અને પરલોકનું. ઐહિક એટલે અહીંનું, આ સંસારનું અને આમુષ્મિક એટલે પરલોકનું કે મુઆ પછીનું.

औदार्य.	उदारपणुं.
औषधी.	वनस्पति.
कटाक्ष.	जराक नजर करवी, सहज (
कन्द.	संग्रह, मूळ.
कन्दर.	गुफा.
कराळ.	भयंकर.
करुणाब्धि.	दयाना सागर.
करुणावलोकन.	दयानी नजर.
कर्कश.	कठोर.
कर्णधार.	सुकानी.
कर्तृत्व.	कर्त्तापणुं.
कर्तुमकर्तुम् अन्यथाकर्तुम्.	कर्तुम् करवाने. अकर्तुम् न करवाने; अन्यथा कर्तुम्, बीजां रुप करवाने.
कर्त्तव्य.	करवा योग्य. (कर्त्तव्य कर्म एटले फरज, धर्म). जे काम आपणे करवां जोइए ते.
कलुष.	मलिनता.
कल्पद्रुम.	कल्पवृक्ष, इष्ट वस्तु आपनारुं झाड.
कवचस्थ.	कवच–बख्तर, अने स्थ; कवचमां रहेलुं
कानन.	जंगल.
कामद.	इच्छा पूरी पाडनार.
कायिक, वाचिक, मानसिक.	शरीर वाणी तथा मननुं.

कारुण्य·	करुणा, दया·
किंकर·	दास·
किरीट·	मुगट·
किल्बिष·	पाप·
कुत्सित·	दुष्ट·
कुपित·	कोपेलुं, क्रोधायमान थयेलुं·
कुसुम·	पुष्प·
कुसुमाकीर्ण·	फुल पाथरेलो·
कुसुमित·	पुष्पवाळुं·
कुहर·	गुफा·
कृतकृतार्थ·	आ जगत्मां जे करवानुं ते करी चूकेलो·
कृतघ्न·	करेलो उपकार भूली जनार·
कृतज्ञ·	करेलो उपकार जाणनार·
कृपा·	महेर·
कृपाकान्त·	कृपावडे प्रिय थएला·
कृपाघन·	घणी कृपावाळो·
कृपाण·	तरवार·
कृपावारिवर्षद·	कृपारूपी पाणी छांटनार·
कृपास्रोत·	कृपारूपी झरणुं·
कौमुदी·	चांदरणुं·
क्रम·	अनुक्रम·

क्रमण.	चालवुं.
क्रमशः	धीरे धीरे.
क्रोड.	खोळो.
क्लांति.	थाक.
क्लिष्ट.	ताणी तोशीने वेसाडेलुं, खोडुं.
गर्त.	खाडो.
गहन.	न कळाय एवुं, न समजाय एवुं.
गह्वर.	गुफा.
गुणान्वित.	गुणयुक्त, गुण भरेलुं; अन्वित एटले युक्त के भरेलुं.
गौण.	उतरती पंक्तिनुं.
ग्रहगण.	ग्रहोनां टोळां.
ग्रहयुति.	एक ग्रह बीजा ग्रह के सूर्य उपर थइने जतो जणाय ते.
ग्रहराज.	सूर्य.
ग्लानि.	खेद.
घांटी.	कठण मार्ग, मुशकेल वखत.
चंड.	तुफानी.
चमत्कृति.	अचरत पमाडे एवां काम.
चिदानन्द.	चैतन्य अने आनन्दथी पूर्ण.
चिद्घन.	मोटुं चैतन्य, परमेश्वर.

ચિદ્રૂપ.	ચૈતન્યરૂપ, ચિદાત્મા.
ચિન્મય.	ચૈતન્યવાળું.
ચિરસ્થાયી.	લાંબી મુદત સુધી રહે એવું
જગત્રયગુરુ.	ત્રણ જગત્‌ના ગુરુ.
જગન્નિવાસ.	જગત્‌માં વ્યાપી રહેલા.
જડાચ્છાદન.	ઘટ ઢાંકણ.
જનિત.	ઉત્પન્ન થયેલું, ઉપજેલું.
જળધિ.	સમુદ્ર.
જ્યોતિ.	તેજ.
જ્યોત્સ્ના.	ચાંદરણું.
ઝંઝાનિલ. ઝંઝાવાત.	તોફાની પવન.
ઝટિતિ.	ઝટ, જલદી.
તડિત્.	વીજળી.
તત્પદ.	પરમેશ્વર, તે પદ.
તત્સત્.	તે સત્યસ્વરૂપ. (પરબ્રહ્મ.)
તદનુસાર.	તે પ્રમાણે, તેને અનુસરીને; તત્ એટલે તે, અનુસાર, પ્રમાણે.
તદ્વત્.	તેવું ને તેવું.
તંત્ર.	રચના; જગત્તંત્ર એટલે જગતની રચના, ગોઠવણ.
તરંગ.	દરિયાની છોળ.
તિમિર.	અંધકાર.

तुषार.	झाकळ.
तेजराशि.	तेजनो भंडार.
तोष.	संतोष.
त्राता.	तारनार, रक्षण करनार
त्रिभुवन.	(त्रिलोक जुओ.)
त्रिलोक.	१ स्वर्ग, २ मृत्युलोक, ३ नरक.
त्रिविधि.	त्रण प्रकारनुं, १ अध्यात्मिक, एटले शरीर अने मन संबंधी संताप. जेवा के, खेद, शोक, रोग, इत्यादि. २ आधिभौतिक, सृष्टिना उत्पात, जेवा के भूकंप, रेल, दुष्काळ, आग, इत्यादि. ३ आधिदैविक,—अकस्मात् दैवी कोप, जेवा के वीजळीनुं पडवुं, कोगळीयुं इत्यादि.
त्रिसर्ग.	त्रिभुवन.
त्वरित.	जलदीथी.
दहन.	बाळवुं.
दान्त.	दमन करेलुं अथवा थएलुं.
दिक्.	दिशा.
दिनमणि.	सूर्य.
दीक्षा.	उपदेश. दंडदीक्षा एटले सजारूपी उपदेश.
दीप्तिमान.	तेजवाळुं.
दुरित.	पाप, नठारुं.
दुर्दिन.	वादळां वरसादनो दिवस.

दुर्मोहजनक.	खोटो मोह उपजावनार.
दुष्कर्म.	खोटां काम, नठारां कर्म.
दुःखावर्त.	दुःखरूपी वमळ.
दुस्तर.	तरवुं कठण पडे, मुश्केलीथी तराय एवुं.
दृक्.	नजर, दृष्टि.
दृढतर.	अति दृढ.
देहि.	दे, आप्य.
द्योतनात्मक.	प्रकाशमान.
द्रष्टा.	जोनार
द्रुम.	झाड.
द्वय.	बंने.
धन्यवाद.	उपकार.
धाता	निर्माण करनार, पेदा करनार.
धृति.	धीरज
ध्याइये.	ध्यान धरीए
ध्येय.	ध्यान करवा योग्य.
ध्वजा.	झुंडो, निशान, वावटो.
ध्वस्त.	नाश पामेलुं.
ध्वांत.	घोर अंधारुं.
नाविक	वहाणवटी.
निकेतन.	स्थान.

निगम.	वेद, एटले ज्ञानना ग्रंथ.
निग्रह.	वश करवुं.
निज.	पोतानुं.
नितांत.	घणुं.
नित्य.	सदाकाल के अनंत काल सूधी रहेनार.
नित्यमेव.	सदा, रोज, नित्य.
निदान.	नक्की. मूळ.
निंद्य.	निंदा करवा योग्य.
निधान.	भंडार.
निनद.	अवाज.
निपात.	पडवुं.
निबिड.	गाढ.
निमग्न.	डुबेलुं, लपटायलुं.
नियंता.	नियम चलावनार, सर्व अधिकार चलावनार राजा, बधा ब्रह्मांडने नियममां राखनार.
नियंतृत्व.	नियंतापणुं.
निरय.	नरक.
निर्गमन.	काढवुं.
निर्झर.	झरण.
निर्मित.	निर्माण करेलुं, ठरावेलुं.
निर्वापण.	होलववुं

निलीन.	अंदर रहेलुं.
निवारो.	दूरकरो, नाशकरो, कहाडी नांखो
निवृत्त.	शान्ति पामेलुं.
निशमणि.	चंद्र.
निषिद्ध.	मनाकरेलुं.
निष्कामी.	कोइ जातनी इच्छा वगरना.
निष्कृति.	नाश.
निःशेष.	बीलकुल, अशेष, बधु, तमाम.
निष्ठा.	श्रद्धा, विश्वास, अचल प्रीति.
निष्ठुर.	नठारुं, खोटुं, माठुं.
नील.	काळुं.
नेति.	एवो नथी, कशा जेवो नथी, कोइ जेवो नथी. न+इति=नेति ए श्रुति वचन छे.
नौका.	वहाण; नाव.
नौचालनविधि.	वहाण चलाववानी रीत.
न्यूनता.	ओछापणुं, खामी.
पंक.	कादव.
पंकज.	कमल.
पंगु.	पांगळो.
पंचमहाभूत.	पृथ्वी, पाणी, तेज, वायु अने आकाश ए पांच मोटां तत्त्वो.

पतन.	पडवुं, मरवुं.
पतितोद्धारक.	पापीओनो उद्धार करनार.
पदारविंद.	(पादारविंद.) चरणकमल.
पर.	उत्कृष्ट, दूर, जूदुं.
परब्रह्म.	मोटा ब्रह्म, परमेश्वर.
परभृत.	कोयल.
परमपद.	परपद, श्रेष्ठपद, उत्कृष्टपद, उत्तम स्थिति, मोक्षपद.
परमात्मा.	परमेश्वर.
परात्पर.	सर्वथी श्रेष्ठ.
परात्मा.	मोटा आत्मा, परमात्मा.
पराभक्ति.	उत्तम प्रकारनी भक्ति.
परायण.	वळगेलुं, लागेलुं, तत्पर.
परिचार.	फेलावो.
परित्राण.	तारवुं.
परिमित.	हदवाळुं, थोडुं.
परेश.	मोटा ईश्वर.
पाणि.	१. हाथ. २. जल.
पादपद्म.	चरणकमल.
पादाब्ज.	चरणकमल.
पादुका.	पावडी.

पामर.	अज्ञानी, तुच्छ, हलकुं, नीचुं.
पारत्रिक.	परलोकनुं.
पारमार्थिक.	उत्तम अर्थ संबंधी.
पार्थिव.	पृथ्वीनुं.
पाश.	फांदो, जाल, बंधन.
पिपासित. } पिपासु. }	तरस्यो.
पुंज.	ढगलो.
पुष्पित.	फुलवालुं.
पूर्वक.	साथे, थी. जोडे.
पृथक्.	छूटुं, निरालुं.
प्रकृतिपर.	सृष्टिथी अधिक, जगत्थी जूदुं.
प्रज्वली.	बाली.
प्रणत.	नमेलुं, पगे पडेलुं.
प्रणमुं.	पगे लागुं.
प्रणिधान.	ध्यान, लक्ष.
प्रणिपत.	प्रणाम, नमस्कार.
प्रतिज्ञा.	वचन, कबुलात.
प्रतीत, प्रतीति.	भरुंसो, खातरी.
प्रदाता.	आपनार.
प्रदीप.	दीवो.

प्रपालन.	पाळवानुं काम.
प्रभा.	तेज, महिमा, खुबी.
प्रभुत्व.	मोटाइ, वडाइ, प्रभुता.
प्रभुवर.	महाप्रभु.
प्रयास.	महेनत, श्रम, तस्दी.
प्रवृत्त.	परोवायलुं, लागेलुं.
प्रशम.	शान्ति
प्रशंसा.	वखाण, तारीफ.
प्रसाद.	कृपा, महेरवानी.
प्राणायाम.	प्राणवायुने रूंधवो श्वास खेंचीने मनोवृत्ति स्थिर करवी.
प्रापंचिक.	दुनीआना प्रपंचवाळा.
प्रियंवदा.	प्रिय बोलनार.
प्रेमल.	प्रेमवाळुं.
प्रेरशो.	सुझाडशो.
फेनिल.	फीणवाळुं.
बलिष्ठ.	सर्वेथी बळवान.
बाधा.	हरकत, अडचण, संकट.
भक्तरंजन.	भक्तोने आनंद आपनार.
भगण.	तारा, नक्षत्र.
भग.	तेज, ज्ञान अने शक्ति.

भवधर	संसारने धारण करनार, जगत्ने आधार आपनार.
भवाटवी.	जगतरुपी जंगल.
भंगोन्मुख.	भंग पामवानी तैयारीमां.
भासे.	प्रकाशे.
भीम.	भयंकर.
भीरु.	बीकण.
भूतदया.	प्राणी माटे दया.
भोक्तृत्व.	भोगववापणुं.
भ्रमण.	फरवुं.
भ्रमित.	भमेलुं, भूलुं पडेलुं.
भ्रांति.	भ्रम, भूल.
मग्न.	डूबी गयेलुं, लपटाइ गयेलुं.
मदर्थे.	मारे सारुं.
मधुराभासी	मधुर देखातुं.
मनवांछा.	मननी इच्छा.
मनवांछित.	मननुं धारेलुं.
मर्दन.	मसळी नांखवुं ते, नाश.
महत्व.	मोटाई, प्रताप.
महन्त.	महापंडित, मोटा साधु.
महानुभाव.	म्होटा हृदयवाळो.

महाशक्ति.	महा अने शक्ति एटले मोटी शक्ति.
महेश.	मोटा ईश्वर.
महोदधि.	महासागर.
महोद्दाम.	मोटा.
माया.	शक्ति, मोह, प्रपंच.
मीमांसको.	मीमांसा दर्शन माननारा.
मुक्त.	छूटुं, उत्तम गति पामेलुं.
मुदित.	खुश.
मुमुक्षु.	मोक्षनी इच्छा राखनार.
मूक.	मूगो, बोबडो.
मृतप्राय.	मरवा जेवा.
मृदु, मृदुल.	कोमळ.
मेघकिरीट.	वादळां रुपी मुगट.
मेदिनी.	पृथ्वी.
यथा.	जे प्रमाणे, जेटलुं.
यथेच्छ.	इच्छा प्रमाणे.
यद्वातद्वा.	जेम तेम.
याचवुं.	मागवुं, जाचवुं.
यातना.	दुःख, पीडा.
याम.	पहोर (रात्रदिवसना), गति करनारा.
युत.	युक्त.

रजत.	रुपुं, रुपेरी.
रति.	प्रेम, स्नेह.
रव.	अवाज.
रवींदु.	सूर्य अने चंद्र.
रश्मि.	लगाम, किरण.
रिपु.	माठुं, खोटुं.
रुद्र.	क्रोधयुक्त.
लक्ष्य.	जोवानुं ते.
लता.	वेलो.
लिप्त.	गरक, लपटाइ गयेलुं, फसाइ गयेलुं.
वज्र.	वीजळी.
वज्ररव.	गर्जना.
वत्सल.	वहालुं, प्रिय. (भक्तवत्सल एटले जेने पोताना भक्त वहाला छे.)
वनराजि.	जंगलनां झाडनी घटा.
वन्दुं.	नमुं.
वंद्य.	नमवा योग्य.
वपन.	छेद.
वर.	वरदान, वक्षीस.
वरद.	वरदान करनार.
वरिष्ठ.	सर्वोत्तम, सउथी मोटुं.

वरेण्य.	वखाणवा जाग.
वसुंधरा.	पृथ्वी.
वह्नि.	अग्नि.
वाग्कायामनथी.	वाणी, शरीर अने मनथी—एटले बोलवुं, करवुं अने धारवुं.
वाञ्छा.	इच्छा.
वारि.	पाणी.
विकर्म.	दुष्ट काम.
विकसित.	खिलेली.
विकार.	बगडेली मनोवृत्ति.
विघ्नभंजन.	विघ्न नाश करनार.
विडंबना.	दुःख, संताप.
विदारो.	दूर करो.
विद्युत.	वीजळी.
विधाता.	मोटो निर्माण करनार, ठरावनार.
विधान.	विधि, सेवानो प्रकार.
विधायक.	करनार.
विनयभाव	नम्रता.
विनश्वर.	नाशवंत.
विपत्ति.	दुःख, संकट, आपत्ति आपदा.
विपथ.	आडो रस्तो.

विप्रलम्भी.	ठगनार.
विबुद्ध.	वधारे बुद्धिवाळुं.
विभु.	सर्वव्यापक, बधे ठेकाणे हाजर.
विमळ.	मेल वगरनुं, चोख्खुं.
विमुख.	दूर, आघुं.
विराजमान.	शोभायमान.
विराम्या.	थाक्या.
विश्वंभर.	जगतनुं भरणपोषण करनारा.
विश्वाधीश.	विश्वना अधीश एटले उपरी.
विश्वेश.	विश्वना धणी, ब्रह्मांडना स्वामी.
विषय.	इंद्रियोने भोगववानी वस्तु.
विषाद.	खेद.
विषादज्वालाग्रस्त.	दुःखनी झाळमां झलाएलो.
विहंग.	पक्षी.
विहित.	जे करवाने कहेलुं छे, सारां काम, घटारत.
विज्ञप्ति.	विनंति, अरज, मागवुं.
विज्ञान.	विशेष ज्ञान.
वृथा.	मिथ्या, फोगट, नकामुं.
वृंद.	मंडळ, समाज.
वृष्टि.	वरसाद.
व्रण.	घा.

व्रतस्थ.	नियम पाळनारा.
व्यजन	पवन नांखवो.
व्यष्टि.	पृथक् पृथक् वस्तु.
व्योम.	आकाश.
शमदमादि.	एटले शम, दम, तप, तितिक्षा, समाधान, अने श्रद्धा. शम एटले मननी शांति. दम एटले मननो निग्रह अथवा मनवुं मारवुं, मनने कबामां राखवुं. तप एटले भक्ति करवामां काळ काढवो, तथा सारां कामनो विचार करवो तथा सारां काम करवां. तितिक्षा एटले आपत्तिनी के दुःखनी वेळा धीरज राखवी, गभरावुं नहिं, अने परमेश्वरनी इच्छाने आधीन रहेवुं. समाधान एटले मनने सतापमां स्थिर राखवुं. श्रद्धा एटले ईश्वर एक छे अने तेज पूज्य छे, एवो दृढ विश्वास राखी ते प्रमाणे वर्त्तवुं.
शतकंठे.	सो कंठथी, अर्थात् घणा अवाजथी.
शमन.	शान्त करवुं.
शर.	बाण, तीर.
शरण्य.	रक्षण करनार, पाळनार, बचावनार.
शशी.	चंद्र.
शान्ताकार.	शान्तिरूप.

शाप.	दुःख थाय तेवी आज्ञा.
शाश्वत.	हमेशनुं.
शासिता.	नियममां राखनार.
शास्ता.	शासन करनार.
शिथिल.	नरम.
शिव.	कल्याण करनार, मंगळ
शिशु.	बालक.
शीघ्र.	उतावळे.
शैल.	पर्वत.
श्रुति.	वेद, एटले ज्ञानना ग्रंथ.
श्रेणी.	हार.
श्रेय.	कल्याण, शुभ, सारुं.
श्वापद.	जंगली घातक प्राणी.
श्वेताश्वतर.	ए नामनुं उपनिषद् छे.
षडरि.	षड्–छ अने अरि–रिपु; कामक्रोधादिक छ शत्रु.
षडैश्वर्य.	छ ऐश्वर्य (अंक १० मानी गद्य प्रार्थनानी टीपमां जुवो.)
संसाराब्धि.	संसारसागर.
संस्कार.	कर्म, काम.
संहार.	नाश.
सगुण.	जेनामां संपूर्ण अने सर्व सारा गुण छे

संकल्प.	ठराव, जे वातनुं नक्की कर्युं होय
संचित.	एकठुं करेलुं, भेगुं करेलुं.
सतत.	सदाकाळ, हमेश.
सदन.	घर.
सद्धर्म.	साचो धर्म, रूडो धर्म.
सद्य.	तुरत.
सनातन.	जूनुं, अनंत.
सन्ध्या.	परमेश्वरनुं ध्यान करवानो समय के संधि.
सन्निध.	पासे, समीप, नजीक
सन्निहित.	पासे.
सन्मति.	सारी बुद्धि, सारो विचार.
समष्टि.	समुदाय.
समीपमुक्ति.	मुवा पछी परमेश्वरनी पासे रहेवुं ते.
संपूज्य.	रूडी रीते पूजवा लायक.
संभजनीय.	भजवा योग्य.
सर.	तळाव.
सरित्.	नदी.
संरक्षार्थे.	सारा रक्षणने माटे.
सर्ग.	सृष्टि रचना.
सर्वथा.	हरेक रीते, बधे प्रकारे.
सर्वविद्.	बधुं जाणनार, सर्वज्ञ.

सर्वज्ञ.	बधुं जाणनार.
सर्वात्मा.	परमात्मा.
सर्वान्तर्यामी.	सर्वना अंतःकरणनी वात जाणनारा, सर्वना मनमां पेसीने जोनारा.
सर्वादि.	सहुथी पहेला.
सर्वोत्कृष्ट.	सहुथी सारो.
सलिल.	पाणी.
सविता.	उत्पन्न करनार, जगत्कर्त्ता.
सहनशीलता.	खमी रहेवानो गुण.
सहस्रधा.	हजारवार.
सहसा.	एकाएक
सात्विक.	सारुं, शान्त प्रकृतिनुं.
साधु.	सद्गुणी माणस.
सानंदाश्चर्य.	आनंद साथे आश्चर्य, हरखनी जोडे अचबा.
सान्ध्य.	सांझनुं.
सारात्सार.	सारनो सार
साष्टांग.	आठ अंगथी.
साहित्य.	अलंकार शास्त्र.
सिंधु.	समुद्र, दरिओ, सागर.
सुकुठार.	सारी कुहाडी.
सुखप्रद.	सुख आपनार.

सुतवात्सल्य.	पुत्रप्रेम, बापनुं छोकरां उपर हेत.
सुधा.	अमृत.
सुरभि.	सुगंधवाळुं.
सुरवर.	देवमां मोटा, सुर एटले देव, वर एटले मोटा.
सुषुप्ति.	घोर निद्रा, भर उंघ.
सुस्थित.	स्थिर, सारी रीते स्थापेलो.
सुहृद.	मित्र.
सृष्ट्युत्पत्ति.	जगत्नुं पेदा थवुं.
सेतु.	पूल.
सोत्कंठ	उत्कंठा सहित.
सोपान.	निसरणी.
सौन्दर्य.	सुस्वरुप; खूबसुरती.
संतत.	लागट.
संभजनीय.	भजन करवा योग्य.
स्खलन पामवुं.	विमार्गे जवुं.
स्तव.	स्तोत्र, स्तवन.
स्तवनीय.	स्तुति करवा योग्य.
स्थिरचर.	जडचैतन्य.
स्मितमय.	हसतुं.
स्रष्टा.	सृजनार, बनावनार, परमेश्वर.
स्वयंभु.	स्वतःसिद्ध, कोइनाथी उत्पन्न थएला नहिं.

સ્વર્ગાપવર્ગ.	મોક્ષધામ, પરમસુખધામ.
સ્વલ્પ.	નાનું, સહેલું, ટૂંકું.
સ્વાધ્યાય.	વેદનો અભ્યાસ.
હર, હર્તા.	લેઇ લેનાર, નાશ કરનાર.
હરિ.	પાપ હરણ કરનાર પરમેશ્વર. સંસ્કૃત કોશમાં હરિ શબ્દનો અર્થ વિષ્ણુ કે કૃષ્ણ કર્યો છે, પણ ગૂજરાતના જૂના અને નવા કવિઓએ એ શબ્દને જગત્કર્તા અને નિયંતા પરમેશ્વરને અર્થે વાપર્યો છે. પ્રાર્થના સમાજના બધા ગ્રંથોમાં એજ અર્થે રાખ્યો છે, હરિ એટલે પરબ્રહ્મ પરમેશ્વર.
હર્ષાનિલ.	આનંદ રુપી પવન.
હિતાર્થે.	ફાયદાને વાસ્તે; હિત એટલે ગુણ અથવા ફાયદો ને અર્થ એટલે વાસ્તે.
હુત દ્રવ્ય.	હોમેલી વસ્તુ.
હુતાશન.	અગ્નિ.
હૃચ્છુદ્ધિ.	હૃદયની સ્વચ્છતા.
હૃત્સરોજ.	હૃદયકમળ.
હૃદાધાર.	હૃદયનો આધાર.
હ્રદે.	સરોવરમાં.
હ્રાસ.	ઘટારો.
ક્ષણધ્વંસી.	ક્ષણમાં નાશ પામે એવું, ક્ષણભંગુર.

क्षणु, अणु.	पळ, जरावार.
क्षति.	नुकशान, दुःख, पीडा.
क्षांति.	क्षमा, माफी.
क्षाराब्धि.	खारो समुद्र.
क्षुल्लक.	क्षुद्र.
क्षेमधाम.	सुख मळवानुं ठेकाणुं; क्षेम एटले सुख ने धाम एटले ठेकाणुं.
क्षोभ.	उद्वेग.



पद्यनी अक्षरवार अनुक्रमणिका.

प्रथम पंक्ति.	छंद के गीत.	पृष्ठ.
अ.		
[illegible] कला प्रभु तारी नव विस्तारी गवाय कदि जिवथी.	आर्या.	३२०
अखंड आनंद चिदात्म रूप.	उपेन्द्रवज्रा.	२१४
अखंड आनंद दयानिधान.	उपेन्द्रवज्रा.	१९१
अति अद्भुत आ जगनी रचना.	तोटक.	३५१
अति अद्भुत कला प्रभु तारी.	संगीत.	१४९
अति गहन तमारी शक्ति विश्वे प्रचारी.	मालिनी.	२१५
अती दीन हुं अशक्त अल्प प्राणी.	दिंडी.	२८४
अद्भुत आ ब्रह्मांडे विपुल कीर्ति व्यापि जेह एक तणी.	गीति.	३५२
अद्वितीय परम ब्रह्म तमे सत्य.	दिंडी.	१०९
अनाद्यनंत देव विश्वना पिता तमे प्रभु.	नाराच.	१८८
अनाद्यंता देवा अनुपम अविद्या थकी परा.	शिखरिणी.	४
अनुग्रह आप तणो प्रभु मानुं.	संगीत.	१८२

प्रथम पंक्ति.	छंद के गीत.	पृष्ठ.
अपराध अमारा प्रभु महाघणारे.	संगीत.	२०६
अपराध अमारारे कृपा करी क्षमा करो.	,,	२५२
अपराध क्षमा करो मारो.	,,	१०२
अपारध लीला प्रभु छे तमारी.	उपेन्द्रवज्रा.	१२४
अभिवंदन ब्रह्म पदे हुं करुं शरण रही शुभ ध्यान धरुं.	संगीत.	२६५
अर्चा करी प्रभु अंतर्यामनी.	,,	३०२
अवगुण अपराधो छे अमारा अगाध.	मालिनी.	१४८
अवगुण दोषो दयानिधि नव लहोरे.	संगीत.	४६
अहो विश्वना देव सर्वज्ञ सत्य.	भुजंगी.	३६
अहो विश्वना देव सर्वज्ञ साचा.	,,	१३
अहो विश्व नियंता नाथरे नमुं नमुं.	देशी.	१२८

आ.

आज आ घडी शुभकारक हो.	संगीत.	३५४
आज भक्त वृंद धरीने आनंद.	अभंग.	३२८
आज सहु गाओ आनंदे तेनुं पवित्र नाम लेइ जीवन करो सफल.	संगीत.	२७७
आदि कारण परब्रह्म देव देवा.	दिंडी.	३३३
आदि कारण विश्वना अजरामरा परमेश्वरा.	विबुधप्रिया.	२९७

प्रथम पंक्ति.	छंद के गीत.	पृष्ठ.
आनंद दिन आज मानिने महाधिराज.	संगीत.	३१२
आनंद पूर्ण घन, तमे रचना रची छे गहन.	,,	२१६
आनंद रुप सत्य, चिद्घन पूर्ण नित्य.	,,	१८१
आनंदे शरण हुं जाउं.	,,	२४१
आवी प्रभु तव शरणे, विनती करुं छुं कृपाघना तमने.	आर्या.	२७७
आव्यो तारे द्वार देवा.	संगीत.	१९४

ए.

एक अखंड अनंत अगोचर ईश अद्वितीय उपासुंरे.	संगीत.	७०
एक अखंड अनादि कृपामय अनुपम उत्तम पददाता.	रुचिरा.	२९९
एक अद्वितीय देवने करुं हुं वंदना.	चामर.	२७३
एक अद्वितीय पूर्ण ब्रह्मने उपासुं.	संगीत.	२७८

ऋ.

ऋषी मुनीओ नहीं कोइ जाणे.	उपेन्द्रवज्रा.	१११

क.

कर चरण वडे जे में कियां कर्म खोटां.	मालिनी.	६८

प्रथम पंक्ति.	छंद के गीत.	पृष्ठ.
करुणा करोरे कृपाल, मागुं हुं पाप क्षमारे.	संगीत.	६९
करुणा नजर करोरे.	,,	२३९
करुं प्रभुने हुं प्रणाम, संपूर्ण प्रेम धरीरे.	,,	१०
कलहो कपटो जन मंडळनां.	तोटक.	३१७
कृति नव जोशो, कृति नव जोशो.	संगीत.	२६५
कृति सामुं प्रभु कदि नव जुवोरे.	,,	१३८
कृपानिधि पूर्ण मन काम करो.	,,	५९
कृपार्णवा किल्बिष क्लेश हर्ता.	उपेन्द्रवज्रा.	२५१
कृपालु छो जगन्नाथ जीवना प्रतिपालक.	अनुष्टुप्.	५७
कृपा विना प्रभु स्वयम कार्य सरेरे.	संगीत.	२९१
कृपासागरा सर्व आनंददाता.	भुजंगी.	८३

ग.

गाइए तमारुं नाम, रच्युं छे जेणे विश्वधाम.	संगीत.	२६४
गाउं आनंदे शुभ तमारुं नाम.	दिंडी.	३९
गाओ तेने गाओ सदा.	संगीत.	२५२
गाओरे गाओरे प्रभु शुभ यश गुण.	,,	३२४
गुण अवगुण मारा स्वामी जाणो अशेप.	मालिनी.	२६३

च.

चमत्कार प्रभु सृष्टिनो अपार.	दिंडी.	३४९
चरणकमळ चित लाग्युं, प्रभु तारे.	संगीत.	२०५

प्रथम पंक्ति.	छंद के गीत.	पृष्ठ.
ज.		
जगकर्ताए जगरचनामां अद्भुत कीधी चतुराइ.	संगीत.	३१३
जगतनाथरे नम्र थै अमे.	ललित.	२३
जगतलीला अति सुंदर सुखकारी.	दिंडी.	१६५
जगत वंद्यरे वंदीए तने.	ललित.	८७
जगतरुपि शास्त्र ग्रंथ छे पवित्र.	दिंडी.	२७०
जगत्पिताने करुं छुं प्रणाम.	उपजाति.	२६३.
जगत्पिता परात्परा समस्त पाप संहरा.	प्रमाणिका.	३१२
जगन्बंधु जे वळथी प्रकाशे.	उपजाति.	१११
जगदधिप देव तवद्वार सहु सेवको अति करुणव करी पुकारे.	संगीत.	३४०
जगदीश छो अनुप, करुणामय स्वरुप.	,,	५८
जगदीशने शीश नमावुं.	,,	१२६
जगदीश्वर देव,दयाळ तमे.	,,	१८७
जगदीश्वरने हुं वंदुं.	,,	८१
जगद्वंद्य देव विश्वना विधाता.	दिंडी.	३
जगन्नाथ शान्ति प्रदाता दयाळ.	भुजंगी.	२२३
जगन्नाथ स्वामी सकल हृदगामी प्रभु तमे,	शिखरिणी.	२१२
जगन्नाथ हे देव हे स्वामी साचा.	भुजंगी.	५६

प्रथम पंक्ति.	छंद के गीत.	पृष्ठ.
जगपिता प्रभु करुं हुं वंदना.	प्रियंवदा.	२७६
जय जग त्राता, जगत प्रख्याता त्रिभुवन त्राता.	संगीत.	१२५
जय जगवंद्य जय, जय भगवंत जय.	,,	९१
जय जय जगदीशा सृष्टि कर्ता कृपाला.	मालिनी.	८
जय जय जगवंद्य दयासिंधु उपकारी.	संगीत.	९१
जय जय जय जगदीश्वर ईश्वर अनुपम अतर्क्य अद्वितीय.	गीति.	१४६
जय जय जय जय जगदादि कारण.	संगीत.	३२५
जय जय देव जय जगवंद्य.	अभंग.	२८१
जय जय परब्रह्म अपार तमे अगम्य परात्पर तमे सारात्सार.	संगीत.	२७९
जय जय प्रभु ब्रह्म चिद्घना.	ललित.	१
जय जय हे जगदीश्वर ईश्वर अविचल शुभ पद दाता.	संगीत.	१५९
जय देव जय देव जय अंतर्यामी.	आरति.	१८४
,, ,, ,, ,, ,, अंतर्यामी.	,,	२१८
,, ,, ,, ,, ,, आनंदघना.	,,	३५६
,, ,, ,, ,, ,, करुणासिंधु.	,,	३५
,, ,, ,, ,, ,, जगदधिराया.	,,	३४२
,, ,, ,, ,, ,, जगदाधारा.	,,	१२

प्रथम पंक्ति.	छंद के गीत.	पृष्ठ.
जय देव जय देव जय जगदाधीशा.	आरति.	४७
,, ,, ,, ,, ,, जगदुद्धारा.	,,	१६१
,, ,, ,, ,, ,, जय जग कर्ता.	,,	२६६
,, ,, ,, ,, ,, जय जग त्राता.	,,	९३
,, ,, ,, ,, ,, जय जग राया.	,,	१०५
,, ,, ,, ,, ,, जय जय कारी.	,,	११६
,, ,, ,, ,, ,, त्रिभुवन त्राता.	,,	२०७
,, ,, ,, ,, ,, त्रिभुवन धाता.	,,	२३१
,, ,, ,, ,, ,, परमानंदा.	,,	१९५
,, ,, ,, ,, ,, भगवन्देवा.	,,	७२
,, ,, ,, ,, ,, भवभयहारी.	,,	२९२
,, ,, ,, ,, ,, मंगलकारी.	,,	६०
,, ,, ,, ,, ,, मंगलदाता.	,,	२२
,, ,, ,, ,, ,, मंगल धामा.	,,	२४२
,, ,, ,, ,, ,, मुक्तिदाता.	,,	१२७
,, ,, ,, ,, ,, विश्वाधारा.	,,	८२
,, ,, ,, ,, ,, शान्तिदाता.	,,	१५०
,, ,, ,, ,, ,, सच्चित्सविता.	,,	३१६
,, ,, ,, ,, ,, सत्ताधीशा.	,,	३२७
,, ,, ,, ,, ,, सत्यानंता.	,,	२५४

प्रथम पंक्ति.	छंद के गीत.	पृष्ठ.
जय देव जय देव जय सत्यानंदा.	आरति.	२८०
,, ,, ,, ,, ,, सर्वव्यापी.	,,	३०५
,, ,, ,, ,, ,, सविता धाता.	,,	१३९
,, ,, ,, ,, ,, सृष्टिकर्ता.	,,	१७३
जय परम शुभ सदन ब्रह्म सनातन.	संगीत.	३५४
जय परमात्मा प्रभु उपकारी.	,,	३२६
जाव दूर जाव दूर विषय चोर.	दिंडी.	३४४
जे एक व्याप्त जगदात्म स्वरुप तत्त्व.	वसंततिलका.	३३७
जे छे एक अखंड मंगलनिधि जे छे जगत्कारण.	शार्दूलविक्रीडित.	२९६
जेनि शक्ति सकळ विश्व विषे व्यापी.	दिंडी.	२८
जेने न जाणि शकशे मनइन्द्रियमें.	वसंततिलका.	३०
जेने शैव जनो पुजे शिव कही वेदान्तमां ब्रह्म जे.	शार्दूलविक्रीडित.	२५९
जे सत्यरुप शिवमंगळ शान्तिदाता.	वसंततिलका.	२७१
ज्यहां नहिं भासे रवि शशि ज्योति.	अभंग.	३०६
ज्यहां पोंचे नहिं रवि शशि प्रकाश.	दिंडी.	२३५
ज्यां नव भासे दिनमणि निशमणि ग्रहगण हुताश नव भासे.	गीति.	६६

प्रथम पंक्ति.	छंद के गीत.	पृष्ठ.
त.		
तत् सत् ब्रह्मपद प्रणमीए दंडवत.	संगीत.	१८२
तत् सत् ब्रह्मपद प्रणमुं हुं नित्यप्रत.	,,	१०१
तमे अमारा प्रभु मात तात.	उपेन्द्रवज्रा.	७९
तमे जाग्रत जगवंद्य देव साचा.	दिंडी.	३०९
तमे पूर्ण परब्रह्म, तमे इश तमे महेश.	संगीत.	२८८
तमे प्रभु सर्व पिताज माता.	उपजाति.	६८
तमे सत्य छो नित्य छो मुक्तिदाता.	भुजंगी	२३७
तमे सर्वथी महान, आपो रुडुं नीति ज्ञान	संगीत.	२०
तारवा तमे प्रभु समर्थ छो.	,,	३१५
तारो रे दयाल मने दीन गणी तारो रे.	,,	११५
तुज विण अन्य नही प्रभु त्राता.	,,	४६
तुं प्रभुराज महाराज विना मुज त्राता नथी त्रिभुवनमां.	,,	३१४
तैं सविता परब्रह्म प्रभुनुं नित्य निरंतर ध्यान धरुं.	,,	१०
द.		
दयाघना दिन पर कर करुणा.	संगीत.	२६४
दयाघना निज दास निभावो.	,,	१९४

प्रथम पंक्ति.	छंद के गीत.	पृष्ठ.
दयासिंधु तारे वारणे पुकारुं दीनवाल.	,,	३४२
दयासिंधु दीनबंधु दास तारो.	,,	२४०
दयासिंधु देवा विनंती अमारी.	भुजंगी.	२०
दिव्य देव तमे परम उपकारी.	दिंडी.	१२०
दीननो दयाल छोडी कोने शरण जाउं.	संगीत.	२१
दुरित कृति में बहु कीधीरे.	,,	१८२
देव दयाला शान्ति प्रदाता.	चंपकमाला.	२६०

ध.

धन्य धन्य धन्य आज दिन आनंदकारी.	संगीत.	२०६
धन्य धन्य धन्य आज दिन आनंदकारी.	,,	३०४
धन्य धन्य धन्य धन्य, धन्य आजनो सुदिन.	,,	१४८

न.

न जाणुं हुं मंत्रो नहिं प्रभु हुं जाणुं श्रुति स्मृति.	शिखरिणी.	२४९
नमन करिने हुं वंदुं विश्वनाथ.	दिंडी.	९७
नमीए सदा सच्चिदानंद रुप.	भुजंगी.	१५१
नमी नमी नाथ दयानिधी तने.	वंशस्थविल.	११४
नमी नमी नित्य जगादिनाथने.	,,	१४४
नमुं जगदीश्वर प्रभु परमेश्वर परपद मंगलदाता.	संगीत.	१७०

प्रथम पंक्ति.	छंद के गीत.	पृष्ठ
नमुं नमुं अद्भुत कर्म कर्ता.	उपेन्द्रवज्रा.	१९
नमुं नमुं महाराजने नमुं.	ललित.	१४०
नमुं नित्य विश्वपति, आपो मने शुद्ध मति.	संगीत.	१३६
नमुं परात्पर ब्रह्म, परमात्मा महेश्वर.	अनुष्टुप्.	१५५
नमुं विश्वनाथ देव दयासिंधु.	दिंडी.	३१९
नमुं हुं परब्रह्म सच्चित्स्वरुप.	भुजंगी.	१०६
नाथ तारे चरणे हुं नित्य नमुंरे	संगीत	५९
नाथ तारे चरण शरण सर्व जाय.	”	२२९
नाथ द्वार आवि प्रेमथी पुकारुं.	दिंडी.	१७७
नाथरे तारे चरणे हुं वंदुं	संगीत.	३२४
नित्य शुद्ध मुक्त ब्रह्म निर्विकार.	दिंडी	१८७
नियंता नाथरे तने नमि नमि करीए प्रणाम.	संगीत.	१०३
प.		
पतित पावन परब्रह्म परमदेव.	दिंडी.	७५
परब्रह्म परात्पर विश्वपति.	तोटक.	१६५
परब्रह्म पाद पूजी प्रेमथी गाइए शुभ मधु गुण.	संगीत.	२०४
परब्रह्म प्रणाम करुं तमने, त्रिविधि परिताप शमावो सदा.	”	११५
परब्रह्म मुक्ति प्रदाता दयाल.	भुजंगी.	२५५
परब्रह्म विश्वेश व्यापी परेश.	”	६१
परम इष्टने पादपंकजे.	[illegible]त.	१६२

प्रथम पंक्ति.	छंद के गीत.	पृष्ठ.
परम देव हे पतित पावना.	उपलीलत.	१९६
परम पद आपो मनेरे.	संगीत.	३०३
परम पवित्र सबल, व्यापि रह्या विश्व सकल.	,,	२२८
परम पूज्य हे भक्त वत्सला.	ललित.	२३२
परम प्रभु तमारी छे कलाओ अपार.	मालिनी.	३२
परम प्रेम थकी प्रभु पदे हुं वंदुं.	दिंडी.	५०
परम ब्रह्मरे प्राणतारक.	ललित.	७३
परम मंगल देव दयाघना.	द्रुतविलंबित.	२३६
परमात्मा परमेशा प्रणिपत पूर्वक प्रणाम करुं नित्ये.	गीति.	१६८
परमात्मा परिपूर्ण प्रभु परमेश्वरने हुं प्रणाम करु.	संगीत.	८०
परमेश परमात्मा तमारे शरण सर्वे आविये.	हरिगीत	२२४
परमेश्वर पूर्ण कृपाल तमे.	तोटक.	२१९
परात्परा ब्रह्मपदे हुं नित्ये.	उपेन्द्रवज्रा.	१३३
परात्मा प्रभु चिद्घना चित्स्वरुप.	भुजंगी.	१६७
परात्मा हे ब्रह्मन् भवजलदधि उद्धारक प्रभु	शिखरिणी.	७६
पावन करीने प्रभु मति शुभ आपोरे.	संगीत.	१९२
पिता मात तुं मुक्तिदाता महेश.	भुजंगी.	१७४

प्रथम पंक्ति.	छंद के गीत.	पृष्ठ.
पिता माता नित्ये प्रणमि करिये नम्र विनती.	शिखरणी.	४४
प्रणमुं हुं परब्रह्म देवने.	ललित.	११७
प्रणमुं सदा परेश पराभक्तिथी विशेष.	संगीत.	६९
प्रभु अपराध क्षमा करो मारो	,,	२१
प्रभु छो अति दयाळ दीनजन प्रतीपाळ.	,,	३३
प्रभु छो महान सर्व शक्तिमान.	अभंग.	१८५
प्रभुता तमारी छे मोटी.	संगीत.	११९
प्रभुपद पंकजे सदा हुं पाय लागुंरे.	,,	७१
प्रभुपद प्रणमीए जोडिने बेउ हाथ.	मालिनी.	१८१
प्रभुपद बहु मोटुं शुद्ध चैतन्य रुप.	,,	७८
प्रभुपदे अमे पाय लागिये.	ललित.	९०
प्रभु पर पद मोटुं मोक्ष कल्याण दाता.	मालिनी.	१३४
प्रभु परात्परा पूर्ण कामदा.	ललित.	४८
प्रभु परात्परा प्राणना पति.	,,	९४
प्रभु महिमा गुण गाओरे सर्व मंगळ थाशे.	संगीत.	३४०
प्रभु सर्व शक्तिमान, करुणा कृपानिधान.	,,	९
प्राणनाथ परमेश्वर तमने माळिने सहु जन छंद.	साकी. (मराठी चालनी.)	२८७
प्राणपति सुणो विनति अमारी.	संगीत.	१३७
प्रियधाम पूर्ण काम जपुं नाम तमारुं.	,,	३१४

प्रथम पंक्ति.	छंद के गीत.	पृष्ठ.
प्रेमथी प्रभु पदे प्रणाम सर्व करीए.	„	१९३
प्रेम पुष्पहार अर्पि प्राणनाथ.	दिंडी.	२९६
प्रेमसिंधु प्रेमनो प्रसाद सर्वने.	उनमहीदीप.	३३४

ब.

ब्रह्म सत्य जीव तेनुं सृष्ट तत्त्व.	दिंडी.	१५४
ब्रह्मोपासन आ समे करि अमे पाये सहू लागीए.	शार्दूलविक्रीडित.	२२७

भ.

भगवंत ब्रह्म प्रभु, परिपूर्ण व्याप्त विभु	संगीत.	८०
भर्यो दुःखावर्ते विकट पथ क्षारब्धि भवनो.	शिखरिणी.	३३५
भवपति भयहर्ता पूर्ण आनंदकर्ता.	मालिनी.	१९१
भवपति संकट सर्व हरो.	संगीत.	३३

म.

मंगलगुण महान, सत्यरुप ज्ञानवान.	संगीत.	३२३
मंगल छे नाम तारुं, मंगल छे धाम तारुं.	„	४४
मंगल छे प्रभु महिमा तमारो अंतर ताप निवारो.	„	२१७
मंगल देव दयानिधि दाता.	दोधक.	२४७
मंगल भगवान् वरिष्ठ इष्ट देव साचा.	महीदीप.	३०९
मंगलमय परम देव दर्शन शुभ देवो.	संगीत.	३०२
मंगल समय आज, स्मरिने जगाधिराज.	„	११

प्रथम पंक्ति.	छंद के गीत.	पृष्ठ.
मंगल सर्वोत्तम पद दाता.	मौक्तिकमाला.	२८६
मंगलानंददाता दयासागरा.	स्रग्विणी.	३२१
मनकर्मवाणि थकी प्रभुने वंदुंरे.	संगीत.	११
महाधिराज स्वामि सर्वना समर्थ छो तमे.	नाराच.	७
महाधिराजा मुणि याचनाने.	उपेन्द्रवज्रा.	१००
महाप्रतापी प्रभु विश्वपाल.	,,	२२८
महा मंगल आ समय महाराज.	दिंडी.	२४३
महा मंगल प्रभु नाम जपुं तारुं.	,,	२५९
महा मंगलानंददाता दयाळ.	भुजंगी.	२०२
महाराज आनंददाता दयाल.	,,	१००
महाराज महा मंगळ जयकारी.	दिंडी.	२२२
महेश्वरा हे परमेश्वरा हे.	इंद्रवज्रा	१०१

र.

रघुं अनालम्बन जे प्रतापे.	उपजाति.	३४९
राजाधिराजा प्रभु सृष्टिनायक.	इन्द्रवंशा.	२६१

व.

वंदुं नित्य परमात्म ब्रह्मने.	रथोद्धता.	१४५
वंदुं परब्रह्म चरण, करुं छुं शुभ नाम स्मरण.	संगीत.	१५८
वंदुं विघ्नहरा विभु वरिष्ठ सकल इष्ट.	,,	१९१

प्रथम पंक्ति.	छंद के गीत.	पृष्ठ.
वंदुं हुं परमेश व्याप्त विभुने वंदुं जगाधीशने.	शार्दूलविक्रीडित.	१२१
विधाता धन्य छे तारी रचना जगतनी अनंत.	संगीत.	१४९
विनति करुं कर जोडी.	,,	८१
विनति प्रभु सांभळो मारी, दया धारी.	,,	९२
विनंति सांभळो मारी करुणानिधि भगवान् -	,,	२९०
विपद तिमिर भेदी, शोकघनदल छेदी.	,,	३३९
विमल रजत भासे, पूर्ण करी नीलाकाशे.	,,	१९२
विश्वनाथ तमे एक देव साचा.	दिंडी.	२०८
विश्वनाथ तमे सृष्टिना नियंता.	,,	२११
विश्वनाथ तुं विना न को सहायकारी.	संगीत.	१३७
विश्वनाथ नित्य शुद्ध मुक्त छो.	सेनिका.	१३५
विश्व रचना अद्भूत चमत्कारी.	दिंडी.	२४७
विश्वाधारा अपारा अति विनय थकी वंदुं पादारविंदे.	स्रग्धरा.	२८
विश्वाधिराजा विभु छो समर्थ.	उपजाति.	२०४
विश्वाधीशा विनयथि नमुं नित्य पाये तमारे.	मंदाक्रान्ता.	१११
विश्वाधीशा विश्वनियंता विभुत्राता.	मत्तमयूर.	१७७
विश्वाधीशा विश्ववंद्या विधाता.	शालिनी.	८८

प्रथम पंक्ति.	छंद के गीत.	पृष्ट.
विश्वेश वंद्य विभु छे तमने विदीत.	वसंततिलका.	१५७
विश्वेशा विभु तमने नमि नमि करीये प्रणाम आ समये.	गीति.	२३८
विषय तिमिर जाल, कर्यो छे निशाकाल.	संगीत.	३०२

श.

प्रथम पंक्ति.	छंद के गीत.	पृष्ट.
शरण खरुं छे तमारुं प्रभु मारे.	संगीत.	२१७
शरण तने भगवान, प्रणमुं पाये पडीरे.	,,	४५
शरणागतने निभावो प्रभु सर्वे दोष शमावो.	,,	३४
शरीरवाणीमनथीज पापे.	उपेन्द्रवज्रा.	१६८
शान्त आ सायं समय, शुद्ध शान्त रसमय.	संगीत.	३५३
शान्ताकारा कृपालु प्रभु विण नहि को अन्य आधार मारे.	स्रग्धरा.	१७
शान्तिप्रेमसुधानिधान सविता सर्वेश सच्चिद्घना.	शार्दूलविक्रीडित.	२८४
शांतिरुपे विराजो शुभ वरद विभु स्वामि विश्वाधिभूप.	स्रग्धरा.	१२१
शान्ति शान्ति शान्ति प्रभु शान्ति सदा आपो.	संगीत.	२५३
शिर चरण नमावि नित्य पाये हुं लागुं.	मालिनी.	९९
शुभ गुण गाय गाय मंगलपद धाय धायरे.	संगीत	१७०

प्रथम पंक्ति.	छंद के गीत.	पृष्ठ.
सं.		
सकल विश्वनां नाथरे तमे.	ललित.	४०
सकल विश्व विशे छो विराजमान.	दिंडी.	८६
सगुण समर्थ सत्य प्रभुने स्मरुं हुं नित्य.	संगीत.	१२५
संकट कोण निवारे नाथविना संकट कोण निवारेरे.	संगीत.	२०५
सच्चिद्घनना स्वरुपमां विरामुंरे.	,,	१६०
सच्चिद्घन सुखकारक दुःखहारक हे.	अष्टपदी.	२३०
सच्चिद्घनानंद प्रभु समर्थ.	उपजाति.	१४७
सत्ताथी जे व्याप्त छे जेथी थाय प्रकाश.	दोहरा.	११०
सत्ताधीशा हे देव संकष्टहारी.	वैश्वदेवी.	२८५
सत्यदेव हे शान्तिकारक.	कामदा.	२६७
सत्य शान्त दान्त इष्ट कृपाकान्त.	दिंडी.	२९३
सत्य सगुण परमब्रह्मने उपासुं.	,,	१६
सत्य सर्व शक्तिमान, परम प्रतापवान.	संगीत.	२१६
सत्यानंत अखंड ईश्वर तमे साक्षी तमे सर्वना.	शार्दूलविक्रीडित.	२००
सत्वर धाओ सखा जगराया.	संगीत.	३५४
सदाचरण विना भक्ति वृथा थाय.	दिंडि.	१९९

प्रथम पंक्ति.	छंद के गीत.	पृष्ठ.
सदा महिमा शुभ गाउं हुं तमारो.	दिंडी	१४३
सदा तमारे शरणे रहीए.	उपेन्द्रवज्रा.	१८१
सदा महिमा शुभ गाउं हुं तमारो.	दिंडी	१४३
सर्वज्ञने शुं कहुं हुं पधारे.	उपजाति.	२५२
सर्वव्यापि सर्व जीवना शरण्य.	दिंडी.	१३२
साष्टांगे नमिने प्रणाम करिये सर्वेश स-चिद्घना.	शार्दूलविक्रीडित.	६८
सुरम्य सायंसमय थाय सूर्य अस्तमय.	संगीत.	२३८
सृष्टि नियम निरखी चित्तमां उल्लासुं.	दिंडी.	६२
स्तवन शुभ तारुं करुंरे.	संगीत.	५९
स्वामी सर्वात्मा प्रभु प्राणनाथ.	शालिनी.	१२६
स्वेच्छा थकि सृष्टि वमे प्रभु किधी.	इंद्रवंशा.	१५७
ह.		
हरि शुभ गुण गाउं, गाउं हुं आनंदथी.	संगीत.	१९२
हे जगदीश दयानिधी शुंजने दिन जाणी संभाळोरे.	संगीत.	२७७
हे देव ईश जगदीश जगन्निवास.	वसंततिलका.	६४
हे ब्रह्म ईश जगदीश जगन्निवास.	,,	४१
हे भगवन् षड्गुण संपन्न सर्वेश्वर संकट सर्व हरो.	संगीत.	२८९

प्रथम पंक्ति.	छंद के गीत.	पृष्ठ.
स.		
सकल विश्वना नाथरे तमे.	ललित.	४०
सकल विश्व विशे छो विराजमान.	दिंडी.	८६
सगुण समर्थ सत्य प्रभुने स्मरुं हुं नित्य.	संगीत.	१२५
संकट कोण निवारे नाथविना संकट कोण निवारेरे.	संगीत.	२०५
सच्चिद्घनना स्वरुपमां विरामुंरे.	,,	१६०
सच्चिद्घन सुखकारक दुःखहारक हे.	अष्टपदी.	२३०
सच्चिद्घनानंद प्रभु समर्थ.	उपजाति.	१४७
सत्ताथी जे व्याप्त छे जेथी थाय प्रकाश.	दोहरा.	११०
सत्ताधीशा हे देव संकष्टहारी.	वैश्वदेवी.	२८५
सत्यदेव हे शान्तिकारक.	कामदा.	२६७
सत्य शान्त दान्त इष्ट कृपाकान्त.	दिंडी.	२९२
सत्य सगुण परमब्रह्मने उपासुं.	,,	१६
सत्य सर्व शक्तिमान, परम प्रतापवान.	संगीत.	२१६
सत्यानंत अखंड ईश्वर तमे साक्षी तमे सर्वना.	शार्दूलविक्रीडित.	२००
सत्वर धाओ सखा जगराया.	संगीत.	१५४
सदाचरण विना भक्ति वृथा थाय.	दिंडि.	१९९

प्रथम पंक्ति.	छंद के गीत.	पृष्ठ.
सदा महिमा शुभ गाउं हुं तमारो.	दिंडी	१४३
सदा तमारे शरणे रहीए.	उपेन्द्रवज्रा.	१८१
सदा महिमा शुभ गाउं हुं तमारो.	दिंडी	१४३
सर्वज्ञने शुं फकुं हुं वधारे.	उपजाति.	२५२
सर्वव्यापि सर्व जीवना शरण्य.	दिंडी.	१३२
साष्टांगे नमिने प्रणाम करिये सर्वेश सच्चिद्घना.	शार्दूलविक्रीडित.	६८
सुरम्य सायंसमय थाय सूर्य अस्तमय.	संगीत.	२३८
सृष्टि नियम निरखी चित्तमां उलासुं.	दिंडी.	६३
स्तवन शुभ तारुं करुंरे.	संगीत.	५९
स्वामी सर्वात्मा प्रभु प्राणनाथ	शालिनी.	१३६
स्वेच्छा थकि सृष्टि तमे प्रभु किधी.	इंद्रवंशा.	१५७
ह.		
हरि शुभ गुण गाउं, गाउं हुं आनंदथी.	संगीत.	१९२
हे जगदीश दयानिधी सुजनने दिन जाणी संभाळोरे.	संगीत.	२७७
हे देव ईश जगदीश जगन्निवास.	वसंततिलका.	६४
हे ब्रह्म ईश जगदीश जगन्निवास.	,,	४१
हे भगवन् षड्गुण संपन्न सर्वेश्वर संकट सर्व हरो	संगीत.	२.

प्रथम पंक्ति.	छंद के गीत.	पृष्ठ.
हे महा प्रभु प्राणतारक.	कामदा.	१८०
हे विश्वनाथ विभु सत्य समर्थ देव.	वसंततिलका.	९८
हे विश्वना देव दयानिधान.	इन्द्रवज्रा.	१११
हे विश्ववंद्य जगदीश्वर दीननाथ.	वसंततिलका.	५१
हे विश्वेश्वर हे जगत्रय गुरु सर्वज्ञ स- च्चिद्‌घना.	शार्दूलविक्रीडित.	१२४

